मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुध्दाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझ साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व धर्मोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए सो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे

शिष्य अमोल ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्य पाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज! आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिए इस कार्य के परोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

दास-अमोल ऋषि

बाल ब्रह्मचारी पूज्य श्री सुखा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य आर्य मुनि श्री धना ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज ने ३२ शास्त्रों का शास्त्रोद्धार जैसा परम श्रम वाला कार्य को जिस उत्साह से स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बना दिया कि कोई भी हिन्दी भाषा सहज में समझ सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुवे हम आप के सदा आभारी हैं

सबकी तरफ से

नन्दी सूत्र की प्रस्तावना,

नत्वा जिनेन्द्र सूत्र ज्ञान दातः, नन्दी नन्दकर्ता ज्ञान प्रकाशा ॥ जिनेश्वर वाण्या भाषानुवाद, करोमी गुरुवादि प्रसादात ॥ १ ॥

अर्थात् शास्त्र ज्ञान के दाता श्री जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके श्री गुरु महाराज आदि पुण्य पुरुषों के प्रसादसे श्री जिनेश्वर की वाणी द्वारा प्रकाशित हुवा पांचों ज्ञान के प्रकाश कर्ता और आनन्द का दाता इस नन्दी सूत्र का मैं हिन्दी भाषानुवाद करता हूं इस सूत्र के कर्ता देवर्द्धि गणी क्षमा श्रमण को बताते हैं, परन्तु यह असमव है क्यों कि समवायांग भगवती अंग में इस की साक्षी दी गई है इस लिये जिस प्रकार इग्यारह अंग अनादि हैं वैसे यह भी अनादि है आचार्य प्रणित शास्त्र में जिनेन्द्र प्रणित वचनों की साक्षी होती है परन्तु जिन प्रणित सूत्रों में आचार्य प्रणित ग्रन्थों की साक्षी कदापि नहीं होती है इस लिये यह नन्दी सूत्र जिन प्रणित ही है हां इस की आदि की स्थविरावली और चार बुद्धि ऊपर कही हुई रोहा आदि की कथाओं का इस में प्रक्षेप देवर्द्धीगणी महाराज किया हो ऐसा जाना जाता है इस में पांच ज्ञान का तद्भेद का हुरो का कथन किया है चार बुद्धि पर अनेक रसाली कथाओं भी दी गई है

इस का उतारा साधुजी की मत सो मक्षावपाके सेठ अगरचंदजी मानमलजी की तरफ से प्राप्त हु॰

शास्त्रोद्धार प्रारंभ

वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति नन्दी सूत्र समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति

वीराब्द २४४६ विजयादशमी

और या बनों पेर पास थी जिस पर से लिया है कथाओं में कितनेक स्थान शुद्धी वृद्धि की है तो भी मूल रही हुई हो वहां विद्वानों शुद्ध कर पठन करेंगे

नन्दी सूत्र की विषयानुक्रमणिका,

पुन्नविसारयाधीरा ॥ २ ॥ सुस्सूसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिण्हइ इयहए वावि ॥ तओ अपोहए वा धारेइ करेइ वा सम्म ॥ ३ ॥ मूय हूंकारवाची, ढकार पडिपुच्छवीमसा तत्तो ॥ पसगपरायणय, परिनिट्ठ सत्तमए ॥ ४ ॥ सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तीमीसओ भणिओ ॥ तइओय निरवसेसो, एसविही होइ अणुओगो

प्राप्त हुवे ॥ २ ॥ पूर्वों के ज्ञानाभ्यास में पण्डित धैर्यवंत अभ्यास कर जो ज्ञानार्थी शिष्य हैं वे गुरु की सेवा भक्ति विनय कर एकाग्र चित्त से सिद्धान्त को ग्रहण कर, गुरु के मुख से निकले हुवे वचन प्रमाण करे, सूत्रार्थादि में संदेह उत्पन्न हुवे, विनय युक्त पृच्छा करे, जो गुरु प्रश्नोत्तर से निराकरन करने करे उसे सावधानी से श्रवण करे ॥ ३ ॥ जो गुरु समाधान करे उस में निश्चयात्मक बन उस अर्थ को ग्रहण करे, उस अर्थ को पूर्वापर अविरुद्ध धारे फिर जो आचार्य अर्थ करे उसे तहत प्रमान करे, परन्तु उसे अन्यथा माने नहीं तथा उस अर्थ को अपनी पूर्व की बुद्धि से विचार कर निश्चय करे, निश्चयार्थ बन कर धारण करे फिर जो सम्यक प्रकार श्रुत ज्ञान प्राप्त करने का अनुष्ठान जिस की विधी जिस प्रकार शास्त्र में कही और गुरु मुख धारन की उस ही प्रकार उसे करे ॥ ३ ॥ सूत्रार्थादि धारन करते शिष्य को उचित है कि प्रथम श्रवण करती वक्त तो मौनस्थ बन श्रवण करे, क्वचित संदेह उत्पन्न हो तो पूछे वैसे ही उस का अपनी प्राप्त बुद्धि कर उस को अपने हृदय से विचारे

॥ ५ ॥ सेत अगपविट्ठ ॥ सेत सुयणाण ॥ सेत परोक्ख नाण ॥ से त नंदी सूत्र सम्मत्तं, ॥ इति नंदी सूत्र समाप्तम् ॥ ३० ॥ • • • •

॥ ५ ॥ तब फिर उस अर्थ का वह पारगामी बने, उत्तर गुन का प्रसंगी बने यह ज्ञान ग्रहण करने की विधी कही श्रोताओं को सूत्रार्थ प्रकाश करते प्रथम सूत्र का शब्दार्थ समझावे फिर उस की निर्युक्ति कर सभी मिलाय, फिर उस अर्थ का विस्तार करे इस युक्ति करके सूत्र का व्याख्यान कर यह अंग प्रविष्ठ श्रुत ज्ञान का कथन तथा श्रुत ज्ञान का कथन और परोक्ष ज्ञान का कथन समाप्त हुवा तैसे ही नंदी सूत्र भी पूर्ण हुवा • • •

॥ इति ॥

॥ त्रिंशत्तम नन्दी सूत्र समाप्तम्. ॥

वीर संवत २४४६ भाद्रपद शुदी ९ सोमवार

पुव्वविसारयाधीरा ॥ २ ॥ सुरसूसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ इयहए वावि ॥तओ अपोहएवा, धारेइ करेइ वा सम्म ॥ ३ ॥ मूय हूकारवाश्री, ढकार पडिपूच्छवीमंसा तत्तो ॥ पसंगपरायणंच, परिनिट्ठ सत्तमए ॥ ४ ॥ सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तीमीसओ भणिओ ॥ तइओय निरवसेसो, एसविही होइ अणुओगो

प्राप्त हुवे ॥ २ ॥ पूर्वो के ज्ञानाभ्यास में पण्डित धैर्यवंत अभ्यास कर जो ज्ञानार्थी शिष्य हैं वे गुरु की सेवा भक्ति विनय कर एकाग्र चित्त से सिद्धान्त को ग्रहण कर गुरु के मुख से निकले हुवे वचन प्रमाण करे, सूत्रार्थादि में संदेह उत्पन्न हुवे, विनय युक्त पृच्छा करे, जो गुरु प्रश्नोत्तर से निराकरन करते को उसे सावधानी से श्रवण करे ॥ १ ॥ जो गुरु समाधान करे उस में निश्चयात्मक मन उस अर्थ को ग्रहण करे, उस अर्थ को पूर्वापर अविरुद्ध धारे फिर जो आचार्य अर्थ करे उसे तहत प्रमान करे, परन्तु उसे अन्यथा माने नहीं तथा उस अर्थ को अपनी पूर्व की बुद्धि से विचार कर निश्चय करे, निश्चयार्थ पन कर धारण करे फिर जो सम्यक प्रकार श्रुत ज्ञान प्राप्त करने का अनुष्ठान जिस की विधी जिस प्रकार शास्त्र में कही और गुरु मुख धारन की उस ही प्रकार उसे करे ॥ १ ॥ सूत्रार्थादि धारन करते शिष्य को उचित है कि प्रथम श्रवण करती वक्त तो मौनस्थ पन श्रवण करे, क्वचित संदेह उत्पन्न हो तो पूछे वैसे ही उस का अपनी प्राप्त बुद्धि कर उस को अपने हृदय से विचारे

खेत्तओ, कालओ भावओ ॥ तत्थ दव्वओण उवउत्ते सुयणाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खेत्तओण उवउत्ते सव्वखेत्त जाणइ पासइ, कालओण उवउत्त सुयणाणी सव्व काल जाणइ पासइ, भावओण सुयणाणी उवउत्त सव्व भावे जाणइ पासइ ॥ एए चउद्दस पुव्वा लोगालागमि सव्वमाभाणदव्व गुण खित्त पज्जव जहत्थ भावनाव दसगवि ॥ (संगहणी गाहा) अक्खर सण्णीसम्म साइय खलु सपज्जवसिय च ॥ गमिय अगपविट्ठ सत्तविएए सपडिवक्खा ॥ १ ॥ आगम सत्थ गहण, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिंविदिट्ठ ॥ विंति सुयनाण लभ, त

उपयोग कर श्रुत ज्ञानी सब काल जाने देखे और भाव से उपयोग लगाकर श्रुत ज्ञानी सब भाव जाने देखे क्यों कि चवदह पूर्व धारी श्रुत केवली कहे जाते हैं ॥ गाथार्थ—१ अक्षर श्रुत, २ संज्ञी श्रुत ३ सम्यक श्रुत, ४ सादि श्रुत ५ सपर्यवसित श्रुत ६ गमिक श्रुत, और ७ अंग प्रविष्ट श्रुत इन सातों के उलटे, यों १४ प्रकार श्रुत ज्ञान की प्ररूपना आगम के ज्ञान ग्रहण आश्रिय की ॥ १ ॥ आगम की विधी के जो सकल श्रुत की विषय की व्याप्ति रूप जो मर्याद की प्ररूपना रूप जो परिछेद वे आचार्य के नयरूप से आगम—सिद्धान्त व अन्य शास्त्र के अर्थ को ग्रहण करता है जो सब प्रकार की बुद्धि कर आठ गुण कर अर्थ विषय कर देखे तथा तीर्थकरोंने फरमाये जिससे सर्व जगत के भाव उनको

न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्सइ धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे ॥ से जहा नामए पंच अत्थिकाया नकयाइनासि, न कयाइ न भवंति न कयाइ न भविस्सइ,भुविंच भवंतिय भविस्सातिय धुवे नितए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्च एवामव दुवालसगे गणिपिडगे नकयाई नासी, नकयाइ न भवति, नकयाइ न भविस्सइ, भुविंच भवइय भविस्सइय धुव नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे ॥ से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—१ दव्वओ,

तक रहेगा, यह भाव निश्चल है, नित्य, सदैव है शाश्वत है, अक्षय है, क्षय होवे नहीं, अव्यय है—घटती नहीं अवस्थित स्थिर है, नित्य है, यथा दृष्टांत जैसे पंचास्ति काय गत काल में नहीं थी ऐसा नहीं, वर्तमान में नहीं है ऐसा नहीं अनागत में नहीं रहेगी ऐसा भी नहीं गत काल में थी वर्तमान में है व अनागत में रहेगी, ध्रुव नित्य शाश्वत अक्षय अवस्थित नित्य है इस ही प्रकार द्वादशांगनी आचार्य की संदूक गत काल में नहीं थी ऐसा नहीं वर्तमान में नहीं है ऐसा भी नहीं अनागत में नहीं रहेगी ऐसा भी नहीं परंतु गत काल में अनादि से है वर्तमान में भी है और अनागत में भी अनंत काल रहेगी, ध्रुव नित्य, शाश्वत, अक्षय अव्यय अवस्थित नित्य है॥ इस श्रुत ज्ञान के समास के संक्षेप में चार भेद किये हैं तद्यथा १ द्रव्य से, २ क्षेत्र से, ३ काल से और ४ भाव से इस में द्रव्य से उपयोग लगाकर श्रुत ज्ञानी सर्व द्रव्य जाने देखे, क्षेत्र से श्रुत ज्ञानी सर्व क्षेत्र जाने देखे काल से

अणुपरियट्टिस्सति ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीएकाले अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससार कतार वीईवइसु ॥ इच्चेइयं दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णकाले परित्ताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससार कतार वीईवयति ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागएकाल अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससार कतार वीईवइस्सति ॥ इच्चेइयं दुवालसग गणिपिडग नकयाइ नासी

काल में अनंत जीवोंने आज्ञा का आराधन कर—पालन कर यथातथ्य प्ररूपन कर चतुर्गति रूप ससार अटवी का उल्लंघन किया है—पार पाये मोक्ष प्राप्त की हैं इस द्वादशांग रूप आचार्य की गुणरत्नों की सदूक का वर्तमान काल में संख्यात जीवों आज्ञा का आराधन कर चतुरगति रूप संसार अटवी से पार हो रहे हैं इस द्वादशांग रूप आचार्य की संदूक का अनागत काल में अनंत जीवों आज्ञा का आराधन कर चतुरगति रूप ससार अटवी का उल्लंघन करेंगे ॥ यह द्वादशांगी रूप आचार्य की ज्ञानादि गुरत्नों की सदूक गत काल में एसा कोई भी वक्त नहीं था कि-जिस वक्त यह नहीं थी वर्तमान में भी एसा काल नहीं है कि यह द्वादशांगी नहीं है और अनागत काल में भी ऐसा कभी नहीं होगा कि यह द्वादशांगी कभी नहीं रहेगा परतु गत काल में अनादि काल से है, वर्तमान में भी है और अनागत में अनत काल

महेऊ कारणमकारणेचेव, जीवाजीवा भविय मभविया सिद्धा असिद्धाय ॥ १ ॥
इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीएकाले अणंता जीवा आणाए विराहिचा चउरत
ससार कतार अणुपरियट्टिसु ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्ण काल परित्ता
जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससार कतार अणुपरियट्टति ॥ इच्चेइय दुवालसग
गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहिचा चाउरत ससार कतार

पुद्गल, अनंत भव्य सिद्धिक जीव, अनंत अभव्य सिद्धिक जीव अनंत सिद्ध, अनंत असिद्ध-संसारी जीव इत्यादि की है ॥ संग्रहणी गाथा का अर्थ-भाव, अभाव, हेतु, अहेतु, कारण, अकारण, जीव, अजीव, भव्य, अभव्य, सिद्ध और असिद्ध यह अधिकार द्वादशांगी में है सो संक्षेप में जानना ॥ १ ॥ इस द्वादशांग आचार्य की संदूक की अतीत (गत) काल में अनंत जीवोंने आज्ञा का विराधन कर खंडन कर अर्थात् द्वादशांगी जिनाज्ञा से विपरीत प्ररूपना कर इस संसार रूप महाअरण्य (अटवी) में परिभ्रमण किया है इस द्वादशांगी आचार्य की संदूक का प्रत्युत्पन्न [वर्तमान] काल में संख्यात जीवों आज्ञा का विराधन कर विपरीत प्ररूपना कर चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं इस द्वादशांग आचार्य की संदूक का अनागत काल में अनंत जीवों आज्ञा की विराधना कर चतुरगति रूप संसार अटवी में परिभ्रमण करेंगे और इस द्वादशांग रूप गणधर—आचार्य के गुण रत्न रूप संदूक का गत

अणुपरियट्टिस्सति ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीएकाले अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससार कतार वीईवइसु ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णाकाले परित्ताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससार कतार वीईवयति ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागएकाले अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंत ससार कतार वीईवइस्सति ॥ इच्चेइयं दुवालसग गणिपिडग नकयाइ नासी

काल में अनंत जीवोंने आज्ञा का आराधन कर—पालन कर यथावथ्य प्ररूपन कर चतुर्गति रूप ससार अटवी का उल्लंघन किया है—पार पाये मोक्ष प्राप्त की हैं इस द्वादशांग रूप आचार्य की गुणरत्नों की संदूक का वर्तमान काल में संख्यात जीवों आज्ञा का आराधन कर चतुरगति रूप संसार अटवी से पार हो रहे हैं इस द्वादशांग रूप आचार्य की संदूक का अनागत काल में अनत जीवों आज्ञा का आराधन कर चतुरगति रूप ससार अटवी का उल्लंघन करेंगे ॥ यह द्वादशांगी रूप आचार्य की ज्ञानादि गुणरत्नों की संदूक गत काल में ऐसा कोई भी वक्त नहीं था कि-जिस वक्त यह नहीं थी वर्तमान में भी ऐसा काल नहीं है कि यह द्वादशांगी नहीं है और अनागत काल में भी ऐसा कभी नहीं होगा कि यह द्वादशांगी कभी नहीं रहेगा परंतु गत काल में अनादि काल से है, वर्तमान में भी है और अनागत में अनंत काल

स चूलियाओ ॥ ७० ॥ दिट्ठिवायस्सण परित्ता वायणा संखिज्जाअणुओगदारा संखि ज्जावेढा संखिज्जासिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ संखि ज्जाओ संगहणीओ सण अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयक्खंधे चोद्दस पुव्वाइं संखिज्जावत्थू संखिज्जा चूलियावत्थु, संखिज्जा पाहुडा, संखिज्जापाहुडपाहुडा, संखि ज्जाओ पाहुडियाओ, संखिज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखिज्जाइं पयसहस्साइं, पयग्गेण संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा, परित्ता तसा, अणंताथावरा,

प्रथम के चार पूर्व की चूलिका कही है बाकी के पूर्व की चूलिका नहीं है ॥ ७० ॥ इस प्रकार के दृष्टीवाद नामक द्वादशम अंग की परित्ता वाचना शिष्य को सूत्रार्थ दान रूप संख्यात अनुयोग उपदेश, विशेष उपदेश, व्याख्यान रूप संख्यात वेढा छन्द पद रूप संख्यात श्लोक बत्तीस अक्षर का एक श्लोक ऐसे, संख्यात संग्रहणी संक्षेपार्थ की गाथा, संख्यात निर्युक्ति अर्थ की सन्धी पवन रूप संख्यात प्रतिपत्ति-एकादि संख्यात पर्यन्त, उस अंगार्थ बारवा अंग का एक श्रुतस्कन्ध चवदह पूर्व संख्याती (२२५) वस्तु संख्यात चूलिका वस्तु संख्यात प्राभृत-अधिकार रूप संख्यात प्राभृत अधि कार का पाहुडा, संख्यात पाहुडिया लघु अधिकार रूप संख्यात पाहुडापाहुडिया लघु अधिकार पद्धने रूप, संख्यात लाखपद, एकेक पद के संख्यात अक्षर, अनंत अर्थागम, अनन्त पर्याय अक्षरकी पर्याय रूप, परितात्रस, अनन्त स्थावर, पूर्वादि में जो भावों का कथन किया वह शाश्वत है पर्याय कर पलटत

सासयकड निबद्ध निकाइया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति दंसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जति, से एवं आया, एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरण करण परूवणा आघविज्जति से त्तं दिट्ठिवाए॥७१॥इच्चेइयमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंताभावा, अणंताअभावा अणंताहेऊ, अणंताअहेऊ, अणंताकारणा, अणंता अकारणा अणंताजीवा, अणंताअजीवा, अणंताभवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंतासिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता ॥ (संगहणी गाहा) भावमभावा हेऊ

रहते हैं निश्चय सूत्र रूप गणधरादि के गुन्थन किये हुवे निकाचित—उदाहरणादि से सिद्ध किये हुवे जिनेश्वर भणित भाव, सामान्यपने कहे, विस्तार कर प्ररूपे भवान्तर कर प्ररूपे उपाय कर देखाये, विशेष प्रकार निर्देश कराया, सभा में उपदेशे यन में इस प्रकार भास्या की, जिनाज्ञा की प्रतिष्ठा की, विज्ञान कर विशेष दृढता की, यों ही करण सितरी चरण सितरी के गुन की प्ररूपना की यह दृष्टिवाद के भाव कहे ॥ ७१ ॥ यह द्वादशांग रूप गणी-आचार्य महाराज गणधर महाराज के गुणरत्नों की संदूक उस में जीवादि पदार्थ के व पुद्गल के अनन्त भाव कहे हैं, अन्य की अपेक्षा बिना जीवादि के अनंत अभाव कहे वस्तु की विशिष्टता दर्शाने के अनंत हेतु, जैसे मृत्तिकापिंड घट के कारण रूप होवे ऐसे अनंत कारण, जैसे मृत्तिकापिंड से वस्त्र नहीं बने ऐसे अनंत अकारण, अनंत जीव, अनंत अजीव

देवगण्डियाओ, गणधरगण्डियाओ, भद्दबाहुगण्डियाओ, तओकम्म गण्डियाओ, हरिव सगण्डियाओ, ओसप्पिणि गण्डियाओ उसप्पिणी गण्डियाओ, चित्तर गण्डियाओ, असरनर तिरिय निरइगइ गमण विविह परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गण्डियाओ आघविज्जति, पण्णविज्जति, सेत गण्डिआणुओगे ॥ ६८ ॥ से किं त चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लाण चउण्ह पुव्वाण चूलिया, सेसाइ पुव्वाइ अचूलियाइ से

पाइनादि कुलकरों [उन का पूर्व जन्मादि सम्बन्ध कहा हो वह कुलकर गण्डिका ऐसे ही तीर्थंकर गण्डिका, दसार गण्डिका बलदेव गण्डिका, वासुदेव गण्डिका, गणधर गण्डिका भद्रबाहु गण्डिका, तप कर्म गण्डिका हरिवंस गण्डिका, अवसर्पिनी [हायमान काल] गण्डिका, उत्सर्पिनी गण्डिका (अवसर्पिनी उत्सर्पिनी में जो उत्तम पुरुषों हुवे उन का पूर्व जन्मादि का कथन) चित्रांतर गण्डिका इस का विशेषार्थ-श्री ऋषभ देवजी के श्री अजितनाथजी के मध्य पचास क्रोड सागर का अंतर है जिस में श्री ऋषभ देवजी के वंश के उन के समान चौदह लाख राजा सिद्धगति में जावे तब एक अनुत्तर विमान में उत्पन्न होवे यह चित्रांतर गण्डिका देवता मनुष्य तिर्यंच नरक इन चारों गति में विचित्र प्रकार से परिभ्रमण करना इत्यादि कहा है यह गण्डिकानुयोग और यह अनुयोग का कथन हुवा ॥ ६९ ॥ अहो भगवन् ! चूलिका किसे कहते हैं ? अहो गौतम

चौदह पूर्व का कोष्टक

१४ पूर्व के नाम	१ उत्पाद पूर्व	२ अग्रायणी पूर्व	३ वीर्यप्रवाद पूर्व	४ अस्तिनास्ति	५ ज्ञान प्रवाद	६ सत्य प्रवाद	७ आत्म प्रवाद	८ कर्म प्रवाद	९ प्रत्याख्यान	१० विद्या प्रवाद	११ अबंध्य पूर्व	१२ प्राण प्रवाद	१३ क्रिया विशाल	१४ लोकबिन्दुसार	सर्व का समुच्चय
स्याही हस्ति संख्या	१ हस्ति	२ हस्ति	४ हस्ति	८ हस्ति	१६ हस्ति	३२ हस्ति	६४ हस्ति	१२८ हस्ति	२५६ हस्ति	५१२ हस्ति	१०२४ हस्ति	२०४८ हस्ति	४०९६ हस्ति	८१९२ हस्ति	१६३८१ हस्ति
पूर्व की वस्तु	१० वस्तु	१४ वस्तु	८ वस्तु	१८ वस्तु	१२ वस्तु	२ वस्तु	१६ वस्तु	३० वस्तु	२० वस्तु	१५ वस्तु	१२ वस्तु	११ वस्तु	३० वस्तु	२५ वस्तु	२२५ सर्ववस्तु
चूलिका	४ चूलिका	१२ चूलिका	८ चूलिका	१० चूलिका	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१४ सर्व
पद संख्या	१ कोड	९६ लाख	७० लाख	६० कोड	१ कोड	१ कोड ६ पद	२६ कोड	१ कोड ८० लाख	८४ लाख	१ कोड १० हजार	२६ कोड	१ कोड ५६ लाख	९ कोड	१२ कोड ५० लाख	८३ कोड २६ लाख १० हजार और ५

ओहिनाणी, सम्मत्त सुयणाणिणोय, पाइ अणुत्तरगइय २ चरित्तठाणिणाय मुणिणो, जत्तिया सिद्धा अप्पहाजहय जहदेसिओ ज चिरचकाल पाओवगयाय, जे जंहिजत्ति याइ भत्ताइछेत्ता अतगडे मुणिवरुत्तमे तमर ओघाविप्पमुक्के, मुक्खसुह मणत्तरचपत्त एवमन्नेय, एवमाईया भाया, मूलपढमाणुओगे कहिया, सेत मूलपढमाणुओगे ॥९८॥ से किं त गडियाणुओगे ? गडियाणुओगे कुलगरगडियाओ, तित्थयर गडियाओ, चक्कवट्टिगडियाओ, दसारगडियाओ, बलदेवगडियाओ, वासु

श्रुत ज्ञानी, साधु के उत्पन्न होने के स्थान अनुत्तर विमान गमनी साधु की संख्या, उत्तर वैक्रेय लब्धि धारक साधु की संख्या जो साधु सब कर्मों का क्षय कर मोक्ष गये उन की संख्या, पादोपगमन संथारा कर, जिस २ स्थान जिन २ साधुने किये भक्त छेदन कितने दिन का संथारा आया, कर्मों का अन्त किया, उत्तम प्रधान संसार से मुक्त हुवे सो, मोक्ष के प्रधान सुख प्राप्त किये और भी इत्यादि मूल प्रथमानुयोग में कथन किया गया है यह मूल प्रथमानुयोग के भाव हुए ॥ ९८ ॥ अहो भगवन् ! गडिकानुयोग किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! गडिकानुयोग × अनेक प्रकार का कहा है तद्यथा—प्रथम

× इक्षुखण्डवत्‌ प्रकार के समान वाक्य पद्धति सो गडिका-उस का अनुयोग उस के कहने का अर्थ यह गडिकानुयोग

...वत्थु पण्णत्ता, लोगबिंदुसार पुव्वस्सणं पणवीस वत्थू पण्णत्ता (गाहा) दस चोद्दस अट्ठ अट्ठारसेव, बारस दुवेय वत्थूणि ॥ सोलस्स तीसा बीसा, पण्णरस अणुप्पवायंमि ॥ १ ॥ बारस इक्कारस मे बारस मे तेरसमेव वत्थूणि ॥ तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥२॥ चत्तारि दुवालस अट्ठचेव दसचेव चूलवत्थूणि॥

चूलिका वस्तु कही है ३ वीर्य प्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु, ४ आस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व को अठारा वस्तु दश चूलिका वस्तु ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व की बारा वस्तु ६ सत्य प्रवाद पूर्व की दो वस्तु, ७ आत्मप्रवाद पूर्व की-सोलह वस्तु ८ कर्मप्रवाद पूर्व की तीस वस्तु ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व की वीस वस्तु, १० विद्या प्रवाद पूर्व की पन्दरह वस्तु, ११ अवन्द्य पूर्व की—बारह वस्तु १२ प्राणायु पूर्व की—तेरा वस्तु १३ क्रिया विशाल पूर्व की तीस वस्तु और १४ लोक बिन्दुसार पूर्व की—पचीस वस्तु कही है संग्रहणी गाथा का अर्थ प्रथम पूर्व की १० वस्तु, दूसरे की १४ वस्तु तीसरे की ८ वस्तु, चौथे की १८ वस्तु पांचवे की १२ वस्तु, छठे की २ वस्तु, सातवे की १६ वस्तु, आठवे की ३० वस्तु, नववे की २० वस्तु दशवे की १५ वस्तु, इग्यारहवे की ११ वस्तु, बारवे की १२ वस्तु तेरवे की ३० वस्तु और चउदवे की २५ वस्तु ॥ २ ॥ प्रथम पूर्व की चार चूलिका वस्तु, दूसरे की १२ चूलिका, तीसरे की ८ चूलिका वस्तु, चौथे की

॥ आइलाण चउण्ह सेसाण चूलिया नत्थि ॥ २ ॥ से त पुव्वगए ॥ ९६ ॥ से कि त अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते तजहा—मूल पढमाणुओगे गडियाणुओगेय,॥ ९७॥से कि त मूलपढमाणुओगे?मूलपढमाणुओगे अरहताण भगव ताण पुव्वभावा देवलोग गमणाइ आउचवणाइ, जम्मणाणिय, अभिसेया रायवर सिरीओ पव्वज्जाओ तवायउग्गा, केवल नाणुप्पयणाओ तित्थ पवत्तणाणिय सीसागणा, गणहरा, अज्जायपवत्तिणीओ, सघस्स चउव्विहस्स, ज च परिमाण जिण मणपज्जव

२० चूलिका वस्तु, यों प्रथम के ४ पूर्व की चूलिका है शेष की चूलिका नहीं ॥ २ ॥ ९६ ॥ अहो भगवन् ! चौथा अनुयोग किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! चौथा अनुयोग के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ मूलप्रथमानुयोग और २ गण्डिकानुयोग अहो भगवन् ! मूलप्रथमानुयोग किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! मूलप्रथमानुयोग धर्म के मूल (प्रथम) प्ररूपक अर्हन्त भगवंत तीर्थंकर देव के कितने भव पहिले सम्यक्त्व प्राप्ति की व क्या करनी करने से तीर्थंकर हुवे सो, देव लोक में गये किया जन्म नगर जन्माभिषेक इन्द्र कृत, राज्याभिषेक, राज्य की प्रधान लक्ष्मी का भोग, दीक्षा ग्रहण तपोपधान ग्रहण केवल ज्ञान उत्पत्ति तीर्थ की प्रवृत्ति शिष्यों का परिवार, गणधर संख्या, साध्वी की संख्या, बड़ी साध्वी, साधु साध्वी श्रावक श्राविका की संख्या, जिन केवल ज्ञानी, मन पर्यव ज्ञानी, अवधि ज्ञानी, सम्यक्त्व पवि

सूत्र

... पुव्वस्सणं पणवीस वत्थू पण्णत्ता (गाहा) दस चोद्दस्स अट्ठ अट्ठारसेव, बारस दुवेय वत्थूणि ॥ सोलस्स तीसा वीसा, पण्णरस अणुप्पवायमि ॥ १ ॥ बारस इक्कारस मे बारस मे तेरसमेव वत्थूणि ॥ तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥२॥ चचारि दुवालस अट्ठचव दसमेव चूल्लवत्थूणि॥

अर्थ

चूलिका वस्तु कही है ३ वीर्य प्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु, ४ आस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व की अठारा वस्तु दश चूलिका वस्तु ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व की बारा वस्तु ६ सत्त प्रवाद पूर्व की दो वस्तु, ७ आत्मप्रवाद पूर्व की-सोलह वस्तु ८ कर्मप्रवाद पूर्व की तीस वस्तु ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व की वीस वस्तु, १० विद्या प्रवाद पूर्व की पन्दरह वस्तु, ११ अवद्ध पूर्व की—बारह वस्तु १२ प्राणायु पूर्व की—तेरा वस्तु, १३ क्रिया विशाल पूर्व की तीस वस्तु और १४ लोक विन्दुसार पूर्व की—पचीस वस्तु कही है संग्रहणी गाथा का अर्थ प्रथम पूर्व की १० वस्तु, दूसरे की १४ वस्तु तीसर की ८ वस्तु, चौथे की १८ वस्तु पांचवे की १२ वस्तु, छठे की २ वस्तु, सातवे की १६ वस्तु आठवे की ३० वस्तु, नववे की २० वस्तु दशवे की १५ वस्तु, इग्यारहवे की ११ वस्तु, बारवे की १२ वस्तु तेरवे की ३० वस्तु और चवदवे की २५ वस्तु ॥ २ ॥ प्रथम पूर्व की चार चूलिका वस्तु, दूसरे की १२ चूलिका, तीसरे की ८ चूलिका वस्तु, चौथे की

॥ आइल्लाण चउण्ह सेसाण चूलिया नत्थि ॥ २ ॥ से त पुव्वगए ॥ १६ ॥ से किं त अणुओगे ? अणुओग दुविहे पण्णत्ते तजहा—मूल पढमाणुओगे गंडियाणुओगेय,॥ १७॥से किं त मूलपढमाणुओगे?मूलपढमाणुओग अरहताण भगवताण पुव्वभाव देवलोग गमणाइं आउचवणाइ, जम्मणाणिय, अभिसेया रायवर सिरीओ पव्वज्जाओ तवायउग्गा, केवल नाणुप्पयणाओ तित्थ पवत्तणाणिय सीसागणा, गणहरा, अज्जायपवत्तिणीओ सघस्स चउव्विहस्स, ज च परिमाण जिण मणपज्जव

२० चूलिका वस्तु यों प्रथम के ४ पूर्व की चूलिका है शेष की चूलिका नहीं ॥ २ ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! चौथा अनुयोग किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! चौथा अनुयोग के दो भेद कहे हैं तद्यथा— १ मूलप्रथमानुयोग और २ गंडकानुयोग अहो भगवन् ! मूलप्रथमानुयोग किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! मूलप्रथमानुयोग धर्म के मूल (प्रथम) प्ररूपक अर्हन्त भगवत तीर्थंकर देव के कितने भव पहिले सम्यक्त्व प्राप्ति की व क्या करनी करने से तीर्थंकर हुवे सो, देव लोक का भव किया जन्म नगर जन्माभिषेक इन्द्र कृत, राज्याभिषेक, राज्य की प्रधान लक्ष्मी का भोग, दीक्षा ग्रहण तपोपधान ग्रहण केवल ज्ञान उत्पत्ति तीर्थ की प्रवृत्ति शिष्यों का परिवार, गणधर संख्या, साध्वी की संख्या, बड़ी साध्वी, साधु साध्वी श्रावक श्राविका की संख्या, जिन केवल ज्ञानी, मन पर्यव ज्ञानी, अवधि ज्ञानी, सम्यक्त्व श्रुत

चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता, अग्गाणिय पुव्वस्सणं चोद्दसवत्थु दुवालस चूलिया वत्थु पण्णत्ता, वीरिय पुव्वस्सण अट्ठवत्थु अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता, अत्थिन त्थिप्प वाय पुव्वस्सण अट्ठारसवत्थू दस चूलियावत्थू पण्णत्ता, नाणप्पवाय पुव्वस्सणं

लिखा जावे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व-इस में पांच ज्ञान का स्वरूप बहुत विस्तार से है इस के एक क्रोड पद हैं और १६ हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ६ सत्यप्रवाद पूर्व-इस में १७ संयम के तथा १० सत्य वचन के भेद कहे हैं इस के एक क्रोड और ७ पद हैं, यह ३२ हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ७ आत्म प्रवाद पूर्व—इस में आठ आत्मा के अनेक भेद कहे हैं इस के छब्बीस क्रोड पद हैं और ६४ हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ८ कर्म प्रवाद पूर्व—इस में आठों कर्मों की प्रकृतियों का कथन है इस के एक क्रोड अस्सी लाख पद हैं और १२८ हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व—इस में मूल गुन उत्तर गुन प्रत्याख्यान का वर्णन है इस के चौरासी लाख पद हैं २५६ हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जाय १० विद्या प्रवाद पूर्व—इस में अनेक प्रकार की ज्ञानातिशय की चमत्कारिक विद्याओं हैं इस के एक क्रोड दश हजार पद हैं और ५१२ हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जाय ११ अवंध्य पूर्व-इस में तप संयम के फल वर्णन निष्फल नहीं होते हैं इस का कथन है इस के छब्बीस क्रोड पद हैं, और यह १०२४ हस्ति डूबे जितनी

बारसवत्थू पण्णत्ता, सच्चप्पवाय पुव्वस्सणं दोण्णिवत्थू पण्णत्ता आयप्पवाय पुव्वस्सण सोलसवत्थु पण्णत्ता, कम्मप्पवायपुव्वस्सण तीसवत्थू पण्णत्ता पच्चक्खाण पवाय पुव्वस्स ण वीसवत्थू पण्णत्ता, विज्जाणुप्पवाय पुव्वस्सण पण्णरसवत्थु पण्णत्ता, अवञ्झ पुव्वस्सणं बारसवत्थु पण्णत्ता, पाणाओ पुव्वस्सणं तेरसवत्थू पण्णत्ता किरिया विसाल पुव्वस्सण

स्याही स [ ] खा जावे १२ प्राणायु पूर्व-इस में आयुष्य के तथा दश प्राण के भेद कहे हैं इस के एक क्रोड छप्पन लाख पद हैं और २०४८ हस्ति हूए इतनी स्याही स लिखा जाय ११ क्रियाविशाल पूर्व—इस में तेरह क्रिया तथा पचीस क्रिया के भङ्गानुभङ्ग कहे हैं इस के नव क्रोड पद हैं और यह ४०९६ हाथी हूये इतनी स्याही से लिखा जाय और १४ लोक बिन्दुसार पूर्व, इस में सर्व जिनागम के सार रूप बिन्दु समान सर्वज्ञान का संक्षेप कथन है इस के साढीबारा क्रोड पद है. और यह ८१९२ हस्ति हुवे इतनी स्याही से लिखा जावे चौदा ही पूर्व के लिखने में १६३८३ हाथी हूये इतनी स्याही स लिखे जावे + अब इन १४ पूर्व की वस्तु (अध्याय रूप) है उस का कथन करते हैं—१ उत्पाद पूर्व की दश वस्तु और चार च [ ] [ ] ता है *२ अग्रायणिय पूर्व की चउदह वस्तु और बार

+ ज्ञान किसीने लिखा नहीं। अ [ ] केवला ही [ ] के ज्ञान गौरव के लिये परिमाण बताया है

* मूल समस्त हुवे पहा आदि में जो विशेष अध्याय होते है उसे [ ] कही जाती है

चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता, अग्गाणिय पुव्वस्सणं चोद्दसवत्थु दुवालस चूलिया वत्थु पण्णत्ता, वीरिय पुव्वस्सण अट्ठवत्थु अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता, अत्थिन त्थिप्प वाय पुव्वस्सण अट्ठारसवत्थू दस चूलियावत्थू पण्णत्ता, नाणप्पवाय पुव्वस्सणं

लिखा जावे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व-इस में पांच ज्ञान का स्वरूप बहुत विस्तार से है इस के एक क्रोड पद हैं और १६ हस्ति दूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ६ सत्यप्रवाद पूर्व-इस में १७ संयम के तथा १० सत्य वचन के भेद कहे हैं इस के एक क्रोड और ७ पद हैं, यह ३२ हस्ति दूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ७ आत्म प्रवाद पूर्व—इस में आठ आत्मा के अनेक भेद कहे हैं इस के छब्बीस क्रोड पद हैं और ६४ हस्ति दूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ८ कर्म प्रवाद पूर्व—इस में आठों कर्मों की प्रकृतियों का कथन है इस के एक क्रोड अस्सी लाख पद हैं और १२८ हस्ति दूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व—इस में मूल गुन उत्तर गुन प्रत्याख्यान का कथन है इस के चौरासी लाख पद हैं २५६ हस्ति दूबे इतनी स्याही से लिखा जाय १० विद्या प्रवाद पूर्व—इस में अनेक प्रकार की ज्ञानातिशय की चमत्कारिक विद्याओं हैं इस के एक क्रोड दश हजार पद हैं और ५१२ हस्ति दूबे इतनी स्याही से लिखा जाय ११ अवन्ध्य पूर्व-इस में तप संयम के फल वन्ध्य नहीं होते हैं इस का कथन है इस के छब्बीस क्रोड पद हैं, और यह १०२४ हस्ति दूबे जितनी

चउद्दसविहे पण्णत्ते तंजहा-उप्पायपुव्वं, अग्गाणीयं, वीरीयं, पुव्वं अत्थिनत्थिप्पवायं, नाणप्पवायं, सच्चप्पवायं आयप्पवायं, कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं, विज्जाणुप्पवायं, अवञ्झं पाणाओ, किरियाविसाल लोकबिंदुसार ॥ उप्पाय पुव्वस्सणं पत्तवत्थु

॥ ६९ ॥ अहो भगवन् ! पूर्वगत किस को कहते हैं ? अहो गौतम ! पूर्वगत के १४ भेद कहे हैं, * तद्यथा-१ उत्पाद पूर्व-इस में सर्व द्रव्य के सर्व पर्याय के उत्पन्न होने का कथन कहा है इस के एक क्रोड पद होते हैं और यह एक हस्ति अम्बाडी सहित डूब जाय इतनी स्याही द्वारा लिखा जावे २ अग्रणीय पूर्व—इस में सर्व जीव की पर्याय तथा जीव के अग्र परिमाण है. इस के छिन्नु (९६) लाख पद का परिमाण है और यह दो हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ३ वीर्य प्रवाद पूर्व—जीवा जीव के योग्य वीर्य का तथा सकल पंडित वीर्य का कथन है इस के सित्तर (७०) लाख पद होते हैं और चार हस्ति डूबे इतनी स्याही से लिखा जावे ४ अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व—इस में धर्मास्ति आदि की आस्ति नास्ति का कथन है तथा वस्तु स्वरूप कर आस्ति है पररूप कर नास्ति है इत्यादि कथन है इस के साठ लाख पद हैं और आठ हस्ति डूबे इतनी स्याही से

* तीर्थंकर के तीर्थ की प्रवृत्ति होते ही तीर्थकी स्थापना करे तब गणधर को प्रथम यह ज्ञान होने से इन का नाम 'पूर्व' कहा जाता है

इच्चेइयाइ बावीससुत्ताइ, छिण्णच्छेयनं इयाणि ससमय सुत्त परिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ अच्छिण्णछेय नइयाणिइ आजीविय सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ तिगनइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, सुत्ताइ एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइ भवतीत्ति मक्खाइ से तं सुत्ताइ ॥ ६५ ॥ से किं तं पुव्वगए ? पुव्वगए

पुष्प, १६ वेयावृत, १७ एवभूत १८ दुयावर्त, १९ वर्तमान पद, २० समभीरुह, २१ सर्वतोभद्रपनास, और २२ द्विपतिग्राही यह २२ सूत्र छिन्नछेदित है अर्थात् जिस प्रकार धम्मो मंगल मुक्किट्ठं यह एक पद इसका छेद तीन स्थान हुवा जैसे धम्मो धर्म, मंगल-मंगलिक, उक्किट्ठं-उत्कृष्ट इस प्रकार सब जानना यह ससमय जिनमत के शास्त्रों की परिपाटी है अर्थात् पूर्व पक्ष स्वमत जिन मतानुसार है २ यह ही २२ सूत्र अछिन्न छेदित जिन का मर्म अर्थ होवे वे आजीव का पंथी (गोशाला) के मत की परिपाटी के होवे हैं ३ यह ही २२ सूत्र त्रिराशिक के मत के भी माननीय है ४ यह ही २२ सूत्र संग्रह× व्यवहार, ऋजु सूत्र और शब्द चार नय कर के स्वमत की परिपाटि होवे यों यह २२ सूत्र चारों प्रकार के होने से पूर्वो पर सब मिलाते ८८ होते हैं ऐसा कहा है यह दूसरा सूत्र का स्वरूप कहा

× जीवराशी, २ अजीव राशी, और नो जीव नो अजीव राशी इन राशीके मत का स्थापक गोष्ठा माहिल्लमत

ससार पडिग्गहो नन्दावत्त पुयापुयावत्तं चउक्कनइ, सत्ततेरासियाइ, सेत सेणिया परिक्कमे ॥ से तं परिक्कमे ॥ स किं त सुत्ताइ ? सुत्ताइ बावीस पण्णत्ताइ तंजहा उज्जुसुयं, परिणयापरिणयं, बहुभंगियं, विजयचरियं अणंतर, परपर, सामाणं, सजूहं, साभिण्णं, अहव्वाइ, सोवत्थिय घंटं, नंदावत्त, बहुल, पुट्ठापुट्ठं, वियावत्तं, एव भूय, दुयावत्त, वत्तमाणुप्पय, समभिरूढ, सव्वओभद्द, पण्णास, दुप्पडिग्गहं,

तथया—१ पाठ प० २ आकाश पद ३ केतुभूत ४ राशीबंध, ५ एक गुन, ६ द्विगुन, ७ त्रिगुन, ८ केतुभूत परिग्रह ९ संसारमत पारग्रह, १० नन्द्यावत और ११ विपजाहित श्रेणि यह विपजाहित श्रेणि कहा अहो भगवन् ! पुताधुत श्रेणि परिक्रम किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! पुताधुत श्रेणि परिक्रम के इग्यारह भेद कहे तथया—१ प्रथम पद, २ आकाशपद ३ केतुभूत, ४ राशीबंध, ५ एक गुन, ६ द्विगुन ७ त्रिगुन, ८ केतुमत परिग्रह, ९ संसार परिग्रह, १० नन्दावर्त और ११ पुता पुतवर्त, ये पुताधुत श्रेणि परिक्रम कहा और यह चार नय युक्त प्रथम परिक्रम के भेदानुभेद कहे अहो भगवन् ! सूत्र किस को कहते हैं ! अहो गौतम ! सूत्र के बावीस भेद कहे हैं तथथा १ ऋजु सूत्र, २ परिणतापरिण, ३ बहु भंगी, ४ विजयाचार, ५ अनंतर, ६ परम्पर, ७ सामान्य सूत्र, ८ संयुक्त, ९ संभिन्न, १० यथा तथ्य, ११ सावस्ति, १२ घंटा, १३ नन्दावर्त, १४ बहुल, १५ पुष्ट

तिगुण, केउमूय, पडिग्गहो, ससार पडिग्गहो, नदावच, ओगाढावच, से तं ओगाढसेणिया परिकम्मे ॥ से किं त उपसपज्जण सेणिया परिकम्मे ? उपसपज्ज सेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते तजहा—पाढोपयाइ आगास पयाइ, केउभूयं रासिवद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउमूय, पडिग्गहो, ससार पडिग्गहो, नदावच, विप्पजहणावच्च, से त विप्पजहण सेणिया परिकम्मे ॥ से किं त चुयअचुय सेणिया परिकम्मे ? चुय अचुय सेणिया परिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते तजहा—पाढोरयाइ आगासपयाइ, केउभूय,रासिवद्ध, एगगुण,दुगुणं,तिगुण,केउभूय,पडिग्गहो,

परिक्रम के इग्यारे भेद कहे हैं तद्यथा—१ पाठ पद, २ आकाश पद, ३ केतुभूत पद, ४ राशीबध पद ५ एक गुन, ६ द्विगुन, ७ त्रिगुन, ८ केतुभूत, ९ ससार परिग्राहित १० नदावर्त, और ११ ऊगाढ परिक्रम यह ऊगाढ श्रणि परिक्रम कहा अहो भगवन् ! उपसम्पदा श्रेणिक परिक्रम किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! उप सम्पदा श्रेणिक परिक्रम के इग्यारह भेद कहे हैं तद्यथा—१ पाठ पद, २ आकाश पद, ३ केतुभूत, ४ राशीबंध, ५ एक गुन ६ द्विगुन, ७ त्रिगुन, ८ केतुभूत परिग्रह, ९ संसार परिग्रह १० नन्दावर्त और ११ उप सम्पदावर्त यह उपसम्पदा श्रेणिक का कहा अहो भगवन् ! विपजहित श्रेणि परिक्रम किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! विपजहित श्रेणि परिक्रम के भी इग्यारह भेद कहे हैं,

पडिकम्मे चउदसविहे पण्णत्त तंजहा-माउयापयाइ एगट्ठियापयाइ अठापयाइ, पाढोया-पयाइ आगासपयाइं, केउभूय रासिबद्ध एगगुण दुगुण तिगुणं केउभूय पडिग्गहो नदावत्त मणुसावत्त से त मणुस्स सेणिया परिकम्मे॥ से किं त पुट्ठसेणिया परिकम्मे? पुट्ठसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते तंजहा पाढोपयाइ आगासपयाइ केउभूय रासिबद्ध एगगुण दुगुण तिगुण, केउभूय पडिग्गहो ससार पडिग्गहो नंदावत्त पुट्ठावत्त, से त पुट्ठसेणिया परिकम्मे ॥ से किं त ओगाढसेणिया परिकम्मे ? ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते तंजहा—पाढोपयाइ अगासपयाइ, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण,

६ केतुभूत पद ७ राशीबन्ध पद, ८ एकगुन ९ द्विगुन १० त्रिगुन ११ केतुभूत परिग्राहित, १२ संसार परिग्राहित पद १३ नन्दावर्त, और १४ सिद्धावत यह सिद्ध श्रेणिक [परि]क्रम के भेद कहे अहो भगवन्! म[नु]ष्य श्रेणिय परिक्रम किसे कहते हैं! अहो गौतम! मनुष्य श्रेणि परिक्रम के चउदे भेद कहे हैं तद्यथा—१ मातृक पद, २ एकार्थ पद, ३ अर्थ पद, ४ पाठ पद, ५ आकाश पद, ६ केतुभूत पद ७ राशीबंध पद, ८ एक गुन, ९ द्विगुण १० त्रिगुण, ११ केतुभूत, १२ ससार परिग्रह १३ नन्दावर्त और १४ मनुष्यावत यह मनुष्य श्रेणिय परिक्रम कहा अहो भगवन्! पुष्ट श्रेणिक परिक्रम किसे कहते हैं! अहो गौतम! पुष्ट श्रेणिक

कम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते तजहा सिद्धसेणिया परिकम्मे मणुस्ससेणिया परिकम्मे, पुट्ठसेणिया परिकम्मे, उगाढसेणिया परिकम्मे, उवसपज्जसेणिया परिकम्मे विप्पजहणसेणिया परिकम्मे, चुयाचुयसेणिया परिकम्मे ॥ ६४ ॥ से किं त सिद्धसेणिया परिकम्मे ? सिद्धसेणिया परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते तजहा माउयापयाइ, एगट्ठियपयाइ अट्ठापयाइ पाढोआपयाइ आगासपयाइ, केउभूय, रासिबद्ध एगगुण दुगुण तिगुण केउभूय पडिग्गहे ससारपडिग्गहो नदावत्त, सिद्धावत्त, से त सिद्धसेणिया परिकम्मे ॥ से किं त मणुस्ससेणिया परिकम्मे ? मणुस्ससेणिया

परिकर्म, २ सूत्र ३ पूर्वगत ४ अनुयोग, और ५ चूलिका अहो भगवन् ! परिक्रम किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! परिक्रम के सात भेद कहे हैं तद्यथा १ × सिद्ध श्रेणिका परिक्रम, २ मनुष्य श्रेणिका परिक्रम, ३ पुष्टिका परिक्रम, ४ अवगाहना की श्रेणिका परिक्रम, ५ उपसम्पदा (अंगीकार की) श्रेणिका परिक्रम, ६ विपजहित (छोडने की) श्रेणिका परिक्रम, और ७ चुताचुत श्रेणिका परिक्रम अहो भगवन् ! सिद्ध श्रेणि परिक्रम किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! सिद्ध श्रेणि परिक्रम के चउदे भेद कहे हैं तद्यथा १ मातृक पद, २ एकास्थित पद, ३ अर्थपाद पद ४ पीढ पद, ५ आकाश पद, ६

× परिक्रम शब्द का अर्थ गिनती होता है

पयग्गेण संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा, परित्तातसा, अणंता थावरा, सासयकड निबद्ध निकाइया, जिणपण्णत्ताभावा, आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरण करण परूवणा आघविज्जइ से तं विवागसुयं ॥ ११ ॥ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाएणं सव्वभाव परूवणा आघविज्जइ से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा परिकम्मं, सुत्ताइं, पुव्वगए, अणुओगे, चूलिया ॥ से किं तं परि

[१८४३२०००] पद एकेक पद के संख्याते अक्षर, अनंत अर्थागम, अनंत पर्याय अक्षरों के परित्ता त्रस, अनंत स्थावर, पर्यास्तिकायादिक शाश्वत भाव, समास का निबंध जिनेश्वर भणित भाव सामान्य प्रकार के कहा है विशेष प्रकार कहा दर्शाया, विशेष दर्शाया, सभा में उपदेशा, यह इस प्रकार आत्मा आस्तिक्यता का स्वरूप, जिनाज्ञा आराधने का विराधने का स्वरूप विज्ञान सुकृत्य दुष्कृत्य का सुखदु ताख्य ऐसे ही चरण सीत्तरी जो साधु के सदैव क्रिया करने में आवे उस का स्वरूप करणसित्तरी जो साधु के प्रत्येक क्रिया करने में आवे उस का स्वरूप, कहा है यह विपाक सूत्र का स्वरूप कहा है ॥ ११ ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! दिट्ठीवाद सूत्र के क्या भाव कहे हैं ! अहो गौतम ! दृष्टी वाद सूत्र में सर्व प्रकार के भाव की प्ररूपना कही है, उस समास के पांच प्रकार कहे हैं तद्यथा १

पव्वज्जाओ परियाया सुय परिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ भत्त पच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ देवलोग गमणाइ सुह परपराओ सुकुल पव्वायाईओ, पुणबोहि लाभा, अतकिरियाओय, आघविज्जति विवागसुयस्सण परित्तावायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जावेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ सखिज्जाओ सगहणीओ सखिज्जाओ पडिवत्तीओ,सण अगट्ठयाए इक्कारसमे अगे दो सुय खधा वीस अज्झयणा, वीस उद्देसण काला, वीस समुद्देसणकाला सखिज्जाइ पय सहस्साइ,

भोग परित्याग का, दीक्षा ग्रहण करने का, सूत्र ज्ञान ग्रहण करने का, तपोपधान आचरने का, संलेपना का, भक्त प्रत्याख्यान का, पादोपगम के सथारे का, देवलोक में उत्पन्न होने का, सुख की परम्परा से भव करने का, उत्तम कुल में उत्पन्न होने का, पुन बोध बीज सयम की प्राप्ति का सर्व कर्मों का नाश कर मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार कहा है विपाक सूत्र की परित्ता वाचना शिष्य को सूत्रार्थ प्रदान रूप, संख्याते अनुयोग द्वार चरितानुयोगादि सख्याते वेढाछद प्रभ समास संख्यात श्लोक-अनुष्टुपादि संख्यात निर्युक्ति अर्थ की युक्ती मिलाने की रीती सख्याती सग्रहणी सर्व समास की सक्षेपिक गाथा सख्याती भाष्यवृती समास सकलने की यक्ति, इस अगार्थ इग्यारमे अग के दो श्रुतस्कन्ध जिस के बीस अध्ययन बीस उद्देसे, बीस समुद्देसे प्रश्नोत्तर रूप संख्याते छाख

दस दुहविवागाण नगराइ उज्जाणाइ वणसडाइ चेइयाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय परलोइय इड्डिविसेसा निरयगमणाइ, ससार भवपवचाय,दुह परपराओ दुकुल पच्चायाइओ, दुलहबोहियत्त आघविज्जइ से त दुहविवागा ॥ से किं त सुह विवागा ? सुह विवागसुण सुहविवागाण नगराइ उज्जाणाइ वणसडाइ चेइयाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय परलोइय, इड्डिविसेसा, भाग परिच्चाया

सुकृत्य दुष्कृत्य रूप किये हुवे कर्मों के फल का विपाक कहा है यहां दश अध्ययन दुःख विपाक के हैं उस में नगर का उद्यान का, वनखंड का, चैत्य का तीर्थंकर के समवसरण का, राजा का, माता पिता का धर्माचार्य का धर्मकथा का इस लोक परलोक का ऋद्धि विशेष का पाप कर्मोपार्जन कर नरक गति गमन का, संसार के भव परभव में परिभ्रमण करने का दुःख की परम्परा भुक्तने का नीच कुलों में उत्पन्न होने का, बोध बीज सम्यक्त्व की दुर्लभता का अधिकार कहा है यह दुःख विपाक के भाव कहे हैं अहो भगवन् ! सुख विपाक के क्या भाव हैं ? अहो गौतम ! सुख विपाक में सत्य रूपफल भोगवने वाले जीवों के नगर का उद्यान का, वनखंड का चैत्य का तीर्थंकर के समवसरण का राजा का, माता पिता का, धर्माचार्य का, धर्मकथा का, इस लोक का परलोक का, ऋद्धि विशेष का,

संखिज्जासिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से सं अगट्ठयाए दसमेअंगे एगे सुयक्खधे पणयालीस अज्झयणा पणयालीस उद्देसणकाला पणयालीस समुद्देसणकाला संखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणं संखिज्जाअक्खरा, अणंतागमा अणंतापज्जवा, परित्ता तसा अणंताथावरा, सासयकड निबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता, भावा, आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया एवंविण्णाया, एवं करण चरण परूवणा आघविज्जंति से तं पण्हावागरणाइं ॥ ५२ ॥ से किं तं विवागसुयं ? विवागसुएणं सुकड दुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ, तत्थणं

वार्तालाप करने का अधिकार कहा है प्रश्नव्याकरण सूत्र की परित्ता वांचना, संख्यात अनुयोग द्वार, संख्यात श्लोक, संख्यात वेढा, संख्यात निर्युक्ति, संख्यात संग्रहणी गाथा, संख्यात प्रतिवृत्ति, दस अंगार्थ—दशवे अंग का एक श्रुतस्कन्ध, ४५ अध्ययन, पैंतालीस उद्देशा संख्यात लाख [९२१६०००] पद एकेक पद के संख्यात अक्षर अनंत अर्थागम अनंत पर्याय परित त्रस, अनंत स्थावर, शाश्वत भाव सूत्रार्थ निबंध जिनेश्वर प्रणित भाव, कहे हैं विशेष कहे हैं दर्शाये निदेष दर्शाये उपदेशे वे ऐसे आत्मा जिनाज्ञा विधान यों चरण करण की प्ररूपना करी यह प्रश्नव्याकरण के भाव कहे ॥ १० ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! विपाक सूत्र के क्या भाव कहे ? अहो गौतम ! विपाक सूत्र में

परित्तासता अणता थावरा सासयकड निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ताभावा, आघविज्जति, पण्णविज्जति पल्लविज्जति, दंसिज्जति, निदसिज्जति, से एव आया एव नाया, एव विण्णाया, एव चरण करण परूवणा आघविज्जइ से त अणुत्तरोववाइय दसाओ ॥ ९१ ॥ से किं त पण्हावागरणाइ ? पण्हावागरणसुण अठुत्तर पसिणसय अठुत्तर अपसिणासय अठुत्तर पसिणापसिणसय तजहा अगुट्ठपसिणाइ बाहुपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अण्ण विचित्ता दिव्वा विज्जाइ, सया नाग सुवण्णेहिं सिद्धि दिव्वा सवाया आघविज्जति पण्हावागरणाण परित्ता वायणा सखिज्जाअणुओगदारा, सखिज्जावेढा,

सख्यात भाग [४६८००००] पद, एकेक पद क संख्यात अक्षर अनत गमागम, परित्त त्रस, अनंत स्थावर शाश्वत भाव की प्ररूपना अनुक्रम निकाचित जिन भाषित भाव कह विशेष कर प्ररूपे दर्शाये, विशेष दर्शाये वे ऐसे आत्मा विज्ञान यह करण चरण की प्ररूपना कही यह अनुत्तरो पपातिक सूत्र के भाव कहे ॥ ९ ॥ ९१ ॥ अहो भगवन् ! प्रश्नव्याकरण सूत्र के क्या भाव कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रश्नव्याकरण सूत्र में १०८ प्रश्न पूछे उस का उत्तर १०८ बिना पूछे प्रश्नोत्तर, तथथा- अंगुष्ट क प्रश्नोत्तर, बाहु के प्रश्नोत्तर, आदर्श प्रश्नोत्तर अन्य भी अनेक प्रकार के दिव्य-महा प्रभावक विद्या [मंत्र] के सेकडों प्रयोग नाग कुमार सुवर्ण कुमार देवता को साध कर उन से शुभाशुभ लाभालाभ का

भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ पडिमाओ उवसग्गा सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ अणुत्तरोववाइय्वि उववण्णा सुकुले पव्वयाइओ, पुणबोहिलाभा अतकिरियाओय आघविज्जति जाव अणुत्तरोववाइयदसाण परित्ता वायणा सखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जावेढा संखिज्जासिलोगा, सखिज्जाओ निजुत्तीओ सखिज्जाओ सगहणीओ सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, सेणं अगट्ठयाए नवमे अगे एगेसुयखधे तिण्णिवग्गा तिण्णिउद्देसणकाला, तिण्णिसमुद्देसणकाला, सखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण सखिज्जाअक्खरा, अणतापज्जवा,

माता पिता का, धर्माचार्य का, धर्मकथा का, इस लोक का, ऋद्धि के विशेपत्व का, भोगोपभोग परित्याग का, सूत्र ज्ञान ग्रहण करने का, तपोपधान का, साधु की बारा प्रतिमा वाहन का, उपसर्ग उत्पन्न होने का, संलेपना का, भक्त प्रत्याख्यान का, पादोपगमन संथारे का, अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने का, पुनः मनुष्य लोक में सुकुल में उत्पन्न होने का पुनः बोध बीज सयम की प्राप्ति का लाभ का, और कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्ति का कथन कहा है, अनुत्तरोपपातिक सूत्र की परित्ता वाचना संख्यात अनुयोग संख्यात वेढा, संख्यात श्लोक, संख्यात निर्युक्ति, संख्यात संग्रहणी गाथा, संख्यात प्रतिपृच्छा, उस अंगार्थ-नववे अंग का एक ही श्रुतस्कन्ध तीन वर्ग, तीन उद्देशा, तीन समुद्देशा काल,

सणकाला, सखिज्जापयसहस्सा पयग्गेण सखिज्जाअक्खरा, अणतागमा, अणतापज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयकड निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ताभावा, आघविज्जति पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एवं आया एवं नाया, एव विण्णाया एव चरण करण परूवणा, आघविज्जइ, स त अतगडदसाओ ॥ १० ॥ से कि त अणुत्तरोववाइयादसाओ ? अणुत्तरोव वाइयदसाण अणुत्तरोववाइयाणं नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणसडाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मापियरो धम्मयरिया धम्माकहाओ, इहलोइय परलोइया, इड्ढिविसेसा

साधिवृत्तिमों, इस अंगार्थ अष्टम अंग का एक श्रुतस्कन्ध जिस के आठ वर्ग आठ वहेशे के काल, आठ समुदेश के काल, संख्यात हजार [२१०४०००] पद, एकेक पद के सख्यात अक्षर, अनंत अर्थागम, अनंत पर्याय परिता त्रस, अनंत स्थावर, शाश्वत भाव सूत्रार्थ निबन्ध जिनश्वर भणित भाव सामान्य कहे, विशेष कहे, मरूपे, दर्शावे, विशेष दर्शाये वे इस मकार आत्मा, जिनाज्ञा, विज्ञान यों करण चरण परूपे है यह अन्तकृत दशांग के भाव ॥ ८ ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अनुत्तरोपपातिक सूत्र के क्या भाव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तरोपपातिक सूत्र में अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने वाले जीवों के नगर का, उद्यान का, चैत्य का, वनखंड का, तीर्थंकर के समवसरण का, राजा का,

से तं उवासगदसाओ ॥ ५९ ॥ से किं तं अतगडदसाओ अतगडदसासुण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइं वणसडाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मापियरो, धम्मकहाओ, इहलोइय, परलोइय, इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परियाया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अतकिरियाओय आघविज्जति,अतगडदसाण परित्ता वायणा, सखिज्जाअणुओगदारा सखिज्जावेढा सखिज्जासिलोगा,सखिज्जाओ निजुत्तीओ सखिज्जाओ सगहणीओ सखिज्जाओ पडिवत्तीओ,सेण अगट्ठयाए अट्ठमे अगे एगे सुयक्खधे अट्ठवग्गा, अट्ठउद्देसणकाला,अट्ठसमुद्दे-

करण की प्ररूपना करी यह उपासक दशांग के भाव ॥ ७ ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! अन्तकृत दशांग सूत्र के क्या भाव कहे ? अहो गौतम ! अन्तकृत दशांग में जिन २ जीवोंने कर्मों का अन्त किया है उन के नगर का, उद्यान का, चैत्य (यक्षालय) का वनखंड का, समवसरण का, राजा का, माता पिता का, धर्माचार्य का धर्मकथा का, इस लोक परलोक की ऋद्धि का, भोगोपभोग परित्याग का, श्रुत ज्ञान ग्रहण करने का, तपोपधान करने का संलेषना करने का भक्त प्रत्याख्यान का, पादोपगमन संथारा का, कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करने का कथन कहा है अन्तकृत शास्त्र की परिता वाचना, संख्यात अनुयोग द्वार, सख्यात वेढा, संख्यात श्लोक, संख्यात निर्युक्ति, संख्यात संग्रहणी गाथाओं सख्यात

उवासग दसाण परिताओयणा,सखिज्जा अणुओगदारा,सखिज्जावेढा, संखिज्जा सिलोगा सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ सेण अगट्ठयाए सत्तमेंअगे एगेसुयखधे दसअज्झयणाए दस उद्देसण काला दस समुद्देसण काला, सखिज्जापय सहस्सा, पयग्गेण संखिज्जा अक्खरा अणतागमा अणतपज्जवा, परित्तातसा, अणताथावरा, सासयकड॰निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ताभावा आघवि- ज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदसिज्जति उवदंसिज्जति से एव आया एव नाया एव विण्णाया एव चरण करण परूवणा आघविज्जति

होने का, पुन सकुल में उत्पन्न होने का, पोप बीज-सम्यक्त्व का लाभ प्राप्त होने का क्रमान्त कर मोक्ष प्राप्त करने का इत्यादि कथन कहा है उपासक दशांग सूत्र की परिता वाचना, संख्यात अनुयोग द्वार, संख्यात वेढा संख्यात श्लोक, संख्यात निर्युक्ति, संख्यात संग्रह यह अगार्थ सातवे अग का एक श्रुतस्कन्ध जिस के दश अध्ययन दश उद्देशे के काल, दश समुद्देशे के काल संख्यात लाख [११८०० ०] पद एकेक पद के संख्यात अक्षर, अनत अर्थागम, अनत पर्याय, परिता त्रस, अनत स्थावर, शाश्वत भाव सूत्र के निबन्ध जिनेश्वर भणित भाव सामान्य प्रकार से कहे, विशेष कहे, दर्शाये विशेष दर्शाये, उपदेशे ऐसे आत्मा जिनाज्ञा विज्ञान यों करण

एव नाया, एव विण्णाया एव चरणकरण परूवणा आघविज्जइ, से त नायधम्म कहाओ ॥ ५८ ॥ से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासुण समणोवासगाण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणसडाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ, इह लोइय इड्ढी विसेसा, भोग परिच्चाया, परियागासुय परिग्गहा, तवोवहाणाइ सीलव्वय गुणवेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासपडिवज्जा- णया, पडिमाओ उवसग्गा सलेहणाओ भत्त पच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोग गमणाइ, सुकुले पच्चयाईओ, पुणबोहीलाभा अतकिरियाओय, आघविज्जति

का स्वरूप कहा यह ज्ञाता धर्म कथा का वर्णन ॥ ६ ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! उपासक दशांग में क्या है ? अहो गौतम ! उपासक दशांग में श्रमणोपासक (श्रावकों के) नगर का, उद्यान का, चैत्यों [यक्षालय] का, वनखण्डों का तीर्थंकर के समवसरण का, राजा का, माता पिता का धर्माचार्य का, धर्म कथा का इस लोक परलोक सम्बन्धी ऋद्धि का, भोग परित्याग का, सिद्धान्त का, ज्ञान ग्रहण करन का, तपोपधान करने का, पांच शील (अणु) व्रत का, तीन गुणव्रत का, चार शिक्षा व्रत का, प्रत्याख्यान पौषधोपवास अंगीकार करने का, श्रावक की इग्यारे प्रतिमा वहन करने का, देवादि के उपसर्ग उत्पन्न होने का, संलेषणा करने का, भक्त प्रत्याख्यान करने का, पादोपगमन संथारा का, देवलोक में उत्पन्न

भपतित्ति भवक्खाय, नायाधम्मकहाण, परिशावायणा, सखिजा अणुओगदारा, सखिज्जाचढा सखिज्जासिलागा सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ सखिज्जाओ सगहणिओ सखिज्जाओ पडिवित्ताओ, सेण अंगट्ठयाए छट्ठेअगे दोसुयसधा, एगूणवीस अज्झयणा एगुणवीस उद्देसणकाला एगूणवीस समुद्देसणकाला सखिज्जा पयसहस्सा पयग्गेण सखिज्जा अक्खरा, अणतागमा, अणतापज्जवा, परित्तातसा, अणताथावरा सासयकड निबद्ध निकाइया, जिणपण्णत्ताभावा, आघविज्जति, पण्णविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति से एव आया

तीन क्रोड़ (१५००००००) धर्म कथा होती है सो कही है भाषा धर्मकथांग की परिता वाचना संख्यात अनुयोग द्वार संख्यातवेढा संख्यात श्लोक सख्याती नियुक्ति संख्यात संग्रहणी, संख्यात प्रतिपत्ति, उस अगार्थ छट्ठे अंग के दो श्रुतस्कन्ध प्रथम श्रुतस्कन्ध के गणीस अध्ययन गणीस उद्देश,के काल,गुणीस समुद्देश के काल दूसर श्रुतस्कन्ध के २१६ अध्ययन संख्यात लाख(५७६०००)पद,एकेक पद के संख्यात अक्षर, अनंत अथागम अनंत पर्याय परित्तमस अनंत स्थावर, शाश्वत मात्र श्लाकादिका निबन्ध,जिनेश्वर भणित भाव सामान्य प्रकार कहे, विशेष स्वरूप से कहे प्रकर्ष प्रकरो दर्शाय, विशेष दर्शाये, सभा में उपदेश

इस प्रकार आत्म स्वरूपक था, जिनाज्ञा स्वरूपक था, विज्ञान कर कहा यों चरणसित्तरी करणसित्तरी

अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइया, परलोइया, इड्डिविसेसा, भोगपरिच्चया, पव्वज्जाओ, परियाया, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलेपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जति, जाव दसधम्मकहाण वग्गा, तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पच २ अक्खाइआ सयाइ, एगमेगाए अक्खाइआए पच २ उवक्खाइआ, सयाइ एगमेगाए उवक्खाइआए पच २ अक्खाइआए उवक्खाइया सयाइ, एवामेव सपुव्वावारण अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ

स्वण्ड का, तीर्थंकर के समवसरण का, राजा का माता पिता का, धर्माचार्य का धर्म कथा का, इस लोक का, परलोक का, ऋद्धि विशेष का भोगोपभोग के परित्याग का, दीक्षा ग्रहण करने का, सूत्र ज्ञानाभ्यास का, तप उपधान का संलेषना का, भक्त प्रत्याख्यान का, पादोपगमन संथारे का, देवलोक में गमन करने का, पुन सुकुल में जन्म लेने का पुन बोधबीज संयम का लाभ प्राप्त होने का, कर्म अन्त कर मोक्ष प्राप्ति का अधिकार कहा है दस धर्म कथा के वर्ग समग्र कहा है यहां एकेक धर्म कथा के वर्ग की पांच २ सो अख्याइका कही है एकेक अख्याइका में पांच २ सो उपअख्याइका, एकेक उपअख्याइ का में पांच २ सो अख्याइ उपअख्याइ का, यों पूर्वापर गुनाकार करते सब साढी

उद्देसग सहस्साइं दस समुद्देसग सहस्साइ, छत्तीसवागरण सहस्साइ सोलक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं, पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा, अणतागमा अणता पज्जवा परित्ता तसा, अणता थावरा सासयकड निबद्ध निकाइया, जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जति पण्णविज्जति, परूविज्जति, दंसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जति, से एव आया एव नाया एव विण्णाया, एव करण चरणपरूवणा ॥ आघविज्जइ, से त विवाहे ॥ ५७ ॥ से किं तं नायधम्मकहाओ ? नायधम्मकहाओ नायाणं धम्मकहासुण नायाण नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं, रायाणो

पांचवे अग का एक श्रुतस्कन्ध, एक सो से अधिक (१४१) शतक (अध्ययन) एक हजार दशे छत्तीस हजार प्रश्नोत्तर दो लाख अठ्यासी हजार (२८८० ०) पद एकेक पद के संख्यात अक्षर, अनत अर्थागम अनंत पर्याय परित्त त्रस अनंत स्थावर शाश्वत पदार्थ निबध रूप, जिनेश्वर भाषित भाव सामान्य प्रकार कर विशेष प्रकार करे दर्शाये, विशेष दर्शाय सभा में करे यों आत्म स्वरूप जिनाज्ञा का स्वरूप, विज्ञान, करण चरण सित्तरी की प्ररूपना करी है यह विवाह प्रज्ञप्ति का कथन हुवा ॥ ५ ॥ ५७ ॥ अहो भगवन्! ज्ञाता धर्मकथा किसे कहते हैं ! अहो गौतम! ज्ञाता धर्मकथा में न्याय का दर्शक स्वरूप दर्शाते हुवे नगर का वर्णन का, उद्-

दसिज्जति, निदसिज्जति उवदसिज्जति, से एवं आया एवं नाया एवं विण्णया एवं चरण करण परूवणा आघविज्जइ, जाव से तं समवाए ॥५६॥ से किं तं विवाहेणं ? विवाहे जीवा वियाहिज्जति अजीवा वियाहिज्जति, ससमए वियाहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति ससमय परसमय वियाहिज्जति, लोए वियाहिज्जति अलोए वियाहिज्जति, लोयालोय वियाहिज्जति, विवाहस्सणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निजुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, सेणं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगेसुय क्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस

प्रकार से कहे भेदानुभेद दर्शाये, दृष्टान्तादि से खुलासा किया, सभा में उपदेशे ऐसे भासा, विज्ञान, विज्ञान, ऐसे ही करण सित्तरी चरण सित्तरी की प्ररूपना कही है, यह समवायांग के भाव ॥ ४ ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! विवाह प्रज्ञप्ति में क्या भाव कहे हैं ? अहो गौतम ! विवाह प्रज्ञप्ति में जीव का कथन किया, अजीव का भी कथन किया, जीवाजीव का भी कथन किया स्वसमय का भी कथन किया, पर समय का भी कथन किया स्वसमय पर समय का भी कथन किया, लोक का भी कथन किया, अलोक का भी कथन किया, लोकालोक का भी कथन किया, विवाह प्रज्ञप्ति की परित्ता वांचना संख्यात अनुयोग, संख्यात वेढा, संख्यात श्लोक, संख्यात निर्युक्ति, संख्यात संग्रहणी, संख्यात प्रतिवृत्ति, इस अंगार्थ

एगुत्तरियाएण ठाणसयविवड्डियाण भावाण परूवणाय, आघविज्जइ, जाव दुवालस गस्स विहरसय गणिपिडगस्स पल्लवगो समासिज्जइ समवायस्सण परित्ता वायणा सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जावढा, सखिज्जासिलोगा सखिज्जाओ निजुत्तिओ सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, सेण अगट्टयाए चउत्थे अंगे एगेसुय खंध एगे अज्झयण एगे उद्देसण काले एगे समुद्देसण काले एगे चउयाल पयसय सहस्स, पयग्गेण सखिज्जा अक्खरा अणतागमा, अणतापज्जवा, परित्तातसा, अणताथावरा सासयकड निबध निकाइया, जिण पण्णत्ता भावा, आघविज्जति पण्णविज्जति, परूविज्जति,

सो स्थान पर्यन्त वृद्धि करते बहुत भाव श्री वीतराग भणित सामान्य प्रकार कहे, विशेष प्रकार प्ररूप, और भी समवायांग में द्वादशांग रूप आचार्य की सदूक रत्न के व्यापारी की तीजोरी समान शास्त्र हुवा ज्ञान रूप धन विनाश नहीं पावे जिस का संक्षेप में कथन किया समवायांग सूत्र के परित्त वांचना, संख्यात अनुयोगद्वार, संख्यात वेढा संख्यात श्लोक संख्यात निर्युक्ति संख्यात प्रतिवृत्ति, वह अंगापेक्षा चौथे अंग का एक श्रुतस्कन्ध एक ही अध्ययन एक उद्देशा एक समुद्देशा एक लाख चम्मालीस हजार [१४४०००] पद, एकक पद के संख्यात अक्षर अनंत अर्थागम अनंत पर्याय, परित्त त्रस, अनंत स्थावर, शाश्वत वस्तु के भाव सूत्रार्थ का गुंथन जिनेश्वर भणित भाव सामान्य प्रकार से कहे, विशेष

वातरिपयसहस्सा पयग्गेण संखिज्जा अक्खरा अणतागमा अणतपज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयकड निबद्ध निकाइया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जति, पणविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति, से एव आया एव नाया एव विण्णाया एव चरण करण परूवणा, आघविज्जइ, से त ठाणे ॥ ५५ ॥ से किं त समवाए ? समवाएण जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति, जीवाजीव समासिज्जति ससमए समासिज्जति, परसमए समासिज्जति, ससमयपरसमय समासिज्जति, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ, समवाएण एगाइयाण

गमा—अर्थ विशेष, परित्ता त्रस जीव अनंत स्थावर जीव, धर्मास्ति आदि शाश्वत भाव द्रव्यार्थपने और पर्यायार्थपने अशाश्वत जिनेश्वर भणित भाव सामान्य प्रकार से कहे, विशेष प्रकार से कहे भेदानुभेद कर दर्शाये, विशेष दृष्टान्तादि कर निर्देश किये परिषदा में उपदेशे ये इस प्रकार आत्मा का स्वरूप, जिनाज्ञा का स्वरूप यों विधान कर प्रगट किये यों करण सित्तरी चरण सित्तरी की प्ररूपना की यह स्थानांग का कथन हुवा ॥ ३ ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! समवायांग में जीव का समास, अजीव का समास, जीवाजीव का समास स्वसमय का समास परसमय का समास स्वसमय परसमय दोनों का समास, लोक का समास, अलोक का समास, लोकालोक का समास, यों एकार्थ से दो तीन चार पांच

तिज्जइ, लोयालोएट्ठाविज्जइ ठाणेण टंका कूडा सेला सिहरिणो पब्भारा कुडाइं गुहाओ आगरा दहा नईओ आघविज्जति आत्तठाणेण एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगा विवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ ठाणेण प। वा वायणा, संखिज्जा अणुयोगदारा संखिज्जावेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जा संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ सेण अंगट्ठयाए तइअंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा, एगवीसउद्देसण काला एगवीस समुद्देसण काला,

आस्ति प्रकार, स्थानांग ग्रन्थ में दधीमुख पर्वत के पगेरा कूटों, पर्वतादि के शिखरों, निषधादि पर्वतादि शिविकादि गुफाओं, सुवर्ण रूपादि के आगरों, पद्मादि द्रह गंगादि नदीयों, इत्यादि लोक में रहे शाश्वत पदार्थों का कथन किया है स्थानांग शास्त्र का एक ही श्रुतस्कन्ध है, और एक दो तीन चार यावत् यों बढ़ते २ दश बोलों के कथन के दश स्थान (अध्याय) के भावों की प्ररूपना की है, स्थानांग शास्त्र की परिता वाचना सूत्रार्थ प्रदान रूप है संख्यात अनयोग, संख्यात वेढा—छन्दबन्ध, संख्यात श्लोक अनुष्टपादि, संख्यात नियुक्ति अर्थ के सम्बन्ध मिलानवाली, संख्यात संग्रहणी की गाथाओं संख्याते प्रतिपत्ति है, इस स्थानांग का एक श्रुतस्कन्ध दश अध्ययन, एकवीस उद्देशे, एकवीस समुद्देश अगोचर रूप, बहत्तर हजार (७२०००) पद कहे हैं, एकेक पद के संख्यात अक्षर होते हैं, अनंता -

सासयकड निबद्ध निकाइया, जिण पण्णत्ता भावा, आघविज्जति पण्णविज्जति परुविज्जति, दसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदसिज्जति से एव आया एव नाया एवं विण्णाया, एवं चरण करण परूवणा आघविज्जइ, जाव से त सुयगडे ॥५४॥ से किं त ठाणे ? ठाणेण जीवाठाविज्जति, अजीवा ठाविज्जति, जीवाजीव ठाविज्जति, ससमएठाविज्जइ परसमएठाविज्जइ ससमयपरसमयठाविज्जइ, लोएठाविज्जइ, अलोएठा

हजार [१६०००] पद हैं एकेक पद के सख्यात अक्षर हैं, अनन्त पर्यायसन रूप गमे हैं परित त्रस जीव का कथन है अनंत स्थावर जीव का वर्णन है, धर्मास्तिकायादि तथा द्रव्यार्थ कर अविच्छेदपने शाश्वत है जिनेश्वर भगवंत भाषित भाव सामान्य प्रकार को विशेष प्रकार प्ररूपे दृष्टान्तादि कर दर्शाये, विशेष स्वरूपकर निर्देश किये परिषद में उपदेशे, यह इस आत्मा स्वरूप जिनाज्ञा का स्वरूप विज्ञान का स्वरूप, करण सित्तरी चरण सित्तरी की प्ररूपना कही है यह सुयगडांग सूत्रका कथन कहा ॥ २ ॥ ५४ ॥ अहो भगवन ! ठाणांग सूत्र किसे कहते हैं ? हे गौतम ! ठाणांग में जीव का स्वरूप विदित किया, अजीव का स्वरूप विदित किया जीवाजीव का स्वरूप विदित किया, स्वसमय (जिनमत) का स्वरूप विदित किया, परसमय अन्यमत का स्वरूप विदित किया स्वसमय पर समय दोनों का स्वरूप विदित किया, लोक की भास्ति बताइ, अलोक की भास्ति बताइ, लोकालोक की

तेण्हूतेसट्ठाण पासडियसयाण, युहक्खिा, ससमए ठाविज्जति परसमए ठाविज्जति, सुयगडण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुठगदारा सखज्जासिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, ससेज्जाओ पडिविचीओ सेण अगट्ठयाए बीए अग दो सुयक्खधा तेवीस अज्झयणा, तेतीस उद्देसण काला, तेतीस समुद्देसण काला, छत्तीस पय सहस्साइ, पयग्गाण, सखेज्जा अक्खरा, अणतागमा, अणता पज्जवा, परिता तसा, अणता थावरा,

किया है जीव अजीव दोनों का सूचन किया है ससमय जिन भणित धर्म के स्वरूप का भी सूचन किया है, परसमय अन्य चारवाकादि भणित धर्मका भी सूचन रूप कथन किया है स्व समय परसमय दोनोंका सूचन किया है सुयगडांग सूत्र में क्रियावादि के १८० मत का, अक्रिया वादि के ८४ मत का, अज्ञान वादी के ६७ मत का और विनय वादी के १२ मत का यों सब चारों वादो के ३६३ वादीयों के मत का खुला–निराकरण किया है जिस में ससमय जिन भणित मत का स्थापन कर पर मत को निसार बताया है सुयगडांग सूत्र की परिता वाचना सूत्रार्थ प्रदान रूप है, संख्यात अनुयोगद्वार करणानुयोगादि है असख्यात पदछन्द रूप है, सख्याते श्लोक अनुष्टवादी है, संख्याती निर्युक्ति पद भंगनादि की है संख्याती प्रतिपृति एक दो यावत् इग्यारोगम सख्या विभाग, वस भंगरूप दूसरे अग के दो श्रुतस्कन्ध १२ अध्ययन, ११ उद्देशे, छत्तीस समुद्देश प्रभाचर रूप और छत्तीस

उवदसिज्जति, से एव आया, एव विन्नाया, एवं चरण करण परूवणा, आघविज्जति जाव सेत आयारे ॥५१॥ से किं त सुयगडे? सुयगडेण लोएसूइज्जति, अलोएसूइज्जति, लोयालोएसुइज्जति, जीवासुइज्जति अजीवासुइज्जति जीवाजीव सुइज्जति, ससमय सुइज्जति, परसमय सुइज्जति, ससमय परसमय सुइज्जति, सुयगडेण असीइसय किरिया वाइण, चउरासीए अकिरियावाइण, सत्तसट्ठीए अण्णाणवाईण, बत्तीसाए विणइयवाईण,

कहा' करता पर्याय अर्थ भी समय २ में कितनेक द्रव्य अन्यथा भी होते हैं अशाश्वत हैं, निबन्ध जो सूत्र के गुम्थन किये इसे निर्युक्ति संग्रहणी हेतु उदाहरण करके पुरुषों निकाचित निश्चयपने हैं श्री जिनेश्वर भगवान भणित भाव सामान्य प्रकार से कहे विशेष प्रकार से प्ररूप, उपमा कर विशेष कर निर्देश किये, नैगमादि नयकर कहे, अहो शिष्य ' ये इस प्रकार आत्मा आत्मा की आस्ति के स्थापक क्रियावत है यों ज्ञान कर आत्मा का जानने वाला होवे, फिर विशेष विज्ञानवंत होवे, फिर करणसित्तरी चरण सित्तरी की प्ररूपना सामान्य प्रकार से कही यावत् यह आचारंग का स्वरूप कहा ॥ १ ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ' सुयगडांग किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! सुयगडांग में पंचास्तिकाय रूप लोक का सूचन किया है एक आस्तिकाय रूप अलोक का सूचन किया है, लोकालोक का भी सूचन किया है, चेतना लक्षण रूप जीव का भी सूचन किया है, जड़लक्षण अजीव का भी सूचन

तेण्हतेसट्ठीण पासडियसयाण, सुहकिया, ससमए ठाविज्जति परसमए ठाविज्जति, सुयगडण परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जासिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवित्तीओ सेण अगट्ठयाए बीए अग दो सुयक्खधा तेवीस अज्झयणा, तेतीस उद्देसण काला, तेतीस समुद्देसण काला, छत्तीस पय सहस्साइ, पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा,

किया है जीव अजीव दोनों का सूचन किया है ससमय जिन भाषित धर्म के स्वरूप का भी सूचन किया है, परसमय अन्य चारवाकादि भाषित धर्मका भी सूचन रूप कथन किया है स्व समय परसमय दोनोंका, सूचन किया है सुयगडांग सूत्र में क्रियावादि के १८० मत का, अक्रिया वादि के ८४ मत का, अज्ञान वादी के ६७ मत का और विनय वादी के ३२ मत का यों सब चारों वादी के ३६३ वादियों के मत का युक्ता-निराकरण किया है जिस में ससमय जिन भाषित मत का स्थापन कर पर मत को निसार बताया है सुयगडांग सूत्र की परित्ता वाचना-सूत्रार्थ प्रदान रूप है, संख्यात अनुयोगद्वार करणानुयोगादि है असंख्यात पदछंद रूप है, संख्याते श्लोक अनुष्टवादी है, संख्याती निर्युक्ति पद भंजनादि की है संख्याती प्रतिपत्ति एक दो यावत् इमारोगम संख्या विभाग, उस भंगरूप दूसरे अग के दो श्रुतस्कंध २३ अध्ययन, ३३ उद्देशे, तेतीस समुद्देश प्रश्नोत्तर रूप और छत्तीस

विणइय वियात्त्व सिक्खा भासा अभासा चरण करण जाया माया वित्तीओ, आघविज्जति से समासओ पचविहा पण्णत्ता तजहा-नाणायारे, दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारेण परित्तावायणा सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जावेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ, निजुत्तीओ, सखिज्जाओ पडिवित्तीओ, सखिज्जाओ

भ्यन्तर ग्रन्थी रहित जिन का ज्ञानादि पचाचार का समिति आदि गोचार का, ज्ञानी आदिक के विनय का, कर्म क्षय रूप विज्ञान का, स्थविरादि की वैयावच्च का, आसवना ग्रहणा शिक्षा का, भाषा बोलने का, अभाषा-नहीं बोलने का चरण जो सदैव क्रिया करने में आवे उस के सित्तर बोल का, और करण-जो प्रयोजक क्रिया करने में आवे उस का × काल विनयादि आठ ज्ञानाचार का, शका कांक्षादि आठ दर्शनाचार, आठ प्रवचन माता के चारित्राचार, १२ तप के बारे आचार,

× गाथा-वय समण धम्म, सजम वेयावच्च च बंभगुत्तीओ ॥ नाणाइतिय तव, कोह निग्गहाइ चरण मेयं ॥ १ ॥ अर्थ-५ महाव्रत, १० यतिधर्म, १७ सयम, १० वैयावच्च, ९ ब्रह्मचर्य की वाड ३ गुप्ति, ३ ज्ञानादि त्रिरत्न, १२ तप, ४ कषाय निग्रह यह ७० बोल चरणसित्तरी के ॥ गाथा-पिंड विसोही समइ, भावना पडिमाए इन्दियनिग्गहो ॥ पडिलेहणा गुत्तीओ, अभिग्गह चेव करणंतु ॥ २ ॥ अर्थ ४ पिंड विशुद्धि ५ समिति, १२ भावना, १२ भिक्षु प्रतिमा ५ इन्द्रिय निग्रह, २५ प्रतिलेखना, ३ गुप्ति, ४ अभिग्रह यह ७० बोल करण सित्तरी के.

संघेणिआ सेत्त अंगट्ठयाए पढमे अंगे दोय सुयक्खधा पणवीस अज्झयणा पचासीय उद्दे सणकाला, पचासीय समुद्देसणकाला, अठारस पयसहस्साणि, पयगोण सखज्जा अक्खरा अणतागमा, अणतापज्जवा, परितातसा अणताथावरा, सासकडा निबधनिकाइया जिण पण्णता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति,

१ मनादि नियाचार इत्यादि का कथन आचारंग सूत्र में है, आचाराग शास्त्र की परिता [संख्याती] वाचना है अर्थात् शिष्य को सूत्रार्थ प्रदान रूप उपदेश, सम्यग उपदेश, आज्ञा, व्याख्यान, इन चार प्रकार रूप करे सख्याते अनुयोग चरणानुयोगादि के द्वार उपक्रमादि संख्यात वेढा, छन्द बद्ध रूप, संख्यात श्लोक ३२ अक्षर का एक श्लोक ऐसे सख्याती नियुक्ति- पद भंजनादि का करना, संख्याती प्रतिवृत्ति-एक दो तीन यावत् दश प्रकार प्रतिवृत्ति, संख्यात संग्रहनी संक्षेपार्थ दर्शानेवाली गाथाओं यह आचारांग के अर्थरूप प्रथम अंग के दो श्रुतस्कन्ध और पचीस अध्ययन जिस के पचासी उद्देशे, पचासी समुद्देशे प्रश्नोत्तर रूप * अठारह हजार (१८०००) पद एक पद, के सख्यात अक्षर लिपी रूप अनंतागम परिछेद, अनतपर्यव अक्षर पदार्थ के पर्याय भेद परिता (सख्यात) त्रस जीव, अनत स्थावर जीव धनस्पति आश्रिय, धर्मास्ति कायादि के द्रव्य व्यविच्छेदपने कर शाश्वत हैं, यथा

* जितने उद्देश के काल अवसर मे होते हैं उतने ही समुद्देश के काल भी होते हैं

विणइय त्रियारच्च सिक्खा भासा अभासा चरण करण जाया माया विचीओ, आघविज्जति से समासओ पचविहा पण्णत्ता तजहा-नाणायारे, दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारेण परित्तावायणा सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जावेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ, निजुत्तीओ, सखिज्जाओ पडिवित्तीओ, सखिज्जाओ

भ्यन्तर ग्रन्थी रहित. जिन का ज्ञानादि पचाचार का समिति आदि गोचार का, ज्ञानी आदिक के विनय का, कर्म क्षय रूप विज्ञान का, स्थविरादि की वैयावच्च का, भासवना ग्रहणा शिक्षा का, भाषा बोलने का, अभाषा नहीं बोलने का चरण-जो सदैव क्रिया करने में आवे उस के विस्तर बोल का, और करण-जो सकोवक्त क्रिया करने में आवे उस का × काल विनयादि आठ ज्ञानाचार का, शका कांक्षादि आठ दर्शनाचार, आठ प्रवचन माता के चारित्राचार, १२ तप के बारे आचार,

× गाथा-वय समण धम्म, सयम बयावच्च च बंभगुत्तीओ ॥ नाणाइतिय तव कोह निग्गहइ चरण मेयं ॥ १ ॥ अर्थ ५ महाव्रत, १ यतिधर्म, १७ सयम, १ वैयावच्च, ९ ब्रह्मचर्य की वाड, ३ गुप्ति, ३ ज्ञानादि त्रिरत्न, १२ तप, ४ कषाय निग्रह यह ७० बोल चरणसित्तरी के ॥१॥ गाथा-पिंड विसोहि समइ, भावना पडिमाय इन्दिनिग्गहो ॥ पडिलेहणा गुत्ताओ, अभिगाह चेव करणतु ॥ २ ॥ अर्थ-४ पिंड विशुद्धि ५ सामाइ, १२ भावना, १२ भिक्षु प्रतिमा, ५ इन्द्रिय निग्रह, २५ प्रतिलेखना, ३ गुप्ति, ४ अभिग्रह यह ७० बोल करण सित्तरी के.

संखेणिओ सेण अंगट्ठयाए पढमे अंगे दोय सुयक्खंधा पणवीस अज्झयणा पचासीय उद्देसणकाला, पचासीय समुद्देसणकाला, अठारस पयसहस्साणिइ, पयगोण संखज्जा अक्खरा अणतागमा, अणंतापज्जवा, परितातसा, अणताथावरा, सासकडा नियघनिकाइया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति पन्नविज्जति दंसिज्जति,

१ मनादि नियाचार इत्यादि का कथन आचारंग सूत्र में है, आचारांग शास्त्र की परित्ता [संख्याती] वाचना है अर्थात् शिष्य को सूत्रार्थ प्रदान रूप उपदेश, सम्यग उपदेश, आज्ञा, व्याख्यान, इन चार प्रकार रूप को संख्याते अनुयोग चरणानुयोगादि के द्वार उपक्रमादि संख्यात वेढा, छन्द पद रूप, संख्यात श्लोक १२ अक्षर का एक श्लोक ऐसे संख्याती नियुक्ति- पद ममनादि का करना, संख्याती प्रतिवृति एक दो तीन यावत् दश प्रकार प्रतिवृति, संख्यात संग्रहनी संक्षेपार्थ दर्शानेवाली गाथाओं उस आचारांग के अर्थरूप प्रथम अंग के दो श्रुतस्कन्ध और पचीस अध्ययन जिस के पचासी उद्देशे, पचासी समुद्देशे प्रश्नोत्तर रूप * अठारह हजार (१८०००) पद एक पद, के संख्यात अक्षर लिपी रूप अनंतागम परिछेद, अनंतपर्यव अक्षर पराव के पर्याय भेद परित्ता (संख्यात) त्रस जीव, अनंत स्थावर जीव वनस्पति आश्रिय, धर्मास्ति कायादि के द्रव्य आविच्छेदपने कर शाश्वत हैं, तथा

* जितने उद्देश के काल अवसर म होते हैं उतने ही समुद्देश के काल भी होते है

एवमाइयाइ चउरासीइ पईन्नग सहस्सणीइ भगवओ अरहओ उसह सामियस्स आइतित्थयरस्स तहा संखिज्जाइ पइण्णग सहस्साइ मज्झिमगाण जिणवराण चोद्दस पइन्नग सहस्साणि भगवओ वद्धमाण सामिस्स अहवा जस जत्तियासीसा—उप्पत्तियाए, विणइयाए, कम्मियाए, परिणामियाए, चउव्विहीए

कुमार देवता मगट होवे साधु का सत्कार करे २६ निरियावलिका-नरकगामी जीवों का कथन, २७ कप्पिया-देवलोकगामी जीवों का कथन २८ पुप्फिया पुष्पा वेकरणी विमान में उत्पन्न होने वाले का कथन, २९ पुप्फ चूलिका-पासत्याचारी होकर छोटे पुष्फ वैकरनी विमान में उत्पन्न हुए जिन का कथन ३० वण्हि भ-धक विष्णुजी क दश पुत्रों का कथन ३१ वण्हिदशा भ-धक विष्णुजी के पुत्र के पुत्रों का कथन ३२ आसीविष भावणा-सर्प का विष दूर होवे, ३३ दृष्टिविष भावना दृष्टी विष दूर होवे, ३४ चारण भावणा-चारण लब्धि का कथन, ३५ सुमिण भावणा-स्वप्न शास्त्र, ३६ महा सुमिण भावणा स्वप्न का महा शास्त्र ३७ तेअग्गि भावणा-अग्नि मगट करने का शास्त्र इत्यादि यह कालिक उत्कालिक सूत्र सब मिल चोरासी हजार पइन्ना [सूत्र] अहन्त भगवन्त श्री ऋषभ देव स्वामीजी धर्म की आदि के कर्ता चारों तीर्थ के स्थापकन कहे थे अजितनाथ भगवंत से श्री पार्श्वनाथ जिनवर पर्यन्त चौदे हजार पइन्ना थे और श्री महावीर स्वामीजी तथा जो २,तीर्थंकर हुवे उन के जितने शिष्य व उत्पातिक बुद्धि कर

बुद्धिए उववाए तस्स तात्तियाइं पइण्णग सहस्साइं पत्तेय बुद्धावि, तावियावेव, से त्त कालिय ॥ से त्त आवस्सगवइरित्त ॥ से त्त अणगपविट्ठ ॥ ५१ ॥ से किं त्त अगपविट्ठ ? अगपविट्ठ दुवालसविहा पण्णत्ता तजहा—आयारो, सुयगडो, ठाण, समवाओ, विवाह पण्णत्ती, नाय धम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अतगड दसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हवागरणाइं, विवागसुय, दिट्ठिवाओ ॥ ५२ ॥ से किं त्त आयारे ? आयारेण समणाण णिग्गथाण आयारे गोयराओ विणय

विनयिक बुद्धिकर कार्मिक बुद्धिकर और परिणामिक बुद्धिकर यों चारों प्रकार की बुद्धिकार धन के भी उतने पइने प्रत्येक बुद्धि जो होवें हैं वे गच्छ से अलग प्रवर्ती कर विचरते हैं वे भी पाने बनावे उतने पइन होते हैं, यह परतु तीर्थंकर की आज्ञानुसार प्रवर्तक होने स वे भी शिष्य ही कहे जाते हैं इस लिए वे भी मान्य होते हैं यह कालिक सूत्र का कथन हुआ यह आवश्यक व्यतिरिक्त सूत्र का भी कथन हुआ और यह अनग प्रविष्ट सूत्र का कथन हुआ ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ! अग प्रविष्ट सूत्र किसे कहते अहो गौतम ! अग प्रविष्ट के बारह भेद कहे हैं तद्यथा—१ आचारांग, २ सुयगडांग, ३ ठाणांग, ४ समवायांग, ५ विवाहप्रज्ञप्ति ६ ज्ञाता धर्म कथांग, ७ उपासक दशांग, ८ अन्तगड दशांग ९ अनुत्तरोपपातिक दशांग १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाक सूत्र और १२ दृष्टिवाद ॥ ५२ ॥ अहो, भगवन् ! आचारांग सूत्र किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! आचारांग में श्रमण-तपस्वी निर्ग्रंथ साधु

पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाण, महापच्चक्खाण, एवमाइय, से त उक्कालिय ॥ ५० ॥ से किं त कालिय ? कालिय अणेगविह पण्णत्त तजहा-उत्तरज्झयणाइ दसाओ कप्पो ववहारो, निसीह, महानिसीह, इसिभासियाइ, जंबूदीव पण्णत्ती दीवसागर पण्णत्ती चदपण्णत्ती, खुड्डियाविमाण पविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती अगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, गरुलोववाए, वरुणोववाए वरणोववाए,

चारित्र विधि-महाग्रंथ की भावना का स्वरूप, १० आयुर्प्रत्याख्यान-रोगादि की प्राप्ति हुवे पीछे दिन प्रत्याख्यान कर चस की विधी, ११ 'महाप्रत्याख्यान-राम प्रत्याख्यान यगैरा प्रत्याख्यान करने की विधी आगार मगादि यह ११ आदि देकर और भी उत्कालिक सूत्र जानना यह उत्कालिक सूत्र जानना ॥ ५० ॥ अहो भगवान्! कालिक सूत्र के कितने भेद कहे हैं? कालिक सूत्र के भी अनेक भेद कहे हैं तद्यथा १ उत्तराध्ययन विनयादि ३६ अध्ययन वाला, २ दशाश्रुतस्कन्ध-दश अध्ययन वाला, ३ स्थविरकल्पजिन कल्पी के आचार का, ४ व्यवहार सूत्र आलोचना का अधिकार रूप, ५ नीशीथ प्राय श्चित की विधी, ६ महानीशीथ मोटा प्रायश्चित की विधी, ७ ऋषिभाषित प्रत्येक बुद्ध कथित ८ जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति-जम्बूद्वीपका अधिकार ९ चन्द्रप्रज्ञप्ति चन्द्रमा का अधिकार, १० द्वीप सागर प्रज्ञप्ति-सब द्वीप समुद्रों का अधिकार, ११ क्षुल्लक विमान प्रविभक्ति-छोटे विमानों

वेसमणोववाए वेलधरोववाए, देवदोववाए उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए नाग परियावलियाओ, निरयावलियाओ, कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, विण्हियाण, वण्हीदसाण, आसीविसभावणाण, दिट्ठिविसभावणाण, चारणभावणाण सुमिणभावणाण महासुमिणभावणाण, तेअग्गिनिसग्गाण ॥

का अधिकार १२ महाविमान मती यह विमानोंका अधिकार, * १३ अंगचूलिका-आचारंगादि अंगकी चूलका, १४ वंगाचुलिका-अन्तगडादि के वर्ग की चूलिका, १५ विवाह चुलिका भगवति सूत्र की चुलिका १६ अरुणोववाए इस सूत्र को पढते अरुण देवता प्रगट होवे, प्रसंगिक काम करे, १७ वरुणे ववाइ इसे पढते वरुण देवता प्रगट होवे, १८ गुरुलोववाइ-इस सूत्र पढते गरुड देवता प्रगट होवे १९ धरणोववाइ इसे पढते धरणेंद्र प्रगट होवे २० वेसमणोववाइ-इसे पढते वैश्रमण देवता प्रगट होवे, २१ वेलंधरोववाइ इसे पढने से वेलंधर देवता प्रगट होवे २२ देवेंदोववाइ इसे पढते देवेन्द्र प्रगट होवे, २३ उट्ठाण सूत्र इस शास्त्र को क्रोधित हो पढे तो ग्रामादि का औचाट होवे, २४ समुत्थान सूत्र-इस शास्त्र को शान्त भाव से पढे तो ग्रामादि का उपद्रव टले शान्ति होवे २५ नागपरियावलिका इस सूत्र के पढने से नाग

* इस के प्रथम वर्ग के ४१ उद्देशे, दूसरे वर्ग के ४२ उद्देशे तीसरे वर्ग के ४३ उद्देशे चौथे वर्ग के ४४ उद्देशे पांचवे वर्ग के ४५ उद्देशे सब ११५ [illegible] उद्देशे कालिक है

से किं त आवस्सय वइरित्त? आवस्सय वइरित्त दुविह पण्णत्त तजहा कालियच, उक्कालियं च॥४९॥ से किं त उक्कालिय? उक्कालियं अणेगविह पन्नत्त तजहा दसवेकालिय, कप्पियाकप्पिय, चुल्लकप्पसुय, महाकप्पसुय उववाइय रायपसेणिय, जीवाभिगमो,

अहो भगवन्! आवश्यक व्यतिरिक्त किसे कहते हैं? अहो गौतम! आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद कहे हैं तद्यथा—रात्रि के और दिन के प्रथम तथा चौथे प्रहर में जिन शास्त्रों की स्वाध्याय की जावे वे कालिक शास्त्र, और प्रातः सन्ध्या मध्यान्ह मध्य रात्रि यह चार काल में मुहूर्त मात्र काल छोड कर हरेक वक्त में स्वाध्याय की जावे वे उत्कालिक शास्त्र॥ ४० ॥ अहो भगवन्! उत्कालिक शास्त्र कितने कहे? अहो गौतम! उत्कालिक शास्त्र के अनेक भेद कहे, तद्यथा—१ दशवैकालिक सूत्र दश अध्ययन में साधु के आचार रूप कथनमाला, २ कल्पाकल्प सूत्र—जिस में साधु को कल्पने अकल्पने योग्य कथन ३ छोटा कल्प सूत्र—महावीर स्वामीजी तथा साधु का सामान्य आचार कथन ४ महा कल्प सूत्र—चौवीस ही तीर्थंकरों का जीवन तथा साधु विशेषाचार वाला ५ उववाई—नगर राजा रानी भगवंत साधु तप समवसरणादि का वर्णन तथा चारों गति में उत्पन्न होने का विशेष में देवगति व सिद्धगति गमन का कथन, ६ रायप्रश्नीय सूत्र प्रदेशी राजा कृत प्रश्नोत्तर, ७ जीवाभिगम जीवों का द्वीप समुद्रों का कथन ८ पन्नवणा सूत्र जीवाजीव की संक्षेप से

पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमाय, नदी, अणुओगदारे, देविंदथुओ, तदुल वेयालिय चदाविज्झय, सूरपण्णति पोरिसिमडल, मडलपवेसे विज्जाचरण, विणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोही वीयरागसुय, सलेहणा सुय विहारक

प्ररूपना, ९ महापन्नवणा सूत्र-जीवाजीव की विस्तार से प्ररूपना, १० प्रमादाप्रमाद सूत्र पांच प्रमाद का विस्तार से कथन, ११ नन्दी सूत्र-पांच ज्ञान का कथन, १२ अनुयोग द्वार-चारों अनुयोग नय निक्षेप प्रमाणादिक कथन, १४ देवेन्द्र स्तुति, १५ तदुल वयालिका-पुरुष का भोजनादि का प्रमाण, १६ चन्द्राविजय चन्द्र की गति का तथा राधावेध साधन का कथन, १७ सूर प्रज्ञप्ति सूर्य की गति नक्षत्रादि का कथन १८ पोरुपी मंडल-पोरुपी दिन के प्रमाण देखन जानने उपाय, १९ मंडल प्रवेश-चन्द्र सूर्य ग्रहादि का मंडल में प्रवेश करने की चाल, २० विद्याचरण-विद्याचारण लब्धि का वर्णन, २१ विनिश्चित सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र का स्वरूप, २२ गणिविद्या पाठ मुद्रादि शिष्यों के लिये विद्याभ्यास तथा ज्योतिष विद्या २३ ध्यान विभक्ति-चार ध्यान का विस्तार से कथन, २४ मृत्यु विभक्ति-समाधी मरण पंडित मृत्यु करने की रीती २५ आत्मविशुद्धि-आत्म विशुद्ध करने भाव भिवादि की भावना, २६ वीतराग सूत्र-वीतरागी पना प्राप्त करने की रीति २७ संलेषना सूत्र-माया निदान मिथ्यात्व तीनों शल्य निकन्द भक्तिप शुद्धि २८ विहार कल्प-स्थविर कल्पी के विहार का वर्णन आचार इत्यादि, ९०

से किं त आवस्सय वइरित्तं? आवस्सय वइरित्त दुविहं पण्णत्तं तंजहा कालियंच, उक्कालियं च॥४१॥ से किं त उक्कालियं? उक्कालियं अणेगविहं पन्नत्तं तंजहा दसवेकालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं उववाइयं रायपसेणियं, जीवाभिगमो,

अहो भगवन्! आवश्यक व्यतिरिक्त किते कहे हैं? अहो गौतम! आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद कहे हैं तद्यथा—रात्रि के और दिन के प्रथम तथा चौथे प्रहर में जिन शास्त्रों की स्वाध्याय की जावे वे कालिक शास्त्र, और प्रातः सन्ध्या मध्यान्ह मध्य रात्रि यह चार काल में मुहूर्त मात्र काल छोड कर हरेक वक्त में स्वाध्याय की जावे वे उत्कालिक शास्त्र ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्! उत्कालिक शास्त्र कितने कहे? अहो गौतम! उत्कालिक शास्त्र के अनेक भेद कहे, तद्यथा—१ दशवैकालिक सूत्र दश अध्ययन में साधु के आचार रूप कथनवाला, २ कल्पाकल्प सूत्र—जिस में साधु को कल्पने अकल्पने योग्य कथन ३ छोटा कल्प सूत्र—महावीर स्वामीजी तथा साधु का सामान्य आचार कथन ४ महा कल्प सूत्र—चौवीस ही तीर्थंकरों का जीवन तथा साधु विशेषाचार वाला ५ उववाई—नगर राजा रानी भगवंत साधु तप समवसरणादि का वर्णन तथा चारों गति में उत्पन्न होने का विशेष में देवगति व सिद्धगति गमन का कथन ६ रायप्रश्नीय सूत्र प्रदेशी राजा कृत प्रश्नोत्तर, ७ जीवाभिगम जीवों का द्वीप समुद्रों का कथन ८ पन्नवणा सूत्र जीवाजीव की संक्षेप से

पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमाय, नदी, अणुओगदारे, देविंदथुओ, तंदुल वेयालिय चदाविज्झय, सूरपण्णत्ति पोरिसिमंडल, मंडलपवेसे विज्जाचरण, विणिच्छओ, गणिविज्जा,झाणविभत्ती,मरणविभत्ती,आयविसोही वीयरागसुय,सलेहणा सुय विहारक

परूपना, ९ महापन्नवणा सूत्र-जीवाजीव की विस्तार से परूपना, १० प्रमादाप्रमाद सूत्र-पांच प्रमाद का विस्तार से कथन, ११ नंदी सूत्र-पांच ज्ञान का कथन, १२ अनुयोग द्वार-चारों अनुयोग नय निक्षेप प्रमाणादिक कथन, १४ देवेन्द्र स्तुति, १५ तंदुल वयालिका-पुरुष का भोजनादि का प्रमाण, १६ चन्द्रविजय चन्द्र की गति का तथा राधावेध साधन का कथन, १७ सूर्य प्रज्ञप्ति-सूर्य की गति नक्षत्रादि का कथन १८ पोरूषी मंडल-पोरषी दिन के प्रमाण देखने अनेक उपाय, १९ मंडल प्रवेश-चन्द्र सूर्य ग्रहादि का मंडल में प्रवेश करने की चाल, २० विद्याचरण-विद्याचारण लब्धि का वर्णन, २१ विनिश्चय सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र का स्वरूप, २२ गणिविद्या शांत वृद्धादि शिष्यों के लिये विद्याभ्यास तथा ज्योतिष विद्या २३ ध्यान विभक्ति-चार ध्यान का विस्तार से कथन, २४ मृत्यु विभक्ति-समाधी मरण पंडित मृत्यु करने की रीती २५ आत्मविशुद्धि-आत्म विशुद्ध करने प्रायश्चित्तादि की भावना, २६ वीतराग सूत्र-वीतरागी पना प्राप्त करने की रीति २७ संलेखना सूत्र-माया निदान मिथ्यात्व तीनों शल्य निकंद अन्तिम शुद्धि २८ विहार कल्प स्थविर कल्पी के विहार का वर्णन आचार कल्पादि, २९

बहवे पुरिसे पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, खेत्तओण पच भरहाइ पंचेरवयाइ पडुच्च साइय सपज्जवसिय, पचमहाविदेहाइ पडुच्च अणाईय अपज्जवसिय, कालओण उसप्पिणि ओसप्पिणि च पडुच्च साइय सपज्जवसिय, नो उसप्पिणि नोओसप्पिणि पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, भावओण जे जया जिण पण्णत्ता भावा आघविज्जति

भरतैरावत क्षेत्र आश्रिय तो आदि और अन्त दोनों ही है और महा विदेह क्षेत्र आश्रिय आदि अन्त दोनों ही नहीं है ३ काल आश्रिय अवसर्पिनी उत्सर्पिनी काल आश्रिय आदि और अन्त दोनों ही है महा विदेह में उत्सर्पिणी अवसर्पिणी दोनों ही प्रकार का काल नहीं है वहां आदि और अन्त दोनों नहीं है और ४ भाव से तीर्थंकर देवने प्ररूपे गणधर महाराजने धारण किये आगे शिष्य प्रति शिष्य को पढाये हेतु दृष्टान्तादि कर समझाये निश्चय नय कर उपदेशे, उपमादि कर समझाये, इस आश्रिय आदि अन्त दोनों है और क्षयोपशम भाव आश्रिय सदैव वर्तते हैं इस आश्रिय अनादि अनन्त है तथा भव्य सिद्धक जीव आश्रियका श्रुत ज्ञान आदि और अन्त दोनों सहित है क्योंकि मिथ्यात्व फिर नष्ट सम्यक्त्व की प्राप्ति हुए यह श्रुत ज्ञान की आदि हई और केवल ज्ञान उत्पन्न होवे तब श्रुत ज्ञान का अन्त होवे अभव्य सिद्धिक आश्रिय अनादि अनंत है क्यों कि अभव्य सिद्धिक निश्चयमें तो सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकता है कृष्ण पक्षी मिथ्यात्वी होता है. परन्तु व्यवहार में दश पूर्वमें कुछ कम ज्ञान पढ सकता है

पण्णात्रिज्जति पन्नत्रिज्जति दसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति, ते तयाभावे पडुच्च साइय सपज्जवसिय, खओवसमिय पुण भावपडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइय सपज्जवसियंच, अभवसिद्धियस्स सुय अणाइय अपज्जवसिय, सव्वागासप एसेहिं अणत गुणिय पज्जवक्खर निप्पज्जइ, सव्वजीवाणपियण अक्खरस्स अणत भागो

यहां अक्षर की अवगाहना कहते हैं—सर्व आकाश प्रदेशों का जो प्रमाण है उसे अनन्तगुना करे सब के प्रदेश अनंतगुने होवे इस लिये अनन्त अगुरु लघु पर्याय होवे हैं उस में धर्मास्ति काया आदि क भी पर्याय मिलावे सब एक व्यंजनाक्षर निष्पन्न होवे तो भी सर्व पर्याय को नहीं जान सके। श्रुत ज्ञान के अनन्त पर्याय भी जो एकत्र हो जावें तो भी छद्मस्थ के दृष्टीगत नहीं होवे परन्तु केवली जान सके देख सके ऐसा यह होता है इस लिये सब जीवों का मति ज्ञान श्रुत ज्ञान का अनन्तवा भाग तो सदैव काल खुल्ला ही रहता है, यद्यपि जीवों के सब प्रदेशों ज्ञानावरणिय दर्शनावरणिय की अनन्तानन्त वर्गणा कर वेष्टित हैं तथापि चैतन्य का स्वभाव को वे ढक सकते नहीं हैं, इस लिये उन ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीयादिक आठों कर्मों के आत्म का आच्छादन में स भी एक अक्षर के अनन्तवे भाग जितना जीव खुल्ला रहता है बाकी सर्व स्थान कर्म पुद्गल वेष्टित रहते हैं उतना ही जो आव खुल्ला न हो तो जीव फिट कर अजीव हो जावे इस लिये जैसे आकाश के सर्व दृश्य विभाग मेघ मय कर काम अभ्र

वइसासिय बुध्दवयण, वेसिय वेसिय लोगायय, सट्ठितत, माढर पुराण वागरण भागवय पायजली पुस्सदेवय लेह गणिय सउणरूय नडयाई, अहवा बावत्तरिंक लाओ चत्तारिवेया संगोवंगापयाई मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्त परिग्गहियाइ मिच्छसुयं सुय, एयाइ चेव ? सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्त परिग्गहिया सम्मदिट्ठी सम्मसुय ॥ अहवा मिच्छादिट्ठिस्स सम्मत्तसुय कम्म सम्मत्त

अंगोपांग सहित तथा—१ शिक्षाकल्प, २ व्याकरण, ३ छंदनिरुक्ति, ४ ज्योतिष ५ काव्य, ६ लक्षण सामुद्रिक, इत्यादि मिथ्यात्वी के मत.ये मिथ्याशास्त्र हैं, इन शास्त्रों का सूत्र अर्थ गाथा श्लोक पदादि सम्यक् दृष्टी सुने पढ धारे वे सम्यक्त्व के समभाव कर यथा योग्य धारना कर सम्यक् श्रुत हो परिणमे इस से सम्यक श्रुत होवे और मिथ्यात्वी के उक्त भारतादि शास्त्र सूत्र श्लोकादि श्रवण पूर्वापर अलोच करते जो उस में का विरोधार्थ जानने में आजावे तो भी सम्यग श्रुत रूप हो कर परिणम जावे सत्य को सत्य रूप और असत्य को असत्य रूप जानने से सम्यक्त्व की प्राप्ति होजावे क्यों कि वह मिथ्यात्वी अपने माननिय शास्त्र की विपरीतता का भाव होने से प्रेरित हुवा है हृदय मन जिस का जिस से स्वपक्ष की जो बुद्धि का हठग्राही पना है उसे त्यागे जैसे १ मुलदेवजी, २ अवडजी, ३ स्कन्धकजी इत्यादि मिथ्या श्रुत के परम पाठी हो कर भी उस का विरोध उन्हें मालुम होते सम्यक् भाव को प्राप्त

हेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छादिट्ठिया तेहिं चेव ससमएहिं चोइया समाणा केइ सप क्खदिट्ठीओ चयंति,से तं मिच्छसुयं ॥४५॥से किं तं साइयं सपज्जवसियं अणाइयं अपज्जवसियं? इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं वोच्छित्ति नयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं,अवुच्छित्ति नयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ॥तत्थणं दव्वओ णं सम्मसुयं एगंपुरिसं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं,

थे, और जो विरोध में नहीं समझे यथातथ्य अभिभाषी न होवे असत्य को सत्य रूप और सत्य को असत्य रूप माने तो उन को मिथ्याश्रुत मिथ्या रूप हो परिणमे यह मिथ्या श्रुत कहा ॥४५॥ अहो भगवन् ! आदि सहित और अंत सहित, तैसे ही आदि रहित और अंत रहित श्रुत किस कहते हैं ? अहो शिष्य ! पूर्वोक्त द्वादशांग आचार्य के गुणरत्न की सदूक समान विरह पडे इस आश्रिय आदि और अन्त दोनों सहित और आदि अन्त दोनों नहीं होवे उस आश्रिय आदि अन्त दोनों रहित हैं इस के संक्षेप में चार प्रकार कहे हैं, तद्यथा—१ द्रव्य से २ क्षेत्र से ३ काल से और ४ भाव से, द्रव्य से सम्यक् श्रुत एक जीव आश्रिय आदि और अन्त दोनों सहित अर्थात् पुरुष पढने बैठा वह आदि और पढकर पूरा किया वह अन्त हुवा बहुत पुरुषों आश्रिय आदि और अन्त दोनों रहित हैं अर्थात् संसार में सम्यक् श्रुत के धारक अनादि से हैं और आगे अनन्त काल तक बने रहेंगे, २ क्षेत्र से

अरिहंते भगवतेहिं उप्पण्ण णाण दसण धरेहिं, तेलोक्कनिरिक्खिय महिय पूइएहिं तीय पडुप्पण्ण मणागय जाणएहिं सव्वणूहिं सव्वदरिसीहिं,पणीय दुवालसग गणिपिडग तंजहा—आयारो, सूयगडो ठाण समवाओ, विवाह पण्णत्ती, नाया धम्मकहा, उवासगदसाओ, अतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणा, विवागसुय, दिट्ठिवाओय इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग चउदस पुव्विस्स ससासुय अभिण्ण-

॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! सम्यक् श्रुत् किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! जो अरिहंत भगवंत केवलज्ञान केवल दर्शन के धारक तीनों लोक को देखने वाले महिये अर्थात् गुणकीर्तन करने योग्य, भाव पूजा से पूजने योग्य, अतीत अनागत वर्तमान इन तीनों काल के ज्ञान सर्व संदेह के निरूंद करता सर्वज्ञ सर्वदर्शी उन के प्रणित द्वादशांगी सूत्र सो आचार्य भगवंत की गुणरत्नों की सदूके उन के नाम—१ पंचाचार प्रतिपादक आचारंग, २ स्वसमय परसमय प्रतिपादक सूयगडांग, ३ एकादि दशस्थान प्रतिपादक ठाणांग, ४ एकादि कोटाकोटी बोल प्रतिपादक समवायंग, ५ बहुत अर्थों या प्रवाह वाला विवाहपन्नत्ति, ६ दृष्टांतो से न्याय का स्थापक ज्ञाता धर्म कथा, ७ श्रावक करणीदर्शक उपासकदशांग, ८ कर्मोंका अन्त करने की करणीदर्शक अन्तगडदशा, ९ अनुत्तर विमान में उपजने वालों का कथक अनुत्तरोपपातिकादशा, १० आश्रव संवर के प्रश्नोत्तर दर्शक प्रश्नव्याकरण, ११ दुःख सुख रूप कर्म विपाक

एस पुरिसस्स सम्मसुय ॥ तेणं पर भिण्णेसु य भयणा ॥ से त सम्मसुय ॥ ४४ ॥ से किं त मिच्छसुय ? मिच्छसुय ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छदिट्ठिएहिं सच्छदबुद्धि मइविगप्पिय तजहा—भारह रामायण, भीमा सुरुक्ख, कोडिल्लय, सगड भद्दियाओ, ममगदियाओ, खोडमुह, कप्पासिय, नाम सुहुमा कणगसत्तरी,

का कथक विपाक भोर १२ ज्ञान का सागर दृष्टीवाद यह द्वादशांग रूप आचार्य भगवत की गुणरत्नों की सदूक तथा चवदह पूर्व से दश पूर्व तक का ज्ञान के धारक के रचे हुवे जो सूत्र है वे सम्यक श्रुत है दश पूर्व अधिक पढे उन के बनाये सूत्र की भजना अर्थात् सम्यक श्रुत भी होवे और मिथ्या श्रुत भी होवे यह सम्यक् श्रुत कहा ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्या श्रुत किसे कहते है ? अहो गौतम ! जो मिथ्यात्व दृष्टी अज्ञानीयोंने अपने स्वछन्द की बुद्धि मति कल्पना कर बनाय हुवे ग्रन्थ तद्यथा—१ भारथ २ रामायण, ३ भीमभास ४ सहिसूत्र ५ सबशास्त्र ६ मुख्य शास्त्र, ७ कोटिल्ल ८ सकटभद्रक, ९ समयाद, १० घोडमुख, ११ अयासिका, १२ नाग सूक्ष्म १३ कणासत्तरी, १४ वैसास्त्रिक १५ बुद्धवयण १६ तेराशिक, १७ काविक, १८ गायित, १९ पष्टितन्त्र, २० माठर २१ चार पुराण २२ व्याकरण २३ भागवत २४ पातजली २५ पुष्पदेव, २६ लेखक, २७ मांपक, २८ सकुन शास्त्र, २९ नाटिक शास्त्र ३० चतुतर कलाक शास्त्र, ३१ चार वेद, ३२ साथों

फासिंदियलद्धिक्खर, नो इंदिय लद्धिक्खर, से त लद्धिक्खर, ॥ से त अक्खरसुय ॥ ४१ ॥ से किं त अणक्खरसुय ? अणक्खर सुय अणेगविह पण्णत्त तजहा— (गाहा) ऊसासिय, नीससिय, निच्छूढ, खासिय च, छीय च ॥ निस्सिंघिय मणुसार, अणक्खर छे लियाइय, ॥ १ ॥ से त अणक्खर सुय ॥४१॥ से किं त सण्णिसुय ? सण्णि सुय तिविह पण्णत्त तजहा—कालिओवएसेण हेऊओवएसेण, दिट्ठिवाओ वएसेण,॥ से किं त कालिओवएसेण ? कालिओवएसेण जस्सण अत्थि ईहा अपोहा मग्गणा गवेसणा।

की लब्धि होने से अक्षर की लब्धि होती है जिस से अव्यक्तपने आहार आदि अंगीकार करते हैं उसे लब्धि अक्षर कहना यह अक्षर श्रुत कहा ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! अनक्षर श्रुत किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! अनक्षर श्रुत के अनेक भद यथा—१ उश्वास ले २ निश्वास छोडे, ३ थूके ४ सके, ५ खांसे ६ छींके, ७ श्वास ले ८ कायोत्सर्ग करे ९ सींटी दे, १० मुख फिरावे, ११ आंख टमकावे, १२ मस्तक धुणे इत्यादि से समजे सो सब अनक्षर श्रुत जानना ॥४२॥ अहो भगवन् ! सन्नी श्रुत किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! सन्नी श्रुत के तीन भेद कहे हैं यथा—१ कालीकोपदेश २ हितोपदेश और ३ दृष्टीवादो पदेश, अहो भगवन् ! कालीकोपदेश किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! कालीकोपदेश जिस को दीर्घ काल का उपयोग हो, चेतना युक्त वेदना हो, होवे पदार्थ का विचारना, आलोचना निश्चय करना,

चिता वीमसा, सेणं सण्णीत्ति लब्भइ जस्सण नत्थि ईहा अपोह मग्गणा गवेसणा चिता वीमंसा सेण असण्णीत्ति लब्भइ से त कालिओवएसण॥ से किं त हेउवएसेण? हेउवएसेण जस्सण अभिसधारणा पुव्विया करणसत्ती, सेण सण्णी त्ति लब्भइ जस्सण नत्थि अभिसधारणा पुव्विया करण सत्ती सेण असण्णीती लब्भइ, सेत हेऊवएसण॥ से किं त दिट्ठिवाऊवएसेण ? दिट्ठिवाऊवएसण सण्णिसुयस्स खओवसमेण सण्णी लब्भइ असण्णिसुयस्स खओवसमेण असण्णिलब्भइ, से त दिट्ठिवाउवएसेण से त सण्णीसुय, से त असण्णिसुय ॥४२॥ से किं त सम्मसुय ? सम्मसुय ज इमं

अन्य धर्म स्वभाव स्वरूप का चिन्तवन विशेष स्वरूप का चिन्तवन, चित्त की एकाग्रता से चिन्तवन, यह सब सञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय में पावे हैं और जिस के विचारना आलोचना निश्चय करना वगैरा ऊपर कहे बोल नहीं पावे यह असञ्ज्ञी यह कालिकोपदेश कहा अहो भगवन् ! हितापदेश किस कहते हैं ? अहो गौतम ! हितापदेश जिस का चित्त का अव्यक्त वस्तु का व्यक्त वस्तु का ज्ञान यह भी सञ्ज्ञी में पावे और जिस को पूर्व के व्यक्ताव्यक्त का विचार नहीं यह असञ्ज्ञी में पावे, यह हितापदेश कहा अहो भगवन् ! दृष्टीवादोपदेश किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! दृष्टीवादोपदेश—इष्ट अनिष्ट वस्तु का वेदना यह भी सञ्ज्ञी में पावे और इष्ट अनिष्ट का वेदना असंज्ञी में नहीं पावे यह दृष्टीवादोपदेश हुवा यह सञ्ज्ञी श्रुत और असञ्ज्ञी श्रुत का दूसरा

अणाइसुय,सपज्जवसियसुय, अपज्जवसियसुय, गमियसुय अगमियसुय,अगपविट्ठ,अणग पविट्ठ ॥४०॥ से किं त अक्खरसुय ?अक्खरसुय तिविह पण्णत्त तजहा—सन्नक्खर, वंजणक्खर, लद्धिक्खर ॥ से किं त सन्नक्खर ? सन्नक्खर अक्खरस्स संठाणा गिइ सन्नक्खर, जत्थण बंभीलिवी पवत्तइ एव लीवीए अट्ठारसविहाणे पण्णत्ते, तजहा—(गाहा) बंभी जवणालिया, दासपुरिया उत्तरक्खरा ॥ अक्खर बुद्धिया पोक्खर सारिया पहराइया ॥ १ ॥ मणवइया वेणुगाइयी णणइया अकलिवी गणि यालिवी ॥ आयसलिवी गधयलिवी, कागिली माहेसरी पोलिंदी ॥ २ ॥ से त

नहीं आने वह अपर्यवसित श्रुत ११ जिस में एक से पाठ हो दृष्टिवादादि सो गमी श्रुत, १२ जिस में विचित्र प्रकार के पाठ हो एकादशांग सो आगमिक श्रुत, १३ आचारांग दि शास्त्र सो अंग प्रविष्ट श्रुत और १४ अन्य आवश्यकादि शास्त्र सो अंग बाहिर शास्त्र ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! अक्षर श्रुत किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! अक्षर श्रुत के तीन भेद, तद्यथा—१ सज्ञाक्षर, २ व्यजनाक्षर, और ३ लब्धि अक्षर अहो भगवन् ! सज्ञाक्षर किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! जो अक्षर की आकृति है उसे सज्ञा अक्षर कहते हैं, उस के ब्राह्मी लीपी आदि अठारह भेद कहे हैं तद्यथा—१ ब्राह्मी, २ यवन लिपी, ३ दास पुरिया, ४ उत्तर अक्षरा, ५ अक्षर बुद्धि का, ६ पुष्कर सारिता, ७ पटराइया, ८ मणवादिया, ९ वेणुकालिपी, १० णणइया, ११ अकलिपी, १२ गणित लिपी, १३ आयस लिपी, १४ गधम लिपी

सवकक्खर ॥ से किं त वजणक्खर ? वजणक्खर अक्खरस्स वजणाभिलावो वजण क्खर, तदीह रहस्स पुअ त जहा—अणुदत, दमठह, तालवमठिय, निनिदिय, अणु णासिय, से त वजणक्खर ॥ से किं त लद्धि अक्खर ? लद्धि अक्खर अक्खर लद्धियस्स लद्धि अक्खर समुप्पज्जइ त पचविह पण्णत्त तजहा—सोइदिय लद्धि क्खर, चाक्खिदिय लद्धिक्खर, घाणिदिय लद्धिक्खर, रसणिंदिय लद्धिक्खर,

१५ कामिसो १० महेश्वरी, १७ पोलिंदी १८ पोलींदि लिपी अहो भगवन्' व्यजन अक्षर किसे कहते हैं! अहो गौतम ? व्यञनाक्षर अकार ककारादि का उच्चार, लघु दीर्घादि की समझ तथा यह घस का शब्द है इत्यादि ज्ञान हो वह व्यञनाक्षर अहो भगवन् ! लब्धि अक्षर किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! लब्धि अक्षर जो निरतर अक्षरोच्चार करना तथा जो अक्षर लब्धि हो इस के छ भेद तद्यथा—१ कान सुन कर उस के भाव भद जाने यह जीव का शब्द है यह अजीव का शब्द है यह वाजिंत्र का नाद है यह बोलेगा यह श्रुतेन्द्रिय की लब्धि, २ चक्षु इन्द्रिय से रूप रग जाने यह श्याम वर्णादि है वह चक्षु इन्द्रिय की लब्धि, ३ घाणेन्द्रिय से गध को जाने यह घाणेन्द्रियकी लब्धि ४ रसेन्द्रिय से मधुरादि रस का जानना यह रसेन्द्रियकी लब्धि, ५ स्पर्शेन्द्रिय कर शीतादि स्पर्श के जानना यह स्पर्शेन्द्रियकी लब्धि और ६ मन कर मले बुरे का ज्ञान हो अमृतादि आदरे विषादि छोड यह नो इन्द्रिय लब्धि एकेन्द्रिय को भी स्पर्शेन्द्रिय

अपुट्ठतु ॥ गध रस च फास च, बध पुट्ठ त्रियागरे ॥ ४ ॥ भासा समसेढीओ, सद्द ज सुणइ मीसिय ॥ सुणेइ वी सेढी पुण सद्द, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ५ ॥ ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा य ॥ सण्णा सूई मइ पन्ना, सव्व आभिणिबोहियनाण ॥ ६ ॥ से त आभिणिबोहिय नाण परोक्ख, से त मइनाण ॥ ३९ ॥

परिणमा कर लोलीभूत होकर कान में पूराते हैं इस लिये उन पुद्गलों को मिश्र कहे जाते हैं, जिस प्रकार वर्षाद का पानी रास्ते के कचरे मिश्रित हो नाले में से नदी आदि में मिलता है वैसे मूलगी भाषा के पुद्गलों सकल लोक व्यापक बन बीच में आते पुद्गलों से लोलीभूत होकर मिश्र पन कर कान में पूराते हैं उन का अवग्रह होता है इस लिये जो निकली हुई मूलगी भाषा के पुद्गलों हैं वैसे ही आकर कान में नहीं पडते हैं परंतु पराघातपना पाकर ही सुने जाते हैं ॥ ५ ॥ पदार्थ का तथा पर्याय का विचार करे उसे ईहा कहते हैं वस्तु का निश्चय करना उसे अपोह कहते हैं, वस्तु पर विश्वास करना उसे विमासा कहते हैं, अन्य के तथा स्वय के अर्थ का मिलतापना विचारना उस मागना कहते हैं अर्थ का विशेष प्रकार निश्चय करना उसे गवेषना कहते हैं, व्यञ्जनावग्रह के आगे का जो काल है वह सज्ञा है, प्रथम अनुभव किये अर्थ का विचारना वह स्मरणा, सूक्ष्म अर्थ का विचार करना वह मति-बुद्धि, ज्ञाना वरणीय के क्षयोपशमसे वस्तु का अवबोध होवे वह प्रज्ञा, यह सब आभिनिबोधिक ज्ञान के पर्याय वाचक नाम

से किं त सुयणाण परोक्ख ? सुयणाण परोक्ख चोदसविहं पण्णत्त तजहा-
अक्खरसुय, अणक्खरसुय, सण्णिसुय, असण्णिसुय, सम्मसुय, मिच्छसुय साइसुय,

जानना यह परोक्ष मति ज्ञान के के भेद और मति ज्ञान के भेद हुए ॥ १९ ॥ अहो भगवन्! श्रुत ज्ञान परोक्ष किसे कहते हैं? अहो गौतम! श्रुत ज्ञान परोक्ष के चवदह भेद कहे हैं तद्यथा-१ अकारादि अक्षर करके जो कहने योग्य भाव हैं उन का प्ररूपना वह अक्षर श्रुत २ अक्षरोच्चार विना मुख नेत्र हस्तादि की चेष्टा कर भाव को दर्शाना वह अनक्षर श्रुत ३ मनोपयोग युक्त विचारना निर्णय करना निश्चय करना अर्थ करना आदि सहित जो श्रुत हो वह संज्ञी श्रुत, ४ विचार रहित शून्य चित्त से पढना सो असंज्ञी श्रुत ५ तीर्थंकर केवल ज्ञानी चौदह पूर्वधारी यावत् दश पूर्वधारी इन का कथन सो सम्यक् श्रुत इन से कम ज्ञानवाले का निश्चय नहीं सम्यक् श्रुत भी होवे, मिथ्या श्रुत भी होवे ६ जिस में पंचमाश्रव सेवन का उपदेशादि हो ऐसे काम शास्त्र ज्योतिष वैद्यकादि तथा मतादि के शास्त्र वह मिथ्या श्रुत ७ द्वादशांगी सूत्र अक्षर स्थापना रूप जो है वह आदि सहित है तथा भरत क्षेत्र आश्रिय ज्ञान भी आदि सहित है एक जना पढने बैठा उस आश्रिय भी आदि सहित ज्ञान वह सादि श्रुत ८ अर्थ प्रयोजन रूप द्वादशांगी तथा महा विदेह क्षेत्र आश्रिय ज्ञान अनादि श्रुत, ९ जो आदि श्रुत कहा उस का अंत हो वह सपर्यवसित श्रुत, १० जो अनादि श्रुत कहा उस का अन्त भी

अपुट्ठतु ॥ गंध रसं च फासं च, बध पुट्ठं वियागरे ॥ ४ ॥ भासा समसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं ॥ सुणेइ वी सेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ५ ॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा य ॥ सण्णा सूई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहियनाणं ॥ ६ ॥ से तं आभिणिबोहिय नाणं परोक्खं से तं मइनाणं ॥ २१ ॥

परिणमा कर छोलीभूत होकर कान में पूराते हैं इस लिये उन पुद्गलों को मिश्र कहे जाते हैं, जिस प्रकार वर्षाद का पानी रास्ते के कचरे मिश्रित हो नाले में से नदी आदि में मिलता है वैसे मूलगी भाषा के पुद्गलों सकल लोक व्यापक वन बीच में आते पुद्गलों से छोलीभूत होकर मिश्र पन कर कान में पूराते हैं उन का अवग्रह होता है इस लिये जो निकली हुई मूलगी भाषा के पुद्गलों हैं वैसे ही आकर कान में नहीं पड़ते हैं परन्तु पराघातपना पाकर ही सुने जाते हैं ॥ ५ ॥ पदार्थ का तथा पर्याय का विचार करे उसे ईहा कहते हैं वस्तु का निश्चय करना उसे अपोह कहते हैं, वस्तु पर विश्वास करना उसे विमासा कहते हैं, अन्य के तथा स्वयं के अर्थ का निश्चयपना विचरना उसे मागना कहते हैं अर्थ का विशेष प्रकार निश्चय करना उसे गवेषना कहते हैं, व्यञ्जनावग्रह के आगे का जो काल है वह सज्ञा है, प्रथम अनुभव किये अर्थ का विचारना वह स्मरणा, सूक्ष्म अर्थ का विचार करना वह मति-बुद्धि, ज्ञाना वरणीय के क्षयोपशमसे वस्तु का अवबोध होवे वह प्रज्ञा, यह सब आभिनिबोधिक ज्ञान के पर्याय वाचक नाम

से किं त सुयणाण परोक्ख ? सुयणाण परोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्त तंजहा—
अक्खरसुय, अणक्खरसुय, सण्णिसुय, असण्णिसुय, सम्मसुय, मिच्छसुय साईसुय,

जानना यह परोक्ष मति ज्ञान के भेद और मति ज्ञान के भेद हुए ॥ १९ ॥ अहो भगवन्! श्रुत ज्ञान परोक्ष किसे कहते हैं? अहो गौतम! श्रुत ज्ञान परोक्ष के चवदह भेद हो हैं तद्यथा—१ अका रादि अक्षर करके जो कहने योग्य भाव हैं उन का प्ररूपना यह अक्षर श्रुत, २ अक्षरोच्चार बिना मुख नेत्र हस्तादि की चेष्टा कर भाव को दर्शाना वह अनक्षर श्रुत ३ मनोपर्गेणा युक्त विचारना निर्णय करना निश्चय करना अर्थ करना आदि सहित जो श्रुत हो यह सन्नी श्रुत, ४ विचार रहित शून्य चित्त से पढना सो असन्नी श्रुत ५ तीर्थंकर केवल ज्ञानी चौदह पूर्वधारी यावत् दश पूर्वधारी इन का कथन सो सम्यक् श्रुत इन से कम ज्ञानवाले का निश्चय नहीं सम्यक् श्रुत भी होवे, मिथ्या श्रुत भी होवे ६ जिस में पंचाश्रव सेवन का उपदेशादि हो ऐसे काम शास्त्र ज्योतिष वैद्यकादि तथा वेदादि के शास्त्र यह मिथ्या श्रुत ७ द्वादशांगी सूत्र अक्षर स्थापना रूप जो है वह आदि सहित हैं तथा भरत क्षेत्र आश्रिय ज्ञान भी आदि सहित है एक जना पढने बैठा इस आश्रिय भी आदि सहित ज्ञान यह सादि श्रुत ८ अर्थ प्रयोजन रूप द्वादशांगी तथा महा विदेह क्षेत्र आश्रय ज्ञान अनादि श्रुत, ९ जो आदि श्रुत कहा उस का अंत हो यह सपर्यवसित श्रुत, १० जो अनादि श्रुत का उस का अन्त भी

अपुट्ठतु ॥ गध रस च फास च, बध पुट्ठ वियागरे ॥ ४ ॥ भासा समसेढीओ, सद्द ज सुणइ मीसिय ॥ सुणेइ वी सेढी पुण सद्द, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ५ ॥ ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा य ॥ सण्णा सूई मइ पन्ना, सव्व आभिणिबोहियनाण ॥ ६ ॥ से त आभिणिबोहिय नाण परोक्ख, से त मइनाण ॥ ३९ ॥

परिणमा कर लोलीभूत होकर कान में पुराते हैं इस लिये उन पुद्गलों को मिश्र कहे जाते हैं, जिस प्रकार वर्षाद का पानी रास्ते के कचरे मिश्रित हो नाले में से नदी आदि में मिलता है वैसे मूलगी भाषा के पुद्गलों सकल लोक व्यापक बन बीच में आते पुद्गलों से लोलीभूत होकर मिश्र बन कर कान में पुराते हैं उन का अवग्रह होता है इस लिये जो निकली हुई मूलगी भाषा के पुद्गलों हैं वैसे ही आकर कान में नहीं पडते हैं परंतु पराघातपना पाकर ही सुने जाते हैं ॥ ५ ॥ पदार्थ का तथा पर्याय का विचार करे उसे ईहा कहते हैं वस्तु का निश्चय करना उसे अपोह कहते हैं, वस्तु पर विश्वास करना उसे विमासा कहते हैं, अन्य के तथा स्वय के भाव का मिलवापना विचारना उसे मार्गना कहते हैं अर्थ का विशेष प्रकार निश्चय करना उसे गवेषना कहते हैं, व्यजनावग्रह के आगे का जो काल है वह सज्ञा है, प्रथम अनुभव किये अर्थ का विचारना वह स्मरणा, सूक्ष्म अर्थ का विचार करना वह मति-बुद्धि, ज्ञाना वरणीय के क्षयोपशमसे वस्तु का अवबोध होवे वह प्रज्ञा, यह सब आभिनिबोधिक ज्ञान के पर्याय वाचक नाम

उग्गह ईहा अवाउय, धारणा एव हुति चत्तारि ॥ आभिणिबोहिय नाणस्स,भेय वत्थु समासेण ॥ १ ॥ अत्थाणं उग्गहणमि, उग्गहो तहवि आलचणे ईहा ॥ ववसायंमि अवाओ, धारण पुण धारणंदिति ॥ २ ॥ उग्गह इक्कसमय, ईहावाय मुहुत्त मद्धतु काल सख मसखच, धारण होइ नायव्वा ॥ ३ ॥ पुट्ठ सुणेई सद्द, रूव पुण पासइ

वस्तु का निर्णय कर निश्चय करना यह अवाय, और धारन कर रखना यह धारणा तीर्थंकर भगवतने कही है ॥ २ ॥ स्थिति-अवग्रह की एक समय की ईहा और अवाय की अंतर्मुहूर्त की और धारणा की संख्यात तथा असंख्यात काल की स्थिति मानना ॥३॥ शब्द कानको स्पर्शने से, गंध घ्राणको स्पर्शने से, रस जिव्हा को स्पर्शने से और स्पर्श शरीर को स्पर्शने से ही इन्द्रिय उन्हें जान सकती है परंतु आंख जो दूर रहे, बिना स्पर्शे पदार्थ को ही देखता है × ॥ ४ ॥ अब भाषा आश्रिय कहते हैं—जो शब्द निकले वे पुद्गल सम श्रेणि करके छ ही दिशा में चउदा ही राज्य लोक में व्याप रहे उन पुद्गलों को शब्दपन

× कान का विषय १२ योजन का गजारव के शब्द आश्रिय तथा सेना में भरी आदि के शब्द आश्रिय, २ रूप का विषय लक्ष योजन का, लक्ष योजन का रूप वैक्रय करे वह जमीन का देख कर ही यह तथा मानुषी सब में रूप का विषय ९ योजन का मानना यह सद्भाव को उदय पाता सर्व लाख योजन से देखे, ३ घ्राण का रस का भार स्पर्श का विषय ९ योजन का मानना यह इन्द्रियों की विषय ता जिस काल में जो मनुष्यों होवे उन के आत्मागुल कर ही ग्रहण करना

मगाल्लगदिट्टतेण ॥ ३७ ॥ त समासओ चउव्विहं पण्णत्त तजहा दव्वओ खेतओ कालओ भावओ ॥ तत्थ दव्वओण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइं जाणइ न पासइ खेत्तओण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वेखेत्त जाणइ न पासइ, कालओण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ न पासइ, भावओण आभिणिबोहियनाणी सव्वभावे जाणइ न पासइ ॥ ३८ ॥ (गाहा)

के दृष्टान्त से अवग्रहादि चारों बोल का स्वरूप समझाया ॥ ३७ ॥ मति ज्ञान के संक्षेप से चार प्रकार कहते हैं—तद्यथा—१ द्रव्य से, २ क्षेत्र से, ३ काल से और ४ भाव से मति ज्ञानी मति ज्ञान कर द्रव्य से संक्षेप कर सब द्रव्य जाने परन्तु देखे नहीं २ क्षेत्र से मतिज्ञानी मतिज्ञान कर संक्षेप से सर्व क्षेत्र जाने परंतु देखे नहीं ३ काल से मतिज्ञानी मतिज्ञान कर संक्षेप से सर्व काल के समय की बात जाने परंतु देखे नहीं और ४ भाव से-मतिज्ञानी मतिज्ञान कर संक्षेप से सर्व भाव की बात जाने परंतु देखे नहीं ॥ ३८ ॥ अब मतिज्ञान के चारों भेद गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं—१ अवग्रह ग्रहण करना, २ ईहा विचारना ३ अवाय निश्चय करना, और ४ धारणा धार रखना यह आभिनीबोधिक मतिज्ञान के चार भेद वस्तु के तथा व्यवहारिक विशेष अर्थ रूप जानना ॥ १ ॥ रूप अर्थादि का ग्रहण करना वह अवग्रह, ग्रहण किया उसका अन्तरंग में विचार करना वह ईहा,

नामए केइ पुरिसे अव्वत्त फास पडिसवेइज्जा तणं फ सेत्ति उग्गहिए नो चेवणं जाणइ केवस फासोत्ति, तओ इह पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे तओ अवाय पविसइ तओ से उवउगय हवइ तओ धारण पविसइ तओणं धारेइ सखिज्जवा काल असखिज्जवाकाल ॥ से जहा नामए कइ पुरिसे अव्वत्त सुमिण पासिज्जा तेण सुमिणत्ति उग्गहिए नो चेवण जाणइ, केवस सुमिण। तओ इह पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे तओ अवाय पविसइ, तओ स उवगय हवइ तओ धारण पविसइ तओण धारेइ, सखिज्जं वा काल, असखिज्ज वा काल ॥ से त

फिर निश्चय करे कि यह सक्कर ही है परन्तु गुल नहीं है, फिर उसे सख्यात असख्यात काल तक धार रखे ८ ऐसे ही कोइ स्पर्शेन्द्रिय कर प्रथम स्पर्श के पुद्गलों का अव्यक्त पन अवग्रह करे फिर ईहा-विचारना कर निर्णय करे फिर निश्चय करे कि यह मुखमल का ही स्पर्श है कम्बलादि का नहीं फिर सख्यात असख्यात काल तक धरन कर (याद) रखे ९ जैसे किसी पुरुष को स्वप्न आया वह जाग्रत हो प्रथम वो अव्यक्त पन मन से जान कि आज मुझे स्वप्न आया फिर ईहा-विचरना कर किस का स्वप्न आया फिर निर्णय करे कि मुझे सिंह का ही स्वप्न आया और फिर सख्यात असख्यात काल तक धारन कर रख कि मुझे अमुक एक सिंह का स्वप्न आया था ॥ यह सरासे के तथा मुझे मनुष्य

संखिज्जवाकाल असंखिज्जवाकाल ॥ से जहा नामए केइ पुरिसे अव्वत्त गंध अग्घाइज्जा तेण गंधेत्ति उग्गहिए नो चेवण जाणइ केवेस गंधेति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगय हवइ तओधारणं पविसइ तओणं धारेइ संखिज्जवाकाल असंखिज्जवाकाल ॥ से जहा नामए केइ पुरिसे अव्वत्त रस आसाइज्जा तेण रसोति उग्गहिए नो चेवण जाणइ केवेस रसोति तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एसरसे तओ अवायं पविसइ तओ से उवगय हवइ तओणधारेइ संखिज्जवाकाल असंखिज्जवाकाल॥से जहा

नहीं जाने कि यह किस का रूप है, फिर ईहा विचारना में प्रवेश करे तब उस उपयोग कर जाने कि अमुक मनुष्य का व पशु का या किसी वस्तु का यह रूप है फिर अवाय में प्रवेश कर निश्चय करे कि अमुक मनुष्य का ही रूप है परन्तु पशु प्रमुख का नहीं है। फिर धारना करे उसे संख्यात असंख्यात काल तक धारन कर रखे कि अमुक वक्त अमुक को देखा था २ ऐसे ही कोइ घ्राणेन्द्रिय कर किसी गंध के पुद्गल ग्रहण करे उसे अव्यक्त पने अवग्रह करे फिर ईहा-विचार होवे कि यह किस की गंध आती है, फिर अवाय निश्चय होवे कि यह गुलाबादि की ही वास है परन्तु कस्तुरी आदि की नहीं फिर धारना कर रक्खे यह धारना संख्यात असंख्यात काल तक रहे ४ ऐसे ही कोइ रसेन्द्रिय कर किसी रस के पुद्गल अव्यक्त पने अवग्रह-ग्रहण करे, फिर ईहा विचारना करे कि यह किस का रस है

धारण पविसइ तओ धारेइ सखिज्जवा काल असंखिज्जवा काल से जहा नामए केई पुरिसे अव्वत्त सद्द सुणिज्जा तेण सद्दोत्ति उग्गहिए नो चेवण जाणइ कवेस सद्दाइ तओ ईह पविसइ तओ जाणइ अमुगे एससद्दे, तओ अवाय पविसइ तओ से उवगय हवइ तओ, धारण पविसइ, तओण धारेइ संखिज्जवा काले, असंखिज्जवा काल, से जहा नामए केइ पुरिसे अव्वत्त रूव पासिज्जा तेण रूवत्ति उग्गाहिए नो चेवण जाणइ केवस रूवत्ति तओ इहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवेति, तओ अवाय पविसइ तओसे उवगय हवइ तओधारण पविसइ तओण धारेइ

नहीं मिटा वहां तक वे पुद्गलों इन्द्रिय म ठेर सके नहीं जब शब्द के पुद्गल कर इन्द्रि के प्रदेशों पूर्ण हुवे तब वे पुद्गल उस कर्णेन्द्रि में ठेरे, तब पुरुष उन पुद्गलों को ग्रहण करन समर्थ बना श्रोतेन्द्रिय पूरित हुए तब वह पुरुष अव्यक्त शब्द सुने और उसे ग्रहण करे परतु जाना नहीं कि किस का यह शब्द किस प्रकार का यह शब्द तब फिर ईहा—विचारणा में प्रवेश करे विचारते २ मालुम होवे कि अमुक का यह शब्द है तब अवाय—निश्चय होवे कि फलाने का ही यह शब्द है निश्चय हुए के बाद उस शब्द को धारन करे तब फिर यह शब्द,संख्यात काल असंख्यात काल तक याद रखे यह श्रोतेन्द्रिय आश्रिय कहा २ ऐसे ही कोइ चक्षुइन्द्रिय कर प्रथम अव्यक्त रूप को देख चमत्कार करे, परन्तु ऐसा

नामए केइ पुरिसे आवाग सीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेग उदगबिंदु पक्खिविज्जा से नट्ठे अण्णेवि पक्खित्त से वि नट्ठे एव पक्खिप्पमाणे सुपक्खिप्पमाणेसुहोही, से उदगबिंदु जेण मल्लग वेहिति आहीसे उदगबिंदु जेण तंमि मल्लगंसिट्ठाहिति होही, से उदगबिंदु जेण त मल्लग भारिहिति होही, से उदगबिंदु जेण त मल्लग भरिहिति होही, से उदगबिंदु जेण त मल्लग पवाहेहिति एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं २ अणतेहिं पोग्गलेहिं जाहे त वजण पुरिय होइ ताहे हुति करेइ नो चेवण जाणइ केविएस सद्दावेइ तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगेएस सद्दाइ, तओ अवाय पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओण

दृष्टांत कोई पुरुष निवाडे में से निकला हुवा तत्काल का नया कोरा सरावला कुमार के पास से ग्रहण करे उस पर पानी का एक बिन्दू प्रक्षेप करे कि वह सरावला उस बिंदू को तत्काल ही शोष लेता है फिर दूसरा पानी का बिंदू डाले उसे भी वह शोष लेगा यों तीसरा चौथा उक्त प्रकार प्रक्षेपवे २ उन बिंदूओं कर कितनेक काल बाद वह सरावला भींजने लगे वह भींजकर तर होवे तब फिर उस में पानी का बिन्दू ठेरने लगे और फिर वह सरावला पानी कर पूरित होवे भरावे तब उस सरावले में वह पानी स्थापित होवे-ठेहरे इस ही प्रकार सुप्त मनुष्य की इन्द्रियों निद्रावरणीय कर्मावरण कर रूक्ष उस सरावेल जैसी बनी थी उस में वह शब्द रूप पानी का बुन्द पडते २ जहां तक इन्द्रिय का रूक्षपन

धारण पविसइ तओ धारेइ संखिज्जवा काल असंखिज्जवा काल से जहा नामए केई पुरिसे अव्वत्त सद्द सुणिज्जा तेण सद्दोत्ति उग्गहिए नो चेव ण जाणइ कवेस सद्दाइ, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ तओ, धारण पविसइ, तओण धारेइ संखिज्जवा काले असंखिज्जवा काल, से जहा नामए केइ पुरिसे अव्वत्त रूव पासिज्जा तेण रूवत्ति उग्गाहिए नो चेव ण जाणइ केवस रूवत्ति तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवति, तओ अवायं पविसइ तओसे उवगय हवइ तओधारण पविसइ तओण धारेइ

नहीं मिटा वहां तक वे पुद्गलों इन्द्रिय म ठेर सके नहीं जब शब्द के पुद्गल कर इन्द्रि के प्रदेशों पुष्ट हुवे तब वे पुद्गल उस कर्णेन्द्रि में ठेरे, तब सुप्त पुरुष उन पुद्गलों को ग्रहण करने समर्थ बना श्रोत्रेन्द्रिय पूरित हुइ तब वह पुरुष अव्यक्त शब्द सुने और उसे ग्रहण करे परंतु जाना नहीं कि किस का यह शब्द किस प्रकार का यह शब्द तब फिर ईहा—विचारणा में प्रवेश करे विचारते २ मालुम होवे कि अमुक का यह शब्द है तब अवाय—निश्चय होवे कि फलाने का ही यह शब्द है निश्चय हुए के बाद उस शब्द को धारन करे तब फिर वह शब्द संख्यात काल असंख्यात काल तक याद रखे यह श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजन २ ऐसे ही कोइ चक्षुइन्द्रिय कर प्रथम अव्यक्त रूप को देख व्यवहार करे, परन्तु ऐसा

मल्लगदिट्ठंतेण ॥ ३६ ॥ से किं तं पडिबोहग दिट्ठतेण ? पडिबोहग दिट्ठतेण से जहा नामए केइपुरिसे कंचिपुरिस सुत्त पडिबोहिज्जा अमुगा अमुगत्ति ! तत्थण चोयग पन्नवग एवं वयासी किं एग समय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

दृष्टांत और २ सरावले का दृष्टांत ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! सुप्त पुरुष का दृष्टांत किस प्रकार है ? अहो गौतम ! यथा दृष्टांत कर कोइ पुरुष या स्त्री नींद में सोता है, उसे कोई पुकार कर जगावे—रे अमुक ! रे अमुकी ! तब वह शब्द उस की कर्णेन्द्रिय को अथडाया, उसने उस को ग्रहित किया यहां शिष्य प्रश्न करता है कि अहो गुरु ! वह सुप्त पुरुष क्या एक समय के प्रविष्ठ पुद्गलों के उपयोग में प्रवर्तता है, कि दो समय में स्पर्शे पुद्गलों के उपयोग में प्रवर्तता है, कि यावत् दश समय के स्पर्श पुद्गलों के उपयोग में प्रवर्तता है, संख्यात समय के स्पर्श पुद्गलों के उपयोग में प्रवर्तता है असंख्यात

बहु विधी-भेद भाव सहित ग्रहण करे, ४ अबहु विधी-भेद भाव रहित ग्रहण करे, ५ क्षिप्र, शीघ्रता से ग्रहण करे, ६ अक्षिप्र-विलम्ब से ग्रहण करे, ७ निश्रित दीखते हुवे ग्रहण करे, ८ अनिश्रित छिपे या कुछ भाग देखते ग्रहण करे, ९ ध्रुव-स्थिर शब्द ग्रहण करे, १० अध्रुव-अस्थिर शब्द ग्रहण करे, ११ उक्त-कहे हुवे ग्रहण करे और १२ अनुक्त-बिना कहे ग्रहण करे, पूर्वोक्त २८ को इन १२ से १२ गुना करने से ३३६ होवे हैं. और इन में उत्पातिकादि चारों बुद्धि मिलाने से ३४० भेद होते हैं

दुसमय पविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, जाव दससमय पविट्ठा पोगला गहणमागच्छति संखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, असंखिज्ज समय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, एवं वयंत चोयग पणवए एव वयासी-णो एगसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, नो दुसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमा गच्छति जाव णो दससमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्ज समय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, असंखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, से त पडिबोहग दिट्ठतेण ॥ से किं तं मल्लग दिट्ठतेण ? मल्लग दिट्ठतेणं से जहा

समय के ग्रहण किये पुद्गल के उपयोग में समर्थता है कि असंख्यात समय के ग्रहण किये पुद्गलों के उपयोग में समर्थता है ? अहो शिष्य ! एक समय दो समय यावत् संख्यात समय के प्रविष्ट पुद्गल ग्रहण किये के उपयोग में समर्थ नहीं हो सकता है परन्तु असंख्यात समय के प्रविष्ट पुद्गल ग्रहण किये जिस के उपयोग में समर्थता है उस का ग्रहण जिस समय में होता है उस से दूसरे समय पर उस के निर्णय के लिये विचार में प्रविष्ट होता है जिस से अवग्रह की एक ही समय की स्थिति कही है यह सूते को प्रतिबोध करने का जगाने का दृष्टांत कहा इस ही कथन को दूसरे सरावले के दृष्टांत से सिद्ध कर फिर आगे बतावेंगे अहो भगवन् ! दूसरा सरावले का दृष्टांत किस प्रकार है ? अहो गौतम ! यथ

सेत अवाए ॥ ३२ ॥ से किं त धारणा ? धारणा छव्विहा पण्णत्ता तजहा—सो इंदिय धारणा, चक्खिदिय धारणा, घाणिंदिय धारणा, जिब्भिंदिय धारणा, फासिंदिय धारणा, नो इंदिय धारणा, तीसेण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पचनामधेज्जा भवंति तजहा—धारणा धारण, धारणा ठुवणा पइट्ठा कोट्ठे, से त धारणा

प्रकार से खुलासा करे, ३ उस निर्णय के अभिमुख होवे, ४ उसे स्वकीय बुद्धि में परिणमावे, और ५ उस को विज्ञान कर विस्तारे यह निश्चय करने के भेद हुवे ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! धारणा को धारन किये सूमार्थ का विनाश न हो उस के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ? धारणा के छ प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ कान से सुने शब्द को भूले नहीं २ आंख से देखे रूप को भूले नहीं ३ नाक से सूंघे गंध को भुले नहीं ४ जिव्हा से चक्खे रस को भुले नहीं, ५ काया से छूए स्पर्श को भूले नहीं, और ६ मन से विचारे अर्थ को भूले नहीं यह सब अत्यन्त में एकार्थी है परंतु अनेक घोष-उच्चारवाले, अनेक व्यंजन अक्षरवाले ऊंच नीच सम पुद्गल ग्रहण रूप इस के पांच नामाभिधान होते हैं तद्यथा—१ निश्चय किया शब्दादि विषय को धारन कर रखे, २ विशेष खुलासे सहित धारन कर रखे, ३ हृदय में स्थापन करे, ४ निश्चय प्रतिष्ठ होवे और ५ जैसे यत्न सहित कोठे में धरा धान्यादि का विनाश नहीं होवे, वैसे उसन धारन किये अर्थ का भी विनाश नहीं होवे यह धारणा के भेद हुवे ॥ ३२ ॥ अथ

॥ २१ ॥ उग्गहे इक्क सामईए, अंतोमुहुत्तिआ ईहा, अतो मुहुत्तिए अवाए, धारणा संखिज्ज वा कालं, असंखिज्ज वा कालं ॥ २४ ॥ एवं अट्ठावीसइ विहस्स आभिणि बोहिय नाणस्स ॥ २५ ॥ वजणग्गहस्स परूवण करिस्सामि—पडिबोहग दिट्ठतेण

इन की काल स्थिति कहते हैं—अवग्रह कर समुच्चय अर्थ ग्रहण करने में एक समय लगे २ ग्रहण किये अर्थ का विचार करते असंख्यात समय का अन्तरमुहूर्त लगे, ३ विचार किये अर्थ का निश्चय करने में भी असंख्यात समय का अन्तरमुहूर्त लगे, और ४ निश्चय किया कोई अर्थ संख्यात काल तक याद रहे कोई असंख्यात काल (सागर पल्योपम तक तथा जाति स्मरणादि कर परभव तक) याद रहे यों अवग्रह की एक समय की, ईहा और अवाय की असंख्यात समय के अन्तरमुहूर्त की और धारणा की संख्यात असंख्यात काल की स्थिति जानना ॥ १८ ॥ यों इस पूर्वोक्त प्रकार सब आभिनिबोधिक (मति) ज्ञान के २८ भेद हुवे अर्थात्—व्यञ्जनावग्रह के ४ भेद अर्थावग्रह के ६ भेद, ईहा के ६ भेद अवाय के ६ भेद, और धारणा के ६ भेद यों सब २८ भेद हुए× ॥ २० ॥ अब व्यञ्जनावग्रह की प्ररूपना दो दृष्टांत कर कहते हैं तद्यथा—१ सोते हुए पुरुष का

× मतिज्ञान के ३३६ भेद तथा ३४ भेद कहते हैं अनेक लोगों अनेक वादित्र के शब्द सुनते हैं उस में मति ज्ञान की क्षयोपशमता कर कोई १ बहु-एक ही वक्त में बहुत शब्दों ग्रहण करे २ अबहु-थोड़े शब्दों ग्रहण करे, ३

थेत्र ॥ थूलभद्देय नासिक, सुदरीनदे, वयरे पारिणामिया बुद्धिए, एवमाई उदाहरणा ॥ १४ ॥ सेत्त असुय निस्सिय ॥ २६ ॥ से किं त सुयनिस्सिय ? सुयनिस्सिय चउव्विह पण्णत्त तंजहा—उग्गहो, ईहा, अवाए, धारणा ॥ २७ ॥ से किं त उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—अत्थोग्गहेय वंजणुग्गहेय ॥ २८ ॥ से किं त

जिस स्तूभसे कोट अटग बनाया उसही स्तूभको पाडनेका कुलवालुकने लोगोंसे कहा लोगों स्तुभ पाडने लगे तब कुलवालुकने कपडा ऊंचा किया, कोणिक सेना सहित पीछा चला, तब लोगों को विश्वास आने से जड से स्तुभ को खोद फेंका कि कोट को तोडकर सेना ग्राम में भरा गइ, कोणिकने इष्टार्थ सिद्ध किया ॥२०॥ यह परिणामिक बुद्धि की २० कथाओं जानना यों चारों बुद्धि की ८६ कथाओं सब जानना ॥ १४ ॥ यह अश्रुत निश्रित मतिज्ञान के भेद हुवे ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! श्रुतनिश्रित (जो सुनने से ज्ञान आवे उस) ज्ञान के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! श्रुतनिश्रित ज्ञान के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ उग्रह सो सगुबप वस्तु का अवबोध होवे २ ईहा—उस का निर्णयार्थ विचार होवे, ३ अवाय विचार से निश्चयार्थ आस्था बने और ४ धारणा वह निश्चय की बात को भूले नहीं सख्यात काल बाद भी उस का स्मरण हो जावे (जाति स्मरण ज्ञान धारणा के पेटे में है) ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! उग्रह किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! उग्रह के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ जो इन्द्रिय को

वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—सोइंदिय वंजणुग्गहे, घाणिंदिय वंजणुग्गहे जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे, फासिंदिय वंजणुग्गहे, सत्त वंजणुग्गहे॥ २९॥ से किं त अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते तंजहा सोइंदिय अत्थुग्गहे, चक्खिंदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदिय अत्थुग्गहे, फासिंदिय अत्थुग्गहे, नो इंदिय अत्थुग्गहे ॥ तस्सण इमे

स्पर्श कर पदार्थों को ग्रहण करे यह अर्थावग्रह और २ दूर रहे पदार्थों को ग्रहण करे यह व्यंजनावग्रह ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! व्यंजनावग्रह किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! व्यंजनावग्रह के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रोतेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, ३ जिव्हेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, और ४ स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह यह चारों इन्द्रियों को इन के विषय के पुद्गलों (शब्द गंध रस व स्पर्श) इन्द्रिय का आकर स्पर्श करते हैं तब ही उन्हे जान सकती है इस में चक्षुइन्द्रिय और मन ग्रहण नहीं किया क्योंकि यह दोनों दूर रहे पदार्थों को ही अपने विषय रूप ग्रहण करते हैं जैसे आंखमें अंजन किये पदार्थ को आंख देख सकती नहीं है ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! अर्थावग्रह के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अर्थावग्रह के छ भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रोतेन्द्रिय का अर्थावग्रह २ चक्षुइन्द्रिय का अर्थावग्रह ३ घ्राणेन्द्रिय का अर्थावग्रह, ४ रसेन्द्रिय का अर्थावग्रह, ५ स्पर्शेन्द्रिय का अर्थावग्रह, और ६ नो इन्द्रिय मन का अर्थावग्रह यों पांचों इन्द्रिय और मन कर जो शब्दादि का अर्थ परमार्थ को

चेव ॥ थूलभद्देय नासिक्क, सुंदरीनंदे, वयरे परिणामिया बुद्धिए, एवमाई उदाहरणा ॥ १४ ॥ सेत्तं असुय निस्सिय ॥ २६ ॥ से किं तं सुयनिस्सियं ? सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं तंजहा—उग्गहो, ईहा, अवाए, धारणा ॥ २७ ॥ से किं तं उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—अत्थोग्गहेय वंजणुग्गहेय ॥ २८ ॥ से किं तं

जिस स्थूमसे कोट अटल बनाया उसही थूमको पाडनेका कुलबालुकने लोगोंसे कहा लोगों स्थुभ पाडने लगे तब कुलबालुकने कपडा ऊंचा किया, कोणिक सेना सहित पीछा चला, तब लोगों को विश्वास आने से जड से स्थुभ को खोद फेंका कि कोट को तोडकर सेना ग्राम में भरा गइ, कोणिकने इष्टार्थ सिद्ध किया ॥२०॥ यह परिणामिक बुद्धि की २० कथाओं जानना यों चारों बुद्धि की ८६ कथाओं सब जानना ॥ १४ ॥ यह अश्रुत निश्रित मतिज्ञान के भेद हुवे ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! श्रुतनिश्रित(जो सुनने से जाना जावे उस) ज्ञान के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! श्रुतनिश्रित ज्ञान के चार भेद कहे हैं तद्यथा-१ उग्रह सो समुच्चय वस्तु का अवबोध होवे २ इहा—उस का निर्णयार्थ विचार होवे, ३ अवाय विचार से निश्चयार्थ आत्मा बने और ४ धारणा वह निश्चय की बात को भूले नहीं संख्यात काल बाद भी उस का स्मरण हो जावे (जाति स्मरण ज्ञान धारणा के पेटे में है) ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! उग्रह किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! उग्रह के दो भेद कहे हैं तद्यथा-१ जो इन्द्रिय को

वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—सोइंदिय वंजणुग्गहे, घाणिंदिय वंजणुग्गहे जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे फासिंदिय वंजणुग्गहे, सेत्तं वंजणुग्गहे॥२९॥से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते तंजहा-सोइंदिय अत्थुग्गहे, चक्खिंदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदिय अत्थुग्गहे, फासिंदिय अत्थुग्गहे, नो इंदिय अत्थुग्गहे ॥ तस्सणं इमे

स्पर्श कर पदार्थ को ग्रहण करे वह अर्थावग्रह और २ दूर रहे पदार्थों को ग्रहण करे वह व्यंजनावग्रह ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! व्यंजनावग्रह किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! व्यंजनावग्रह के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रोतेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, ३ जिव्हेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, और ४ स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह यह चारों इन्द्रियों को इन के विषय के पुद्गलों (शब्द गंध रस व स्पर्श) इन्द्रिय का आकर स्पर्श करते हैं तब ही उसे जान सकती है इस में चक्षुइन्द्रिय और मन ग्रहण नहीं किया क्योंकि यह दोनों दूर रहे पदार्थों को ही अपने विषय रूप ग्रहण करते हैं जैसे आंखमें अंजन किये पदार्थ को आंख देख सकती नहीं है ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! अर्थावग्रह के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! अर्थावग्रह के ६ भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रोतेन्द्रिय का अर्थावग्रह, २ चक्षुइन्द्रिय का अर्थावग्रह ३ घ्राणेन्द्रिय का अर्थावग्रह, ४ रसेन्द्रिय का अर्थावग्रह, ५ स्पर्शेन्द्रिय का अर्थावग्रह, और ६ नो इन्द्रिय मन का अर्थावग्रह यों पांचों इन्द्रिय और मन कर जो शब्दादि का अर्थ परमार्थ को

चेव ॥ थूलभद्देय नासिक्क, सुदरीनदे, वयरे परिणामिया बुद्धिए, एवमाई उदाहरणा ॥ १४ ॥ सेत्त असुय निस्सिय ॥ २६ ॥ से किं त सुयनिस्सिय ? सुयानीस्सिय चउव्विह पण्णत्त तंजहा—उग्गहो, ईहा, अवाए, धारणा ॥ २७ ॥ से किं त उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—अत्थोग्गहेय वजणुग्गहेय ॥ २८ ॥ से किं त

जिस स्थूमसे कोट अटग बनाया उसही थूमको पाडनेका कुलबालुकने लोगोंस कहा लोगों स्थुम पाडने लगे तब कुलबालुकने कपडा ऊंचा किया, कोणिक सेना सहित पीछा चला, तब लोगों को विश्वास आने से जड से स्तुभ को खोद फेंका कि कोट को तोडकर सेना ग्राम में भरा गइ, कोणिकने इष्टार्थ सिद्ध किया ॥२०॥ यह परिणामिक बुद्धि की २० कथाओं जानना यों चारों बुद्धि की ८६ कथाओं सब जानना ॥ १४ ॥ यह अश्रुत निश्रित मतिज्ञान के भेद हुवे ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! श्रुतनिश्रित (जो सुनने से जाना जावे उस) ज्ञान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! श्रुतनिश्रित ज्ञान के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ उग्रह सो सामान्य वस्तु का अवबोध होवे २ ईहा—उस का निर्णयार्थ विचार होवे, ३ अवाय विचार से निश्चयार्थ भासा बने और ४ धारणा वह निश्चय की बात को भूले नहीं सख्यात काल बाद भी उस का स्मरण हो आवे (जाति स्मरण ज्ञान धारणा के पेटे में है) ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! उग्रह किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! उग्रह के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ जो इन्द्रिय को

वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—सोइंदिय वंजणुग्गहे, घाणिंदिय वंजणुग्गहे जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे फासिंदिय वंजणुग्गहे, सेत्त वंजणुग्गहे॥२९॥से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते तंजहा-सोइंदिय अत्थुग्गहे, चक्खिंदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदिय अत्थुग्गहे, फासिंदिय अत्थुग्गहे, नो इंदिय अत्थुग्गहे ॥ तस्सणं इमे

स्पर्श कर पदार्थ को ग्रहण करे वह अर्थावग्रह और २ दूर रह पदार्थों को ग्रहण करे वह व्यंजनावग्रह ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! व्यंजनावग्रह किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! व्यंजनावग्रह के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रोतेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, ३ जिव्हेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, और ४ स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह यह चारों इन्द्रियों को उन के विषय के पुद्गलों (शब्द गंध रस व स्पर्श) इन्द्रिय को आकर स्पर्श करते हैं तब ही उने जान सकती है इस में चक्षुइन्द्रिय और मन ग्रहण नहीं किया क्योंकि यह दोनों दूर रह पदार्थों को ही अपने विषय रूप ग्रहण करता है जैसे आंखमें अंजन किये पदार्थ को आंख देख सकती नहीं है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! अर्थावग्रह के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अर्थावग्रह के छ भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रोतेन्द्रिय का अर्थावग्रह २ चक्षुइन्द्रिय का अर्थावग्रह ३ घ्राणेन्द्रिय का अर्थावग्रह ४ रसेन्द्रिय का अर्थावग्रह, ५ स्पर्शेन्द्रिय का अर्थावग्रह, और ६ नो इन्द्रिय मन का अर्थावग्रह यों पांचों इन्द्रिय और मन कर जो शब्दादि का अर्थ परमार्थ को

चेत्र ॥ थूलभद्देय नासिक, सुदरीनदे, वयरे परिणामिया बुद्धिए, एवमाई उदाहरणा ॥ १४ ॥ सेत्त असुय निस्सिय ॥ २६ ॥ से किं त सुयनिस्सिय ? सुयानिस्सिय चउव्विह पण्णत्त तजहा—उग्गहो, ईहा, अवाए, धारणा ॥ २७ ॥ से किं त उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते तजहा—अत्थोग्गहेय वंजणुग्गहेय ॥ २८ ॥ से किं तं

जिस स्थूमसे कोट अटग बनाथा उसकी थूमको पाडनेका कुलवालुकने लोगोंसे कहा लोगों स्थुम पाडने लगे तब कुलवालुकने कपडा ऊचा किया, कोणिक सेना सहित पीछा चला, तब लोगों को विश्वास आने से जड से स्तुम को खोद फेंका कि कोट को तोडकर सेना ग्राम में भरा गइ, कोणिकने इच्छार्थ सिद्ध किया ॥२०॥ यह परिणामिक बुद्धि की २० कथाओं जानना त्यों चारों बुद्धि की ८६ कथाओं सब जानना ॥ १४ ॥ यह अश्रुत निश्रित मतिज्ञान के भेद हुवे ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! श्रुतनिश्रित (जो सुनने से जाना जावे उस) ज्ञान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! श्रुतनिश्रित ज्ञान के चार भेद कहे हैं तद्यथा–१ उग्रह सो समुच्चय वस्तु का अवबोध होवे २ ईहा—उस का निर्णयार्थ विचार होवे, ३ अवाय विचार से निश्चयार्थ आत्मा बने और ४ धारणा यह निश्चय की बात को भूले नहीं सख्याता काल बाद भी उस का स्मरण हो जावे (जाति स्मरण ज्ञान धारणा के पेटे में है) ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! उग्रह किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! उग्रह के दो भेद कहे हैं तद्यथा–१ जो इन्द्रिय को

दिट्ठंत, साहिया थप विवाग परिणामा ॥ हिय "निस्सेयस फलवइ, बुद्धि परिणामिया नाम ॥ ११ ॥ अभय सेट्ठिकुमारे, देवो उदिउदए हवइ राया ॥ साहुय नंदिसेणे, धणदत्तेय सावग ॥ १२ ॥ अमच्चेय खमण, अमच्चपुत्ते चाणक्के

हिंसा के छोड आयुष्य पूर्ण कर देवता हुवा ॥ १९ ॥ स्थूलभद्र की कथा—कूणिक राजा के सिवा कंटक और रथ मूसल संग्राम से पराभव पाया चेडा राजाने विशाला नगरी के द्वार बन्ध कर राज्य में रहा कोणिक ने विशाला का कोट गिराने का बहुत उपाय किया, परंतु गिरा नहीं तब आकाशवाणी हुई, 'कुल वालुक भृष्ट साधु से यह काम बनेगा" कोणिकने कुलवालक साधु को मन चीता फेराया यह चीडा मागधिक वेश्यामें उठाया अविनीत कुलपालक साधु गुरु के श्राप से रुष्ट हुवा नदी के तट अति दुष्कर तप कर रहा था वहां वेश्या आई पारने में उस को अमेपालीया का आहार दिया वह दस्तोंसे परवस बना, तब वेश्या वेयावच मिस संपडाकर अपने वश किया और कोणिक राजा के पास लाई कोणिक कुलवालुक से बोला किसी भी उपाय से विशाला का कोट गिरावो कुलवालुक उसका कारन जानता था कि श्री मुनिसुव्रत भगवंत का नाला गडा हुवा स्थूभ क प्रभाव से यह है इसलिये बोला मैं अब यहा छंधा करूं तब तुम सेना को दो चार योजन मे जाना, यह कोट पडजावेगा यों कहे विशाला नगरीमें गया साधुके भेषमे लोक विश्वासु बन पूछने लगे महाराज' हमारा उपसर्ग कब दूर होगा'

खाते उस के मस्तक की मणि कुवे के कंठपर जा पडी, उसे वह ग्रहण कर सका नहीं मणि के तेज से कूवे का पानी लाल हो गया यह एक बच्चेने देखा और अपने वृद्ध पिता से कहा। पिता मतलब समझ गुप्त आ मणि उठाकर लेगया ॥ १७ ॥ किसी आचार्य के पास तप करता एक चंडक तपा देख अविनीत शिष्य भाव धारत हो २ ऐसी वारम्वार प्रेरना करते रात्रि को आचार्य शिष्य को मारने उठे—स्थंभ से अथडा मस्तक फूट मरे भवान्तर में चंडकोशिक नाम के नाग हुवे फुंकार से कोसो वन्य जंगल भस्म कर दिया उस रास्ते मनुष्यों का गमनागमन बंद पडा वहां भगवंत श्री महावीर स्वामीजी गये उस के बिल के पास ध्यानस्थ बने सर्प देख कोपित हो फूंकारा परतु कुछभी कर सका नहीं। तब क्रोधित हो डंकदिया उन का रक्तमांस श्वेत और मिष्ट देख आश्चर्य पाया तब भगवंत बोले—रे चंडकोशिक ! बुझ २ ! । यों सुन विचार करते जाति स्मरण ज्ञान पाया वहां समता धारन कर बिल में अपना मुख प्रवेश पडा रहा लोगों ने बहुत ही विटम्बना की कितनेकने पूजा कर दूध शक्कर चढाया, उस से उस के शरीर को चींटियो ने फोलखाया परतु उसने शरीर भी हलाया नहीं, आयुष्य पूर्ण कर आठवे देवलोक में देवता हुआ ॥ १८ ॥ लागी की कथा—कोई श्रावक तरुणता में व्रत भंग कर मृत्युपाकर लागी नामक चतुष्पद पशु हुआ, पकड मुझे दोनों साधु चमडा लटकाता रहता बहुत मनुष्यों को मारे, अन्यदा किसी साधु को मारने गया परन्तु उन के तप तेज से पराभव कर सका नहीं, विचार करते जाति स्मरण ज्ञान पाया पूर्व भव जान पश्चातापी बना

सागर्मा खीको छोड दीक्षा ले गये,पीछे पुत्र हवा अपने पिताने दीक्षा ली एसे मन पुत्र आवे स्मरण ज्ञान पाया और रुदन कर माता को घबराऊं कि जिस से गुरु पास से मैं छुटकारा पाऊं, यों विचार असराल रुदन करने लगा कालांतर धनदेव भिक्षार्थ आये वह स्त्री पुत्र के रुदन से घबरा हुई उस पुत्र को उठा साधु के पात्र में डाल दिया उसन गुरु का सुपरत किया पीछे से मोहोदय पुत्र मांगने लगी बाई साधु बोले-हमे देदिया दिया दोनों दरबार में गये, राजाने न्याय किया एक तरफ बच्चे के खिलोने रख दो एक तरफ साधु के ओघे पात्रे रख दो- इस को पसंद हो वह ग्रहण करेगा, उनोंने ऐसा ही कर बालक को छोड़ा, वह ओघे पात्र ले नाचने लगा उसे साधु के सपरत किया. इन का वेरर स्वामी नाम दिया यह आश्चर्य हवे ॥ १४ ॥ एक राजा से प्रधान बोला अपनी सेना में से सब वृद्धों को निकाल युवानों की भरती करना चाहिये, राजा बोला-परीक्षा करो वृद्ध और युवक को सद रख राजा बोला-कहोजी यरे मस्तक में लात प्रहार करे उसे क्या दंड ? युवक बोला उस को तुरत ही मार डालेंगे वृद्ध बोला—उसे सब भूषण से संतोषना और उस ही के गुलाम हम बनेंगे. सब सुन आश्चर्य भूत हुवे तब वह बोला कि राजा साहेब के बनेवे पुत्र सिवाय किसकी ताप है जो राजाजी के मस्तक को पांव लगावे ॥ १५ ॥ किसीने हुबहू रवि का आम्र बना सभा में रखा, सब जन सच्चा आम्र समझने लगे परंतु एक विज्ञानी स्त्री बिना वेमखी वनीनवादि से जान बोला की-यह काष्ठ का है ॥ १६ ॥ कोई सर्प अपने मस्तक की मणि प्रकाश कर रात्रिको वृक्षों पर पर पक्षीयों के बच्चे

प्रधान ने कपट युद्ध किया छोनों प्र स्रन की निन्दा करने लगे वब ब्राह्मण ने प्रधान को मारने की चोकस में रहने लगा अन्यदा प्रधान का बड़ा पुत्र स्थूलभद्र तो वेश्या लुब्ध था और छोटा पुत्र श्रिया उस का लग्नोत्सव में राजा को निमराना करने शस्त्र बनवा रहा था यह उस मा प न घान ग्राम के लड़के को सिखाया प्रधान राजा को मार अपने पुत्र को राज देने का उपाय करता है यह राजा जानता नहीं है यह राजा ने सुन प्रधान के घर चोकस करवाइ शस्त्र की तैयारी होती सुन बात सच्ची जानी प्रधान समाये आया तब राजा मुंह फेराकर बैठ गया प्रधान डरा और पीछा घर जा श्रिया से कहा न मालुम राजा आज क्यों रुष्ट हुवा इसलिये अब मैंरे साथ में राजा को प्रणाम करूं और जो राजा मेरे सन्मुख नहीं देखे तो तत्काल खड्ग से मेरी मस्तक उड़ा देना जिस से कुक में मारा जाऊंगा और सब घर बचजायगा श्रिया पिता के साथ आया राजा को रुष्ट देख नन्दन करम पिता की गरदन उड़ा डाली यह देख राजा चौंक गया अरे यह क्या जुल्म ! श्रिया बोला मालक की नाराजी वाला मनुष्य काम का ही क्या ! राजा सब भेद जान बहुत पसताया श्रिया से प्रधानगी लेने कहा, श्रियाने अपने बड़े भाई स्थूल भद्र को बताये स्थूल भद्र पिता के हाल सुन प्रधानपना से डर पाये साधुपना धारन किया श्रिया प्रधान बना ॥ १२ ॥ नासिक नगर के नदन का भाई साधु हुवा फिर अपनी भवभाई सुंदरी का रूप देख विरक्त बना ऐसा नंदन जान उस को मेरु पर्वत पर ले जाकर देवता सम्बन्धी भोग बताये जिस से उस का मन स्थिर हुवा ॥ १३ ॥ धनदत्त

राज्य प्राप्त किया ॥१ ॥ पाटली पुर नगर के चाणक्य जिसको राजाने निकाल दिया था प्रदेश में फिरता किसी क्षत्री भाणी को चन्द्रमा पीने का दोहला हुवा उसे चन्द्र भावि बिम्ब कूप में पोलकर पिलाया दोहला पूर्ण किया उस का चंद्रगुप्त नाम दिया, लड़के को आप लेगया, बड़ा किया, उपाय कर पाटली पुर के नंदम के राजा को मार उसे राज्यारोहण किया चन्द्रगुप्त राजा हुवा इन ने पाक्षिक पोषधमें सोल स्वप्न देखे श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामीने उन का अर्थ कहा, वैराग्य प्राप्त होने से दीक्षा ली पीछे चाणक्य प्रधान पाटलीपुर की प्रधानगी करने लगा, उस को लोगो नहीं मानते थे ग्राम में चोरी बहुत होने लगी तब कोटवाल को लोकप्रसिद्ध नाम नलदाम कोली को कोटवाल बनाया चोर की जाति का कोटवाल होने से चोर को पकड़कर मारा लोक में सुख हुवा ॥ ११ ॥ पाटलीपुर के नंदराजा को कोई ब्राह्मण नित्य नये ५०० श्लोक सुनाकर ५०० सुवर्ण महोर सदैव लेजाने लगा यह सकडाल प्रधान से सहा नहीं गया उस ने अपनी सातों पुत्रीयों कि जो श्रवण मात्र से कंठस्थ करलेती थी उन को सभा में बैठाई कोई ब्राह्मण जो श्लोक कहे वे सब अपनी पुत्रीयों के मुख से स्मरणाते इस तरह श्लोक नवीन नहीं होने से ब्राह्मन को राजाने निकाल दिया यह ब्राह्मण५००महोर की थैली भर नदी के अंदर पटीय में पड़ बैठने पर रख दूसरे दिन गंगा की स्तुति कर पटीया दबाये जिस से वह थैली उछले उस ग्राम में भ्रम लोगों से कहे गंगाजी मुझे महोरों देती है सकडाल प्रधान ने गुप्तपने किसी मनुष्य को नदी प्रवेश करा कर वह थैली निकालदामी और राजा को ले गंगापर आया सत्या कर ब्राह्मन पटीया दबाए परंतु थैली नहीं आवे तब

गुप्त सुरंग बना अपने पुत्र के साथ ब्रह्मदत्त को निकाला अदेश में भेजादिया॥१०॥प्रधान पुत्र वर्द्धन और दोनों निकल गये यह दीर्घ राजाने जान प्रधान को सह कुटुम्ब केद किया और दोनों को पकड लाने सेना भेजी सेनाने दोनों को एक तलाव में देख तलाव घेर लिया दोनों के झाडी में छिपे सो पाये नहीं रात को वर्द्धन पानी पीने तलावपर आया उस शब्दानुसार सैनीकोंने वर्द्धन को पकड खूब मारा, वह मूर्छित जैसा बन अचेत हो पड गया सैनीकों उसे मृत्यु पाया जान छोड गये ब्रह्मदत्त वर्द्धन पकडा गया जान भग गया सैनीकों गये बाद वर्द्धन होसार हो ब्रह्मदत्त न मिलने से अपन परिवार की खबर लेने पीछा कम्पिल पुर आते, रास्ते में सजीवन निर्जीवन गुटिका वगैरे करामात प्राप्त कर कम्पिल पुर आया कदम्ब के रखवाले चंडाल को सुवर्ण बनाने की गोली दे वश किया और निर्जीव गुटिका दे कहा यह गोली प्रधान को दे कर कहा कि इस का अंजन सब जन करोगे तो सुख पावोगे गोली का सब कुटुम्ब अंजन कर क्षीणान्तर मूर्छित हो गये सब को मरे जान दीर्घ राजाने स्मशान में फेंक देने का हुक्म उस चंडाल को दिया वर्द्धनने उस एक जंगल में डालने का कहा वहां चंडाल सब को डाल आया पीछे वर्द्धनने वहां जाकर सजीवन गुटिका सब के आंखों में लगा सजीवन किये सब वर्द्धन का देख अचंबा पाये वर्द्धन सब को किसी अपने स्वजनों के वहां सुख स्थान पहोंचाकर ब्रह्मदत्त को ढूंढने चला गया दोनों मिल ब्रह्मदत्त बडे राजाओं की पुत्रीयों का पाणिग्रहण किया महा ऋद्धि प्राप्त की चक्रवर्ती की ऋद्धि ब्रह्मदत्त को प्राप्त हुइ, सब सेना ऋद्धि से परिवरे पीछे कम्पिल पुर आये दीर्घ राजा को मार अपना

एक पुत्री अत्यन्त प्यारी थी उसे चिलाती चोर उठाके लेगया उस के पीता पुत्रों उस के पीछे भगे जंगल में चोर उस पुत्री को मार डालकर भग गया उस के मृत्यु के दुःख से थकेले से शिथिल बने प्राण प्राप्त करने अपना तथा पुत्रों का प्राण बचाने उस मृतक पुत्री के शरीर का मांस भक्षण किया नगर को प्राप्त कर सुखी हुवे ॥ ७ ॥ किसी श्रावक का मन अपनी स्त्री की सखी को रूपवंती देख विषयाभिलाषी हुआ उसने अपनी स्त्री को कहा, स्त्री श्राविका ने अपने पति का व्रत रक्षणार्थ कहा अमुक स्थान संध्या को वह आप से मिलेगी वह उसी स्थान रहा आप खुद अपनी सखी का रूप बना कर वहां गई अंधारे में भोग किया फिर वह श्रावक पश्चाताप करने लगा तब स्त्री बोली कि—घर वो मैं हूं श्रावक संतोष पाया मन से व्रत भंग हुवा जिस का गुरु के पास प्रायश्चित ले शुद्ध हुवा. यह श्राविका की बुद्धि ॥ ८ ॥ कुरगडु ऋषि उपवास करने अशक्त थे संवत्सरी को आहार लाकर गुरु को बतलाया तपस्वी गुरुने कोपित हो आहार में थूक दिया उस थूक का घृत मुजब जान किंचित भी क्रोध नहीं किया उन्हे भोगवतेर केवलज्ञान प्राप्त किया यह वृतान्त गुरुवर्य जान केवली की असातना की ऐसा पश्चाताप करते २ केवलज्ञान प्राप्त किया ॥ ९ ॥ कम्पिलपुर नगर के ब्रह्म राजा की चूलणी राणी को पहरे स्वप्न सहित ब्रह्मदत्त कुमार उत्पन्न हुवा ब्रह्मराजा मर बाद चुलणी राणी ने दीर्घ राजा से लुब्ध हो उस मारने का विचार कर लाखका महल बनाया पुत्र को परणा कर उस में सुलाकर आग लगाई यह प्रधान जान गया था उस ने ग्राम के बाहिर से लाख के मोहल में से

सो कुछ चमत्कार करके बताइये ! सब लोगों सुन चकित हुवे द्विजों मश्करी करनेलगे तब साधु धर्म को निष्कलंक करने बोले—जो यह मेरा गर्भ हो तो सीधे रास्ते निकले और अन्य का हो तो पेट फाड कर निकले इतना बोलते ही वह गर्भ तत्काल पेट फाड कर निकल पडा धर्म का कलंक दूर हुवा ॥ २ ॥ मादक प्रिय कुमर अपनी तरुणी सुरूपा स्त्री पर अत्यन्त आसक्त था उस स्त्री के अन्यदा बहुत मोदक भक्षण करने से रोगोत्पन्न हो शरीर विनष्ट होगया दुर्गंधि उछलने लगी यह देख मादक प्रिय को वैराग्य उत्पन्न हुवा साधु पना लिया अनुप्रेक्षा भावना भावता केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति गया ॥ ३ ॥ पुष्पवति रानी धर्माराधन कर देवलोक गइ अपनी पुत्री पुष्प चूला को मति बोधने स्वप्न में नरक के दुःख और स्वर्ग के सुख बताये धर्म करणी में लगाइ ॥ ४ ॥ पुरिमताल नगर के उदयोदय राजा की श्रीकान्ता रानी के रूप की प्रशंसा सुन बनारसी नगरी का, धर्मरुचि राजा सेना ले आया, पुरिमताल नगर को घेरा दिया तब उदयोदय राजा तेले का तप कर वैश्रमण देवता की साधना कर अपनी नगरी को सपरिवार से उठाकर अन्य स्थान ले गया ॥ ५ ॥ श्रेणिक राजाके पुत्र नन्दीषण साधुजीने अपने शिष्यका मन ब्रह्मचर्य पालनसे शिथिल हुवा जाना उस वक्त नन्दीषेण की संसार पक्ष की स्त्रियों सब शृंगार से सज हो दर्शनार्थ आई उन की रूप सम्पदा देख शिष्यने विचारा धन्य है गुरुवर्य को इस प्रकार की अन्तेउरी का छोड ब्रह्मचर्य पालते हैं, धिक्कार है मुझे मैं अनुत्पत्ति की वांछा करता हूं यों मन को निश्चित किया ॥ ६ ॥ धनश्रेष्ठ के पांचों पुत्रों पर

एक पुत्री अत्यन्त प्यारी थी उसे चिलाती चोर उठाके लेगया उस के पीता पुत्रों उस के पीछे गए जंगल में चोर उस पुत्री को मार डालकर भग गया उस के मृत्यु के दुःख से अकेल से शिथिल बने प्राण प्राप्त करने अपना तथा पुत्रों का प्राण बचाने उस मृतक पुत्री के शरीर का मांस भक्षण किया नगर को प्राप्त कर सुखी हुवे ॥ ७ ॥ किसी श्रावक का मन अपनी स्त्री की सखी को रूपवंती देख विषयाभिलाषी हुवा उसने अपनी स्त्री को कहा, स्त्री श्राविका ने अपने पति का व्रत रक्षणार्थ कहा अमुक स्थान संध्या को वह आप से मिलेगी वह उसी स्थान रहा आप खुद अपनी सखी का रूप बना कर वहां गई अंधारे में भोग किया फिर वह श्रावक पश्चाताप करने लगा तब स्त्री बोली कि—वह तो मैं हूं श्रावक सतोष पाया मन से व्रत भंग हुवा जिस का गुरु के पास प्रायश्चित ले शुद्ध हुवा यह श्राविका की बुद्धि ॥ ८ ॥ कुरुगड ऋषि उपवास करने अशक्त बने संवत्सरी को आहार लाकर गुरु को बतलाया तपस्वी गुरुने कोपित हो आहार में थूक दिया उस थूक को घृत मुजब मान किंचित भी क्रोध नहीं किया उन्हे भोगवते२ केवलज्ञान प्राप्त किया यह गुणात्म मुजब मान केवली की असातना की ऐसा पश्चाताप करते २ केवलज्ञान प्राप्त किया ॥ ९ ॥ कम्पिलपुर नगर के ब्रह्म राजा की चूलणी राणी को पढ़रे स्वप्न सहित ब्रह्मदत्त कुमार उत्पन्न हुवा ब्रह्मराजा मर बाद चूलणी राणी ने दीर्घ राजा से लुब्ध हो उस मारने का विचार कर लाखका महल बनाया पुत्र को परना कर उस में सुलाकर आग लगाई यह प्रधान जान गया था उस ने प्राय के शरीर स खास क सरंग में से

इच्छा होवे ही दूत को भेजकर कहलाया कि—१ वंक चूडाहार, २ सेचानक गंध हस्ति, ३ अभय कुमार, और ४ शिवा राणी का भेजदो. श्रेणिक राजाने पीछा जबाब दिया—१ अग्नि रथ २ अनिलगिरी हाथी, ३ धमस्तगा दूत और ४ शिवादेवी राणी यह मुझ दे तो. दूत के मुख समाचार सुन चंडप्रद्योतन क्रोधित हो सेना ले चढ आया. तब अभय कुमार श्रेणिक राजा से बोला—आप किसी प्रकार सभाइ की तकलीफ मत उठाओ. मामाजी तो कल चले जावेंगे. अभय कुमार रात को उमरावों के डेराओं के पीछे द्रव्य के चरवे गडा कर चंडप्रद्योतन राजा के पास गया और बोला—पर तो आप और श्रेणिक राजा दोनों एकस हैं, परंतु कहना इतना ही है कि—श्रेणिक राजाने आप के चारों उमरावों को लांच दे वश में कर लिये हैं. कलरु आप को पकडा देंगे. ऐसा कहकर चंडप्रद्योतन राजा को वे धन के गडे हुवे चरुभे बताय, चंडप्रद्योतन डरा रात को ही हस्ति पर बैठ उज्जैयनी भग गया. प्रातः होते सब सुन आश्चर्य पाये, उमरावों सेना सहित पीछे उज्जैयनी आये. राजाने अपने पास उमरावों को आने का मना करने से कारण पूछा. राजाने सब वीतक सुनाया. तब सब बोले—अभय कुमारने आप को ठग लिये, यह सुन चंड प्रद्योतन राजाने क्रोधित हो आज्ञा दी कि जो कोई अभय कुमार को यहां लावेगा वह इनाम पावेगा. एक वेश्याने यह आज्ञा मान्य की. श्राविका बन राजगृही गई अभयकुमार को अपने घर जिमाया. चन्द्रहास्य मदिरा के नशे में बेहोश बना रथकी डाक बैठा चंडप्रद्योतन राजा के सुपत किये. अभय कुमार से तब चंड प्रद्योतन बोला—बोल अभय मैंने भी कैसी की!

इच्छा होवे ही दूत को भेजकर कहलाया कि—१ वंक चूडाहार, २ सिंचानक गंध हस्ति, ३ अभय कुमार, और ४ चिल्लना रानी का भेजदो श्रेणिक राजाने पीछा जवाब दिया—१ अग्नि रथ २ अनिलगिरी हाथी, ३ जंघाजंग दूत और ४ शिवादेवी रानी यह मुझे दे दो दूत के मुख समाचार सुन चंद्रप्रद्योतन क्रोधित हो सेना ले चढ़ आया तब अभय कुमार श्रेणिक राजा से बोला—आप किसी प्रकार लड़ाइ की तकलीफ मत उठाओ मामाजी तो कल चले जायँगे अभय कुमार रात को उमरावों के डेराओं के पीछे द्रव्य के चरवे गड़ा कर चंद्रप्रद्योतन राजा के पास गया और बोला—मेरे तो आप और श्रेणिक राजा दोनों एकसे हैं, परंतु कहना इतना ही है कि—श्रेणिक राजाने आप के चारों उमरावों को लांच दे वश में कर लिये हैं फजर आप को पकड़ा देंगे ऐसा कहकर चंद्रप्रद्योतन राजा को वे धन के गड़े हुवे चरुभे बताये, चंद्रप्रद्योतन डरा रात को ही हस्ति पर बैठ उज्जैयनी भग गया, प्रातः होते सब सुन आश्चर्य पाये, उमरावों सेना सहित पीछे उज्जैयनी आये राजाने अपने पास उमरावों को आने का मना करने से कारण पूछा राजाने सब बीतक सुनाया तब सब बोले—अभय कुमारने आप को ठग लिये, यह सुन चंद्रप्रद्योतन राजाने क्रोधित हो आज्ञा दी कि जो कोई अभय कुमार को यहां लावेगा वह इनाम पावेगा एक वेश्याने यह आज्ञा मान्य की श्राविका बन राजगृही गई अभयकुमार को अपने घर जिमाया चन्द्रहास्य मदिरा के नशे में बेहोश बना रथकी हांक बैठा चंद्रप्रद्योतन राजा के सुपत किये अभय कुमार से तब चंद्रप्रद्योतन बोला—बोल अभय मैंने भी कैसी की!

टा वह खेत में मूंग लेने को गया था उस के पास वह चोर गया और कहने लगा आज मुझे मालूम हुआ उसने पूछा क्यों ? वह बोला—तैंने मेरे खात की निन्दा क्यों की वह बोला मैंने निन्दा नहीं की परंतु सच कहा कि—जिस का जो कर्तव्य होता है वह उस को किसी प्रकार दुष्कर नहीं होता है देखे ! यह मुट्ठीभर मूंग मेरे हाथ में हैं तू कहे तो इन सब को उल्टे मुख डालूं और तू कहे तो इन सब को सुल्टे मुख डालूं ! उसने अपनी चद्दर बिछाई और बोला सब को उल्टे मुख डाल, कि—तत्काल उस कृषिने मूठी फेंक दी, जो चोर देखता है तो सब मूंग उल्टे मुख पड़े हैं यह देख चोर आश्चर्य चकित हुआ और कहने लगा कि—मैं जानता था कि मुझ समान कलावंत कोई नहीं है, परंतु तू मेरे से भी अधिक निकला ॥ २ ॥ वस्त्र का बुननेवाला बनकर सूतका फलका हाथ में ले जानता है कि—इतने सूत में इतना लम्बा चौड़ा ही वस्त्र बनेगा ॥ ३ ॥ माप करनेवाला विज्ञानी ऐसा जानता है कि—इस बरतन में इतने तोला सेर मण पदार्थ समावेश होगा ॥ ४ ॥ किसी प्रकार मोती का पिरोनेवाला आकाश में मोती को उछाल कर सुआदि में पड़ते हुवे मोती को अधर पोता है ॥ ५ ॥ जिस प्रकार घृतादि का बेचनेवाला बिना मापे ही प्रमाण युक्त घृतादि देता है ॥ ६ ॥ वस्त्रादि सीनेवाला वस्त्रादि सीता २ बिना माप किये ही शरीर देख कर प्रमाणोपेत वस्त्रादि सी देता है ॥ ७ ॥ ऐसे पक्षी भी कार्य करता २ इस प्रकार विज्ञानी बन जाता है कि रथादि वाहन व भुवनादि को जितना लम्बा चौड़ा उस का प्रमाण बना देता है, उस ही प्रमाण से बिना मापे काष्ठ छेद कर डालता है ॥ ८ ॥ ऐसे कुम्भार पुरी

॥ २४ ॥ उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंग परिघोलण विसाला ॥ साहुक्कार फलवइ, कम्म समुत्था हवइ बुद्धि ॥ ९ ॥ हिरण्णए करिसए, कोलियघडोमेय मुत्ति घय १५०९ तुन्नाय वड्ढुई, पूईएय, घडचित्त कारेय ॥ १० ॥ २५ ॥ अणुमाण हेऊ

सद् आदि बिना वाले सब बराबर बजन के बना देता है ॥ ९ ॥ कुंभकार बराबर मदान के घड़ादि बना देता है ॥ १० ॥ चित्रकार चित्र के ममान में मूषीकादि रोकता है अंगोपांग मधान पे। ।स्रता है ॥ ११ ॥ इत्यादि अनेक दृष्टांत कार्म्मिक बुद्धि के जानना, यह सब ७९ कथा हुई ॥ ४८ ॥ अब चौथ पारिणामिक बुद्धि का कहते हैं—वाय के परिमाण में बुद्धि परिणमती है, वह अनुमान कर अर्थात् स्वतः की बुद्धि कर, हेतु कर अर्थात् पर की बुद्धि कर, किसी पदार्थ के दृष्टान्त कर काल अवस्था आदि कर किसी वस्तु के गुणावगुण को साधता है, वह वय—१ बाल्यावस्था, २ युवावस्था और ३ वृद्धा वस्था यों तीन प्रकार की होती है इस में बाल्यावस्था में बुद्धि तीव्र होती है पत [illegible] तीव्र भी मममा होती है, मध्यम वय में बुद्धिविज्ञान दोनों तीव्र और वृद्धावस्था में दोनों की [illegible] होती है इस प्रकार की बुद्धि विज्ञान इस लोक में धनादि के कामार्थ और परलोक में स्वर्ग मोक्ष के [illegible] से जिस प्रकार वय परिणमे उस प्रकार बुद्धि परिणमे उसे पारिणामिक बुद्धि कहते हैं ॥ ११ ॥ पारिणामिक बुद्धि ८९ कथाओं। उज्जैनी नगरी के चंड प्रद्योतन राजा को श्रेणिक राजा के पास के रत्नों ग्रहण करने की

पर चक्री सर्व देशो में विजय करता इधर आरहा है, तब उसने विचार किया कि रास्तेके जलाशय में विष प्रक्षेप करने से परचक्री की सेना पानी पीकर मर जायगी और अपना राज्य कुशल रह जायगा ग्राम के वैद्य वैपारीयों के पास जितना विष था वह सब मंगाया तब एक वैद्यने एक मासाभर विष लाकर दिया राजा ने पूछा यह क्या ? वैद्य बोला यह सहस्र भेदी विष है किसी एक हस्ति के पूछ के बाल को उस विष का स्पर्श कराया वह सर्प की विषकी तरह ज्यों २ हस्ति के अंग में स्पर्शता गया त्यों त्यों उस का अंग मूर्छित होवे थोडी देर में वह हस्ति मृत्युवत होगया राजा ने फिर विस्मित हो पूछा वैद्यराज ! इस का कुछ प्रतिकार भी है क्या ? वैद्य बोला इस हस्ति को संजीवनी औषधी का स्पर्श कराओ, पूर्वोक्त प्रकार ही उस औषधी की ज्यों ज्यों असर फेलती गइ त्यों त्यों हस्ति सचेत होता गया, थोडी देर में पहिले जैसा ही होगया राजा देख बहुत चमत्कार पाया यह कथा पर चक्रीने सुनी, उस से इस राज्य में इस प्रकार के करामाती रहते हैं, अपनी सेना से उस देश से दूर से निकल चला गया राजा प्रजा सुख पाये इस ही प्रकार जो गुरु रूप वैद्य का विनय कर विनीत शिष्य रूप राजा ज्ञान ध्यान तपादि औषधीयों प्राप्त कर कर्म शत्रु का नाश कर ज्ञानादि गुनों का प्रकाश करने की करामात प्राप्त करते हैं उन के राग द्वेषादि शत्रु दूर से ही पलायन कर जाते हैं ॥ १० ॥ स्थूलभद्र गणिका—जिस गणिका के साथ संसार अवस्था में बारा वर्ष विलास किया उस ही गणिका की चित्रशाला में त्यागी अवस्था में चातुर्मास कर उस श्राविका बना

इसे परन्तु तथापि स्थूलभद्र महामुनि की शिष्या कोशा गणिका के पूर्व रागाने एक सार्थवाही को मना कर कोशा अपनेमन के स्वभाव गुरुवर्य के गुणानुवाद करने लगी तब इस सार्थवाहने अभीमान में छका अपनी कुशलता बताने एक कंकर की गलोल से वृक्ष के पत्तों को छिद्र कर दिया उस की कला को रद करने वेश्याने कस २ के दाने का पाणी भर उस में ऊपर के दाने पर सूई पुवा सरी गल वृक्ष पर फूल रख उस फूल पर आपने नृत्य कर बताये और ऐसी सर्व कलाओं हमारे गुरुवर्य के एक ब्रह्मचर्य के आगे निमाल्य है स्थूलभद्रजी का वृतान्त सुन सार्थवाही भी पर स्त्री का नेम ले स्वस्थान गया ॥ ११ ॥ एक पंडित ने राम पुत्र को विद्या दान दिया उस के बदले में कुमार उस को बहुत द्रव्य देने लगा पर हेम लाभी राजा ने उस पंडित को भोजन में विष दे मार कर द्रव्य ग्रहण करने की इच्छा की यह बात को जान कर आचार्य भोजनार्थ स्नान करने लगे तब सूके हुवे वस्त्र को कुमार ने भीना कहा गुरु चमक गए तब क्रौंच पक्षी की भाषा में सब मतलब समझाया, तथापि गुरुने बिना समझे विषमय भोजन किया उस का बदला क्रौंच पक्षी के शब्द पर २ हरन किया, गुप्त पने गुरु को बहुत धन दे विदा किये इस ही प्रकार छद्म शिष्यों कुटुम्ब की परवाह नहीं करते गुरु आदि उपकारी का विघ्न का निवारन करते हैं ॥ १२ ॥ परदेश गये पति की विरहणी स्त्रीने किसी पुरुष को पोषाया उस को नापिक के पास क्षौर कर्म करा कर वस्त्र भूषण से उसे सजकर भोग किया रात्रि को अपाद वर्षा, मनाक्षा पक्षी उस पुरुष को पिपासाक्रा

पर चक्री सर्व देशो में विजय करता इधर आरहा है, तब उसेन विचार किया कि रास्तेके जलाशय में विष प्रक्षेप करने से परचक्री की सेना पानी पीकर मर जायगी और अपना राज्य कुशल रह जायगा ग्राम के वैद्य वैपारीयो के पास जितना विष था वह सब मंगाया तब एक वैद्यन एके मासाभर विष लाकर दिया. राजा ने पूछा यह क्या ? वैद्य बोला यह सहस्र भेदी विष है किसी वृद्ध हस्ति के पूछ के बाल को उस विष का स्पर्श कराया वह सर्प की विषकी तरह ज्यों २ हस्ति के अंग में स्पर्शता गया त्यों त्यों उस का अंग मूर्छित होवे थोडी देर में वह हस्ति मृत्युगत होगया राजा ने फिर विस्मित हो पूछा वैद्यराज ! इस का कुछ प्रतिकार भी है क्या ? वैद्य बोला इस हस्ति को संजीवनी औषधी का स्पर्श कराओ, पूर्वोक्त प्रकार ही उस औषधी की ज्यों ज्यों असर फैलती गइ त्यों त्यों हस्ति सचेत होता गया, थोडी देर में पीछे जैसा ही होगया राजा देख बहुत चमत्कार पाया यह कथा पर चक्रीने सुनी, उस से इस राज्य में इस प्रकार के करामाती रहते हैं, अपनी सेना से उस देश से दूर से निकल चला गया राजा प्रजा सुख पाये इस ही प्रकार जो गुरु रूप वैद्य का विनय कर विनीत शिष्य रूप राजा ज्ञान ध्यान तपादि औषधीयों प्राप्त कर कर्म शत्रु का नाश कर ज्ञानादि गुनों का प्रकाश करने की करामात प्राप्त करते हैं उन के राग द्वेषादि शत्रु दूर से ही पलायन कर जाते हैं ॥ २० ॥ स्थूलभद्र गणिका—जिस गणिका के साथ संसार अवस्था में बारा वर्ष विलास किया उस ही गणिका की चित्रशाला में त्यागी अवस्था में चातुर्मास कर उस श्राविका बनाइ

ऐसे परम् भक्तापि स्थूलभद्र महामुनि की शिष्या कोशा गणिका के घर राजाने एक सार्थवाही को भेजा वह कोशा अपनेमन के रसभाव गुरुवर्य के गुणानुवाद करने लगी तब इस सार्थवाहने अभीमान में एका अपनी कुशलता बताने एक कंकर की गलोल स वृक्ष के पत्रों को छिद्र कर दिया उस की कला को रद्द करने वेश्याने कुछ २ के दाने का पाली भर उस मे ऊपर के दाने पर सूई खड़ी रख उस पर फूल रख उस फूल पर आपने नृत्य कर बताये और ऐसी सर्व कलाओं हमारे गुरुवर्य के एक अक्षपर्व के आगे निमाल्य है स्थूलभद्रजी का वृतान्त सुन सार्थवाही भी पर स्त्री का नेम ले स्वस्थान गया ॥ ११ ॥ एक पंडित ने राज पुत्र को विद्या दान दिया उस के बदले में कुमार उस को बहुत द्रव्य देने लगा यह देख स्वामी राजा ने उस पंडित को भोजन में विष दे मार कर द्रव्य ग्रहण करने की इच्छा की यह बात को जान कर आचार्य भोजनार्थ स्नान करने लगे तब सूके हुवे वस्त्र को कुमार ने भीना कहा गुरु चमक गए तब क्रोंच पक्षी की भाषा में सब मतलब समझाया, तथापि गुरुने बिना समझे विषमय भोजन किया उस का बदल क्रोंच पक्षी के शब्द पर २ हनन किया, पुत्र पने गुरु को बहुत धन दे बिदा किये इस ही प्रकार शुद्ध शिष्यों कुटुम्ब की परवाह नहीं करते गुरु आदि उपकारी का निधन का निवारन करते हैं ॥ १२ ॥ परदेश गये पति की विरहणी स्त्रीने किसी पुरुष को बोलाया उस को नापिक के पास क्षोर कर्म करा कर वस्त्र भूषण से उसे सजकर भोग किया रात्रि को उपाद हुए, मनाका पढी उस पुरुष को पिपासाक्रा

पर चक्री सर्व देशों में विजय करता इधर आरहा है, तब उसने विचार किया कि रास्तेके जलाशय में विष प्रक्षेप करने से परचक्री की सेना पानी पीकर मर जायगी और अपना राज कुशल रह जायगा ग्राम के वैद्य वैपारीयों के पास जितना विष था वह सब मंगाया तब एक वैद्यन एक मासामर विष लाकर दिया राजा ने पूछा यह क्या ? वैद्य बोला यह सहस्र भेदी विष है किसी एक हस्ति के पूछ के बाल को उस विष का स्पर्श कराया वह सर्प की विषकी तरह ज्यों २ हस्ति के अंग में स्पर्शता गया त्यों त्यों उस का अंग मूर्च्छित होते थोडी देर में वह हस्ति मृत्युगत होगया राजा ने फिर विस्मित हो पूछा वैद्यराज ! इस का कुछ प्रतिकार भी है क्या ! वैद्य बोला इस हस्ति को सजीवनी औषधी का स्पर्श करावो, पूर्वोक्त प्रकार ही उस औषधी की ज्यों ज्यों असर फैलती गइ त्यों त्यों हस्ति सचेत होता गया, थोडी देर में पहिले जैसा ही होगया राजा देख अद्भुत चमत्कार पाया यह कथा पर चक्रीने सुनी, उस से इस राज्य में इस प्रकार के करामाती रहते हैं, अपनी सेना से उस देश से दूर से निकल चला गया राजा प्रजा सुख पाये इस ही प्रकार जो गुरु रूप वैद्य का विनय कर विनीत शिष्य रूप राजा ज्ञान ध्यान तपादि औषधीयों प्राप्त कर कर्म रूप का नाश कर ज्ञानादि गुणों का प्रकाश करने की करामात प्राप्त करते हैं उन के राग द्वेषादि दुश्मन दूर से ही पलायन कर जाते हैं ॥ १० ॥ स्थूलभद्र गणिका—जिस गणिका के साथ संसार अवस्था में बारा वर्ष विलास किया उस ही गणिका की चित्रशाला में त्यागी अवस्था में चातुर्मास कर उस श्राविका बना

ऐसे परन्तु यद्यपि स्थूलभद्र महामुनि की शिष्या कोशा गणिका के यहां राजाने एक सार्थवाही को भेजा वह कोशा अपनेवत के रसपान गुरुवर्य के गुणानुवाद करने लगी तब इस सार्थवाहने अभीमान में छका अपनी कुशलता बताने एक कंकर की गलोल से वृक्ष के पत्तों को छिद्र कर दिया उस की कला को रद्द करने वेश्याने कस २ के दाने का राशी भर उस में ऊपर के दाने पर सूई चुभा उसी रस वृक्ष पर फूल रख उस फूल पर आपने नृत्य कर बताये और ऐसी सर्व कलाओं हमारे गुरुवर्य के एक ब्रह्मचर्य के आगे निमार्ल्य है स्थूलभद्रजी का वृतान्त सुन सार्थवाही भी पर स्त्री का नेम से प्रत्याख्यान गया ॥ ११ ॥ एक पंडित ने राज पुत्र को विद्या दान दिया उस के बदले में कुमार उस को बहुत द्रव्य देने लगा यह देख लोभी राजा ने उस पंडित को भोजन में विष दे मार कर द्रव्य ग्रहण करने की इच्छा की यह बात का ज्ञान कर आचार्य भोमनाथ स्नान करने लगे तब सूके हुवे वस्त्र को कुमार ने भीना कहा गुरु समझ गए तब क्रोंच पक्षी की भाषा में सब वृतान्त समझाया, तथापि गुरुने बिना समझे विषमय भोजन किया उस का त्याग क्रोंच पक्षी के शब्द पर २ हरन किया, गुप्त पने गुरु का बहुत धन दे विदा किये इस ही प्रकार छद्म शिष्यों कुटुम्ब की परवाह नहीं करत गुरु आदि उपकारी का निधन का निवारन करते हैं ॥ १२ ॥ मदेश गए पति की विरहणी स्त्रीने किसी पुरुष को बोलाया उस को नापिक के पास क्षौर कर्म करा कर वस्त्र भूषण से उसे सजकर भोग किया रात्री को वषाद वर्षा, मनाला पक्षी उस पुरुष को पिपासाकुल

पर चक्री सर्व देशो में विजय करता इधर आरहा है, तब उसने विचार किया कि रास्तेके जलाशय में विष प्रक्षेप करने से परचक्री की सेना पानी पीकर मर जायगी और अपना राज कुशल रह जायगा ग्राम के वैद्य वैपारीयो के पास जितना विष था वह सब मंगाया तब एक वैद्यने एक मासाभर विष लाकर दिया राजा ने पूछा यह क्या ? वैद्य बोला यह सहस्र भेदी विष है किसी एक हस्ति के पूछ के बाल को उस विष का स्पर्श कराया वह सर्प की विषकी तरह ज्यों २ हस्ति के अंग में स्पर्शता गया त्यों त्यों उस का अंग मूर्च्छित होते थोडी देर में वह हस्ति मृत्युगत होगया राजा ने फिर विस्मित हो पूछा वैद्यराज ! इस का कुछ प्रतिकार भी है क्या ! वैद्य बोला इस हस्ति को संजीवनी औषधी का स्पर्श कराओ, पूर्वोक्त प्रकार ही उस औषधी की ज्यों ज्यों असर फैलती गइ त्यों त्यों हस्ति सचेत होता गया, थोडी देर में पहिले जैसा ही होगया राजा देख बहुत चमत्कार पाया यह कथा पर चक्रीने सुनी, उस से इस राज्य में इस प्रकार के करामाती रहते हैं, अपनी सेना ले उस देश से दूर से निकल चला गया राजा प्रजा सुख पाये इस ही प्रकार जो गुरु रूप वैद्य का विनय कर विनीत शिष्य रूप राजा ज्ञान ध्यान तपादि औषधीयों प्राप्त कर कर्म शत्रु का नाश कर ज्ञानादि गुनों का प्रकाश करने की करामात प्राप्त करते हैं उन के राग द्वेषादि दुश्मनो दूर से ही पलायन कर जाते हैं ॥ १० ॥ स्थूलभद्रय गणिका—जिस गणिका के साथ संसार अवस्था में बारा वर्ष विलास किया उस ही गणिका की चित्रशाला में त्यागी अवस्था में चातुमास कर उस श्राविका बनाइ

अस्सेय ॥ गद्दह लक्खण गट्ठी, अंगए रहिए गणियाय ॥ ७ ॥ सायासाट्ठी दीह
पत्तण, अवसव्वय च कुचस्स ॥ निव्वोदएय ठोणे घोडग पढण च रुक्खाओ ॥ ८ ॥

सर्व तरुणों से पचने का उपाय पूछा तब कोई बोला कि जो कोई वयोवृद्ध होता है वह विशेषज्ञ होता है वह वतासके राजा ने सेनामें ढंडोरा पीटाया कोई वृद्ध होवे तो वह इनाम पावे सेना में पितृभक्त सुभट अपने पिता के चरण स्पर्श किये बिना भोजन नहीं करता था उस ने गुप्तरीति से अपने पिता का साथ रक्खा था वह वृद्ध राजा के पास आया राजा ने नम्रता से कहा सब जान बचाने पानी शीघ्रता से प्राप्त हो ऐसा कोई उपाय बताइये ? उस ने कहा गधे को छोडो वह जिस स्थान जमीन को सुंघे वहीं पानी नजदीक जानो राजा ने वैसा ही किया पानी प्राप्त हुवा सब सुख पाये इस प्रकार वयोवृद्ध गुणोंवृद्ध की सेवा से आत्मगुन प्रगट हो प्राणी सुख पाते हैं ॥ ७ ॥ किसी अश्व शिक्षक को राजा ने बहुत से अश्व सिखाने दिये उस अश्व शिक्षक से राज पुत्री मोहित हुई अश्वशिक्षक के पूछने से वह बोली इस में दो घोडे बहुत उत्तम है उसकी यह परीक्षा है कि ये जब नीचे गारदन कर खडेरहे उस वक्त ऊपर से पत्थर उन के सन्मुख डालने से भी वे भडकते नहीं हैं यह कथन उस ने ध्यान में रखा सब अश्व सिखाकर प्रवीण किये राजा को सुपरत किये, राजा बोला इस में से दो घोडे तुझे पसंद हो सो लेले पुत्र ने वे दो घोडे मंगे तब राजा ने रानी से भेद कहा अपनी पुत्री उस को दी घोडे

इसलिये जिस प्रकार पाटलीपुत्र मोरेट राजा को उपकारी हुवे वेसे पीछे विनीत शिष्य गुरु को उपकारी होता है ॥ ८ ॥ पाटली पुरके मुरंड राजा को मेघो राजा ने कुतुहल निमित्त—१ एक सूत का पिंडा उस के तार का मालूम गुप्तकर, २ एक पोली लकड़ी में गुप्त वज्र रत्न पर उस का मुख लाख से चेपकर ३ और एक डब्बे में मुख लाख से बंध कर यों तीनों को किसी के समझ में न आवे वेसा बनाकर भेजे और कहा इन को बिना तोडे इस में से पदार्थ ग्रहण करलेना उसे सांभल पाटली पुर के राजा के पास आ तीनों वस्तु की वृत्तांत कह सुनाया राजा ने बहुत प्रकार देखा परंतु मर्म नहीं पाया पाटली पुर में एक विचक्षण कलाचार्य रहते थे, उन को बहुत मान पूर्वक बोलाये बहुत भक्ति भाव किया और उन तीनो वस्तु को सामे रख हाल कहा आचार्यने गरमागरम पानी में तीनों को रखे जिस से उन का लोप और लाख दूर होगई, अन्दर की वस्तु प्रगट होगई आश्चर्य से राजा बोले—इस के बदल में भी हम इसी प्रकार कोई कृपा कर भिजवाइये आचार्य ने एक तुम्ब छिद्रकर उस में रत्नभर पीछा बराबर किया रंग से रंगित कर उन ही पुरुष के हाथ भिजवाया उस ने अपने राजा को दिया, परंतु उस का भेद न तो उसे समझा और न किसी से पूछा जिस से उस का गुप्त भेद प्राप्त करसका नहीं पाय भी ले सका नहीं ऐसे ही जो अभिमान का त्याग कर गुरु आदि विद्वानों का विनय करते हैं उन को गुरु आदि शास्त्र का गूढ भेद प्रगट कर बताते हैं व प्रसन्न पात्र होते हैं जो मनीमानी ज्ञानी की कदर नहीं करते हैं वे मुग्ध ही रहते हैं ॥ ९ ॥ जिस राजाने मना है

बोला जल्दी सा तेरे पर को तेरा पत्र आगया है यों सुन वह घर पर गइ और पुत्र को घर आया देख बहुत खुशी हुइ बधाइ देने वाले पंडित को द्रव्य दान किया अवीनीत गुरु पर विशेष द्वेषी बना दोनों फिर गुरु पास आये विनीतनेतो गुरु को देखते ही दोनों हाथ जोड मस्तक पर चढा आनन्दाश्रु सहित नमस्कार किया आविनीत स्थम्भवत खडा २ गुरु को अपशब्द सुनाने लगा, गुरुने विनीत से पूछा रे वत्स तुने यह किस प्रकार जाना, तब विनीत बोला आप के प्रसाद से चारों पाँव के बीच लघुनीत करी देख कर हथनी जानी, एक ही बाजु का घास खाया देख काणी जानी, हाथी पर बैठने से रानी जानी, वृक्ष में उलझा सूत करी देख लालरंग की साडी जानी लघुनीत कर दाहिना हाथ का टेका दे उठने से पूर्ण मास व पुत्र प्रसवने वाली जानी और घडा फूटने से मटी से मट्टी पानी से पानी से मिलन से पुत्र घर आया जाना यों सुन गुरु हर्षित हुवे और अवीनीत से बोले इस को विचार हुवा वैसा तुझ क्यों नहीं हुवा यह तेरी आत्मा में विचार ! विनय से और अविनय से विद्या ग्रहण करने में इतना फेर है ॥ १ ॥ शास्त्र के गूढ अर्थ भी विनय से सरल बन जाते हैं अभय कुमार की तरह ॥ २ ॥ लेखक कला भी विनय से सुधरती है ॥ ३ ॥ गिनने की कला संख्या शास्त्र भी विनय से सुधरता है ✽ कूपखनन की कथा—किसी विज्ञाना से किसीने पूछा कूप खोदाने से नजदीक पानी कहां निकलेगा ? उस विज्ञानीने बताया यहां कूप खोदाया परन्तु पानी निकला नहीं तब फिर बहुत विनय

✽ देखिये तीसरी चौथी कथा समझाने की कभी प्रत में तथा दोनों हस्त लिखित प्रत में इतनी है

फलवंह, त्रिणय समुत्था हवइ सुद्धी ॥ १ ॥ निमित्ते अरेथय, ल्हगणीए कृत्र कर पूछा आप की आज्ञानुसार किया तो भी पानी नहीं निकला ! तब विज्ञानीने कहा अब पानी बहुत नजदीक है कूप का इसे प्रकार सुधार इस स्थान प्रहार करा तुरत पानी निकल आवेगा विज्ञानी क कहने मुजब करने से तत्काल एकदम उछलकर पानी निकला कूप भरागया एसे ही किसी विनीतन गुरु आज्ञा प्रमाने कार्य किया परंतु ज्ञानादी गुन की प्राप्ति नही हुइ और उस के आत्म प्रदश विशुद्ध बनगये फिर बहुत ही विनय कर पूछा कि गुरुन संतुष्ट हो ऐसी कुञ्जी बताइ की तत्काल उस महान ज्ञान प्राप्त हो आत्मा तृप्त होगई ॥ ८ ॥ द्वारका नगरी में कोइ सोदागर बहुत घोडे बेचन आया वसुदेवजी घोडे की परीक्षा में बडे कुशल थे उनोंने कृष्णजी से कहा सर्वोत्तम पर दुर्बल घोडा है, उनोंन पिताज्ञा प्रमाण की अन्यता जादवोंने अच्छ ताजे मोटे घोडे लिये और कृष्णजीने पिताज्ञा प्रमान वह दुबला घोडा लिया, वह घोडा बडा प्रतापी अनेक दुष्कर कार्यों में बडा सहायक बना एसे ही जो ज्येष्ठाज्ञा को सविनय प्रमाण करते हैं वे सर्व अर्थ प्राप्त कर सकते हैं विनय से प्राप्त पदव है वे सब प्राय निर्वाहने समर्थ होते हैं ॥ ९ ॥ एक तरुण राजाने अपनी सेना में से सर्व वृद्ध पुरुषों को निकाल दिये तरुण ही तरुण रक्खे अन्यदा राजा सर्व सेना ले किसी देश पर चढाइ करने जाते रास्ता भूल महा अटवी में पडा, पानी नहीं मिलने से सब लोगों मृत्यु के कंठ आ रहे राजान प्रधानादि

बाला मरदी मा तेरे घर को तेरा पुत्र आगया है यों सुन वह घर का गई और पुत्र को घर आया देख बहुत खुशी हुई बधाई देने वाले पंडित को द्रव्य दान किया अवीनीत गुरु पर विशेष द्वेषी बना दोनों फिर गुरु पास आये विनीतनेतो गुरु को देखते ही दोनों हाथ जोड मस्तक पर चढा आनन्दाश्रु सहित नमस्कार किया अविनीत स्थम्भवत खडा २ गुरु को अपशब्द सुनाने लगा, गुरुने विनीत से पूछा रे वत्स! तैने यह किस प्रकार जाना, तब विनीत बोला आप के प्रसाद से चारों पांव के चीन्ह लघुनीत करी देख कर हथनी जानी। एक ही पास का घास खाया देख काणी जानी, हाथी पर बैठने से रानी जानी, वृक्ष में उलझा सूत तरी देख आलगण की साडी जानी लघुनीत कर दाहिना हाथ का टेका ले उठने से पूर्ण मास व पुत्र प्रसवने वाली जानी और घडा फूटने से मट्टी से मट्टी पानी से पानी से मिलन से पुत्र घर आया जाना यों सुन गुरु हर्षित हुवे और अवीनीत से बोले इस को विचार हुआ तैसा तुझ क्यों नहीं हुआ यह तेरी आत्मा में विचार! विनय से और अविनय से किया प्रश्न करने में इतना फेर है ॥ १ ॥ शास्त्र के गूढ अर्थ भी विनय से सरल बन जाते हैं अभय कुमार की तरह ॥ २ ॥ लेखक कला भी विनय से सधरती है ॥ ३ ॥ गिनने की कला संख्या शास्त्र भी विनय से सधरती है * कूपखनन की कथा—किसी विज्ञाना से किसीने पूछा कूप खोदाने से नजदीक पानी कहां निकलेगा? उस विज्ञानीने बताया वहां कूप खोदाया परन्तु पानी निकला नहीं तब फिर बहुत विनय

* दूसरी तीसरी चौथी कथा कम्मकरे की कपी प्रत में तथा दोनों हस्त लिखित प्रत में इतनी है

का मोक्ता होता है इस प्रकार का जो विनय है उस का माहात्म्य बतान यहां उदाहरणों दो गाथा कर कहते हैं प्रथम विनय की कथा—जैसे किसी नगर में कोई पंडित के पास दो विद्वान निमित्त शास्त्र का अभ्यास करने लगे, उस में एक तो पंडित का बहुत मान कर विनय भक्ति से उन को खुशी कर शास्त्रार्थ ग्रहण करे, मनन करे परिवर्तन करे संदेह उत्पन्न होते पूछ कर निर्णय कर धारण कर पक्का करे दूसरा अभिमानी प्रमादी विद्याभ्यास बेदरकारी से करे अन्यदा किसी कार्य अन्य ग्राम को जाते रास्ते में धूल में पांव जमे हुवे देख वीनीत न अवीनीत से पूछा भाई! यह पांव किसके हैं! तब अविनीत बोला यह पांव हाथी के हैं विनीत बोला की हथनी के हैं, व हथनी, दाहिनी आंख से कानी है उसपर रानी लाल रंग की गोटे वाली साड़ी पहन बैठी है वह गर्भवती पूरे दिनों की है उस के पुत्र होगा तब अविनीत बोला—अरे इतना क्या अभिमान करता है सर्वज्ञ जैसा बनता है, क्यों गप्प मारता है यों बोलते आगे आये तलाव के किनारे हथनी दाहिने आंख से कानी खड़ी है उस पक्के तम्बू में से दासीने आकर बधाई दी, रानी जी को पुत्र हुवा है! ऐसे साड़ी भी वहां सूखती हुई देखी, विनीत के कहे मुजब सब बात मिली देख अविनीत गुरु का द्वेषी बना कि ऐसी विधी सहित विद्या मुझे नहीं पढ़ाई इतने में तलाव पर पानी भरने एक बुढ़ी माई वह पंडितों को देख बोली—अहो पंडितजी! मेरा पुत्र परदेश गया है वह कब आवेगा इतना बोलती है इतनेमें हो उसके मस्तक से पानी का घड़ा पड़कर फूट गया यह देख अविनीत बोला तेरा पुत्र मर गया और विनीत

कुकडा, तिल, बालुग, हत्थि ॥ अगड, वणसंडे, पयस,अइय अब्बापुत्ते ॥ ३ ॥
साहादिही पचपियरोया पणीय रुक्खे खुड्डुग पडसरड काग ॥ उच्चारे गय, घयण ।
गोल, खमे, खड्डुग, सिग्ध, इत्थि, पत्ती, पुत्ते ॥ ४ ॥ महुसित्थ, मुद्दि अंकेया
नाणए, भिक्खु चेडग, निहाणे सिक्खाय ॥ अत्थसत्थे इच्छायमहं सयसहस्सं
॥ ५ ॥ २२ ॥ भरह नित्थरण समत्था तिव गुसुत्तत्थगाहियपेया ॥ नठमठ लोग

॥ २२ ॥ इति उत्पात बुद्धि पर ५२ कथाओं सपूर्णम् ऐसे और भी अनेक उदाहरण जानना ॥२१॥
अब विनय बुद्धि का कहते हैं—विनय करना किस लिये ? क्यों कि गुरु का बहुमान पूर्वक काम
करना बहुत दुष्कर है, इसलिये उस कार्य का जो निर्वाह करने समर्थ होता है वही वीनीत होता है
ऐसा वीनीत धर्म अर्थ और काम इन तीनों वर्ग के कार्य का उपाय का ज्ञान होता है ऐसे चौथा
मोक्ष साधक मूत्राथ के रहस्यों को ग्रहण करने वाला होता है उस को ग्रहण किया हुआ अर्थ सार
रूप हो कर परिणमता है जो गुरु आज्ञा को प्रमाण करता है उस का दोनों लोक में परम कल्याण
होता है अर्थात् इस लोक में तो महा अर्थ के दाता वाक्याप वादी विजय समारंभन और आरंभ साधन
इत्यादि कार्यों में निपुणता पूर्वक समर्थ बनता है और परलोक में स्वर्ग अपवर्ग (मोक्ष) रूप महाफल

कुक्कड़ा, तिल, वालुग, हत्थि ॥ अगड, वणसंडे, पयस,अइय अज्जापुत्ते ॥ २ ॥
खाडहिलो पंचपियरोया पणीय रुक्खे खुड्डुग पडसरड काग ॥ उच्चारे गय, घयण ।
गोल, खभे, खुड्डुग, भिग्ग, इत्थि, पत्ती, पुत्ते ॥ ४ ॥ महुसित्थ, मुद्दि अंकेया
नाणए, भिक्खु चेडग, निहाणे सिक्खाय ॥ अत्थसत्थे इच्छायमहं सयसहस्स
॥ ५ ॥ २२ ॥ भरह निच्छरण समत्था तिव गुसुत्तत्थगहियपेया ॥ नडमढ छोग

॥ २२ ॥ इति उत्पात बुद्धि पर ५२ कथाओं संपूर्णम् ऐसे और भी अनेक उदाहरण जानना ॥२१॥
अब विनय बुद्धि का कहते हैं—विनय करना किस लिये ? क्यों कि गुरु का बहुमान पूर्वक कार्य
करना बहुत दुष्कर है, इसलिये उस कार्य का जो निर्वाह करने समर्थ होता है वही वीनीत होता है
ऐसा वीनीत धर्म अर्थ और काम इन तीनों वर्ग के कार्य का उपाय का ज्ञान होता है जैसे चौथा
मोक्ष साधक सूत्रार्थ के रहस्यों को ग्रहण करने वाला होता है उस को ग्रहण किया हुवा अर्थ सार
रूप हो कर परिणमता है जो गुरु आज्ञा को प्रमाण करता है उस का दोनों लोक में परम कल्याण
होता है अर्थात् इस लोक में जो महा अर्थ के दाता शास्त्रार्थ वादी विजय समारंभन और आत्म साधन
इत्यादि कार्यों में निपुणता पूर्वक समर्थ बनता है और परलोक में स्वर्ग अपवर्ग (मोक्ष) रूप महाफल

किसी स्त्री का भरतार बहुत लेना छोड कर मर गया वह स्त्री पति के मित्र से बोली— मेरा धन तुम युक्ति कर मुझे दिलाओ वह बोला-मुझे क्या ? स्त्री बोली तुमारी इच्छा हो सो मुझ देना उसने लेनदारों से धन भेला किया उस स्त्री को थोडासा देने लगा स्त्रीने लिया नहीं दोनों राज्य में गए तब प्रधानने उस धन के दो ढग किये एक बहुत धनवाला और एक किंचित धनवाला फिर उस से पूछा तेरी इच्छा किस धन पर है, उसने बहुत धन बताया वह उस स्त्री को दिया क्यों कि उस की इच्छा हो सो स्त्री को देने का वचन दिया था और थोडासा धन उसे दिया य अथ शास्त्र अपार उच्चार्य की कथा ॥ ५१ ॥ कोइ विद्वान एक सुवर्ण कटोरा हाथ में ले बजार में आके बोला जो नवी कथा सुनावे उसे यह कटोरा देता हूं और नहीं तो एक सुवर्ण मुद्रा लेता हूं जो कोई उस कथा सुनावे उसे यह कथा पीछी विस्तार से सुना कर कहे यह तो मैंने सुनी है यों उसने कई मुद्रा भेली की यह राजा सुन आश्चर्य पाया, उसे अपने पास बोलाया, कटोरा [illegible] की जा इसे जीते यह बहुमान्य बनेगा वहां एक सिद्ध पुत्र आया और राजा समक्ष बोला इस का पिता व और मेरे पिता के परस्पर बहुत प्रेमथा एकदा इस का पिता मेरे पिता के पास से एक लक्ष सुवर्ण मुद्राले गया था यह इसने सुना है क्या ? यों सुन वह विद्वान निरुत्तर हुवा, क्यों कि जो सुनी कहे तो लक्ष मुद्रा देनी पडे और नहीं सुनी कहे तो उस मुद्रा से भरा कटोरा देना से छूटका होवे यह उस सिद्ध पुत्र को कटोरा दे स्वस्थान गया राजाने सिद्ध पुत्र का बहुमान किया

दोनों घर आये, फिर अकस्मे पीछे से आकर रत्न निकाल उस में कोयले भर दिये दूसरे दिन दोनों वहां गये उस में कोयले देख वह धूर्त रोने लगा और बोला अपने नसीब खोटे सो रत्नों के कोयले होगये दूसरा मतलब समझ गया दोनों चुपचाप घर आये अन्यदा उसने उस धूर्त जैसी एक मूर्ती रूपइ बनवाई दो बन्दर के बच्चे पाले, उस मूर्ती के हाथ से उन बन्दर के बच्चों को दाना पानी दे, कर ऐसे हिलाये कि मारो तो भी मूर्ती को छोड़ के जावे नहीं अन्यदा धूर्त मित्र के दो लड़के को जीमने बुलाये उन को जिमाकर कहीं एकांत में छिपा दिये लड़के बहुत देर हुई आये नहीं तब वह धूर्त बुलाने आया वह मित्र बोला उस कमरे में है कमरे में जाते ही दोनों बन्दर के बच्चे उस से चूम गये मित्र आकर बोला अर यह क्या गजब! उस ने कहा अपने नसीब खोटे सो लड़के के बन्दर होगये धूर्त बोला यह कैसे! मित्र ने कहा जैसे नसीब पलटने से रत्नों के कोयले हुवे वैसे ही बच्चों के बन्दर हो गये तब ही यह तुझे छोड़ जाते नहीं हैं धूर्त समझ गया और रत्नों का हिस्सा उसे दे बच्चों को ले गया ॥ ५९ ॥ किसी श्रीमान के पुत्र को किसी विदेशी पंडित के पास पढ़ने बैठाया उसने द्रव्य बहुत मांगा श्रीमानने विचारा जो अभी द्रव्य नहीं दूंगा तो यह पढ़ायगा नहीं इस लिये अभी तो मांगे सो दूं फिर यह देश जायगा तब रास्ते में धन डालूंगा और धन छिना मंगाउंगा यह मतलब वह पंडित समझ गया उसने जाने के पहिले रास्ते के किसी स्थान में धन छिपाया और जाती वक्त सब वस्त्रादि झड़का बताकर चलागया श्रवने उस के पास कुछ भी नहीं देखा जिस से उस का पीछा नहीं किया यह पंडित की बुद्धि ॥ ६० ॥

किसी स्त्री का भरतार बहुत धन छोड़ कर मर गया वह स्त्री पति के मित्र से बोली— मेरा धन तुम युक्ति कर मुझे दिखावो वह बोला-मुझे क्या ? स्त्री बोली तुमारी इच्छा हो सो मुझे देना उसने लेनदारों से धन भेला किया उस स्त्री को थोड़ासा देने लगा स्त्री ने किया न्याय दोनों राज्य में गए तब प्रधानने उस धन के दो ढग किये एक बहुत धनवाला और एक किंचित धनवाला फिर उस से पूछा तेरी इच्छा किस धन पर है, उसने बहुत धन बताया वह उस स्त्री को दिया क्यों कि उस की इच्छा हो सो स्त्री को देने का वचन दिया था और थोड़ासा धन उसे दिया ५८ अथ चालु अपूर्व अश्रुतार्थ की कथा ॥ ५९ ॥ कोई विद्वान एक सवर्ण कटोरा हाथ में ले बजार में आया और बोला जो नयी कथा सुनावे उसे यह कटोरा देता हूं और नहीं तो एक सुवर्ण मुद्रा लेता हूं जो कोई उसे कथा सुनावे उसे वह कथा पीछी विस्तार से सुना कर कहे यह तो मैंने सुनी है यों उसने बहुत मुद्रा भेली की यह राजा सुन आश्चर्य पाया, उसे अपने पास बोलाया, ढंढेरा पीटया की जो इसे जीते वह बहुमान्य बनेगा वहां एक सिद्ध पुत्र आया और राजा समक्ष बोला इस के पिता के और मेरे पिता के परस्पर बहुत प्रेमथा एकदा इस का पिता मेरे पिता के पास से एक लक्ष सुवर्ण मुद्राले गया था यह इसने सुना है क्या ? यों सुन कर विद्वान निरुत्तर हुवा क्यों कि जो सुनी कहे तो लक्ष मुद्रा देनी पड़े और नहीं सुनी कहे तो उस मुद्रा से भरा कटोरा देने से छूटका होवे वह उस सिद्ध पुत्र को कटोरा दे स्वस्थान गया राजाने सिद्ध पुत्र का बहुमान्य किया

दाना घर आये फिर अकस्मात् पीछे से आकर रत्न निकाल उस में कोयले भर दिये दूसरे दिन दोनों वहां गए उस में कोयले देख वह धूर्त रोने लगा और बोला अपने नसीब खोटे जो रत्नों के कोयले होगये दूसरा मतलब समझ गया दोनों चुपचाप घर आये अन्यदा उसने उस धूर्त जैसी एक मूर्ती हूबहु बनवाई दो बन्दर के बच्चे पाले, उस मूर्ती के हाथ से उन बन्दर के बच्चों को दाना पानी दे, ऐसे सिखाये कि मारो तो भी मूर्ती को छोड़ के जावे नहीं अन्यदा धूर्त मित्र के दो लड़के को जीमने बुलाये, उन को जिमाकर कहीं एकांत में छिपा दिये लड़के बहुत देर हुई आये नहीं तब वह धूर्त बुलाने आया वह मित्र बोला उस कमरे में है कमरे में आते ही दोनों बन्दर के बच्चे उस से चूंप गये मित्र आकर बोला अरे यह क्या गजब! इसने कहा अपने नसीब खोटे जो लड़के के बन्दर होगये धूर्त बोला यह कैसे! मित्र बोला जैसे नसीब पलटने से रत्नों के कोयले हुवे वैसे ही बच्चों के बन्दर हो गये तब ही यह मुझे छोड़ जाते नहीं हैं धूर्त समझ गया और रत्नों का हिस्सा उसे दे बच्चों को ले गया ॥ ४९ ॥ किसी श्रीमान के पुत्र को किसी विदेशी पंडित के पास पढ़ने बैठाया उसने द्रव्य बहुत मांगा श्रीमानने विचारा जो अभी द्रव्य नहीं दूंगा तो यह पढ़ायगा नहीं इस लिये अभी तो मांगे सो दूं फिर यह देश जायगा तब रास्ते में लूट डालूंगा और धन छिना मंगाऊंगा यह मतलब वह पंडित समझ गया उसने जाने के पहिले रास्ते के किसी स्थान में धन छिपाया और जाती वक्त सब वस्त्रादि सेठ को बताकर चलागया सबने उस के पास कुछ भी नहीं देखा जिस से उस का पीछा नहीं किया यह पंडित की बुद्धि ॥ ५० ॥

लगा इधर उधर देखने से मधु पूडा देखा नहीं तब उस स्त्रीने व्यभिचार सेवन के आसन से शयन कर पुडा बताया कोलीने स्त्री को व्यभिचारीणी जानी ॥ ४५ ॥ किसी राज पुरोहित की प्रशंसा सुन एक गरीब द्रव्य की नोली पापन रख विदेश गया पीछा आकर नोली मांगने से पुरोहितजी बदल गये जिस से वह बावला बन कर नोली दे २ यों पकना भटकने लगा प्रधानने उस को देख बोलाया और पूछने से उसने सब हकीकत कह सुनाई यह बात प्रधानने राजा को जनाइ और पंडितजी जिस वक्त राज्य सभा में बैठे थे उस वक्त उन के हाथ में मुद्रिका ली वह गुप्तपने एक मनुष्य को दी और कहा पुरोहितजी के घर जा कर पुरोहित पत्नी से कह कि पंडितजी बडे संकट में पडे हैं,मुझे यह मुद्रिका दी है और कहा है कि मेरे घर यह मुद्रिका बता कर फलाने स्थान नोली रखी है वह लेआव इस लिये जलदी नोली मंगाईये उस मनुष्यने वैसे ही किया पुरोहितपत्नी के पास से ले १०-९ नोली में उसे रख बावले को बोलाया और कहा तेरी नोली इस में कौनसी है, उसे पेछान के ले ले उसने अपनी नोली तत्काल उठाली बहुत खुशी हुआ पुरोहितजी की जिव्हा छेदन कराइ ॥ ४६ ॥ किसी प्रतिष्ठित साहुकार के यहां कोइ पुरुष सुवर्ण मुद्रा की नोली रख कर गया पीछे से उस साहुकारने उस का छेदन कर मुद्रा निकाल ली और खोटी मुद्रा भरकर सुनारे के पास सुना बराबर कर वह आया जब समझाकर उसे दी खालकर खोटी मुद्रा देखने से दोनोंको झगडा हुआ राज्यमें गये,राजाने वह नोली रखली और कुछ दिन बाद आनेका कहा और एकदा बहु मूल्य महीन वस्त्रका स्थान मध्य में से थोडा सा फाडकर घरी

लेगइ इधर उधर देखने से मधु पूडा देखा नहीं तब उस स्त्रीने व्यभिचार सेवन के आसन से स्थापन कर पुडा बताया कोलीने स्त्री को व्यभिचारणी जानी ॥ ८५ ॥ किसी राज पुरोहित की प्रशंसा सुन एक गरीब द्रव्य की नोली थापन रख विदेश गया पीछा आकर नोली मांगने से पुरोहितजी बदल गये जिस से वह बावला बन कर नोली दे २ यों बकना भटकन लगा प्रधानने उस को देख बोलाया और पूछने से उसने सब हकीकत का सुनाई यह बात प्रधानने राजा को जनाइ और पंडितजी जिस वक्त राज्य सभा में बैठे थे उस वक्त उन के हाथ में मुद्रिका थी वह गुप्तपने एक मनुष्य को दी और कहा पुरोहितजी के घर जा कर पुरोहित पत्नी से कह कि पंडितजी बडे संकट में पडे हैं,मुझे यह मुद्रिका दी है और कहा है 'कि मेरे घर यह मुद्रिका बता कर फलाने स्थान नोली रखी है वह लेआव इस लिये जल्दी नोली दीजीये उस मनुष्यने वैसे ही किया पुरोहितपत्नी के पास से ले १०—९ नोली में उसे रख बावले को बोलाया और कहा तेरी नोली इस में कौनसी है, उसे पेछान के ले ले उसने अपनी नोली तत्काल उठाली बहुत खुशी हुआ पुरोहितजी की जिव्हा छेदन कराइ ॥ ८६ ॥ किसी मतिहीन साहुकार के यहां कोई बहुत सुवर्ण मुद्रा की नोली रख कर गया पीछे से उस साहुकारने उस का छेदन कर मुद्रा निकाल ली और खोटी मुद्रा भरकर तुनारे के पास तुना बराबर कर यह आया जब समझाकर उसे ददी खोलकर खोटी मुद्रा देखने से दोनोंको झगडा हुआ राज्यमें गये,राजाने वह नाली रखली और कुछ दिन बाद आनेका कहा और एकदा बहु मूल्य महीन वस्त्रका स्थान मध्य में से थोडा सा फाडकर घरी

जीता रहूं नहीं तो मरजाऊंगा पुत्र इस असे मूर एक झाडी में छिपाकर सम पडय से कहने लगा कि इस झाडी में मेरी स्त्री मजूता हुई है और मेरे रा शरमाती है, इस लिये तुमारी स्त्री को भेजो तो अच्छा हावे, उसने स्त्रीको भेजी वह गई मित्र का काय कर पीछी आई और इस कर पांची माया दखो तुमारी स्त्री को पुत्र हुआ है ॥ ८२ ॥ एक स्त्री अपने दोनों पति पर एकसा प्रेम रखती थी इस कथन से विस्मित हो राजा ने प्रधान से पूछा प्रधान बोला ऐसा कभी न बने परीक्षा निमित्त स्त्री को कहकर दोनों पति को पूर्व पश्चिम के ग्राम भेजाओ राजा ने वैसा ही कराया तब प्रधान बोला जिसे पूर्व में भेजा उसपर प्रेम कम है, कि जाते आते दोनों वक्त सन्मुख धूप रहती है और पश्चिम में भेजा उसपर प्रेम अधिक है परीक्षा निमित्त स्त्री को कहलाओ के दोनों बिमार होगये हैं राजाने उस स्त्री को कहलाया तब स्त्री बोली पूर्व में गया वह तो सदैव बिमार रहता है आप पश्चिम वाले के पास गई यह प्रधान की बुद्धि ॥ ८३ ॥ किसी दो विधवाओं के बीच एक ही पुत्र था, वह दोनों लडने लगी छोटी कहे यह पुत्र मेरा है बडी कहे यह मेरा है यह न्याय राज में गया तब प्रधान बोला कि छूरा मंगा इस लडके के दो टुकडे कर एकेक दोनों को दे दो बडीने यह कथन मंजूर किया और जिस की कुक्षि से यह हुआ था वह सच्ची माता बोली मुझे पुत्र नहीं चाहिये ! इस ही को देदो मुझे पुत्र धन कुछ नहीं चाहिये पर तु लडके को मत मारो ! यह सुन प्रधानने उस को पुत्र दिलाया ॥ ८४ ॥ किसी कोठी की स्त्रीने वन में अन्य पुरुष साथ व्यभिचार सेवन करते मधुआ पुडा मूलपर देखा यह अपने पतिको कहा

बचे के नाक में लाख की गोली अटक गइ. उसे सोनारने लोह पिला का गरम कर लगाइ जिस से वह गोली उसे चिकट निकल आई ॥ ३८ ॥ किसी राजाने आज्ञा की तलाव के मध्य स्थम्भ है उसे किनारे रहा उखाद डालेगा उसे प्रधान बनाऊंगा, एक विद्वानने तलाव की पाल पर खीला ठोक उसे रस्सा बांधा फिर वह रस्सा हाथ में ले तलाव के चारों तरफ फिर स्थंभ को बांधा और खेंचलिया उसे प्रधान बनाया ॥ ३९ ॥ बचे की बुद्धि—किसी नगर के राजा से एक परिव्राजिकाने कहा जो दूसरा करेगा वही में करूंगी, मुझे कोई भी जीत सकता नहीं है एक बचा बोला इसे तो में जीत सकता हूं, यों वह बचेने लघुनीत का कमलाकार चित्र किया वह करसकी नहीं सिद्ध हो कर गइ ॥ ४० ॥ कोइ रूपवंत अपनी स्त्री को लेकर वन में जाते स्त्री पलाने गइ वहां एक व्यन्तरी पुरुष का रूप देख मोहित हो उस ही स्त्री सा रूप बना पुरुष के साथ चली और बोली यह देखो व्यन्तरी मेरा रूप बनाकर आती है ठगाना नहीं वह स्त्री भी अपने जैसी अन्य स्त्री को देख रोने लगी पुरुष को सन्देह हुवा मेरी स्त्री कौनसी ? ग्राम में आय राज्य सभा में इन्साफ कराया प्रधान भेद समझ गया और दोनों स्त्री को दूर २ बैठा बोला—जो इस पुरुष को शीघ्र हाथ लगावे वही इस की स्त्री व्यन्तरी ने तत्काल लम्बा हाथ कर लगाया, उसे निकालदी और उस की स्त्री उस के सुपरत की ॥ ४१ ॥ मूलदेव और कडरिक दोनों मित्र वन में जाते किसी रूपवती स्त्री का पुरुष के साथ जाती देख मोहित हो मूलदेवसे बोला—इस स्त्री का सयोग होवे तो

बैठा ब्राह्मणी का रूप देख मोहित हुआ उस गाडी से उतर धूर्तने स्त्री का हाथ पकड घर को लेचला, दोनों का झगडा हुआ राज में गये धूर्त कहे यह स्त्री मेरी, ब्राह्मण कहे मेरी, तब न्यायाधीशने ब्राह्मणी को एकान्त में ले पूछा कल तेने क्या खाया था ? ब्राह्मनी बोली-मूंग चावल, ब्राह्मन को पूछा तो वह भी बोला मूंग चावल धूर्त को पूछा उसने कुछ और बताया तीनों को औषधी प्रयोग से वमन कराया ब्राह्मण ब्राह्मनी के मूग चावल निकलने से स्त्री ब्राह्मण को दी धूर्त को सजादी ॥१८॥ किसी राजा को विद्वान प्रधान की जरूरत होने से ढंढेरा पीटाया कि जो मेरे हाथी को तोलेगा उसे प्रधान बनाऊंगा एक विद्वान हाथी को नावा में डाल पानी में लेगया, जितनी नावा डूबी वहां लकीर की फिर हाथी को निकाल उस में पत्थर भरे लकीर जितनी नावा डूबगइ फिर पत्थरों को तोल हाथी का वजन किया राजा ने उसे प्रधान बनाया ॥ १६ ॥ भांडकी बुद्धि—एक राजा ने अपने दोस्त एक भांड से कहा हमारी रानी को वायूत्सर्ग नहीं होता है भांड बोला—रानी फूलारी है उसे वायूत्सर्ग होता होगा तब आप के नाक के पास वह पुष्पादि लगाती होगी अन्यदा रानीने राजा के नाक को फूल लगाया तब राजा हसा रानी के पूछने से भांड की चोरी कही रानी कोपित हो भांड को देश निकाल दिया भांड नवी जुतीयों की पोट बांध रानी के महेल नीचे पुकारने लगा रानी के पूछने से कहा यह जूते फटेंगे उतने दूर देशावरों तक आप की कीर्ति करुंगा रानी न लज्जित हो उस का गुना माफ किया ॥ १७ ॥ सोनार की बुद्धि—किसी

मरकर नरक में गया अभय कुमार दीक्षा ले असुर विमान में देवता हुवे महा विदेह क्षेत्र से मोक्ष जायेंगे इति उत्पात बुद्धि पर श्रेणिक राजा की तथा अभय कुमार की कथायों सपूर्ण ॥ ११ ॥ पट कुल की कथा—एक पुरुष पटकुल (वस्त्र) वाला और दूसरा कम्बलवाला दोनों नदी में एक स्थान स्नान कर बाहिर आये कम्बलवालेने पटकुल पहन लिया पटकुलवाला अपना वस्त्र न देखने से कम्बलवाले से लडने लगा दोनों लडते राज्य में गये प्रधानने कम्बलवाले के बदन पर ऊन के रूंवे तार देख उसे कम्बल दीराइ पटकुल वाले को पटकुल दिरापा ॥ १२ ॥ सरट की कथा—एक मनुष्य दस्त पाखाने बैठा तब एक सरट (सिरगुठ) आकर उस के दस्त के नीचे खड्डे में मरा गया उस को वेम आया कि यह मेरे पेट में मरा गया जिस से यह बीमार हुआ एक विद्वान वैद्यने उसे आरोग्य मान खास कारन पूछने से मालुम हुआ, उसने मरे सरट को घडे में डाल उस में उस पाखाना कराया फिर वह फाकदी बताया, जिस से वह आरोग्य हुआ ॥ १३ ॥ किसी जैनी को किसी वैष्णवने पूछा कि-आ तुमारे मत में सर्वज्ञ है तो कहो इस बेनातट पट्टन में कउवे कितने हैं! उसने उसे द्वेषी मान जबाबदिया साठ हजार वह बोला कमी ज्यादा होतो ! उसने कहा कमी होतो मेहमान गये और ज्यादा हो तो मेहमान आये जानना फिर वैष्णव बोला — कउवे विष्टा क्यों बिखेरते हैं जैन बोला तुमारे शास्त्र में ' जल विष्णु स्थले विष्णु" कहे हैं इस लिये कउवे देखते हैं कि जो यहां विष्णु हो तो मुझे भी दर्शन होजावे ऐसा सुन वह खिष्ट बना ॥ १४ ॥ कोइ ब्राम्हण ब्राम्हणी गाडी में बैठ जाते थ उस गाडी में एक धूर्त भी

घडो था उस ने चोर की मदोसाकी अभयकुमार ने उसे पकड राजा के सुपरत किया राजाने उसे मारनेकी आज्ञा दी अभयकुमारने कहा यह विद्या तो लछीजीये राजाने सिंहासनपर बैठ२ही विद्या पढ अभ्यास परंतु चढी नहीं अभयकुमार बोला विनय से विद्या की सिद्धि होती है, राजा नीचे खडा रहा चंडाल को सिंहासनपर बैठा कर विद्या पढी पढाइ तो शीघ्र सिद्धि होगई, तब अभय बोला यह आप का विद्या दाता गुरु होगया राजाने उस का सत्कार कर घर पहोंचाया ॥ ०९ ॥ अन्यदा धारणी राणी को अकाल में मेघ वृष्टि का दोहद हुवा, अभय कुमारने पूर्व जन्म का मित्र देव का आराधन कर दोहला पूर्ण किया कुमार हुवा मेघ नाम दिया आठ राणीयोंने पाणीग्रहण किया भगवत श्री महावीर स्वामी के पास दीक्षा ले रात्रि को साधुओं के आवागमन से दुःख पाये भगवंतने दो भव प्रथम हाथी के किये वे सुना कर उनको स्वस्थ किये उनन दोनों आंखों की रक्षा करने का आगार रख सब शरीर साधु की सेवा में अर्पन किया श्रेपना कर अनुत्तर विमान में उपजा हुवे महा विदेह से मोक्ष जावेंगे ॥ १० ॥ एकदा श्रेणिक राजा वन क्रीडा को जाते दुष्कर तप करनेवाले तपस्वी को पारने का आमंत्रण कर राजा काम में लग भुलगया यों तीन वक्त होने से तपस्वी क्रोधित हो नियाना कर चेलना राणी की कुक्षी में उत्पन्न हुवा राणी को राजा के हृदय के मांस के भक्षण का दोहद हुवा अभय कुमारने श्रेणिक राजा के कलेजे पर मांस की पसीबंध राजा को अन्धकार में सुला रूदन करते राजा का कलेजा का छेदन कर राणी को दिया दोहद पूर्ण किया कुमार हुवा कोणिक नाम दिया बडे हुवे बाद श्रेणिक राजा को काट पींजर में दे आप राजा बना

पति को प्राप्त करने सदैव कामदेव की मूर्ती की पूजा करने एक बाग में से फूलतोड लेजाती थी एकदा उस को मालीने पकडी और बोला कि मुझे पतिपने स्वीकार कर नहीं तो तेरी फजीती करूंगा यह डरी और कहने लगी अभी मैं कुमारी हूं मेरा लग्न हुवे बाद मैं प्रथम तेरे पास आऊंगी यों सुन माली ने उसे छोडदी कालांतर उस के लग्न हुवे था वह अपने पति पासगइ और माली को दिया वचन कह सुनाया पति ने वचन पूर्ण करने की आज्ञा दी वह चली रास्ते मे चोरों मिले उन को भी अपना कार्य और पति की आज्ञा कह सुनाई मैं पीछी आऊं तब तुम यह गहने ले लेना यों सुन चोरों ने भी छोडदी आगे राक्षस खाने को आया उसे भी अपने पतिके और चोरों के हाल कहे मैं पीछी आवूं तब खाजाना यों सुन राक्षस ने भी छोडदी वह माली के पासगइ और पति की, चोर की, और राक्षस की बात कही माली सुन खुशी हुवा उसे सती मान अपनी बहिन बना चोली दे रवाना की राक्षस मिला उसे माली के हाल कहे और चोली बताई राक्षस भी उसे सती जान धन दे रवाने की चोर मिले उन से राक्षस के औमाली के हाल कहे चोर भी खुशी हो उसे बहिन बना धनदे रवाने की अपने पति के पास सब हकीगत कही पति अपने सुशीला स्त्री प्राप्त हुई जान खुशी हुवा अभयकुमार बोला, अहो सभा जनो! पति चोर राक्षस और माली इन चारों में कौन विशेष प्रशंसा के पात्र है! तब उस सभा मे जो स्त्रीलुब्ध थे उन ने उस के पति की प्रशंसा की जो पर स्त्री के लुब्ध थे उनो ने माली की प्रशंसाकी, जो मांसाहारी थे उनोंने राक्षस की प्रशंसा की और वह आम्र का चोर उसने भी

नवकार पढ गये हाणी को नवकार सुना श्रावक कहला हासल नहीं दन लगे जिस से हासल बहुत कम आता देख हाणी ने फिरयाद की तब श्रावक की परीक्षा निमित्त काला वस्त्र निर्दोष नगर बंधाया और धोला वस्त्र फूलनादि के स्थान बनाया और ढंढेरा पीटाया कि श्रावक २ धोले तम्बू नीचे खड रहो श्रावक न हो वह काले तम्बू नीचे खडे रहो यों सुन बहुत लोग श्वेत वस्त्र नीचे मगये और जीवादि के जान सबे श्रावक थे वे श्वेत वस्त्र तल जीवोत्पत्ति देख अनुकम्पा लाये हासल चुकाने के डर से न डरते काले वस्त्र तल खडे रहे फिर श्रेणिक राजा अभयकुमारादि वहां आये और काले वस्त्रवाले से पूछा तुम यहां क्यों खडे क्या श्रावक नहीं हो? वे बोले श्वेत वस्त्र तल अनंत जीवों की घात से डर यहां खडे हैं, श्रावक हैं या नहीं यह ज्ञानी जाने, आप का हासल देने सुखी है यों सुन सबे श्रावक जाने उन का हासल माफ किया अन्यदा चेलनारानी का एक स्थम्भ वाला महल में रहने का मनोरथ पूर्ण करने उसयोग्य काष्ट लेने अभयकुमार वन में गया एक बहुत सुशोभित वृक्ष देख भ्रमासे उस में देवस्थान जान उस की पूजा की जिस से देव संतुष्ट हो राजग्रही के पास एक स्थंभ आवास महल उस के चारों तरफ छहों ऋतु के पदार्थ सदैव रहे ऐसा बगीचा बनादिया राजग्रही में एक चांडाल की स्त्री को बेमऋतु आम्र खाने का दोहला हुवा, चंडाल विद्या प्रभाव से कोट नजीक रहे आम्र वृक्षकी डाली झुकाकर फल तोड स्त्री को खादिया प्रात काल राजाने यह जान चोर पकडने का अभयकुमार को हुकम दिया, अभयकुमारने उत्तम प्रकारका नाटक कराया वहां बहुत मनुष्य एकत्रित हुवे, उन के मध्य अभयकुमार कथा कहने लगा कि किसी वणिक की सुरूपा पुत्री वयन योग्य

को देश में रोने का यह भाव उमा में आ पाता की राजा को ह्रिमुक्त रोग हुवा है वैधने मनुष्य के काळेजका मांस एक तोला मुख में देने का कहा है राजा का हुकम है कि मेरे सूरवीर सामंतों में से कोई भी मुझे इतना मांस देगा कोइ कुछ बोला नहीं सभा विसर्जन हुई रात्रि को अभय कुमार के पास किसीने लाख, किसीने क्रोड यों द्रव्य लांच में दिया दूसरे दिन राजा सभा में आया अभयकुमारने द्रव्य का ढग बताकर कहा एक तोला मांस के बदले इतना द्रव्य आया परन्तु एक तोला मांस नहीं मिला पराये का मांस सस्ता है परंतु अपना मांस कितना मेंहगा है ॥ १९ ॥ अन्यदा श्रेणिक राजा वनक्रीडा को जावे रास्ते में एक कठीयारा काष्ट भारी युक्त राजादि भागोंम देखा, कालान्तर वही कठीयारा साधु हो आ रहा था राजा क्रीडा को जाते रास्ते में मिला, तब श्रेणिक राजा व अभय कुमारने स्वारी छोडकर पंच अंग से नमस्कार किया अन्य लोगों को हंसी करते अभय कुमारने देख कालांतर राजाज्ञा से अभय कुमारने सभा में बीडा फिराया की कोइ एक महीने तक छ ही काय की हिंसा को छोडे किसीने भी बीडा झेला नहीं यों पांचों महाव्रतों का बीडा फेराया परंतु कोइने झेला नहीं तब अभय कुमार बोला जो इन पांचों कामों को जावज्जीव त्यागे उसे क्या कहना ? लोगों बोले ऐसे महा पुरुष को वारम्वार नमस्कार है अभय कुमार बोला—जो कठियारा हो तो ! इतना सुन हंसी करनेवाले शरमिन्दे हो गये ॥ २० ॥ श्रेणिक राजाने परम धर्मानुरागी धन श्रावकों के पास से दाण (हांसल) लेना बंध किया था जिस से बहुत लोग

को पत्पा जिस से धारों के राजाने आठ दिन किसी भी पंचेन्द्रिय जीव का वध कोई करने पावे नहीं ऐसा अमरी पढह पजवाया इस पर से कुमार हुआ जिस का नाम अभय नाम स्थापन किया ॥ २४ ॥ श्रेणिक कुमार प्रसेनजीत राजा के मृत्यु के समाचार सुन नंदा देवी को अपना सर्व वीतक सुनाया अपनी राजऋद्धि आदि का पत्र दे राजगृही आए, राज करने लगे पीछे अभय कुमार लघुपने में आया पिता का नाम पूछने से वह पत्र बताया तदनुसार अपनी माता को लेकर राजग्रही के बाहिर उद्यान में माता को रख कर आप ग्राम में गया वहां देखा तो एक खाली कुवे के चारों ओर बहुत लोगों खडे हैं उन लोगों से पूछने से मालुम हुआ कि-श्रेणिक राजाने इस कूप में मुद्रिका डाल कर आज्ञा दी है कि किनारे बैठकर कुप में झुके बिना हाथ से मुद्रा ले कर देगा उसे प्रधान पद पर स्थापन किया जावेगा अभय कुमारने उसी वक्त उस मुद्रिका पर गोबर डाला उस पर प्रज्वलित अग्नि का पूलादाल उसे सुकाया जिस से वह मुद्रिका उसे चेंटगई उस कूप के पास दूसरा खेद खुदा कर उस में पानी भराकर छिरठी मोरी खुदवा कर उस में पानी छोडा जिस से वह छाना (कुंडा) उखड कर कूप पानी से भरने से ऊपर आगया तब बिना झुके मुद्रिका उठाइ श्रेणिक राजा के हाथ में दी कुमार की मोहनीयमूर्ती देख राजाने नाम स्थान पूछने से अपना पुत्र मालुम हुआ नंदा राणी को बहुत उत्सव से ग्राम में लाये पट्टरानी बनाई अभय कुमार का प्रधान बनाया ॥ २५ ॥ अन्यदा श्रेणिक राजाने सभा में पूछा की अभी सस्ता क्या है ? लोग बोले मांस अभय इस बात को ध्यान में रख काष्ठोदर राजा भी

कि इन के मुख बिना खोले भोजन करा पानी पीवो 'सब कुमारो भूख प्यास से आकुल व्याकुल होने लगे तब श्रेणिक बोला घरों को रूमाल लपेट दो वे भींग उस नीचो कर पानी पीया और करंडीयों को हलाने से पक्वान्न का चूरा हो छिद्रों में से गिरे उस खाओ इस प्रकार सबने किया राजा सुन चुप रहा ॥२१॥ रत्न परीक्षा—यों हरेक परीक्षा में श्रेणिक कुमार का विजय देख सब भाइयों द्वेषी बने यह जान श्रेणिक को चार रत्न द देश पार जाने की आज्ञा दी आगे जाकर उन रत्नों के गुन उन के वर्ण व लक्षण से श्रेणिकने जाना कि—१ झगडा न होवे २ आधि व्याधि शान्त होवे, ३ जलोपसर्ग टले, और ४ लाभ बहुत होवे ॥ २२ ॥ नंदा राणी की कथा—श्रेणिक कुमार आगे चोरपल्ली में आये, चोरने चंदन की परीक्षा की चोर के अधिपतिने कन्या का पाणिग्रहण करने का कहा नीच जाति जान श्रेणिकने मान्य नहीं किया तब चोराधीशने श्रेणिक को वेणा नदी में डाल दिया श्रेणिक काष्टारूढ हो वेणा तटपुर आया ग्राम में धन्ना सेठ की दुकान पर बैठा लक्खी बनजारा को तेजमतुरी कहीं भी नहीं मिलने से यहां लेने आया सेठ की दुकान में कचरे में तेजमतुरी पडी थी वह श्रेणिकने बताइ वह बनजारेने खरीद कर बहुमूल्य रत्न दिये कचरे में से यह अपूर्व लाभ हुवा देख सेठ खुशी हुवा श्रेणिक को पुण्यात्मा जान अपनी नंदा नाम की पुत्री का पाणिग्रहण कराया ॥ २३ ॥ अभय कुमार की कथा—श्रेणिक कुमार नंदा देवी के साथ सुखोपभोग भोगते २ सगर्भा हुई तीसरे महिने डोहला हुवा की अमरी पडह बजवावो श्रेणिक से इच्छा दर्शायी उसने में ग्राम में हाथी मदोन्मत्त बनकर नुकसान करने लगा श्रेणिकने हस्ति का मद उतार कर स्थम्भ

को पचा जिस से यहां के राजाने आठ दिन किसी भी पंचेन्द्रिय जीव का वध कोई करने पावे नहीं ऐसा अमरी पडह बजाया इस पर से कुमार हुवा जिस का नाम अभय नाम स्थापन किया ॥ २४ ॥ श्रेणिक कुमार प्रसेनजीत राजा के मृत्यु के समाचार सुन नंदा देवी को अपना सर्व वीतक सुनाया अपनी राजऋद्धि आदि का पत्र दे राजगृही आये, राज करने लगे पीछे अभय कुमार समझ में आया पिता का नाम पूछने से वह पत्र बताया तदनुसार अपनी माता को लेकर राजग्रही के बाहिर उद्यान में माता को रख कर आप ग्राम में गया वहां देखा तो एक खाली कुवे के चारों ओर बहुत लोगों खडे हैं उन लोगों से पूछने से मालुम हुवा कि-श्रेणिक राजाने इस कूप में मुद्रिका डाल कर आज्ञा दी है कि किनारे बैठकर कुप में झुके बिना हाथ से मुद्रा ले कर देगा उसे प्रधान पद पर स्थापन किया जावगा अभय कुमारने उसी वक्त उस मुद्रिका पर गोबर डाला उसपर प्रज्वलित अग्नि का पूलादाल उसे सुकाया जिस से वह मुद्रिका उसे चेंटगइ उस कूप के पास दूसरा खोद खुदा कर उस में पानी भराकर तिरछी मोरी खुदवा कर उस में पानी छोडा जिस से वह छाना (छेंडा) उसल कर कूप पानी से भरने से ऊपर आगया तब बिना झुके मुद्रिका उठाइ श्रेणिक राजा के हाथ में दी कुमार की बोहमीबुद्धी देख राजाने नाम स्थान पूछने से अपना पुत्र मालुम हुवा नंदा राणी को बहुत उत्सव से ग्राम में लाये पट्टरानी बनाई अभय कुमार को प्रधान बनाया ॥ २ ॥ अन्यदा श्रेणिक राजाने सभा में पूछा की अभी सस्ता क्या है ? लोग बोले मांस अभय इस बात को ध्यान में रख कारोबार राजा भी

कि इन के मुख बिना खोले भोजन करो पानी पीयो 'सब कुमारों भूख प्यास से आकुल व्याकुल होने लगे तब श्रेणिक बोला घडों को रूमाल लपेट दो वे भींज उस नीचो कर पानी पीलो और करंडीयों को हलाने से पक्वान्न का चूरा हो छिद्रों में से गिरे उस खालो इस प्रकार सबने किया राजा सुन चुप रहा ॥२१॥ रत्न परीक्षा—यों हरेक परीक्षा में श्रेणिक कुमार का विजय देख सब भाइयों द्वेषी बने यह जान, श्रेणिक को चार रत्न दे देश पार जाने की आज्ञा दी आगे जाकर उन रत्नों के गुन उन के वर्ण व लक्षण से श्रेणिकने जाना कि–१ झगडा न होवे २ अग्नि शान्त होवे, ३ जलोपसर्ग टले, और ४ लाभ बहुत होवे ॥ २२ ॥ नंदा राणी की कथा—श्रेणिक कुमार आगे चोरपल्ली में आये, उनने चंदन की परीक्षा की चोर के अधिपतिने कन्या का पाणिग्रहण करने का कहा नीच जाति जान श्रेणिकने मान्य नहीं किया तब चोराधिपने श्रेणिक को वेणा नदी में डाल दिया श्रेणिक काष्टारूढ हो वेणा तटपुर आया ग्राम में घुसा सेठ की दुकान पर बैठा लखपती बनजारा को तेजमतुरी कहीं भी नहीं मिलने से यहां लेने आया सेठ की दुकान में कचरे में तेजमतुरी पडी थी वह श्रेणिकने बताइ वह बनजारने खरीद कर बहुमूल्य रत्न दिये कचरे में से यह अपूर्व लाभ हुवा देख सेठ खुशी हुवा श्रेणिक को पुण्यात्मा जान अपनी नंदा नाम की पुत्री का पाणिग्रहण कराया ॥ २३ ॥ अभय कुमार का कथा—श्रेणिक कुमार नंदा देवी के साथ सुखोपभोग भोगते २ सगर्भा हुई तीसरे महिने दोहला हुवा की अमरी पडह बजवावो श्रेणिक से इच्छा दर्शायी इतने में ग्राम में हाथी मदोन्मत्त बनकर नुकसान करने लगा श्रेणिकने हस्ति का मद उतार कर स्थम्भ

परीक्षा के लिये इक्षुरस के घड़े की कथा—अन्यदा राजाने १ ही पुत्रों को बोलाकर कहा कि ये निभराने में आये हुवे इक्षुरस के घड़े हैं तुम ले आओ राजाज्ञा प्रमाण कर कोइ दो हाथ से, कोई एक हाथ से, कोई अंगुलियों से यों घड़ उठा कर ले गये श्रेणिक कुमार नोकर के सिर पर घड़ा धरा के चला, राजाने पूछा क्या घड़ा उठाने की भी ताकत नहीं है ? कुमार बोला—हम हमाली काम में हमारी ताकात क्या देखत हो, हमारे हाथ में खड्ग दे शत्रु के सन्मुख भेजीये वहां ताकात बतावे राजा पुन चुप रहा ॥ १८ ॥ अन्यदा नाटक देखने सब कुमारों राज्य महेल में बैठे थे उस में अंगार लगवाकर राजाने हुकम दिया की इस महेल में से जो पदार्थ निकालेगा वह उस को ही दे दिया जायगा अन्य कुमारों वस्त्र भूषणादि लेकर निकले और श्रेणिक जिस के बजाने से रोग नष्ट होवे ऐसी भंभा ले बजाता हुवा निकला जिस से श्रेणिक का अपर नाम—भंभसार हवा राजा बोला—भंभा बजाओ और होरों पराओ श्रेणिक बोला—जो आज्ञा ॥ १९ ॥ अन्यदा सब राजपुत्रों को खीर का भोजन करने बैठाये उन पर पाले कुत्तों को छोड दिया अन्य सब कुमार भग गये श्रेणिक कुमारने सब भाईयों का भोजन पात्र अपने नजदीक ले सब कुत्तों को खिलाये और आप अपना भोजन कर सह ही पिता के पास आये राजा बोला—क्या कुत्ते सामिल भोजन किया कुमार बोला—जी कुत्तों को खिलावेंगे और अपना मतलब करेंगे ॥२०॥ बंध करंडीय में से पक्वान खाये अन्यदा राजाने पक्वान के करंड का और पान के नये घड़ों का मुख बन्ध कर एक कमरे में रखे और उस में कुमारों को बन्ध कर आज्ञा दी

तो तू मुझे क्या देगा ! ग्रामिक बोला कि-इस नगर के द्वार में नहीं आवे ऐसा लड्डू देऊंगा, तब धूर्तने सब ककडीयों में से थोडा २ टुकडा दांतों से तोड खाया और बोला मैं सब ककडीयों खागया ग्रामिक बोला, गाडीतो भरी हुई है तू कहां से खागया धूर्त बोला-ग्राहकों को आने देवो जो कहें यह सत्य ग्राहकों आये और सब ककडीयों को खण्डित देख २ बोले अरे यह तो सब ककडियों खाई हुई हैं धूर्त ग्रामिक से बोला सुनले भाइ ला दे मुझ अब द्वार में न आवे इतना बडा लड्डू ग्रामिक गुम होगया, धूर्त को रूपे दो रूपे यावत् सो रूपे देने लगा तो भी वह नहीं माने तब वहां एक विद्वान आया और ग्रामिक भद्रिक भावी जान उस की दया कर पूछने से उस के सब वृतांत से वाकेफ हो धूर्त से बोला बोल क्या चाहता है ? धूर्त बोला नगर द्वार में न आवे ऐसा लड्डू विद्वान बोला यह ले; यों कहकर एक छोटासा लड्डू द्वार के बाहिर रखा और कहा उस लड्डू का द्वार अन्दर बुलाव धूर्त बोला क्या बोलाते लड्डू आता है ! विद्वान बोला नहीं आता है तो तू उठाले यही द्वार में नहीं आवे ऐसा लड्डू है यों कर धूर्त को विदा किया ॥ १६ ॥ सत्तरवीं वृक्ष की कथा-किसी विद्वानने आम्र वृक्ष फल को देख खाने की इच्छा हुई परन्तु वृक्ष ऊंचा होने से ग्रहण करसका नहीं तब वृक्ष के ऊपर बन्दरों को देख उन को पथर मारे, बन्दरो क्रोधित हो वृक्ष पर पत्थर का अभाव होने से आम्र के फलों तोड २ उसे मारने लगे उसने वे फलों ग्रहण कर इच्छा पूर्ण की ॥ १७ ॥ अब श्रेणिक कुमार की कथाओं कहते हैं ॥ मगध देश की राजग्रही नगरी के प्रसेनजित राजा के १०० पुत्र में से राज्य योग्य कौन है, उस की

शरमिन्दा हुआ और पूछा क्या निश्चय किया ? रोहा स्वामीजी ! आप पांच पिता के पुत्र हो राजा सुन भती ही लज्जित हुआ और फिर पछने लगा कि कौन २ से पांच पिता ? रोहा १ वैश्रमण देव प्रथम पिता, क्यों कि आप दानेश्वरी हो, २ चंडाल दूसरा पिता, क्यों कि वध को भी क्या प्रकार लगाया तथा वैरीयों के घातिक हो ३ धोबी (भ.धी) तीसरा पिता क्यों कि वस्त्र प्रकार से मुझे लगाया, तथा मनाचारीयों का वस्त्र ले आकर निचोनवाले ४ विच्छू चौथा पिता, क्यों कि विच्छू के जैसा चिमटा भर कर मुझे लगाया तथा चोर जार को दंडित करनेवाले और राजा पांचवा पिता यह सुन राजा तत्काल अपनी माता के पास आकर एकान्त में पूछने लगा कि-सच कह मेरे पिता कितने है ! माता लज्जित हो बोली-पुत्र ! यह क्या प्रश्न ? राजाने रोहा की हकीकत कह सुनाई और कहने लगा उस का कथन किसी भी प्रकार मिथ्या नहीं हो सकता है इस लिये जैसा हो वैसा सच कहे माता भी आश्चर्य चकित हो बोली—पुत्र ! जब तू गर्भावास में था तब मैं वैश्रमन देव की पूजा करने गई थी उन की मूर्ती का मनोहर रूप देख काम व्यापित हुई उसे ही रास्ते में सुरूप धोबी और चंडाल को देख कर भी काम व्यापित हुई थी, और भवन घर में एक सुवर्ण का विच्छू था उस का भी मैं बारम्बार स्पर्श करती थी इस प्रकार सुन राजा रोहा की बुद्धि से आनन्दाश्चर्य बना और ४९९ प्रधान के ऊपर उसे स्थापन किया यह १९ कथा तो रोहा की कही ॥८॥ सोलवी ककडी की कथा—कोइ ग्रामिक ककडी की गाडी भर शहर में बेचन आया उस वक्त एक धूर्त मिला और कहने लगा यह गाडे में भरी सब ककडीयों मैं खाजाऊं

सोता है कि जागता ? रोहा बोला स्वामिन् ! मैं जागता हूं राजा तुझे बोलाया तो तूं बोला क्यों नहीं ? रोहा—स्वामिन् ! मैं विचार में था राजा—क्या विचार करता था ? रोहा बकरी के पेट में मेंगनी कौन बनाता है राजा को इस का उत्तर नहीं आनेसे पूछने लगा कहो रोहा ! कौन बनाता है ? रोहा-जी स्वामिन् ! बकरी के पेट में महल्ल वायु है जिस से मेंगनी गोलाकार हो बाहिर गिरती है राजा सुन खुश हुआ और सोगया ॥१२॥ मेखी पत्ते की कथा—दूसरे प्रहर में राजा जाग्रत हो रोहा को नींद में देख उक्त प्रकार ही बोला रोहा बोला मैं विचार में था कि पीपल का डंठ बडा है कि नोख-परमान्त बडा है ? राजा बोला रोहा क्या निर्णय किया ? रोहा बोला स्वामिन् ! दोनों ही बराबर होते हैं राजा सुखी हो सोगया ॥ १३ ॥ चौदवी सही (गिलोरी) की कथा—राजान तीसरे प्रहर जाग्रत हो रोहा को बोलाया रोहा बोला—जागता हूं परंतु विचार में था कि—गिलेरी बडी की गिलोरी की पूंछ बडी ? राजा फिर क्या निर्णय हुवा ? स्वामीजी ! शरीर और पूंछ दोनों ही बराबर हैं ॥ १४ ॥ पन्दरवी पांच पिता की कथा—चौथे प्रहर दिनसोदय होते राजा जाग्रत हो रोहा का घोर निद्रा में सूता देख राजा मगल पढता मुन दान देकर पीछा आया रोहा को जगाने बस प्रहार किया तो भी जगा नहीं, तब सता प्रहार किया तो भी रोहा जगा नहीं तब चीमठा भर कर जगाया, तब रोहा जगा राजा—रोहा ! सूता था कि जाग्रत ? रोहा ! स्वामीजी जाग्रत था फिर बोला क्यों नहीं ? स्वामीजी मैं विचार में था कि राजा साहेब कितने पिता के पुत्र हैं ? राजा सुन

हुवे रोहा की सुधापदी करने लगे तब रोहा बोला-चांवलों पानी में भींजोकर गरम किये हुवे दूध में डालो फिर चूनेपर पानी छांट कर उस भाजन को रखो जिस से वह गरम हो जायगा खीर पक जायगा उन्होंने वैसा ही किया राजा रोहा की बुद्धि से चकित हुआ ॥ १ ॥ इग्यारवी ज्ञान की कथा—यों सर्व प्रकार से राजाने रोहा को बुद्धिनिधान जान कर अपने पास बुलाने हुकम भेजा कि-रोहा को मेरे पास कृष्ण पक्ष में भी नहीं आना शुक्ल पक्ष में भी नहीं आना रात को भी नहीं आना, दिन को भी नहीं आना धूप में भी नहीं आना छांह में भी नहीं आना वाहनपर चढकर भी नहीं आना पैदल भी नहीं आना, रास्ते से भी नहीं आना, उबट भी नहीं आना खाली हाथ भी नहीं आना भरे हाथ भी नहीं आना परंतु आना जरूर ही यह राजा की आज्ञा सुनकर भरत नटवा घबराया तब रोहा बोला-जिस प्रकार राजा मुझे बोलाता है वैसे ही मैं जाऊंगा पूर्णिमा प्रतिपदा के मध्य की तिथि को सन्ध्या कृष्ण पक्ष पक्क, चलनी का सिर पर छत्रकर बकरे पर आरुढ हो गाडी के रास्ते के दोनों पीछे के बीच के रास्ते हो हाथ में मट्टी का ढेला ले राजा सभा को जा नमनकर मट्टी का ढेलेका निजराना किया राजा बोला यह क्या ? रोहा बोला पृथ्वीनाथ ! पृथ्वी आप का भेट है राजा सोचे भरे खाली हाथ आने का कहा था रोहा चालाकी से फेंक दी मट्टी के ढेलेका यह देख राजा आनन्दाश्चर्यमें गर्क हो रोहेको अपने पास रक्खा ॥ ११ ॥ बकरी की मेंडी की कथा—अन्यदा रोहे का अपना पलग का पहरा देने बैठा राजा सो गये प्रहर रात्रि गये उठकर देखें तो रोहा नींद में है राजा बोला रोहा'

नजदीक में आया ऐसे हाथी को भरत नट के पास भेजकर कहलाया कि इस के घास पानी खाने के समाचार सदैव भेजते रहना परन्तु मर गया ऐसे समाचार नहीं भेजना लोगों घबराये रात को हाथी मरगया तब रोहा बोला जाओ राजा से कहो कि-हाथी उठता बैठता नहीं है खाता पीता नहीं है किंबहुना श्वासोच्छ्वास भी लेता नहीं है इन सिवाय और कुछ भी नहीं चालना लोगों वैसाही राजा से बोले, राजा न पूछा क्या हाथी मरगया लोगों बोले हमतो नहीं कहते सुन राजा खुश हुआ ॥ ७ ॥ आठवी कूवे की कथा—अन्यदा राजा ने समाचार कहलाये कि तुमारे ग्राम के कूवे का पानी हलका और मीठा है उस कूप को मेरे लिये यहां भेजदो लोगों विस्मित हुवे रोहा को पूछा तब रोहा बोला जाओ राजा से कहो ग्राम के मनुष्य पशू सब डरकन होते है वैसा कूप भी डरकन है लाते है परंतु मरक २ कर भग जाता है इसलिये आप के शहर के भेंपेतश दो कूप को भेज दो उन के गले को बांधकर हमारे ग्राम के कूप को भेज देंगे लोगोंन वैसा ही राजा से कहा राजाने रोहे को बुद्धिमान जाना ॥ ८ ॥ नवमी वनखण्ड की कथा—अन्यदा राजाने हुक्म दिया की तुमारे ग्राम से श्रीवन बाग पूर्व में है उसे उठाकर पश्चिम में रख दो लोगों सुन आश्चर्य चकित हुवे, रोहा से पूछा रोहा बोला वन से पूर्व दिशा में झोंपडे बना कर वहां रहो जिस से पश्चिम में बाग हो जावेगा लोगोंने वैसा ही किया, राजा रोहा की बुद्धि जान खुशी हुवा ॥ ९ ॥ दशवी खीर की कथा—अन्यदा राजाने हुकम दिया कि अग्नि बिना खीर बनाकर भेजो, सुनकर लोगों चिन्तातुर

जिसका कारण पूछनेसे रोहा की बुद्धि माळूम पड़ी ॥ ३ ॥ चौथी कूकड़ (मुर्गे) की कथा—अन्यदा राजाने कुकड़ को भरत नट के पास भेज कर कहलाया कि—दूसरे कूकड़ बिना इस को लड़ावो सब चिन्तातुर हुवे तब रोहेने कहा इस कुकेंट सामे एक बड़ा आरीसा रखो, यह उस में दूसरा कूकड़ देख आपही क्रोध के साथ लडेगा लोगोंने वैसा ही किया राजा के सन्मुख अचरज मुर्गा लड़ाया राजाने आश्चर्य पाकर पूछा यह किसने बताया लोगोंने रोहाका नाम बताया ॥ ४ ॥ पांचवा तिलकी कथा-राजाने तिलके गाडे भरे हुवे भरत नट के पास भेजकर कहलाया कि इन तिलों को किसी भी माप से लो परन्तु उलटे माप से लेना और सुलटे से पीछे दना सब जने सुन विस्मित हुवे अब रोहे की खुशामदी करने लगे तब रोहेने कहा आरीसे के माप से लेवो देवो वैसाही किया आरीसे से माप कर लिये और सुलटे से माप कर दिय पीछे वे तिल राजा पास ले गये राजाने पीछे तिल देख पूछा राजपुरुषोंने रोहे की बुद्धि कह बताई ॥ ५ ॥ छठा रेतू डोरी की कथा—राजाने भरत नटके पर हुक्म भेजा कि तुमारे ग्राम के बाहर की नदीभी रती बहुत सुलक्षण है उस की डोरीयों बनाके भेज दो सब लोगों सुन चिन्तातुर हुवे कि रेती का डोरीयों भी कभी बनी है? न मालुम राजा क्यों पीछे पड़ा है! रोहे को पूछने से रोहा बोला कि-राजा के पास जा अर्ज करो आप का राज्य भंडार प्राचीन है उस में कोइ रेतीका रस्सा हो वह नमून के लिये दीजीये वैसे ही हम बनादेंगे लोगों ने राजा से अर्ज की राजासुन बहुमिन्दा हुवा ॥ ६ ॥ सातवी हस्तिकी कथा—मृत्यु के

कोई नहीं है इसलिये रोहे की परीक्षा कर जो योग्य लगे तो सब प्रधानों में मुखिया बना दूं यों
विचार परीक्षा निमित्त-नट ग्राम के बाहिर एक बहुत बडा पृथ्वी सिला पट था वहां मंडप बनाकर
उसपर यह सिला स्थापन करो, ऐसा हुकम नटग्राम के भरत नट के पास भेजा भरत नटादि बहुत लोगों
सभा कर विचार में पडे कि इतनी बडी सिला का भार मंडप किस प्रकार सहसके और यह मंडप पर
किस प्रकार चढाइ जावे ! भोजन वक्त होने पर भी पिता घर नहीं आये तब रोहा क्षुधातुर हो पिता
पास आकर बोला-मुझे भूख लगी है शीघ्र चलो पिता बोला-तुझे भोजन की पडी है और हमतो
हमारी जान की पडी है रोहा बोला ऐसा क्या बडा दुःख है ! पिताने सब राजाज्ञा सुनाई रोहा
बोला यह तो सहज है सिला नीचे खड्डा खोद स्थंभ वगैरा नीचे लगा मंडप बनालो यह कथन सब
के पसंद पडा वैसे ही मंडप तैयार कर राजाज्ञा पीछी सुपरत की राजाने पूछा यहां कला किसने
बताइ ! लोगों ने रोहे का नाम लिया ॥ २ ॥ तीसरी मेंष (मींढे) की कथा-परीक्षा निमित्त राजाने
एक मेंष को तोलकर भरत नटके के पास भेजा और कहलाया कि मैं जब मंगाऊं तब इतना ही भार वाला यह हुवा
चाहिये बकरे को देख भरतनटादि सब विस्मित हुवे जो खिलावें तो वजन बढे और नहीं खिलावे तो
वजन घटे. अब क्या करें ! इतने में वो रोहा क्षुधातुर हो आया उस के पिताने उसे राजाज्ञा सुनाइ
रोहा बोला—इसे खूब खिला पिलाकर सिंह के पिंजर के पास बांधरक्खो जिस के भय से यह वजन
बढेगा नहीं यह बात लोगों को पसंद आई वैसा ही किया, राजाने मेंढा मंगाया तोला तो बराबर

निकलना कारण पूछनेसे रोहा की बुद्धि मालुम पड़ी ॥ ३ ॥ चौथी कूकड़े (मुर्गे) की कथा-अन्यदा राजाने कुक्कट को भरत नट के पास भेज कर कहलाया कि—दूसरे कूकड़े बिना इस को लड़ावो। सब चिन्तातुर हुये तब रोहेने कहा इस कुर्कट सामे एक बड़ा आरीसा रखो, वह उस में दूसरा कूकड़ा देख आपही काच के साथ लड़ेगा लोगोंन वैसा ही किया राजा के सन्मुख कायरा हुआ लड़ाया राजाने आश्चर्य पाकर पूछा यह किसने बताया। लोगोंने रोहाका नाम बताया ॥ ४ ॥ पांचवा तिलकी कथा-राजाने तिलके गाड़े भरे हुए भरत नट के पास भेजकर कहलाया कि इन तिलो को किसी भी माप से लो परन्तु उलटे माप से लेना और मुलट से पीछे देना सब जने सुन विस्मित हुये अब रोहे की खुशामदी करने लगे तब रोहेने कहा आरीसे के माप से लेवो देवो वैसाही किया आरीसे स माप कर लिये और मुलटे से माप कर दिये पीछे वे तिल राजा पास ले गये राजाने थोड़े तिल देख पूछा राजपुरुषोंन रोहे की बुद्धि का बताई ॥ ५ ॥ छट्ठा वेलू डोरी की कथा—राजाने भरत नटन पर हुक्म भेजा कि तुमारे ग्राम क बाहर की नदीकी रेती बहुत मुलायम है उस की डोरीयों बनाके भेज दो सब लोगों सुन चिन्तातुर हुए कि रेती की डोरीयों भी कभी बनी है? न मालुम राजा क्यों पीछे पड़ा है! रोहे का पूछने स रोहा बोला कि-राजा के पास जा अर्ज करो आप का राज्य भंडार प्राचीन है उस में कोई रेतीका रस्सा हो वह नमूने के लिये दीजीये वैसे ही हम बनादेंगे लोगों ने राजा से अर्ज की राजाजुन शर्मिन्दा हुआ ॥ ६ ॥ सातवी हस्तिकी कथा—मृत्यु के

करी है ? भरत नटुवा के रोहा पुत्र की-मालव देश की उज्जेनी नगरी के बहार,उसके बाहिर नजदीक में एक नट ग्राम था, उस का पटधारी भरत नटूए की परासरी स्त्री की कूक्षी से उत्पन्न हुवा रोहा नामक कुमार था अन्यदा परासिरी मृत्यु पाने से भरत ने दूसरी स्त्री से पानी ग्रहण किया वह स्त्री रोहा के साथ द्वेष बुद्धि रखने लगी तब रोहा बोला कि—हे अम्मा ! जो तू मेरा भला चाहाव तो मेरे को खुशी रख स्त्री बोली-तू मेरा क्या करेगा ? रोहा बोला—तू मेरे पांवों में पडेगी वैसा मैं करूंगा स्त्री बालक जान मुह मचकोड चुप रही अन्यदा ऊष्ण ऋतु में रोहा अपने पिता की साथ घर के बाहिर खाट पर सुवा था स्त्री घर में सुती थी तब कुछ रात्रि गये बाद एकदम रोहा उठा और पुकार कर कहने लगा—उठो पिताजी ! घर में से निकल कर कोई पुरुष जा रहा है भरतने तत्काल उठ कर पूछा रे रोहा ! कहां है वह पुरुष ? रोहा बोला कि अभी ही भग गया पिताने उसे मांत्रिक जान उस के वचन सत्य माने स्त्री को व्यभिचारीणी जान उस से बोलना छोड दिया स्त्री घबराने लगी और रोहा का वचन स्मरण कर रोहा के पांव में पड कहने लगी अब मैं तेरे हुकम में चलूंगी रोहा बोला ठीक ! आज रात को मेरा पिता तेरे से बोलेगा पूर्वोक्त प्रमाने पिता पुत्र घर बाहिर और स्त्री घर में सूती थी तब रोहा उठ पुकारने लगा उठो २ पिताजी ! घर में से पुरुष जाता है,भरत तत्काल उठ पूछा अरे कहां है पुरुष ? रोहाने अपने शरीर की छाया जो चान्द की चान्दनी में पड रही थी वह बताई कि पकडो २ यह पुरुष है पिता शरमिंदा हुवा कि बिना काम बचे के बोले लग स्त्री को सताई,

तत्काल ही से बोला यह अत्पात बुद्धि रोहा की जानना जब रोहे के मन में सशय हुआ कि इसे माता मुझे भहरादि प्रयोग से मार डाले इस विचार से अपने पिता के साथ ही भोजन करने लगा और सदैव पिता की साथ ही रहने लगा अन्यदा भरत नटवा उज्जैनी को गया था उस के साथ रोहा भी गया और भरत काम में लगा उतने में रोहा उज्जैनी के मुख्य २ स्थान देख कर पीछा आया पिता के साथ घर को जाते सिपरा नदी तक आया और भरत को किसी काम का स्मरण होने से वह रोहे को सिपरा नदी में बैठा कर पीछा उज्जनी में गया पीछे से रोहान सिपरा नदी की रेती में उज्जैनी नगरी का चित्र खिंचा, उतने में ही घडी सवारी से मालवाधिपति भोज राजा का आगम हो गया रोहा राजा के घोडे को अपने आलेखित चित्र पर आता देख चिल्ला कर कहने लगा—इस राज्य कुल में प्रवेश होने का राजाजी का हुकम नहीं है दूर से जावो यह सुन राजा रोहे के पास आ बोला—कहा है राज्यकुल ? रोहाने आलेखित चित्र बताया राजा नगरी की बराबर चित्र देख बच की बुद्धि से आश्चर्य चकित हो बोला—बच्चे ' तेरा नाम क्या है ? तू किस का पुत्र है ? कहां रहता है ? रोहा बोला—अहो राजाजी ! मैं नट ग्राम का भरत नट का पुत्र रोहा हूं राजा उस की बुद्धि से चकित हो स्वस्थान गया रोहा भी अपने पिता के साथ अपन घर आ सुख से रहने लगा ॥ १ ॥ दूसरी सिला की कथा—अन्यदा भोज राजा को विचार हुआ कि—रोहा बचपने में ही ऐसा बुद्धीपात्र है तो आगे तो विशेष होगा मेरे ४९९ प्रधान में एसा महाबील

कही है ? भरत नटुवा के रोहा पुत्र की-मालव देश की उज्जेनी नगरी के नजी-रखने बाहिर नजदीक में एक नट ग्राम था, उस का पटवारी भरत नटूए की परासरी स्त्री की कूखी से उत्पन्न हुवा रोहा नामक कुमार था अन्यदा परासिरी मृत्यु पाने से भरत ने दूसरी स्त्री से पानी ग्रहण किया वह स्त्री रोहा के साथ द्वेष बुद्धि रखने लगी तब रोहा बोला कि—हे अम्मा ! जो तू तेरा भला चाहाव तो मेरे को खुशी रख स्त्री बोली-तू मेरा क्या करेगा ? रोहा बोला—तू मेरे पांवों में पडेगी वैसा मैं करूंगा स्त्री बालक जान मुह मचकोड चुप रही अन्यदा ऊष्ण ऋतु में रोहा अपने पिता की साथ घर के बाहिर खाट पर सुता था स्त्री घर में सुती थी तब कुछ रात्रि गये बाद एकदम रोहा उठा और पुकार कर कहने लगा—उठो पिताजी ! घर में से निकल कर कोई पुरुष जा रहा है भरतने तत्काल उठ कर पूछा रे रोहा ! कहां है वह पुरुष ? रोहा बोला कि अभी ही भग गया पिताने उसे भद्रिक जान उस के वचन सत्य माने स्त्री का व्यभिचारीणी जान उस से बोलना छोड दिया स्त्री घबराने लगी और रोहा का वचन स्मरण कर रोहा के पांव में पड कहने लगी अब मैं तेरे हुकम में चलूंगी रोहा बोला ठीक ! आज रात को मेरा पिता तेरे से बोलेगा पूर्वोक्त प्रमाने पिता पुत्र घर बाहिर और स्त्री घर में सूती थी तब रोहा उठ पुकारने लगा उठो २ पिताजी ! घर में से पुरुष जाता है, भरत तत्काल उठ पूछा अरे कहां है पुरुष ! रोहाने अपने शरीर की छाया जो चान्द की चान्दनी में पड रही थी वह बताई कि पकडो २ यह पुरुष है पिता शरमिंदा हुवा कि विना काम मेरे के पाछे लग स्त्री को सताई,

असुप निस्सियच ॥ से किं त असुयानिस्सिय ? असुय निस्सिय चउव्विहं पण्णत्त तंजहा—(गाहा) उप्पत्तिया वेणइया, कम्मया, पारिणामिया बुद्धि चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवलब्भइ ॥ १ ॥ ॥ २२ ॥ पुव्व मादिट्ठ मसुय मवइअतक्खण विसुद्ध गहि अत्था अव्वाहय फल जोगा बुद्धिओप्पत्तिया नाम ॥२॥ भरह, सिल,पणिय रुक्खे

निश्चित सो सूत्रार्थ के ग्रहण पूर्वक होवे और २ अश्रुत निश्चित सो—सूत्रार्थ के ग्रहण बिना होवे अहो भगवन् ! सूत्रार्थ के ग्रहण बिना मति ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! सूत्रार्थ के ग्रहण बिना मति ज्ञान के चार भेद कहे है तद्यथा—१ उत्पातिकी बुद्धि जो पदार्थ पहिले कभी कानकर सुना नहीं आंखों कर देखा नहीं उसे अपनी स्वतः की मति-बुद्धि कर जाने उसे उत्पातिकी बुद्धि कहना २ गुरु आदि श्रेष्ठ जनों का वयोवृद्ध गुणोवृद्ध का विनय करने से होवे वह वैनयिक बुद्धि ३ हरेक काम करते २ उस में सभाग होता जावे वह कार्मिकी बुद्धि और ४ ज्यों ज्यों वय (उम्मर) प्रणमती जाव त्यों त्यों बुद्धि प्रणमती जावे वह प्रणामिक बुद्धि यह चार प्रकार की बुद्धि तीर्थंकर भगवंतने कही है इन सिवाय बुद्धि का पांचवा प्रकार नहीं मानना ॥ १ ॥ २२ ॥ अब प्रथम उत्पातिया बुद्धि का पहिले कभी शास्त्र सुनी देखी नहीं उसे स्वतःका मति कर मानी जाय, उस का विशुद्ध निर्मल यथा वांछित अर्थ ग्रहण कर सके, तत्काल उत्तर दे (हाजर जवाबी होवे) उस के उत्तर की कोइ प्रतिघात नहीं कर सके इस प्रकार मति की कही धारक उत्पातिक बुद्धिवाला होता है ॥ २ ॥ प्रथम उत्पातिक बुद्धि पर ५२ कथाओं

आभिणिबोहियनाण मुणेइति, सुय मइपुव्व जेण सुय नमइसुय पुव्विया अविसेसियामई मइनाणच मइ अण्णाणच विसेसिया—सम्मादिट्ठीस्स मइ मइनाणच मिच्छादिट्ठीस्स मइ मइ अण्णाण च एव अविसेसिय ॥ सुय णाण च सुय अण्णाणच विसेसिय सुय सम्मदिट्ठिस्स सुय सुयनाण, मिच्छदिट्ठिस्स सुय सुयअन्नाण ॥ २१ ॥ स किं त आभिणिबोहियनाण ? आभिणिबोहियनाण दुविह पण्णत्त तजहा—सुय निस्सयच

मति विना श्रुति शुद्ध परिणमता नहीं है, अर्थात् आचारांगादि सूत्र सम्यक् मतिवाले को सम्यक् हो परिणमते हैं और मिथ्या मति को मिथ्या रूप हो परिणमते हैं, इस लिये ही "श्रुत मतिपूर्वक" अर्थात् श्रुत ज्ञान मति ज्ञान पूर्वक कहा है श्रुत ज्ञानाभ्यास करता है परन्तु मति की प्रेरणा उस में नहीं है वो यह द्रव्य श्रुत कहा जाता है और मति की प्रेरना होने से भाव श्रुत कहा जाता है विशेष रहित धर्म की वस्तु का आदि अनुमान मति से ही होता है मति ज्ञान और मति अज्ञान में विशेष इतना ही है कि— सम्यक् दृष्टी की जो मति है उसे मति ज्ञान कहते हैं और मिथ्या दृष्टी की मति है उसे मति अज्ञान कहते हैं और यही विशेषता श्रुति ज्ञान श्रुति अज्ञान का जानना अर्थात् सम्यक् दृष्टी के श्रुत को श्रुत ज्ञान कहते हैं और मिथ्या दृष्टी के श्रुत को मति अज्ञान कहते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! आभिनिबोधिक ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रुत

असुय निस्सियश्च ॥ से किं त असुयानिस्सिय ? असुय निस्सिय चउव्विहं पण्णत्त तजहा—(गाहा) उप्पत्तिया वेणइया, कम्मया, पारिणामिया बुद्धि चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवलब्भइ ॥ १ ॥ ॥ २२ ॥ पुव्व मदिट्ठ मसुय मवइअतक्खण विसुद्ध गाहि अव्वा अव्वाहय फल जोगा बुद्धिओप्पत्तिया नाम ॥२॥ भरह, सिल,पणिय रुक्खे

निश्रित सो शुश्रार्थ के ग्रहण पूर्वक होवे भार २ अश्रुत निश्रित सो—शुश्रार्थ के ग्रहण बिना होवे अहो भगवन् ! शुश्रार्थ के ग्रहण बिना मति ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! शुश्राय के ग्रहण बिना मति ज्ञान के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ उत्पातिकी बुद्धि जो पदार्थ पहिले कभी कानकर सुना नहीं आंखों कर देखा नहीं उसे अपनी स्वतः की मति-बुद्धि कर जाने उसे उत्पातिकी बुद्धि कहना २ गुरु आदि वृद्ध जनों का वयोवृद्ध गुणोवृद्ध का विनय करने से होवे वह वैनयिक बुद्धि, ३ हरेक काम करते २ उस में अभ्यास होता जावे वह कार्मिकी बुद्धि और ४ ज्यों ज्यों वय (उम्मर) अधिकती जावे त्यों त्यों बुद्धि अधिकती जावे वह प्रणामिक बुद्धि यह चार प्रकार की बुद्धि तीर्थंकर भगवन्तने कही है इन सिवाय बुद्धि का पांचवा प्रकार नहीं मानना ॥ १ ॥ २२ ॥ अब प्रथम उत्पातिया बुद्धि जो पहिले कभी वस्तु सुनी देखी नहीं उसे स्वतः का मति कर मानी जाय उस का विशुद्ध निर्मल यथा उचित अर्थ ग्रहण कर सके, तत्काल उत्तर दे (हाजर जवाबी होवे) उस के उत्तर को कोइ प्रतिघात नहीं कर सके इस प्रकार मति की वृद्धि धारक उत्पातिक बुद्धिवाला होता है ॥ २ ॥ प्रथम उत्पातिक बुद्धि पर ५२ कथाओं

तत्थ दव्वाओण केवलनाणी सव्वाइं दव्वाइं जाणइ पासइ, खेत्तओण केवलनाणी सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ कालओण केवलनाणी सव्वकालं जाणइ पासइ, भावओण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ (गाथा) अह सव्व दव्व परिणाम, भाव विण्णत्ति कारण मणंत, सासय मप्पडिवाइं, एगविहं केवलनाणं ॥ १ ॥ केवलनाणेण अत्थेनाउं जे

क्षेत्र से ३ काल से, और ४ भाव से उस में-१ द्रव्य से तो केवलज्ञानी रूपी अरूपी सूक्ष्म बादर सब जाने देखे, २ क्षेत्र से केवल ज्ञानी सब क्षेत्र जाने देखे, ३ काल से केवल ज्ञानी अतीत अनागत सब काल की बात जाने देखे, और ४ भाव से केवलज्ञानी वर्ण गंध रस स्पर्शादि सब भाव जाने देखे अब केवल ज्ञानी सब धर्मास्ति आदि षट्द्रव्य जिनका गति आदि परिणाम, अरूपी रूपी आदिक भाव, उत्पातादि अनंत भेद के जानने वाले होते हैं केवल ज्ञान अपडिवाइ होता है अर्थात् आया हुवा पीछा जाता नहीं है, तैसे ही केवल ज्ञान एक ही स्वरूपी होता है उस के स्वभाव में हानी वृद्धि आदि किसी भी प्रकार पलटा होता नहीं है ॥ १ ॥ केवल ज्ञानीने केवल ज्ञान में अनंत भाव जाने हैं वे सब ही प्ररूपन कर सकते नहीं हैं परंतु उस में से जो २ परभावस्थकीय प्ररूपने योग्य होते हैं वे ही भाव जानने के अनंतवे भाग जितने प्ररूपन करते हैं, और तीर्थंकर जितने भाव प्ररूपन करते हैं उन के अनंतवे भाग भाव गणधर महाराज धारण करते हैं, इस लिये भावना सूत्र कहे जाते हैं, तीर्थंकर जो वचन योग की प्रेरना करते हैं वे

तत्थ पण्णघणजुगो ॥ ते भासइ तित्थयरो, वइजोग सुय हवइ सेसं ॥ २ ॥ से सं केवलनाणं ॥ से त पच्चक्खनाण ॥ २० ॥ स किं त परुक्खनाणं ? परुक्खनाणं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—आभिणिबोहियनाण परोक्खंच सुयनाणं परोक्खं च जत्था भिणिबोहियनाण तत्थ सुयनाणं जत्थ सुयणाणं तत्थाभिणिबोहियनाणं दोवि एयाइं अण्णमणुमणुगयाइं तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पण्णवयंति अभिनिबुज्झइत्ति

गणधरों को सूत्र रूप हो परिणमते हैं जो वचन योग की प्रेरणा से होता है वही श्रुत ज्ञान कहा जाता है, वही श्रुत ज्ञान सब जीवों के लिये परमोपकार कर्त्ता होता है यह केवल ज्ञान के भेद पूरे और यह प्रत्यक्ष ज्ञान के भेदानुभेद सम्पूर्ण हुवे ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! परोक्ष ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! परोक्ष ज्ञान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—आभिनि बोधक ज्ञान अर्थात् जो पदार्थ एक सन्मुख होकर वस्तु का आत्मा को अवबोध करे जिस से वस्तु का स्वरूप आत्मा का इष्ट हो जानने में आवे इस का दूसरा नाम मति ज्ञान भी है और २ श्रुति ज्ञान जो सुनने से तथा परिणमन से होता है फिर मति ज्ञान के उपयोग से सर्व द्रव्यापणे परिणमता है मति ज्ञान और श्रुति ज्ञान का जोड़ा है दोनों साथ ही होते हैं अर्थात् जहां मति ज्ञान होता है वहां श्रुत ज्ञान निश्चय होता है और जहां श्रुति ज्ञान होता है वहां मति ज्ञान भी निश्चय से होता है जो मति अच्छी होवे तो ही श्रुत रूप हो परिणमता है परन्तु

अणंत सिद्ध केवलणाण पन्नरसविह पण्णत्त तंजहा—तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा,
तित्थयरसिद्धा, अतित्थयर सिद्धा, सय बुद्ध सिद्धा, पत्तेय बुद्ध सिद्धा बुद्ध बोधित
सिद्धा,इत्थिलिंग सिद्धा,पुरिसलिंग सिद्धा,नपुसकलिंग सिद्धा नालिंग सिद्धा अण्णलिंग
सिद्धा,गिहिलिंग सिद्धा, एग सिद्धा, अणेग सिद्धा, से त अणतर सिद्ध केवलणाण॥
से किं त परपरा सिद्धा केवलणाण ? परपरा सिद्ध केवलणाण अणेगविहे पण्णत्त

४ प्रत्येक बुद्ध वृषभ आदि देख प्रतिबोध पा अनित्य भावनादि भाव हो संयम ले मोक्ष जावे वे प्रत्येक बुद्ध सिद्ध ७ आचार्यादि के उपदेश से संयम ले सिद्ध होवे वे बुद्ध बोधित सिद्ध ८ स्त्री का वेद क्षय करे फक्त लिंग (चिन्ह) मात्र रहे वे सिद्ध होवे सो स्त्रीलिंग सिद्ध ९ ऐसे ही पुरुष बोध पाकर या वेदक्षय करे फक्त लिंग (चिन्ह) मात्र रहे सिद्ध होवे पुरुष लिंग सिद्ध १० जन्म वेद [विकार] का क्षय कर फक्त शरीर का चिन्ह मात्र रहे सिद्ध होवे पुरुष लिंग सिद्ध नपुंसक सो सिद्ध होता नहीं है परंतु कृत्रिम नपुंसक जिस का लिंग मर्दन छेदनादि कर नपुंसक बनाया हो वह वेद का क्षयकर फक्त लिंग मात्र से सिद्ध होवे वह नपुंसक लिंग सिद्ध ११ स्वलिंग रजोहरण मुखपति आदि जैन साधु के लिंग से सिद्ध होवे वह स्वलिंग सिद्ध १२ अन्य परिव्राजकादिक के लिंग

ज्ञान तथा सामर्थ्यता न हो तो गच्छ में भी रहे, परंतु प्रत्येक बुद्धको तो निश्चय देवता ही लिंग (भेष) अर्पन करते हैं
और वे एकले ही विचरते हैं

तंजहा—अपढम समय सिद्धा दुसमय सिद्धा, ति समय सिद्धा, चउ समय सिद्धा जाव दस समय सिद्धा संखिज्ज समय सिद्धा, असंखिज्ज समय सिद्धा, अणत समय सिद्धा से त परपर सिद्ध केवलणाण ॥ से त सिद्ध केवलणाण ॥ १९ ॥

त समासओ चउव्विहं पण्णत्त तजहा—दव्वाओ, खेत्ताओ, कालाओ, भावाओ, ॥

में करणी करते विभग ज्ञान उत्पन्न होने से जैन मत की क्रिया देख अनुमोदते अवधि ज्ञानी बन परिणाम चढते क्षपकश्रेणी कर केवल ज्ञान प्राप्त करे परन्तु लिंग बदलने का अवकाश न होने से आयुष्य पूर्ण कर मोक्ष जावे यह अन्य लिंग सिद्ध १३ गृहस्थ के लिंगमें भाव चारित्र प्राप्त कर कर्मक्षय कर मोक्ष जावे वह गृहस्थ लिंग सिद्ध १४ एक समय में एक सिद्ध हुवे सो एक सिद्ध और १५ एक समय में दोआदि १०८ पर्यंत सिद्ध होवे वे अनेक सिद्ध यह अनंतर सिद्ध के भेद हुवे॥ अहो भगवन् ! परम्परा सिद्ध किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! परम्परा सिद्ध केवल ज्ञानी के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-अप्रथम समय के सिद्ध जिन को सिद्ध हुए एक समय हुवा उन को छोडकर बाकी सब सिद्ध, दो समय सिद्ध हुवे सो दो समय सिद्ध ऐसे ही तीन समय के, चार समय के, पांच समय के यावत् दश समय के सिद्ध हुवे वे दश समय सिद्ध. जिन्हें सिद्ध हुवे संख्यात समय हुवे वे संख्यात समय सिद्ध, असंख्यात समय हुवे वे असंख्यात समय सिद्ध और अनंत समय हुवे वे अनंत समय सिद्ध यह परम्परा सिद्ध केवलज्ञानी के भेद हुवे ॥ १९ ॥ इन सिद्ध केवलज्ञानी का समास संक्षेप चार प्रकार का कहा है तद्यथा १ द्रव्य से २

ऋषभसेनादि तथा महावीर स्वामीजी, गणधर गोतमादि इत्यादि वे तीर्थ सिद्ध २ तीर्थंकर मोक्ष गये बाद उनका तीर्थ व्यच्छेद हुवा और नये तीर्थंकर के तीर्थकी प्रवर्ती हुवे पहिले मध्यमें सिद्ध होवे जैसे इस काल में नव में से सतरवे तीर्थंकर मोक्ष गये उनके मध्य २ में तीर्थका व्यवच्छेद हुवा तब जाति स्मरणादि ज्ञानकर चारित्र धर्म आदरकर मोक्ष गये वे तथा तीर्थंकर प्रवर्ती हुवे पहिले मरुदेवी माता मोक्ष गई वह अतीर्थ सिद्धा ३ जो साधु आदि चारों तीर्थ के स्थापक ऋषभदेवजी आदि तीर्थंकर सिद्ध हुवे ये तीर्थंकर सिद्ध ४ जो तीर्थंकर पद बिना प्राप्त किये सामान्य केवली मोक्ष गये सुधर्मा स्वामी आदि अतीर्थंकर सिद्ध, ५ गुरु के उपदेश बिना स्वयमेव जाति स्मरणादि ज्ञान कर उत्पन्न घन केवल ज्ञान पा सिद्ध हुवे सो स्वय बुद्ध सिद्ध +

\+ स्वय बुद्ध और प्रत्येक बुद्ध में १ बोधी, २ उपाधि, ३ श्रुत और ४ लिंग इन चार बातों का विशेष इस्या है (१) स्वय बुद्ध तो बाहिर की वस्तु देखे बिना जाति स्मरणादि ज्ञान कर प्रतिबोध पाते हैं और प्रत्येक बुद्ध करकंडु आदि की तरह बाहिर की वस्तु देख प्रतिबोध पाते हैं (२) स्वय बुद्ध के १२ उपकरण—१ पात्रा, २ पात्र बन्धन, ३ पात्र स्थापन (झोली) ४ पात्र प्रमार्जन, ५ पडल (पल्ले) ६ रजस्त्राण (ढकन) ७ गोच्छा ८ पात्र नियोग ९ तन पछेवडा, १० रजोहरण, ११ मुहपत्ति, और १२ चोल पट्टक, और प्रत्येक बुद्ध अकेले ही विचरे, प्रत्येक बुद्ध का उपाधि दो प्रकार की १ जघन्य तो रजोहरण और २ मुहपत्ति दो ही रखे और उत्कृष्ट ९ रखे इस में ७ तो स्वयं बुद्ध में के और दो रजोहरण तथा मुहपत्ति (३) स्वय बुद्ध के पूर्व श्रुत पठन का नियम नहीं परंतु प्रत्येक बुद्ध तो निश्चय पूर्वक श्रुत पढकर होवे जघन्य ११ अंग उत्कृष्ट कुछ कम १० पूर्व और (४) लिंग—स्वयं बुद्ध को देवता भी लिंग समर्पण करता है तथा आचार्य के पास भी लिंग धारण कर लेते है सूत्रपाठी और समर्थ होवे तो एकल विहार हाथ

सिद्ध सख्यातगुने, उन से पांच समय के निरंतर सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उस से चार समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से तीन समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से दो समय निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से एक समय के निरतर सिद्ध हुवे सख्यातगुने, १२ उत्कृष्ट द्वार—सब से थोडे सम्यक्त्व से बिना पडे सिद्ध हुवे, उस से सख्यात काल के पडे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, उस से असंख्यात काल के पडे सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उस से अनंत काल के पडे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, १३ अन्तर द्वार—सब से थोडे छ महिने के अन्तर से सिद्ध हुवे उन से समय के अन्तर से सिद्ध हुवे सख्यात गुने, उस से दो समय के अन्तर से सिद्ध हुवे सख्यात गुने, यों एक समय अधिक करते मध्य भाग तीन महीने आवे वहां तक कहना फिर सख्यातगुने कमी करना यहां तक छ महीने में एक समय कमी रहे वहां तक १३ अवगाहना द्वार—सब से थोडे जघन्य दो हाथ की अवगाहना वाले, उस से उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले संख्यातगुने, उस से मध्यम अवगाहना वाले सिद्ध सख्यातगुने, विशेष में सब से थोडे सात हाथ की अवगाहना वाले, पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले विशेषाधिक १४ गणद्वार—सब से थोडे एक समय में १०८ सिद्ध हुवे उस से १०७ सिद्ध हुवे अनंतगुने, उस से एक समय मे १०६ हुवे सिद्ध अनतगुन यो एकेक कम करते ६१ पर्यन्त अनंतगुन अधिक कहना उस से एक समय में ५० सिद्ध हुवे अनंतगुने, उस से एक समय मे ४९ सिद्ध हुवे असख्यातगुने यों एकेक कमी करते २६ तक असंख्यात गुने कहना उन से एक समय में २५ सिद्ध हुवे असंख्यात गुने, उन

स एक समय में २४ सिद्ध हुवे संख्यातगुने उन मे एक समय में २३ सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उन से एक समय में २२ सिद्ध हुवे सख्यातगुने यों एकेक कमी करते यावत् एक समय मे दो सिद्ध हुवे सख्यात गुन॥यह कथन विशेष प्रकार करते है किसी वैरीने किसी साधु को उल्टे मस्तक लटकाये या कोइ साधु उल्टे सिर कायुत्सर्ग करके रह वे केवल ज्ञान पाकर मुक्ति जावे उन के प्रदेश निकल के सम होवे वे विग्रह गतिक सिद्ध सब स थोडे, उस स उत्कटु आसन के सिद्ध संख्यातगुन, उस से अधो मुख पर्यकासन से हुवे सिद्ध संख्यातगुन उस से उर्ध्व मुख मे सिद्ध हुवे सख्यातगुन उस म एक पसवाडे सूते सिद्ध सख्यातगुने, ॥ और भी इस कथन को विशेष प्रकार से कहते हैं—जो एकेके अलग २ सिद्ध हुवे है वे सब से ज्यादा है, उन स दो दो साथ सिद्ध हुवे वे सिद्ध सख्यात गुने कमी यावत् पचीस २ सिद्ध हुए वे सख्यातगुने कमी पचीस स छब्बीस २ साथ सिद्ध हुए वे असंख्यात गुने कमी यों पचास तक कहना इक्कावन २ सिद्ध साथ हुवे वे अनंतगुने कमी यों १०८ पर्यंत कहना अथवा—जिस स्थान वीसही सिद्ध होते हैं तहां—एक समय में एक २ सिद्ध हुवे वे सब से ज्यादा, उन से दो २ सिद्ध हुवे वे संख्यातगुन कमी, यों पांच पर्यन्त कहना, फिर छ सिद्ध साथ हुवे वे असंख्यातगुन कमी, यों दशतक कहना, फिर इग्यारे २ सिद्ध हुवे वे अनन्त गुन कमी यों यावत् २० पर्यन्त कहना यों सर्व स्थान चार हिस्से करके प्रथम के चतुर्थ भाग में संख्यातगुन कमी कहना दूसरे चतुर्थ भाग में असंख्यातगुन कमी कहना और आधे भाग में अनंतगुने कमी कहना जिस स्थान दश सिद्ध होवे वहां एकेक सिद्ध हुवे वे सब से

सिद्ध संख्यातगुने, उन से पांच समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उस से चार समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से तीन समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से दो समय निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से एक समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, १२ उत्कृष्ट द्वार—सब से थोडे सम्यक्त्व से विना पडे सिद्ध हुवे, उस से संख्यात काल के पडे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, उस से असंख्यात काल के पडे सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उस से अनंत काल के पडे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, ११ अन्तर द्वार—सब से थोडे छ महिने के अन्तर से सिद्ध हुवे उन से समय के अन्तर से सिद्ध हुवे संख्यात गुने, उस से दो समय के अन्तर से सिद्ध हुवे संख्यात गुने, यों एक समय अधिक करते ५४ भाग तीन महिने आवे वहां तक कहना फिर संख्यातगुने कमी करना जहां तक छ महीने में एक समय कमी रहे वहां तक. १३ अवगाहना द्वार—सब से थोडे जघन्य दो हाथ की अवगाहना वाले, उस से उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले संख्यातगुने, उस से मध्यम अवगाहना वाले सिद्ध संख्यातगुने, विशेष में सब से थोडे सात हाथ की अवगाहना वाले, पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले विशेषाधिक १४ गणद्वार—सब से थोडे एक समय में १०८ सिद्ध हुवे उस से १०७ सिद्ध हुवे अनंतगुने, उस से एक समय मे १०६ हुवे सिद्ध अनतगुन यों एकेक कम करते ६१ पर्यन्त अनतगुने अधिक कहना उस से एक समय में ५० सिद्ध हुवे अनतगुने, उस से एक समय मे ४९ सिद्ध हुवे असंख्यातगुने यों एकेक कमीकरते २६ तक असंख्यात गुने कहना उन से एक समय में २५ सिद्ध हुवे असंख्यात गुने, उन

से एक समय में २४ सिद्ध हुवे संख्यातगुने उन से एक समय में २३ सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उन से एक समय में २२ सिद्ध हुवे सख्यातगुने यों प्रत्येक कमी करते यावत् एक समय में दो सिद्ध हुवे सख्यात गुने॥ यह कथन विशेष प्रकार करते है किसी वैरीने किसी साधु को उसके मस्तक मटकाये या कोइ साधु उलटे सिर कायुत्सर्ग करते रहे वे केवल ज्ञान पाकर मुक्ति पावे उन के प्रदेश निकल के सम होवे वे विषम गाठिक सिद्ध सब से थोडे, उस से उत्कटु आसन के सिद्ध सख्यातगुन उस से अधो मुख पर्यंकासन से हुवे सिद्ध सख्यातगुने उस से ऊर्ध्व मुख मे सिद्ध हुवे सख्यातगुन उस मे एक पसवाडे सुते सिद्ध सख्यातगुन, ॥ और भी इस कथन को विशेष प्रकार से कहते हैं—ओएक्के असम २ सिद्ध हुवे है वे सब मे ज्यादा है उन से दो दो साथ सिद्ध हुवे वे सिद्ध संख्यात गुने कमी यावत् पचीस २ सिद्ध हुवे वे सख्यातगुने कमी पचीस से छब्बीस २ साथ सिद्ध हुवे वे असंख्यात गुन कमी यों पचास तक करना इक्कावन २ सिद्ध साथ हुवे वे अनंतगुने कमी यों १०८ पर्यंत करना अथवा—जिस स्थान दोसही सिद्ध होते हैं यथा—एक समय में एक २ सिद्ध हुवे वे सब से ज्या। उन से दो २ सिद्ध हुवे वे सख्यातगुन कमी यों पांच पर्यन्त करना, फिर छ सिद्ध साथ हुवे वे असंख्यातगुन कमी यों दशतक करना फिर इग्यारे २ सिद्ध हुवे वे अनन्त गुन कमी यों यावत् २० पर्यंत करना यों सब स्थान चार विभाग करके प्रथम के चतुर्थ भाग में संख्यातगुन कमी करना दूसरे चतुर्थ भाग में असंख्यातगुन कमी करना और बाकी भाग में अनंतगुने कमी करना जिस स्थान दश सिद्ध होवे वहां एकक सिद्ध हुवे वे सब से

सिद्ध सख्यातगुने, उन से पांच समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उस से चार समय के निरंतर सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उन से तीन समय के निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से दो समय निरंतर सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उन से एक समय के निरंतर सिद्ध हुवे सख्यातगुने, १२ उत्कृष्ट द्वार—सब से थोडे सम्यक्त्व से बिना पडे सिद्ध हुवे, उस से संख्यात काल के पडे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, उस से असंख्यात काल के पडे सिद्ध हुवे सख्यातगुने, उस से अनंत काल के पडे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, १३ अन्तर द्वार—सब से थोडे छ महिने के अन्तर से सिद्ध हुवे उन से समय के अन्तर से सिद्ध हुवे सख्यात गुने, उस से दो समय के अन्तर से सिद्ध हुवे सख्यात गुने, यों एक समय अधिक करते मध्य भाग तीन महिने आवे वहां तक करना फिर सख्यातगुने कमी करना यहां तक छ महीने में एक समय कमी रहे वहां तक. १४ अवगाहना द्वार—सब से थोडे जघन्य दो हाथ की अवगाहना वाले, उस से उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले सख्यातगुने, उस से मध्यम अवगाहना वाले सिद्ध सख्यातगुने, विशेष में सब से थोडे सात हाथ की अवगाहना वाले, पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले विशेषाधिक १५ गणद्वार—सब से थोडे एक समय में १०८ सिद्ध हुवे उस से १०७ सिद्ध हुवे अनंतगुने, उस से एक समय मे १०६ हुवे सिद्ध अनंतगुन यों एकेक कम करते ५१ पर्यन्त अनंतगुने अधिक करना उस से एक समय में ५० सिद्ध हुवे अनंतगुने, उस से एक समय मे ४९ सिद्ध हुवे असंख्यातगुने यों एकेक कमीकरते २६ तक असंख्यात गुने करना उन से एक समय में २५ सिद्ध हुवे असंख्यात गुने, उन

सिद्ध सख्यातगुने ५ उन से तीर्थंकर सिद्ध अनंतगुन ६ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध संख्यातगुने ७ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में साध्वी सिद्ध संख्यातगुने ८ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में साधु सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ८ चारित्र द्वार—१ छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन चार चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध हुवे सब से थोड़े, क्यों कि चारित्र मग न होवे उस से सामायिक, परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुन ३ उनसे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन पांचों चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ उन से छेदोपस्थापनीय सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ५ उन से सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुने, इन से सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीनों चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध हुवे संख्यातगुन ८ बुद्ध द्वार—सब से थोड़े स्वयं बुद्ध सिद्ध, उस से प्रत्येक बुद्ध सिद्ध संख्यातगुन उस से साध्वी के प्रतिबोध सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उस से साधु प्रतिबोधे सिद्ध हुवे संख्यातगुन, १० ज्ञान द्वार—सब से थोड़े मति श्रुति मन पर्यव से केवल पाकर सिद्ध हुवे, २ मति श्रुति से केवल पा सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ उस से मति श्रुति अवधि मनःपर्यव से केवल पा सिद्ध हुवे संख्यातगुने ४ उस से मति श्रुति अवधि से केवल पा सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ११ अनुसमयद्वार—सब से थोड़े आठ समय तक निरंतर सिद्ध हुवे, उस से सात समय तक निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से छ समय के

निकले सख्यातगुने, १८ उस से अनुत्तर विमान के देवता के निकले सख्यातगुने, १९ उस से नवग्रीवेक के निकले सिद्ध सख्यातगुने, २० उस से बारवे देवलोक के निकले सिद्ध सख्यातगुने, २१ उस से इग्यारवे देवलोक के निकले सिद्ध सख्यातगुने, २२ उस से दसवे देवलोक के निकले सिद्ध संख्यातगुने २३ उस से नवमे देवलोक के निकले सिद्ध संख्यातगुने, २४ उस से आठवे देवलोक के निकले सिद्ध सख्यातगुने, २५ उस से सातवे देवलोक के निकले सिद्ध संख्यातगुने, २६ उस से छठे देवलोक के निकले सिद्ध सख्यातगुने, २७ उस से पांचवे देवलोक के निकले संख्यातगुने, २८ उस से चौथे देवलोक के निकले संख्यातगुने, २९ उस से तीसरे देवलोक के निकले सख्यातगुने, ३० उस से दूसरे देवलोक की देवी के निकले सख्यातगुने, ३१ उस से दूसरे देवलोक के देवता के निकले संख्यातगुने, ३२ उस से प्रथम देवलोक की देवी के निकले सख्यातगुने और ३३ उस से प्रथम देवलोक के देवता के निकले हो सिद्ध गति प्राप्त हुवे सिद्ध सख्यातगुने, ५ वेद द्वार—सब से थोडे नपुंसक से हुवे सिद्ध, २ उस से स्त्री से हुवे सिद्ध संख्यातगुने और ३ उस से पुरुष से हुवे सिद्ध संख्यातगुने ६ लिंगद्वार—१ सब से थोडे गृहलिंगी सिद्ध हुवे, २ उस से अन्य लिंगी सिद्ध हुवे संख्यातगुने उन से स्वलिंगी सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ७ तीर्थद्वार—१ सब से थोडे स्त्री तीर्थंकर सिद्ध, २ उस से स्त्री तीर्थंकर के तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध सख्यातगुने, ३ उस से स्त्री के तीर्थंकर के तीर्थ में साध्वी सिद्ध संख्यातगुने, ४ उस से स्त्री तीर्थंकर के तीर्थ में साधु

सिद्ध सख्यातगुने, ५ उन से तीर्थंकर सिद्ध अनंतगुने, ६ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध संख्यातगुने, ७ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में साध्वी सिद्ध संख्यातगुने, ८ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में साधु सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ८ चारित्र द्वार—१ छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन चार चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध हुवे सब से थोड़े, क्यों कि चारित्र भंग न होवे उस से सामायिक, परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुने ३ उनसे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन पांचों चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ उन से छेदोपस्थापनीय सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ५ उन से सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुने, इन से सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीनों चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध हुवे संख्यातगुने ८ बुद्ध द्वार—सब से थोड़े स्वयं बुद्ध सिद्ध, उस से प्रत्येक बुद्ध सिद्ध संख्यातगुने उस से साध्वी के प्रतिबोध सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उस से साधु प्रतिबोधे सिद्ध हुवे संख्यातगुने, १० ज्ञान द्वार—सब से थोड़े मति श्रुति मन पर्यव से केवल पाकर सिद्ध हुवे, २ मति श्रुति से केवल पा सिद्ध हुवे संख्यातगुने ३ उस से मति श्रुति अवधि मनःपर्यव से केवल पा सिद्ध हुवे संख्यातगुने ४ उस से मति श्रुति अवधि से केवल पा सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ११ अनुसमयद्वार—सब से थोड़े आठ समय तक निरंतर सिद्ध हुवे, उस से सात समय तक निरंतर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उन से छ समय क

द्वीप के महा विदेह क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २१ उस से धातकी खंड द्वीप के महाविदेह क्षेत्रके निकले
सिद्ध संख्यात गुने, २४ उस से पुष्करार्ध के विदेह क्षेत्र के सिद्ध संख्यात गुने जहां २,दो क्षेत्र के
तथा पर्वत के नाम साथ आये हैं वहां २ दोनों में परस्पर तुल्य (समान) जानना १ काल द्वार—
सब से थोडे दु:खमा दु:खमा आरे के सिद्ध २ उस से दु:खमी आरे के संख्यात गुने, ३ उस से सुखमा
दु:खम तीसरे आरे के सिद्ध असंख्यातगुने क्यों कि काल असंख्याता है, ४ उस से सुखम दुसरे आरे
के सिद्ध विशेषाधिक ५ उस से सुखमा सुखम पहिले आरे के सिद्ध विशेषाधिक, ६ उस से दु:खमा सुखम
चौथे आरे के सिद्ध संख्यात गुने तथा उत्सर्पिनी काल के—सब से थोडे दु:खमा दु:खमी आरे के
सिद्ध, उस से दु:खमी आरे के संख्यात गुने, उस से सुखमी आरे के असंख्यात गुने, उस से सुखमा
सुखमी के विशेषाधिक, उस से दु:खमी आरे के संख्यात गुने उस से सुखमी दु:खमी आरे के संख्यात
गुने अब सर्पना उत्सपनी काल की मेली अल्पाबहुत्व कहते हैं—१ दु:खमा दु:खमी दोनो आरे के
परस्पर तुल्य सब से थोडे २ उस से वधमान काल के दूसरे दु:खम आरे के विशेषाधिक, ३ उस से
हायमान काल के दु:खम पांचवे आरे के संख्यात गुने, ४ उस से दोनो सुखम दूसम तीसरे आरे के
परस्पर तुल्य पहिले से असंख्यात गुने, ५ उस से दोनों सुखमी आरे के परस्पर तुल्य उस से विशेषाधिक
उस से दोनों दु:खम सुखम चौथ तथा दूसरे आरे के संख्यात गुने, उस से अवसर्पिनी वर्धमान काल
के संख्यात गुने, इस में अवसर्पिनी के छट्ठी आरे सामिल हुवे, उस से उत्सर्पिनी हायमान काल के छट्ठो

नार के सस्यात गुने ॥ ४ ॥ गति द्वार—१ मनुष्यनी से निकल कर सिद्ध हुवे सब से थोडे, २ उस से पुरुष स तथा नपुसकसे निकले सिद्ध हुवे सस्यात गुने, ३ उस से नरक के निकले सि… सस्यात गुने, ४ उस से तिर्यचनी के निकले सिद्ध सस्यात गुने, ५ उस से तिर्यंच पुरुष स … निकले सिद्ध हुवे संस्यात गुने, ६ समुचय देवीके निकले सिद्ध सस्यात गुन । उस … ॥ ४ सिद्ध हुवे संस्यात गुने ॥ भावद्वार—एकेन्द्रिय के निकले सिद्ध सब से थोडे, उस … के निकले संस्यात गुने, उस से पानी के निकले सस्यात गुने उस से त्रस के निकले सिद्ध सस्यात गुन ॥ अब यही विस्तार से कहते हैं—१ सब से थोडा चौथी नरक से निकल मनुष्य हो सिद्ध हुवे २ उस से तीसरी नरक के निकले सस्यात गुने, ३ इस से दूसरी नरक के निकले सस्यात गुने ४ उस से बादर प्रत्येक पर्याप्त वनस्पति के निकले सस्यात गुने ५ उस से पर्याप्त बादर पृथ्वी काय के निकले संस्यात गुने ६ उस से पर्याप्त बादर अपकाय के निकले सिद्ध सस्यात गुने ७ उस से भुवनपति की देवी के सिद्ध संस्यात गुने, ८ उस से भुवनपति देवता के निकले सिद्ध सस्यात गुने ९ उस से व्यंतर की देवी के निकले सिद्ध संस्यातगुने, १० उस से व्यन्तर देवता के निकले सिद्ध सस्यातगुने ११ उस से ज्योतिषी देवी के निकले सिद्ध संस्यातगुने, १२ ज्योतिषी देवता के निकले सिद्ध संस्यातगुने, १३ उस से मनुष्य से आये सिद्ध सस्यातगुने, १४ उस से मनुष्य नपुंसक के निकले सस्यातगुने १५ उस से रत्नप्रभा के निकले संस्यातगुने, १६ उस से तिर्यचनी के निकले सस्यातगुने, १७ उस से तिर्यंच के

निषध नीलवन्त पर्वत के सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यात गुने उन से भरत ऐरावत क्षेत्र के परस्पर तुल्य संख्यात गुने उन से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के दुभे सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यात गुने ॥ अब धातकीखण्ड क्षेत्र की अल्पा बहुत्व कहते हैं—सब से थोडे हेमवन्त शिखरी पर्वत के सिद्ध परस्पर तुल्य, उस से महा हिमवन्त रूपी पर्वत के सिद्ध संख्यात गुने उन से निषध नीलवंत पर्वत के सिद्ध संख्यात गुने उन से हेमवय एरणवय के सिद्ध संख्यात गुने उन से देवकुरु उत्तरकुरु के संख्यात गुने, उन से हरीवास रम्यकवास मे संख्यात गुने उन से भरत एरावत क्षेत्र के संख्यात गुने उन से महाविदेह क्षेत्र के संख्यात गुने अब पुष्करार्ध द्वीप का कहते हैं—सब से थोडे हेमवंत शिखरी पर्वत के सिद्ध उन से महा हिमवन्त रूपी पर्वत के सिद्ध संख्यातगुने उन से निषध नीलवंत के सिद्ध संख्यात गुने, उन से हेमवय एरणवय क्षेत्र के सिद्ध संख्यात गुने उन से देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के सिद्ध संख्यात गुने उन से भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, उन से महाविदेह क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने,* अब समुच्चय सब पर्वत और क्षेत्र आश्रिय सिद्ध की अल्पा बहुत्व कहते हैं

---

* उक्त आठ स्थानक सिद्ध होने के कहे जिस में से भरत एरावत और महाविदेह यह तीन स्थानक छोडकर बाकी सर्व स्थानों में देवतादि संहरण कर उक्त तीनों स्थान के मनुष्य को रख देवे यह वहां केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जावे सिद्ध आश्रिय कहे हैं

१ सब से थोडे जम्बूद्वीप के हेमवत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध २ उस से हेमवंत एरण्यवंत क्षेत्र के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से महाहेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध सख्यातगुने ४ उस से देवकुरु उत्तर कुरु के संख्यातगुने, ५ उस से हरीवास रम्यकवास के संख्यातगुन, ६ उस से निषध नीलवंत के संख्यातगुने, ७ उस से, धातकी खंड के चूलहेमवंत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध विशेषाधिक, ८ उस से धातकी खण्ड के महाहेमवंत रूपी पर्वत के संख्यातगुन, ९ उस से तीसरे पुष्करार्धद्वीप के हेमवंत शिखरी पर्वत के सिद्ध संख्यातगुने १० उस से दूसरे धातकी खण्डद्वीप के निषध नीलवंत के सिद्ध संख्यातगुने ११ उस स तीसरे पुष्करार्धद्वीप के महा हेमवंत रूपी पर्वत पर से हुवे सिद्ध संख्यातगुन १२ उस से दूसरे धातकी खण्ड द्वीप के हरीवर्ष रम्यकवर्ष क्षेत्र के सिद्ध विशेषाधिक, १३ उस स तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के निषध नीलवंत पर्वत के सिद्ध संख्यातगुने, १४ उस से दूसरे धातकी खण्ड द्वीप के देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने १५ उस से दूसरे धातकीखंड द्वीप के हरीवर्ष रम्यक वर्ष क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १६ उस से तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के हेमवय एरण्यवय के सिद्ध संख्यातगुने, १७ उस से तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुन, १८ उस से तीसर पुष्करार्ध द्वीप के हरीवास रम्यकवास के सिद्ध संख्यातगुने, १९ उस से जंबूद्वीप भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २ उस से धातकी खण्ड के भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २१ उस से पुष्करार्ध द्वीप के भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २२ उस से जंबू

निषध नीलवंत पर्वत के सिद्ध परस्पर तुल्य सख्यात गुने उन से भरत ऐरावत क्षेत्र के परस्पर तुल्य सख्यात गुने उन से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के दूने सिद्ध परस्पर तुल्य सख्यात गुने ॥ अब धातकीखंड क्षेत्र की अल्पा बहुत्व कहते हैं—सब से थोडे हेमवन्त शिखरी पर्वत के सिद्ध परस्पर तुल्य, उस से महा हिमवंत रूपी पर्वत के सिद्ध संख्यात गुने उन से निषध नीलवंत पर्वत के सिद्ध संख्यात गुने उन से हेमवय एरणवय के सिद्ध सख्यात गुने उन से देवकुरु उत्तरकुरु के सख्यात गुने, उन से हरीवास रम्यकवास से सख्यात गुने उन से भरत एरावत क्षेत्र के सख्यात गुन उन स महाविदेह क्षेत्र के संख्यात गुन अब पुष्करार्ध द्वीप का कहते है—सब से थोडे हेमवंत शिखरी पर्वत के सिद्ध उन से महा हेमवत रूपी पर्वत के सिद्ध सख्यातगुने उन से निषध नीलवंत के सिद्ध सख्यात गुने, उन से हेमवय एरणवय क्षेत्र के सिद्ध सख्यात गुने उन से देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के सिद्ध सख्यात गुने उन से भरत एरावत क्षेत्र के सिद्ध सख्यातगुने, उन से महाविदेह क्षेत्र के सिद्ध सख्यातगुने,✽ अब समुच्चय सब पर्वत और क्षेत्र आश्रिय सिद्ध की अल्पा बहुत्व कहते हैं

✽ उक्त आठ स्थानक सिद्ध होने के कहे जिस में से भरत एरावत और महाविदेह यह तीन स्थानक छोडकर बाकी सर्व स्थानों में देवतादि संहरण कर उक्त तीनों स्थान के मनुष्य को रख देवे वह वहां केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जावे जिस आश्रिय कहे हैं

१ सब से थोड़े जम्बूद्वीप के ऐरवत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध २ उस से हेमवंत एरण्यवंत क्षेत्र के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से महाहेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने ४ उस से देवकुरु उत्तर कुरु के संख्यातगुने, ५ उस से हरीवास रम्यकवास के संख्यातगुने, ६ उस से निषध नीलवंत के संख्यातगुने, ७ उस से, धातकी खंड के चूलहेमवंत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध विशेषाधिक, ८ उस से धातकी खण्ड के महाहेमवंत रूपी पर्वत के संख्यातगुने, ९ उस से तीसरे पुष्करार्धद्वीप के हेमवंत शिखरी पर्वत के सिद्ध संख्यातगुने १० उस से दूसरे धातकी खण्डद्वीप के निषध नीलवंत के सिद्ध संख्यातगुने ११ उस से तीसरे पुष्करार्धद्वीप के महा हेमवंत रूपी पर्वत पर से हुवे सिद्ध संख्यातगुने १२ उस से दूसरे धातकी खण्ड द्वीप के हरीवर्ष रम्यकवर्ष क्षेत्र के सिद्ध विशेषाधिक, १३ उस से तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के निषध नीलवंत पर्वत के सिद्ध संख्यातगुने, १४ उस से दूसरे धातकी खण्ड द्वीप के देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने १५ उस से दूसरे धातकीखंड द्वीप के हरीवर्ष रम्यक वर्ष क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १६ उस से तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के हेमवय एरण्यवय के सिद्ध संख्यातगुने, १७ उस से तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १८ उस से तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के हरीवास रम्यकवास के सिद्ध संख्यातगुने, १९ उस से जंबूद्वीप भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २० उस से धातकी खण्ड के भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २१ उस से पुष्करार्ध द्वीप के भरत ऐरावत क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, २२ उस से जंबू

अवधिज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त होवे उन का अन्तर एक वर्ष कुछ अधिक का, मति श्रुति मनःपर्यव ज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त कर तथा मति श्रुति अवधि मनःपर्यव केवल ज्ञान पाकर सिद्ध होने का अन्तर संख्यात हजार वर्ष का १० अवगाहना द्वार- जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना वाले का उत्कृष्ट अन्तर चउदा रज्जु लोक को घन करने सात रज्जु लोक होता है उस में से एक प्रदेश की श्रेणि सात रज्जू की लम्बी उस के संख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश पावें उस में से समय २ एकेक आकाश प्रदेश का अपहरन करने २ जितना काल लगे उतना अन्तर पड़े, मध्यम अवगाहना वाले का एक वर्ष कुछ अधिक का अन्तर पड़े, ११ उत्कृष्ट द्वार-सम्यक्त्व से अपडवाइ हो के सिद्ध होने का अन्तर उत्कृष्ट सागर का असंख्यातवा भाग शेष संख्यात काल के पड़े का असंख्यात काल के पड़े का अन्तर संख्याते हजार वर्ष का, १२ अणुसमय द्वार-दो समय से आठ समय पर्यन्त निरन्तर सिद्ध होते है १४ गणद्वार-एकादिकी सिद्ध होवे हैं और १५ अल्पा बहुत द्वार बहुत सिद्ध का उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष का जघन्य एक समय का ॥ ६ ॥ सातवा भाव द्वार-भाव छ—१ उदय भाव, २ उपशम भाव, ३ क्षयोपशम भाव, ४ क्षायिक भाव ५ परिणामिक भाव, और ६ सन्निपात भाव, सर्व स्थान में क्षायिक भाव से सिद्ध स्थान प्राप्त होता है ॥ ७ ॥ आठवा अल्पा बहुत्व द्वार—सब से थोडे उर्द्ध लोकादि में चार सिद्ध होवे सो, उस से हरीवासादि क्षेत्र में १० सिद्ध होवे सो संख्यात गुने, उस से

अवधिज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त होवे उन का अन्तर एक वर्ष कुछ अधिक का, मति श्रुति मन पर्यव ज्ञान स केवल ज्ञान प्राप्त कर तथा मति श्रुति अवधि मन पर्यव केवल ज्ञान पाकर सिद्ध होने का अन्तर सख्यात हजार वर्ष का १० अवगाहना द्वार- जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना वाले का उत्कृष्ट अन्तर चउदा रज्जु लोक को घन करते सात रज्जु लोक होता है उस में से एक प्रदेश की श्रेणि सात रज्जू की लम्बी उस के संख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होवें उस में से समय २ एकेक आकाश प्रदेश का अपहरन करते २ जितना काल लगे उतना अन्तर पडे, मध्यम अवगाहना वाले का एक वर्ष कुछ अधिक का अन्तर पडे, ११ उत्कृष्ट द्वार-सम्यक्त्व से अपडवाइ हो के सिद्ध होने का अन्तर उत्कृष्ट सागर का असंख्यातवा भाग शेष सख्यात काल के पडे का असख्यात काल के पडे का अन्तर सख्याते हजार वर्ष का, १२ अणुसमय द्वार-दो समय स आठ समय पर्यन्त निरन्तर सिद्ध होते है १४ गणद्वार-एकादिकी सिद्ध होते हैं और १५ अल्पा बहुत द्वार बहुत सिद्ध का उत्कृष्ट सख्यात हजार वर्ष का जघन्य एक समय का ॥ ६ ॥ सातवा भाव द्वार-भाव छ—१ उदय भाव, २ उपशम भाव, ३ क्षयोपशम भाव, ४ क्षायिक भाव ५ परिणामिक भाव, और ६ सन्निवाइ भाव, सर्व स्थान में क्षायिक भाव से सिद्ध स्थान प्राप्त होता है ॥ ७ ॥ आठवा अल्पा बहुत्व द्वार—सब से थोडे उर्द्ध लोकादि में चार सिद्ध होवे सो, उस से हरीवासादि क्षेत्र में १० सिद्ध होवे सो सख्यात गुने, उस स

अवधिज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त होवे उन का अन्तर एक वर्ष कुछ अधिक का, मति श्रुति मन पर्यव ज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त कर तथा मति श्रुति अवधि मन पर्यव केवल ज्ञान पाकर सिद्ध होने का अन्तर संख्यात हजार वर्ष का १० अवगाहना द्वार– जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना वाले का उत्कृष्ट अन्तर चउदा रज्जु लोक को घन करसे सात रज्जू लोक होता है उस में से एक प्रदेश की श्रेणि सात रज्जू की लम्बी उस के संख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होवें उस में से समय २ एकेक आकाश प्रदेश का अपहरन करने २ जितना काल लगे उतना अन्तर पडे, मध्यम अवगाहना वाले का एक वर्ष कुछ अधिक का अन्तर पडे, ११ उत्कृष्ट द्वार–सम्यक्त्व से अपडवाइ हो के सिद्ध होने का अन्तर उत्कृष्ट सागर का असंख्यातवा भाग शेष संख्यात काल के पडे का असंख्यात काल के पडे का अन्तर संख्याते हजार वर्ष का, १२ अणुसमय द्वार–दो समय से आठ समय पर्यन्त निरन्तर सिद्ध होते हैं १४ गणद्वार–एकाकी सिद्ध होते हैं और १५ अल्पा बहुत्व द्वार बहुत सिद्ध का उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष का जघन्य एक समय का ॥ ६ ॥ सातवा भाव द्वार–भाव छ—१ उदय भाव, २ उपशम भाव, ३ क्षयोपशम भाव, ४ क्षायिक भाव ५ परिणामिक भाव, और ६ सन्नीवाइ भाव, सर्व स्थान में क्षायिक भाव से सिद्ध स्थान प्राप्त होता है ॥ ७ ॥ आठवा अल्पा बहुत्व द्वार—सब से थोडे उर्द्ध लोकादि में चार सिद्ध होवे सो, उस से हरीवासादि क्षेत्र में १० सिद्ध होवे सो संख्यात गुने, उस से

अवधिज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त होवे उन का अन्तर एक वर्ष कुछ अधिक का, मति श्रुति मनःपर्यव ज्ञान स केवल ज्ञान प्राप्त कर तथा मति श्रुति अवधि मन पर्यव केवल ज्ञान पाकर सिद्ध होने का अन्तर संख्यात हजार वर्ष का १० अवगाहना द्वार– जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना वाले का उत्कृष्ट अन्तर सप्त रज्जु लोक को घन करते सात रज्जू लोक होता है उस में से एक प्रदेश की श्रेणि सात रज्जू की लम्बी उस के संख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होवें उस में से समय २ एकेक आकाश प्रदेश का अपहरन करते २ जितना काल लगे उतना अन्तर पडे, मध्यम अवगाहना वाले का एक वर्ष कुछ अधिक का अन्तर पडे, ११ उत्कृष्ट द्वार–सम्यक्त्व से अपडवाइ हो के सिद्ध होने का अन्तर उत्कृष्ट सागर का असंख्यातवा भाग शेष संख्यात काल के पडे का असंख्यात काल के पडे का अन्तर संख्याते हजार वर्ष का, १२ अणुसमय द्वार–दो समय से अठा समय पर्यन्त निरन्तर सिद्ध होते है १४ गणद्वार–एकादिकी सिद्ध होते हैं और १५ अल्पा बहुत द्वार बहुत सिद्ध का उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष का जघन्य एक समय का ॥ ६ ॥ सातवा भाव द्वार–भाव छ—१ उदय भाव, २ उपशम भाव, ३ क्षयोपशम भाव, ४ क्षायिक भाव ५ परिणामिक भाव, और ६ सन्नीवाइ भाव, सर्व स्थान में क्षायिक भाव से सिद्ध स्थान प्राप्त होता है ॥ ७ ॥ आठवा अल्पा बहुत्व द्वार—सब से थोडे उर्द्ध लोकादि में चार सिद्ध होवे सो, उस से हरीवासादि क्षेत्र में १० सिद्ध होवे सो संख्यात गुने, उस से

सो आदि२०सिद्ध होवे वे संख्यातगुने क्यों कि स्त्री का संहरन नहीं होता है ● उन से पृथक्त्व २ विजयमें वा अधोलोक में२ [ ] सिद्ध होवे वे संख्यात गुने उन से १ ०८सिद्ध होवे वे सख्यात गुने॥४॥ अन्तर सिद्ध के भेद समाप्त॥ अब परम्परा सिद्ध के कहते है—परम्परा सिद्ध में पहिला अप्रथम समय सिद्ध हुवे उन का द्रव्य प्रमाणादि १५ द्वार में सब क्षेत्र में अनन्ता करना पड़ेगा इन का अन्तर नहीं करना क्यों कि काल बहुत है, सर्व क्षेत्र में अनादि रूप है, अब विशेष में अल्पा बहुत नामक आठ वा द्वार कहते हैं—१ क्षेत्र द्वार—सब से थोडे समुद्र के सिद्ध संख्यात गुन के सिद्ध संख्यात गुने, तथा सब से थोडे जल के सिद्ध उन से स्थलके सिद्ध संख्यात गुन तथा सब से थोडे ऊर्ध्व लोक के सिद्ध उन स अधो लोक के सिद्ध संख्यात गुन और उन से तिर्छे लोक के सिद्ध संख्यात गुने तथा सब से थोडे लवण समुद्र से सिद्ध उन से कालो दधि समुद्र के सिद्ध संख्यातगुने तथा सब से थोडे जम्बूद्वीप के सिद्ध उन से धातकीखण्ड के सिद्ध संख्यात गुने, उन से पुष्करार्ध द्वीप के सिद्ध संख्यात गुने ॥ तथा—सब से थोडे जम्बूद्वीप के हेमवत हिरण्यवत क्षेत्र के सिद्ध परस्पर तुल्य उन से हेमवय हेरण्णवय क्षेत्र के सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यात गुने उन से महाहेमवत रूपी पर्वत के सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यात गुने उन से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यात गुने उन से हरिवास रम्यक वास के सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यात गुने, उन से

● गाथा—समणी मवगयवेय परिहार पुलाग मप्पमत्त ॥ चउदसपुव्वि जिण आहारगाय, ना कोइ साहरंति ॥१॥ अर्थ १ साध्वी २ अवेदी ३ परिहार विशुद्ध चारित्री,४ पुलाकलब्धिवाला ५ अप्रमत्त साधु ६ चउदे पूर्वधारी, ७ तीर्थंकर, शरीर इन ८ का संहरन कोई कर सके नहीं

होवे, आगे के चारों द्वारो का यहां संभव नहीं है ॥ ५ ॥ छठा अन्तर द्वार सिद्ध स्थान में सिद्ध होने का अन्तर पड़े सो कहते हैं—इस पर १५ द्वार—१ क्षेत्र द्वार—समुच्चय अढाइ द्वीप आश्रिय विरह जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का, समुच्चय जम्बूद्वीप में से तथा धातकीखण्ड में से वैसे ही जंबू द्वीप के तथा धातकीखण्ड के महाविदेह क्षेत्र में से सिद्धगति में जीव के जाने का अन्तर पड़े तो उत्कृष्ट पृथक्त्व (२ से ९) वर्ष का, समुच्चय पुष्करार्ध द्वीप में तथा पुष्करार्ध के महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होने का १ वर्ष से कुछ अधिक काल का अंतर पांच एरावत क्षेत्र में से जन्म आश्रिय तो १८ क्रोडा क्रोड सागरोपम का कुछ कम * क्यों कि—वृधमान काल में चौथे आरे की आदी में मोक्ष जाते हैं और हायमान काल में तीसरे आरे के अन्त में जन्म होता है साहारन आश्रिय सहस्र वर्ष का अंतर जानना २ गति द्वार—नरक के निकले सिद्ध होवे उन का उत्कृष्ट अंतर पृथक्त्व सहस्र वर्ष का, तिर्यंच के निकले सिद्ध होवे उन का अंतर पृथक्त्व सो वर्ष का तिर्यंचनीके सौधर्म ईशान दोनों देव लोक के देव छोड़कर बाकी के सब देवता मनुष्य मनुष्यनी इन के

* उत्सर्पनी का चौथा आरा दो क्रोडा क्रोड सागरोपम का पांचवा आरा तीन क्रोडा क्रोड सागरोपम का छठा आरा चार क्रोडा क्रोड सागरोपम का, अवसर्पिनी का पहिला आरा चार क्रोडा क्रोड सागरोपम का दूसरा आरा तीन क्रोडा क्रोड सागरोपम का और तीसरा आरा दो क्रोड सागरोपम का यों सब १८ क्रोडा क्रोड सागरोपम हुवे इस में कुछ कम काल में तीर्थंकर कर के उत्पन्न होने का अभाव है

निकले सिद्ध होवे जघन्य का अंतर एक वर्ष का कुच्छ अधिक स्वयंबुद्ध होने का अंतर सख्याते सहस्र वर्ष का पृथ्वी पानी वनस्पति सौधर्म ईशान देवलोक के तथ पहिली दूसरी नरक इतने के निकले सिद्ध होने का उत्कृष्ट अंतर संख्याते हजार वर्ष का जघन्य अन्तर सब स्थान एक समय का जानना ४ वेद द्वार—पुरुष मरकर पुरुष हो सिद्ध होवे जिस का उत्कृष्ट अन्तर एक वर्ष से कुच्छ अधिक का शेष आठों भांगे का उत्कृष्ट अन्तर सख्याते हजार वर्ष का प्रत्येक बुद्ध का भी इतना ही अन्तर जानना ५ तीर्थद्वार—तीर्थंकर का मुक्ति जाने का अन्तर पह तो पृथक्त्व हजार पूर्व एक हजार वर्ष का, तीर्थंकर स्त्री का अनन्त काल का, ६ लिंगद्वार—स्वलिंगी सिद्ध होने का अन्तर जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक वर्ष कुच्छ अधिक का अन्यलिंगी और गृहलिंगी सिद्ध होने का अन्तर संख्यात हजार वर्ष का, ७ चारित्र द्वार—पूर्वानुभव आश्रिय सामायिक सूक्ष्म सम्पराय स यथाख्यात चारित्री हो सिद्ध होवे उन का अन्तर एक वर्ष स कुच्छ अधिक काल का, शेष चारित्र के भांगे का १८ क्रोडाक्रोड सागरोपम कुछ कम का, क्यों कि यह छेदोपस्थानी चारित्र भरतैरावत क्षेत्र में प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के वक्त में ही होता है ८ बुद्ध द्वार—आचार्य से प्रति बोध पाये मोक्ष जाने का अन्तर एक वर्ष से कुछ अधिक का, शेष प्रत्येक बोधादि का तथा साध्वी से प्रति बोध पाय सिद्ध हो इन का अन्तर सख्याते हजार वर्ष का स्वयं बुद्ध का पृथक्त्व सहस्र पूर्व का ९ ज्ञान द्वार—मति श्रुति ज्ञान स केवल ज्ञान प्राप्त कर सिद्ध होवे जिन का अन्तर पल्योपम के असंख्यातवे भाग प्रमाण, मति श्रुति

म से ही सिद्ध होवे हैं ॥३॥ ४ था स्पर्शयनो द्वारें—जो भूत काल में अनंत सिद्ध हुए हैं वे मदन्न कर परस्पर एकेक से स्पर्शे हुवे हैं ॥ ४ ॥ पांचवा काल द्वार- जहां एकसो आठ एक समय में सिद्ध होवे उस स्थान आठ समय पर्यन्त निरन्तर सिद्ध होवे जिस क्षेत्र में २० सिद्ध होय वहां चार समय तक निरन्तर सिद्ध होवे, जिस क्षेत्र में दश सिद्ध होवे वहां चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, जहां दो तीन चार आदि सिद्ध होवे तहां दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे यह चार गाथा कर संक्षेपार्थ कहा अब १५ द्वार कर विस्तार कहते हैं १ क्षेत्र द्वार—१५ कर्मभुमि में १०८ सिद्ध होवे वहां निरंतर आठ समय पर्यन्त सिद्ध होवे, हरीवासादि क्षेत्र में तथा अधो लोक में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ऊर्ध्व लोक में चार समय पर्यन्त निरंतर सिद्ध होवे नंदन वन पंडग वन लवण समुद्र में दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे २ काल द्वार—सर्पिणी के हायमान काल में सुसमासुसम काल में और सुसमा काल में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, सुसमदुसम काल में दुसमसुसम काल में और दुसम काल में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, दुसमादुसम काल में चार समय पर्यंत निरंतर सिद्ध होवे, उत्सर्पिणी के वृद्धमान काल में दुसमादुसम काल में और दुसम काल में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, दुसमसुसम और सुसमदुसम काल में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे सुसम और सुसमासुसम काल में चार समय पर्यंत निरंतर सिद्ध होवे, ३ गति द्वार—देवगति के आये आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, शेष तीनों गति के आये अलग २ चार २ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ४ वेद द्वार—पुरुष मर पुरुष होय वे आठ

समय तक निरन्तर सिद्ध होवे, बाकी स्त्री आदि ८ भांगेवाले चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ५ तीर्थ द्वार—पुरुष तीर्थंकर या स्त्री तीर्थंकर के वारे में ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, पुरुष तीर्थंकर तथा स्त्री तीर्थंकर दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे ६ लिंग द्वार—स्वलिंगी ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे गृह लिंगी दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ७ चारित्र द्वार—पांचों चारित्र के स्पर्शनेवाले चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, बाकी के तीन चार चारित्र के स्पर्शनेवाले आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे ८ बुद्धद्वार—आचार्यादि के प्रतिबोधे आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, प्रत्येक बुद्ध तथा साध्वी के प्रतिबोधित स्त्री पुरुष नपुंसक अनुक्रम २ चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे स्वयंबुद्ध दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ९ ज्ञान द्वार—मति श्रुति ज्ञान से केवली हुवे दो समय निरंतर सिद्ध होवे मति श्रुति मनःपर्यव से केवली हुवे चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, मति श्रुति अवधि से केवली हुवे आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, मति श्रुति अवधि मनःपर्यव ज्ञान से केवली हुवे आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे १० अवगाहना द्वार—उत्कृष्ट अवगाहनावाले दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे, मध्यम अवगाहनावाले आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे और जघन्य अवगाहनावाले दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ११ उत्कृष्ट द्वार—सम्यक्त्व से गिरा के पड़े दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे संख्यात काल के पड़े चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे असंख्यात काल पड़े हुवे चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे और अनंत काल के पड़े हुवे आठस समय तक निरंतर सिद्ध

आय १०८ सिद्ध होवे भुवनपति देवता के आये १०, देवी के आये ५, वाणव्यन्तर देवता के आये १० देवी के ५ ज्योतिषी देवता के आये १० ज्योतिषी की देवी के २०, विमानिक देवता के १०८ वैमानिक की देवी के २०, एक समय में सिद्ध होवे ४ वेदद्वार—स्त्री २० सिद्ध होवे पुरुष १०८ सिद्ध होवे नपुसक १० सिद्ध होवे पुरुष मरकर पुरुष होकर १०८ सिद्ध होवे बाकी ८ भांग + दश २ सिद्ध होवे, ५ तीर्थंकर द्वार— तीर्थंकर एक समय में ४ सिद्ध होवे स्त्री तीर्थंकर एक समय में दो सिद्ध होवे, ६ बुद्धिद्वार—प्रत्येक बुद्ध १० सिद्ध होवे, स्वयंबुद्ध ४ सिद्ध होवे, बुद्ध बोधित १०८ सिद्ध होवे, अतीर्थंकर १०८ सिद्ध होवे, ७ लिंगद्वार—स्त्रीलिंगी १० अन्यलिंगी १० सिद्ध होवे, स्वलिंगी १०८ सिद्ध होवे, चारित्रद्वार—१ सामायिक सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात चारित्र पाल १०८ सिद्ध होवे, सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात चारित्र पाले भी १०८ सिद्ध होवे, सामायिक, छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात चारित्र पाले १० सिद्ध होवे ९ बुद्धद्वार—आचार्यादि से प्रतिबोधित हुवे—स्त्री १० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे, नपुसक १० सिद्ध होवे, साध्वी के प्रति बोधे—पुरुष १० सिद्ध होवे स्त्री—नपुंसक १० सिद्ध होवे १० ज्ञान द्वार—पूर्व भव की अपेक्षा कर मति ज्ञान श्रुति ज्ञान पाके ४ सिद्ध होवे, मति श्रुति मनःपर्यव ज्ञान पाके १० सिद्ध

+ १ पुरुष मरकर स्त्री, २ पुरुष मरकर नपुंसक, ३ स्त्री मरकर स्त्री, ४ स्त्री मरकर पुरुष, ५ स्त्री मरकर नपुसक, ६ नपुंसक मरकर स्त्री, ७ नपुसक मरकर पुरुष और ८ नपुंसक मरकर नपुसक.

होवे, मति श्रुति अवधि ज्ञान वाले १०८ सिद्ध होवे, और मति श्रुति अवधि मनःपर्यव ज्ञान वाले केवल ज्ञान प्राप्त कर १०८ सिद्ध होवे ११ अवगाहना द्वार—जघन्य अवगाहना के धारक ४ सिद्ध होवे, उत्कृष्ट अवगाहना वाले दो सिद्ध होवे, मध्यम अवगाहना वाले १ ८ सिद्ध होवे, १२ उत्कृष्ट द्वार—अनन्त काल के पश्चात् पुनःसम्यक्त्व स्पर्श कर १०८ सिद्ध होवे, असंख्यात कालके पश्चात् १० सिद्ध होवे, संख्यात काल के भी १० सिद्ध होवे ११ अन्तरद्वार-एकोअन्तर सिद्ध होवे एकादि अन्तर से सिद्ध होवे ११ अनुसमय द्वार आठ समय पर्यन्त निरंतर सिद्ध होवे सो प्रथम जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट बत्तीस सिद्ध होवे फिर नववे समय निश्चय अन्तर पड़े, सात समय पर्यन्त निरन्तर सिद्ध होवे तो ३१ से लगाकर ४८ पर्यन्त सिद्ध होवे, आठ में समय निश्चय अन्तर पड़े गुन पचास से लगा कर ६ लग सिद्ध होवे तो छ समय लग सिद्ध होवे परन्तु सात में समय निश्चय अन्तर पड़े ६१ से प्रारम कर ७२ पर्यन्त सिद्ध होवे तो पांच समय पर्यन्त छठ्ठ समय जरूर अन्तर पड़े, ७३ से ८४ पर्यन्त सिद्ध होवे तो चार समय लग सिद्ध होवे पांचवे समय निश्चय अन्तर पड़े, ८५ से ९६ पर्यंत सिद्ध होवे तो तीन समय पर्यन्त सिद्ध होवे, चौथ समय निश्चय अन्तर पड़े ९७ से १ २ सिद्ध होवे तो दो समय लग सिद्ध होवे, तीसरे समय निश्चय अन्तर पड़े १०३ से १०८ सिद्ध होवे तो एक समय म सिद्ध होवे दूसरे समय निश्चय अन्तर पड़े, ॥ २ ॥ तीसरा द्रव्य द्वार—सिद्ध किस क्षेत्र में रहते हैं—१५ कर्म भूमी ३ अकर्म भूमी, ५६ अन्तर द्वीपा यह १०१ क्षेत्र पेंतालीस लाख योजन के अढाइ द्वीप के अन्दर हैं, उस

साथ १०८ सिद्ध होवे भुवनपति देवता के साथ १०, देवी के साथ ५, वाणव्यन्तर देवता के साथे १० देवी के ५ ज्योतिषी देवता के साथे १० ज्योतिषी की देवी के २०, विमानिक देवता के १०८ वैमानिक की देवी के २०, एक समय में सिद्ध होवे ४ वेदद्वार-स्त्री २० सिद्ध होवे पुरुष १०८ सिद्ध होवे नपुसक १० सिद्ध होवे पुरुष मरकर पुरुष होकर १०८ सिद्ध होवे बाकी ८ भांग + दश २ सिद्ध होवे, ५ तीर्थंकर द्वार— तीर्थंकर एक समय में ४ सिद्ध होवे स्त्री तीर्थंकर एक समय में दो सिद्ध होवे, ६ बुद्धद्वार-प्रत्येक बुद्ध १० सिद्ध होवे, स्वयंबुद्ध ४ सिद्ध होवे बुद्ध बोधित १०८ सिद्ध होवे, अतीर्थंकर १०८ सिद्ध होवे, ७ लिंगद्वार—स्त्रीलिंगी १० अन्यलिंगी १० सिद्ध होवे, स्वयंलिंगी १०८ सिद्ध होवे, चारित्रद्वार—१ सामायिक सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात चारित्र पाले १०८ सिद्ध होवे, सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात चारित्र पाले भी १०८ सिद्ध होवे, सामायिक, छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात चारित्र पाले १० सिद्ध होवे ९ बुद्धद्वार-आचार्यादि से प्रतिबोधित हुवे-स्त्री १० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे, नपुसक १० सिद्ध होवे, साध्वी के प्रति बोधे-पुरुष १० सिद्ध होवे स्त्री—नपुंसक १० सिद्ध होवे १० ज्ञान द्वार-पूर्व भव की अपेक्षा कर मति ज्ञान श्रुति ज्ञान पाके ४ सिद्ध होवे, मति श्रुति मनःपर्यव ज्ञान पाके १० सिद्ध

+ १ पुरुष मरकर स्त्री, २ पुरुष मरकर नपुंसक, ३ स्त्री मरकर स्त्री, ४ स्त्री मरकर पुरुष, ५ स्त्री मरकर नपुंसक, ६ नपुंसक मरकर स्त्री, ७ नपुंसक मरकर पुरुष और ८ नपुंसक मरकर नपुंसक.

पाते चन स पकेक सिद्ध हुये पे संख्यात गुन यों सप र हना यह मास्तिक द्वार पर १५ द्वार सम्पप ॥ १ ॥ दूसरा द्रव्य प्रमाण द्वार—एक समय में जितने सिद्ध होवे वह द्रव्य प्रमाण, बस १ क्षेत्रादि १५ द्वार कहते हैं क्षेत्रद्वार—एक समय में ऊर्ध्व दिशा में चार सिद्ध होवे, मेरु पर्वत पर नन्दन वनादि में चार सिद्ध होवे, सामान्य नदी आदि में तीन सिद्ध होवे समुद्र में दो सिद्ध होवे, नीचे लोक में बीस सिद्ध होवे, एकेक विजय में २० सिद्ध होवे, सो भी सब मिल १०८ से ज्यादा सिद्ध एक समय में नहीं होवे, पन्दर कर्मभूमि के क्षेत्र में तथा तिर्छा लोक में १ ८ सिद्ध होवे अकर्मभूमी के क्षेत्र दो २ सिद्ध होवे सब दश से ज्यादा नहीं होवे (यह सहारन आश्रिय मानना) २ काल द्वार—हायमान (उत्सर्पिणी) काल में और वृद्धमान [अवसर्पिणी] काल में तीसरे चौथे आरे में एक समय में अलग २ एक सो आठ सिद्ध होवे हायमान काल में पांचवे आरे में २० सिद्ध होवे, शेष सात आरे में दश २ सिद्ध होवे, हायमान काल में पहले दूसरे आरे में और छठे आरे में १० सिद्ध होवे वैस ही वृद्धमान काल के प्रथम दूसरे पांचवे छठे आरे में १० १ सिद्ध होवे, ३ गतिद्वार—रत्नप्रभा शर्कर प्रभा वालुप्रभा के निकले १० सिद्ध होय, पंक प्रभा के निकले ४ सिद्ध होवे, समुच्चय तिर्यंच के निकले १० सिद्ध होवे संज्ञी तिर्यंच के निकले १० सिद्ध होवे, तिर्यंचनी से निकले १० सिद्ध होवे पृथ्वी पानी के निकले ४ सिद्ध होवे वनस्पति के निकले ६ सिद्ध होवे, + मनुष्य गति के आये २० सिद्ध होवे पुरुष के आये २० स्त्री के आये १० सिद्ध होवे देवगति के

+ विकलेन्द्रि असंज्ञी पंचेन्द्रि के आये मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं परन्तु सिद्ध नहीं होते हैं

विशुद्ध, सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात चारित्र स्पर्श कर मोक्ष जाय तीर्थंकर तो सामायिक सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात या तीनों चारित्र को स्पर्श कर मोक्ष जाते हैं ८ बुद्धिद्वार—प्रत्येक बुद्ध, बुद्ध बोधित और स्वयं बुद्ध तीनों सिद्ध होते हैं ९ ज्ञान द्वार—वर्तमान आश्रिय एक केवल ज्ञान कर मोक्ष जावे पूर्वानुभव आश्रिय कोई मति श्रुति केवल ज्ञान कर मोक्ष जाय, कोई मति श्रुति अवधि केवल ज्ञान कर मोक्ष जाय, और कोई मति श्रुति अवधि मनःपर्यव केवल ज्ञान कर मोक्ष जावे, तीर्थंकर तो पांचों ज्ञान प्राप्त कर सिद्ध होते हैं, १० अवगाहना द्वार—जघन्य दो हाथ की उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की अवगाहनावाला सिद्ध होवे तीर्थंकर की तो जघन्य ७ हाथ की उत्कृष्ट ५०० धनुष्य की अवगाहना होती है ११ उत्कृष्ट द्वार—सम्यक्त्व प्राप्त हुए बाद पडवाइ हो कर कितनेक अनंत काल [देश कम आधा पुद्गल परावर्तन] संसार परिभ्रमण कर सिद्ध होवे कितनेक असंख्यात काल संसार परिभ्रमण कर सिद्ध होवे कितनेक संख्यात काल संसार परिभ्रमण कर सिद्ध होवे और कितनेक पडवाइ बिन हुए सिद्ध होजाते हैं १२ अन्तर द्वार—मोक्ष में जीवों जाने का विरह जघन्य अन्तर महूर्त का उत्कृष्ट ६ महिने का होता है १३ अणुसमय द्वार—जघन्य दो समय निरन्तर सिद्ध होवे उत्कृष्ट आठ समय पर्यंत निरन्तर सिद्ध होवे आगे अन्तर जरूर ही पडे १४ गण द्वार—एक समय में जघन्य एक सिद्ध होवे उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होवे + और १५ अल्पा बहुत्व द्वार—एक ही वक्त में दो तीन आदि सिद्ध हुवे वे सब से

+ श्री ऋषभ देवजीने दश हजार साधु के साथ संथारा किया जिस में से १०८ अभीच नक्षत्र में सिद्ध हुवे ऐसा कहते हैं

केवलणाणंच, परंपर सिद्ध केवलणाणं च ॥ से किंत अणंतर सिद्ध केवलणाणं ?

केवल ज्ञानी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—जिन को सिद्ध हुवे एक समय हुवा वे अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञानी और जिन सिद्ध को हुवे दो आदि अधिक समय हुवे वे परम्परा सिद्ध केवल ज्ञानी अब सिद्ध स्वरूप को पहचान कराने आठ द्वार कहते हैं–१ आस्तिकद्वार, २ द्रव्यद्वार, ३ क्षेत्र द्वार, ४ स्पर्शद्वार ५ कालद्वार, ६ अन्तरद्वार, ७ भावद्वार, और ८ अल्पाबहुत्वद्वार ॥ इन आठ द्वारों में से एकेकद्वार के ऊपर—१ क्षेत्रद्वार, २ कालद्वार, ३ गतिद्वार, ४ वेदद्वार ५ लिंगद्वार, ६ चारित्रद्वार, ७ प्रत्येक बुद्धिद्वार ८ बुद्धद्वार, ९ ज्ञानद्वार, १० अवगाहनाद्वार, ११ उत्कृष्ट द्वार, १२ अंतरद्वार, १३ अनुसमयद्वार, १४ गण (संख्या) द्वार, और १५ अल्पाबहुत्वद्वार यह १५ १५ द्वार उतारे जाते हैं प्रथम आस्तिक द्वार अर्थात् सिद्ध भगवंत की आस्ति है, परन्तु आकाश कुसुमवत् नास्ति नहीं है इस पर यह १५ द्वार उतराते है १ क्षेत्र द्वार क्षेत्र से अढाइ द्वीप के १५ कर्म भूमी के क्षेत्र में से सिद्ध होते हैं और हरन करण आश्रिय दो समुद्र तथा अकर्म भूमी अन्तर द्वीप के क्षेत्र में से भी सिद्ध होते हैं ऊर्ध्वदिशा में पण्डगवनादिसे सिद्ध होते हैं अधोदिशा में अधोगामिनी विजय में से तथा हरण आश्रिय कुवनादि में से भी सिद्ध होता हैं + २ कालद्वार—सिद्ध उत्सर्पिणी काल के तीसरे आरे उतरती वक्त चौथा

+ तीर्थंकर का हरण होता ही नहीं है

आरा पूर्ण और पांचवा आरा बैठती वक्त सिद्ध होवें ✿ और अवसर्पिणी कालका दूसरा आराका जन्मा हुआ तीसरे आरे में मोक्ष जावे तीसरे आरे पूरे में मोक्ष गमन होवे और तीसरा आरा का जन्मा चौथे आरे में मोक्ष जावे आगे मोक्ष गमन बंध और तीर्थंकर का जन्म तो तीसरे आरे के ३ वर्ष ८॥ महिने रहे होगा तेवीस तीर्थंकर तीसरे आरे में होवे ३ गतिद्वार—फक्त एक मनुष्य की ही गति स निकला हुआ सिद्ध होता है अन्य गति से सिद्ध नहीं होता है तथा प्रथम की चार नरक पृथ्वी पानी वनस्पति संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य और चारों जाति के देवता इन के निकल मनुष्य होकर सिद्ध होवे ४ वेदद्वार—वर्तमान काल की अपेक्षा अपगत [वेद विकार का क्षय कर] सिद्ध होवे अनुभव आश्रिय तीनों वेदवाले सिद्ध होवे, ५ तीर्थद्वार पुरुष तीर्थंकर तथा स्त्री तीर्थंकर दोनों ही सिद्ध होवे ६ लिंगद्वार—द्रव्य से स्वलिंगी अन्य लिंगी गृहलिंगी तीनों सिद्ध होवे और भाव से एक स्वलिंगी ही सिद्ध होवे ७ चारित्र द्वार—वर्तमान काल आश्रिय तो एक यथाख्यात चारित्र से सिद्ध होवे पूर्वानुभव आश्रिय-कोई सामायिक सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात स्पर्श कर मोक्ष जाय, कोई सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात चारित्र स्पर्श कर मोक्ष जाय और कोई सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहार

✿ तीसरे आरे के ३ वर्ष ८॥ महिने बाकी थे तब प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव भगवान मोक्ष गये चौथे आरे में तेवीस तीर्थंकर हुए यावत चौथे आरे के ३ वर्ष ८॥ महिने बाकी रहे तब चौबीसवें तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामीजी मोक्ष गये पांचवें आरे में चौथे आरे के जन्मे सुधर्मास्वामीजी जम्बूस्वामीजी मोक्ष गये

केवलणाणंच, परंपर सिद्ध केवलणाणं च ॥ से किंत अणंतर सिद्ध केवलणाणं ?

केवल ज्ञानी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—जिन को सिद्ध हुवे एक समय हुवा वे अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञानी और जिन सिद्ध को हुवे दो आदि अधिक समय हुवे वे परम्परा सिद्ध केवल ज्ञानी अब सिद्ध स्वरूप को पहचान कराने आठ द्वार कहते हैं-१ आस्तिकद्वार, २ द्रव्यद्वार, ३ क्षेत्र द्वार, ४ स्पर्शद्वार ५ कालद्वार, ६ अन्तरद्वार, ७ भावद्वार, और ८ अल्पाबहुत्वद्वार ॥ इन आठ द्वारों में से एकेकद्वार के ऊपर—१ क्षेत्रद्वार, २ कालद्वार, ३ गतिद्वार, ४ वेदद्वार ५ लिंगद्वार, ६ चारित्रद्वार, ७ प्रत्येक बुद्धिद्वार ८ बुद्धद्वार, ९ ज्ञानद्वार, १० अवगाहनाद्वार, ११ उत्कृष्ट द्वार, १२ अंतरद्वार, १३ अनुसमयद्वार, १४ गण (संख्या) द्वार, और १५ अल्पाबहुत्वद्वार यह १५ १५ द्वार उतारे जाते हैं प्रथम आस्तिक द्वार अर्थात् सिद्ध भगवंत की आस्ति है, परन्तु आकाश कुसुमवत् नास्ति नहीं है इस पर उक्त १५ द्वार उतराते हैं-१ क्षेत्र द्वार क्षेत्र से अढाइ द्वीप के १५ कर्म भुमी के क्षेत्र में से सिद्ध होते हैं और हरन करण आश्रिय दो समुद्र तथा अकर्म भूमी अन्तर द्वीप के क्षेत्र में से भी सिद्ध होते हैं उर्ध्वदिशा में पण्डगवनादि से सिद्ध होते हैं अधोदिशा में अधोगामिनी विजय में से तथा हरन आश्रिय भुवनादि में से भी सिद्ध होता हैं + २ कालद्वार—सिद्ध उत्सर्पिणी काल के तीसरे आरे उतरती वक्त चौथा

+ तीर्थङ्कर का हरण होता ही नहीं है

तंजहा—पढम समय अजोगी भवत्थ केवलणाण, अपढम समय अजोगी भवत्थ केवलणाणं, अहवा चरिम समय अजोगी भवत्थ केवलणाण च, अचरिम समय अजोगी भवत्थ केवलणाणच, से त अजोगी भवत्थ केवलणाण॥ १८ ॥ से किं त सिद्ध केवलणाणं ? सिद्ध केवलणाण दुविहं पण्णत्त तंजहा—अणंतर सिद्ध

जिन केवल ज्ञानी के सयोगी अवस्था का एक ही समय बाकी रहा है वे चरिम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और जिन के एक समय से अधिक काल सयोगी अवस्था का रहा हो वे अचरिम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी यह सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के भेद हुवे अहो भगवन् ! अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ जिन को अयोगी हुवे एक समय हुवा वे प्रथम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और २ जिन को अयोगी हुवे दो आदि अधिक समय हुवे वे अप्रथम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी अथवा जिन के अयोगी अवस्था (चौदवे गुणस्थान) का एक ही समय बाकी रहा है वे चरिम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और जिन के अयोगी अवस्था (चौदवे गुणस्थान] का दो आदि अधिक समय बाकी रहे वे अचरिम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी यह अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के भेद हुवे ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध केवल ज्ञानी के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! सिद्ध

भवत्थ केवलणाणच ॥ से किं त सजोगी भवत्थ केवलणाण ? सजोगी भवत्थ केवलणाण दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पढम समय सजोगी भवत्थ केवलणाण, अपढम - समय सजोगी भवत्थ केवलणाण, अहवा चरम समय सजोगी भवत्थ केवलणाण च अचरम समय सजोगी भवत्थ केवलणाण च सेत सजोगी भवत्थ केवलणाण से किं त अजोगी भवत्थ केवलणाण ? अजोगी भवत्थ केवलणाण दुविहं पण्णत्तं

इन का सर्वांश क्षय कर केवल ज्ञान की प्राप्ति की है सो और २ सिद्ध का केवल ज्ञान सो जिनोंने आठों ही कर्मों का सर्वांश क्षय कर जो लोकाग्र भाग में सिद्ध अवस्था को प्राप्त हुवे हैं उन का केवल ज्ञान अहो भगवन् ! भवस्थ केवल ज्ञान के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान सो तेरवे गुणस्थानवर्ती मन वचन काया के योगों के रहे सम्बन्ध को क्षय करने शुभ योग की प्रवर्ती करे वे और २ अयोगी भवस्थ केवली जो चौदवे गुणस्थानवर्ती तीनों योग रहित शैलेशी अवस्थावाले अहो भगवन् ! सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—जिन को केवल ज्ञान प्राप्त हुवे एक ही समय हुवा वे प्रथम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और २ जिन को केवल ज्ञान उत्पन्न हुवे दो समय आदि अधिक काल हुवा वे अप्रथम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी अथवा

तजहा—पढम समय अजोगी भवत्थ केवलणाण, अपढम समय अजोगी भवत्थ केवलणाणं, अहवा चरिम समय अजोगी भवत्थ केवलणाण च, अचरिम समय अजोगी भवत्थ केवलणाणच, से त अजोगी भवत्थ केवलणाणं॥ १८ ॥ से किं त सिद्ध केवलणाणं ? सिद्ध केवलणाण दुविह पण्णत्त तजहा—अणतर सिद्ध

जिन केवल ज्ञानी के सयोगी अवस्था का एक ही समय बाकी रहा है वे चरिम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और जिन के एक समय से अधिक काल सयोगी अवस्था का रहा हो वे अचरिम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी यह सयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के भेद हुवे अहो भगवन्! अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी किसे कहते हैं! अहो गौतम! अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ जिन को अयोगी हुवे एक समय हुवा वे प्रथम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और २ जिन को अयोगी हुवे दो आदि अधिक समय हुए वे अप्रथम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी अथवा जिन के अयोगी अवस्था (चौदवे गुणस्थान) का एक ही समय बाकी रहा है वे चरिम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी और जिन के अयोगी अवस्था [चौदवे गुणस्थान] का दो आदि अधिक समय बाकी रहे वे अचरिम समय अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी यह अयोगी भवस्थ केवल ज्ञानी के भेद हुवे ॥ १८ ॥ अहो भगवन्! सिद्ध केवल ज्ञानी के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! सिद्ध

पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णाए अतरदीवगेसु, सण्णीपं पाचिंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ, तंचेव विउलमइ अड्ढाइज्जेहिं अगुलेहिं अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतर खेत्तं जाणइ पासइ, कालओण उज्जुमइ जहण्णेण पलिओवमस्स असखिज्जइभाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असखिज्जइभाग अतीय मणागयं वा कालं वा जाणइ पासइ, तचेव विउलमइ अब्भहिय तरागं विसुद्धतराग वितिमिरतरागं जाणइ पासइ, भावओण उज्जुमइ अणतेभावे

विशुद्ध विस्तार से जाने देखे २ क्षेत्र से-ऋजुमति नीचे रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर का प्रतर उस के नीचे छोटा प्रतर जहां समभूतल में मेरु के मध्य में आठ रुचक प्रदेश हैं वहां दो प्रदेश की चौडी चारों दिशा में विस्तारित और एक ऊपर का तथा एक नीचे का यों ६ दिशा निकली है वहां से लगाकर ऊपर देखे तो ९०० योजन ज्योतिषी चक्र पर्यंत नीचे का ऊपर का मिलाकर १९०० योजन देखे नीचा देखे तो हजार योजन अधोगामिनी विजय पर्यंत और तिरछा देखे तो पैंतालीस लाख योजन अढाइ द्वीप दो समुद्र मनुष्य क्षेत्र, पंदरे कर्मभूमि, तीस अकर्मभूमि, छप्पन अन्तर द्वीप इत्यादि क्षेत्रों में का सज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य तिर्यंच पर्याप्त हैं उन के मन के भाव जाने देखे और विपुलमति इस से अढाइ अंगुल अधिक तथा चक्र प्रमाने विस्तार से जाने देखे इस ज्ञान का उत्थान आठों दिशा में चमत्कार कहा है

आणइ पासइ सव्वभावाण अणत भाग आणइ पासइ तचेव विउलमइण अब्भहियतरागं विउलतराग विसुद्धतराग आणइ पासइ ॥ मणपज्जवणाण पुण जण मण परिचिंतिअत्थ पागडण माणुसखित्त निबद्धं गुण पच्चइय चरित्तवओ सेत्त मणपज्जवणाण ॥ १७ ॥ से किं त केवलणाणं ? केवलणाण दुविह पण्णत्त तंजहा भवत्थ केवलणाणं च, सिद्ध केवलणाण च ॥ से किं त भवत्थ केवलणाण ? भवत्थ केवलणाण च दुविहे पण्णत्ते तजहा—सजोगी भवत्थ केवलणाणं, अजोगी

१ काल से पल्योपम के असंख्यातवे भाग काल जितनी भूतकाल की तथा भविष्य काल की बात को जाने देखे ऋजुमति की अपेक्षा से विपुलमति अधिक विशुद्धता पूर्वक जाने देखे और ४ भाव से ऋजुमति अनंत द्रव्य के वर्णादि के अनंत पर्याय मनोमय परिणमे पुद्गलों को जाने देखे सर्व भाव का जाननेवाला केवल ज्ञान से अनंतवे भाग जाने देखे, विपुलमति ऋजुमति की अपेक्षा विस्तार से विशुद्धता पूर्वक जाने देखे इस लिये मनःपर्यव ज्ञान करके संज्ञी लोक के मन के चिन्तवन किये भाव को जाने उसे मनःपर्यव ज्ञान जानना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! केवल ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! केवल ज्ञान के दो भेद कहे हैं—१ भवस्थ केवल ज्ञान सो मनुष्य के भव में रहे प्राणीने संयम तप ध्यानादि कर चार घन घातिक कर्म [१ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ मोहनीय और ४ अन्तराय]

पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णए अंतरदीवगेसु, सण्णीणं पचिंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ, तच्चेव विउलमइ अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतर खेत्तं जाणइ पासइ, कालओण उज्जुमइ जहण्णेण पलिओवमस्स असंखिज्जइभाग उक्कोसेणंवि पलिओवमस्स असंखिज्जइभाग अतीय मणागय वा कालं वा जाणइ पासइ, तंचेव विउलमइ अब्भहियतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ, भावओण उज्जुमइ अणंतेभावे

विशुद्ध विस्तार से जाने देखे २ क्षेत्र से-ऋजुमति नीचे रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर का प्रतर उस के नीचे क्षोद्र प्रतर यहां समभूतल में मेरु के मध्य में आठ रुचक प्रदेश हैं वह दो प्रदेश की चौड़ी चारों दिशा में विस्तारित और एक ऊपर का तथा एक नीचे का यों ६ दिशा निकली है यहां से लगाकर ऊपर देखे तो ९०० योजन ज्योतिषी चक्र पर्यंत नीचे का ऊपर का मिलाकर १९०० योजन देखे नीचा देखे तो हजार योजन अधोगामिनी विजय पर्यंत और तिरछा देखे तो पैंतालीस लाख योजन अढाइ द्वीप दो समुद्र मनुष्य क्षेत्र, पंदरे कर्मभूमि, तीस अकर्मभूमि, छप्पन्न अन्तर द्वीप इत्यादि क्षेत्रों में जो संज्ञी पचेन्द्रिय मनुष्य तिर्यंच पर्याप्त हैं उन के मन के भाव जाने देखे और विपुलमति इस से अढाइ अंगुल अधिक तथा एक प्रमाने विस्तार से जाने देखे इस ज्ञान का संस्थान आठों दिशा में पलाकार करा है

तंजहा—उज्जुमई्य विउलमई्य ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ तत्थ दव्वओणं उज्जुमईणं अणंते अणंत पएसिए खंध जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ, खेत्तओणं उज्जुमईअ जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिम हेट्ठिल्ल खुड्डग पयरे, उड्ढं जाव जोइसस्स, उवरिमतले, तिरियं जाव अंतो मणुस्सक्खित्ते अड्ढाइज्जसुदीव समुद्देसु

१ ऋजुमति और २ विपुलमति इस में ऋजुमतिवाला तो सामान्यपनें वस्तु का स्वरूप जानता है जैसे किसीने मन में घड़ा धारा हो तो वह घड़ा ही जान सकता है और अढाइ द्वीप में अढाइ अंगुल कम क्षेत्र जानता है विपुलमति-विस्तार से समझता है जैसे—किसीने मन में घड़ा धारण किया तो वह जानेगा कि यह घड़ा—१ द्रव्य से मृत्तिका का या धातु का २ क्षेत्र से पाडली पुरादि ग्राम का ३ काल से शीत उष्णादि कालका बना और ४ भाव से दुग्ध घृतादि धारण करने वाला है इत्यादि विस्तारयुक्त जाने और सम्पूर्ण अढाइ द्वीप का जाने, इस मनःपर्यव ज्ञान के संक्षेप से चार भेद कहे हैं यथा—१ द्रव्य से २ क्षेत्र से, ३ काल से और ४ भाव से इस में ऋजुमति द्रव्य से अनंत अनंत प्रदेशिक स्कन्धपने परिणमे मनोमय पुद्गलों का समुदाय जाने, वैसे ही विपुलमति ऋजुमति की अपेक्षा कर निर्मल

अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठी पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उववज्जइ किं इड्डीपत्त अप्पमत्त संजय सम्मद्दिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्म॰ भूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण अणिड्डीपत्त अप्पमत्त संजय सम्मद्दिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण ? गोयमा ! इड्डीपत्त अप्पमत्त संजय सम्मद्दिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण उववज्जइ नो अणिड्डीपत्त अप्पमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण मणपज्जवणाण समुप्पज्जइ ॥ १९ ॥ तंच दुविहं उप्पज्जइ

लब्धि वालेको नहीं होता है अर्थात्—१ लब्धिवंत, २ अप्रमादि, ३ संयति ४ सम्यक् दृष्टी, ५ पर्याप्त, ६ संख्यात वर्षायुवाला, ७ कर्मभूमि, ८ गर्भज और ९ मनुष्य इन नव गुनधारी जीवको मनःपर्यव ज्ञान की प्राप्ति होती है अन्य को नहीं होती है ॥ १९ ॥ इस मन पर्यव ज्ञान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—

वचन परिणमे, २ मधुभ्रम सदृश सम वचन परिणमे, २१ कोष्ठक बुद्धि-कोठार का धान्य विनाशे नहीं त्यों सुतार्थ धारन किया भूले नहीं, २२ पदानुसारीणी-एक पदानुसार सर्व सूत्र प्रकाशे, २३ बीज बुद्धि बीज के समान थोड़ा पढ़ा बहुत हो परिणमे, २४ आहारक शरीर की लब्धि, २५ तेजो लेश्या की लब्धि २६ पुलाक लब्धि, २७ वैक्रेय लब्धि, और २८ अक्षीण माणसीय लब्धि, जिस का स्पर्श करे वह अखूट हो जावे इन लब्धियों में से दो चार लब्धि के धारक कोई मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है

दिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण उप्पज्जइ किं संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंति मणुस्साणं, संजया संजय। सम्मदिट्ठी पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंति मणुस्साण ? गोयमा ! संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, णो असंजय सम्मदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो संजयासंजय सम्मदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय

दृष्टी को होता है कि सम मिथ्या (मिश्र) दृष्टी को होता है ? अहो गौतम ! सम्यग् दृष्टी को होता है परंतु मिथ्यात्व दृष्टी को और मिश्र दृष्टी को नहीं होता है ७ यदि अहो भगवन् ! सम्यक् दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभुमि गर्भज मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान होता है तो क्या संयति (साधु) को होता है, कि असंयति (गृहस्थ) को होता है कि संयतासंयति (श्रावक) को होता है ? अहो गौतम ! संयति को होता है परंतु असंयति और संयतासंयति को नहीं होता है ८ यदि अहो भगवन् ! संयति सम्यक् दृष्टी पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभुमि गर्भज मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान होता है तो क्या प्रमत्त संयति को होता है कि अप्रमत्त संयति को होता है ? अहो गौतम ! अप्रमत्त संयति को होता है परंतु प्रमत्त संयति को नहीं होता है, ९ यदि अहो भगवन् ! अप्रमत्त संयति सम्यक् दृष्टी पर्याप्त संख्यात वर्षायु

पजत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उववज्जइ अह पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उववज्जइ किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, मिच्छादिट्ठिय पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं सम्मामिच्छादिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो मिच्छदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं नो सम्मामिच्छदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमि गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं । जइ सम्म

संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को मन पर्यव ज्ञान होता है परन्तु असंख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को नहीं होता है ८ यदि अहो भगवन् ! संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है तो क्या पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को होता है कि अपर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को होता है ? अहो गौतम ! पर्याप्त गर्भज संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है परंतु अपर्याप्त को नहीं होता है ९ यदि अहो भगवन् ! गर्भज कर्मभूमि संख्यात वर्षायु पर्याप्त मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान होता है तो क्या सम्यग् दृष्टि को होता है कि मिथ्यात्व

४ आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोश्वास भाषा और मन यह छ पर्याय में प्रथम की तीन पर्याय बांधे बिना तो कोई मरता नहीं है बाकी ऊपर की चार पांच पर्याय बांधकर मरजावे वह अपर्याप्त और पूरी छवों पर्याय बांधे वह पर्याप्त आहार पर्याय का बंध एक समय में बाकी की पर्याय का बंध अंतर्मुहूर्त में होता है

मणुस्साय उवज्जइ असखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भ वक्कंतिय मणुस्साण उवज्जइ? गोयमा! सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो असखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्साण। जइ सखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण उवज्जइ किं पज्जत्तग सखिज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साणं, अपज्जत्तग सखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण? गोयमा! पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्म भूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्साण उवज्जइ नो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमग गब्भ-

मनुष्यको होता है कि अकर्मभूमिक मनुष्य को होता है कि अन्तर द्वीपके मनुष्य को होता है? अहो गौतम! कर्मभूमि के गर्भज मनुष्य का मन पर्यव ज्ञान होता है परंतु अकर्मभूमिके अन्तर द्वीप के मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान नहीं होता है ४ यदि अहो भगवन्! कर्मभूमि के मनुष्य का मन पर्यव ज्ञान होता है तो क्या संख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमि को होता है कि असंख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमि मनुष्य को होता है? अहो गौतम!

कहलाते हैं, उक्त तीनों कर्मों रहित जो कल्पवृक्ष से इच्छा पूर्ण करे वे हेमवय ऐरण्यवय हरिवास रम्यकवास देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्यों अकर्मभूमि कहलाते हैं और अकर्मभूमि जैसे ही लवण समुद्र के पानी पर अधर चुल्ल हेमवंत शिखरी पर्वत की दाढों पर रहनेवाले मनुष्यों अन्तर द्वीप के कहलाते हैं

२ भरत ऐरावत क्षेत्र में प्रथम दूसरे और कुछ कम तीसरे आरे के मनुष्यों असंख्यात वर्ष (पल्योपम) के आयुष्यवाले होते हैं और कुछ तीसरा चौथा पांचवा छठा आरा तथा महा विदेह क्षेत्र के मनुष्यों का संख्यात वर्ष का आयुष्य होता है

वक्कंतिय मणुस्साण उवज्जइ जइ पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतियमणुस्साण उवज्जइ किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, मिच्छदिट्ठिय पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण सम्मामिच्छदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण, नो मिच्छदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो सम्मामिच्छदिट्ठी पज्जत्तग संखिज्जवासाउय कम्मभूमि गब्भवक्कंतिय मणुस्साण । जइ सम्म-

संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को मन पर्यव ज्ञान होता है परंतु असंख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को नहीं होता है ५ यदि अहो भगवन् ! संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है तो क्या पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को होता है या अपर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को होता है ? अहो गौतम ! छ ही पर्याय से पर्याप्त गर्भज संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है परंतु अपर्याप्त को नहीं होता है ६ यदि अहो भगवन् ! गर्भज कर्मभूमि संख्यात वर्षायु पर्याप्त मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान होता है तो क्या सम्यग् दृष्टि को होता है कि मिथ्यात्व

५ आहार, शरीर इन्द्रिय श्वासोश्वास भाषा और मन यह छ पर्याय में प्रथम की तीन पर्याय बंधे बिना तो कोई मरता ही नहीं है बाकी ऊपर की चार पांच पर्याय बांधता मरजावे वह अपर्याप्त और पूरी छही पर्याय बांध के वह पर्याप्त आहार पर्याय का बन्ध एक समय में बाकी की पर्याय का बन्ध अन्तर्मुहूर्त में होता है

सेत ओहिनाण पच्चक्ख ॥ १५ ॥ से किं त मण पज्जवनाण ? मणपज्जवनाणेण

असंख्यात द्वीप समुद्र नीचा दूसरी नरक के चरमान्त तक, ब्रह्म लंतक देवलोक के देवता ऊपर अपने २ देवलोक की ध्वजा तक तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र, नीचे तीसरी नरक के चरमान्त तक महा शुक्र सहस्रार देवलोक के देव ऊपर अपने २ देवलोक की ध्वजा, तिरछे असंख्यात द्वीप समु नीचे चौथी नरक के चरमान्त तक आनत प्राणत आरन और अच्युत देवलोक के देव ऊपर अपने २ देवलोक की ध्वजा तिरछे असंख्यातद्वीप समुद्र नीचे पांचवी नरक के चरमान्त तक नवग्रैवेयक की त्रिक के देवता ऊपर अपने २ विमान की ध्वजा तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र, नीचे छठी नरक तक ऊपर की त्रिक के देव ऊपर अपने २ विमान की ध्वजा तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र, नीचे सातवी नरक का चरमान्त और पांच अनुत्तर विमान के देवता ऊपर तो अपने २ विमान की ध्वजा पर्यन्त देखे तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र पर्यन्त देखे और नीचे लोकनाल में किंचित कम देखे ॥ अब संस्थान कहते हैं—नारकी के जीव तिपाइ के आकार देखे भुवनपति पाला के आकार देखे वाणव्यन्तर पडह के आकार देखे ज्योतिषी झालर के आकार देखे बारा देवलोक के देव मृदंग के आकार देखे, ग्रैवेयक के देव फुल की चंगेरी के आकार देखे पांच अनुत्तर विमान के देव अवधिज्ञान करके कुंवारी के कंचुके आकार देखे मनुष्य तिर्यंच के अवधि ज्ञान का संस्थान जालीके आकार विविध प्रकार का होता है ॥ एक जीव को निरन्तर अवधिज्ञान रहे तो उत्कृष्ट छासट (६६) सागरोपम पर्यन्त रहे, फिर अवश्य पलटा होवे यह अवधि ज्ञान प्रत्यक्ष का कथन हुवा ॥ १८ ॥ अब मनःपर्यव ज्ञान का कथन करते हैं—१ अहो

भंते! किं मणुस्साणं उवज्जइ अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं उपज्जइ, नो अमणुस्साणं, जइ मणुस्साणं उवज्जइ किं समुच्छिम मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! नो समुच्छिम मणुस्साणं उप्पज्जइ, गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ॥ जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उपज्जइ किं कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो अकम्म भूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं नो अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं। जइ कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं उवज्जइ किं संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय

भगवन्! मनःपर्यव ज्ञान किसे उत्पन्न होता है? क्या मनुष्य को उत्पन्न होता है कि मनुष्य बिना दूसरे जीवों को उत्पन्न होता है? अहो गौतम! मनःपर्यव ज्ञान मनुष्य को ही उत्पन्न होता है परंतु मनुष्य बिना अन्य जीवों को उत्पन्न नहीं होता है २ अहो भगवन्! यदि मनुष्य को उत्पन्न होवे तो क्या समूर्च्छिम मनुष्य को होवे कि गर्भज मनुष्य को होवे? अहो गौतम! संमूर्च्छिम मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न नहीं होता है परंतु गर्भज मनुष्य को ही उत्पन्न होता है यदि अहो भगवन्! गर्भज मनुष्य को मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होता है तो क्या कर्मभूमिक

१ मनुष्य के उच्चारादि चौदा स्थान में सूक्ष्म शरीरवाले जो मनुष्य होते हैं, वे समूर्च्छिम मनुष्य कहे जाते हैं. और जो गर्भ से उत्पन्न होते हैं वे गर्भज मनुष्य कहलाते हैं

२ असि, मसि और कृषि इन तीनों कर उपजीविका करनेवाले भरत ऐरावत महाविदेह क्षेत्र के मनुष्यों कर्मभूमि

असंखिज्जाइ भाग जाणइ पासइ, उक्कोसण असंखिज्जाओ उसप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईय मणागयच काल जाणइ पासइ, भावओण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणवि अणत भावे जाणइ पासइ, सव्व भावाण अणत भाग जाणइ पासइ ॥ १४ ॥ (गाहा—) ओहि भव पच्चइओ, गुण पच्चईओय वण्णिओ ॥ दुविहो तस्स बहुविगप्पा, दव्वे खत्तेय कालेय भावेय ॥ १ ॥ नेरइअ देव तित्थ

असंख्यात उत्सर्पिनी अवसर्पिनी की अतीत काल की और अनागत काल की बात जाने देखे, और ४ भाव से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य पर्याय के अनंत भाव जाने देखे उत्कृष्ट अनंत भाव को जाने देखे जो केवल ज्ञानी सर्व भाव को जानते देखते हैं उस का अनंतवा भाग को अवधि ज्ञानी जानता देखता है ॥ १४ ॥ अब पीछे कहे सब द्वारों गाथा कर कहते हैं—अवधिज्ञान के दो प्रकार कहे तद्यथा १भवप्रत्यय, और २ गुणप्रत्यय यहां से लगाकर उस के बहुत विकल्प यावत् द्रव्य क्षेत्र काल भाव पर्यंत कहे ॥ १ ॥ नारकी देवता और तीर्थंकर का अवधिज्ञान बाह्य होता है, जिस से वे सब रूपी पदार्थों को जानते देखते हैं और बाकी के सब जीवों देश से देखते हैं अर्थात् तीर्थंकर भगवत जो गर्भवास में रहे हुवे भी आत्मा के सब बाहिर के प्रदेश कर जानते देखते हैं, इसलिये सब से कहा जाता है और

कराय, ओहिस्स बाहिराबुति ॥ पासति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासति ॥ २ ॥ शेष का देश से अवधिज्ञान कहा है यह कथन यहां विस्तार से कहते हैं—१ रत्नप्रभा नरक का ज्ञान जघन्य साढातीन कोश उत्कृष्ट चार कोश २ शर्करप्रभा में जघन्य तीन कोश उत्कृष्ट साढे तीन कोश ३ वालुप्रभा में जघन्य अढाइ कोश उत्कृष्ट तीन कोश, ४ पंकप्रभा में जघन्य दो कोश उत्कृष्ट अढाइ कोश ५ धूम्रप्रभा में जघन्य डेढ [१॥] कोश, उत्कृष्ट दोकोश, ६ तमप्रभा में जघन्य एक कोश उत्कृष्ट डेढ कोश, और ७ तमतमा प्रभा में जघन्य आधा कोश उत्कृष्ट एक कोश अवधि ज्ञान कर देखे यह नरक आश्रिय कहा अब देवता आश्रिय कहते हैं—भुवनपति देवता में जो असुरकुमारकी जाति के देव दश हजार वर्ष के आयुष्यवाले हैं व जघन्य पचीस योजन उत्कृष्ट संख्यात द्वीप समुद्र देखे और सागरोपम के आयुष्यवाले उत्कृष्ट असंख्यात द्वीप समुद्र देखे नाग कुमारादि नव जाति के देवता जघन्य पचीस योजन उत्कृष्ट संख्यात द्वीप समुद्र देखे वाणव्यन्तर देव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट संख्यात द्वीप समुद्र देखे ज्योतिषी देवता जघन्य भी उत्कृष्ट भी संख्यात ही द्वीप समुद्र देखे सौधर्म ईशान देवलोक के देव जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग देखे, क्यों कि पीछे के भव से भी यह अवधिज्ञान साथ लेकर जब आते हैं तब अपर्याप्त अवस्था में भी होता है इस अपेक्षा और उत्कृष्ट ऊपर तो अपने देवलोक की ध्वजा पताका तक, तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र और नीचे पहिली नरक के नीचे के चरमान्त तक, ज्ञान देखे सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक के देवता ऊपर अपने२ देवलोक की ध्वजा तक, तिरछा

असंखिज्जाइ भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असंखिज्जाओ उसप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईय मणागयच काल जाणइ पासइ, भावओण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणवि अणत भावे जाणइ पासइ, सव्व भावाण अणत भाग जाणइ पासइ ॥ १४ ॥ (गाहा–) ओहि भव पच्चइओ, गुण पच्चईओय वण्णिओ ॥ दुविहो तस्स बहुविगप्पा, दव्वे खेत्तेय कालेय भावेय ॥ १ ॥ नेरइअ देव तित्थ

असंख्यात उत्सर्पिनी अवसर्पिनी की अतीत काल की और अनागत काल की बात जाने देखे, और ४ भाव से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य वर्णादि के अनंत भाव जाने देखे उत्कृष्ट अनंत भाव को जाने देखे जो केवल ज्ञानी सर्व भाव को जानते देखते हैं उन का अनंतवा भाग को अवधि ज्ञानी जानता देखता है ॥ १४ ॥ अब पीछे कहे सब द्वारों गाथा कर कहते हैं—अवधिज्ञान के दो प्रकार कहे तद्यथा १ भवप्रत्यय, और २ गुणप्रत्यय यहां से लगाकर उस के बहुत विकल्प यावत् द्रव्य क्षेत्र काल भाव पर्यंत कहे ॥ १ ॥ नारकी देवता और तीर्थंकर का अवधिज्ञान बाह्य होता है, जिस से वे सब रूपी पदार्थों को जानते देखते हैं और बाकी के सब जीवों देश से देखते हैं अर्थात् तीर्थंकर भगवत तो गर्भवास में रहे हुवे भी आत्मा के सब शरीर के प्रदेश कर जानते देखते हैं, इसलिये सब से कहा जाता है और

णाण ? अपडिवाइ जण अलोगस्स एगमवि आगास पएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिणाण, से त अपडिवाइ ओहिनाण ॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त तजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ भावाओ ॥ तत्थ दव्वओ ओहिनाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूवि दव्वाइ जाणइ पासइ, खेत्तओण ओहिनाणी जहण्णेण अगुलस्स असखिज्जइ भाग जाणइ पासइ,उक्कोसेण असखिज्जाइ अलोगलोग पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ, कालओण ओहिनाणी जहण्णेण आवलिआए

अवधि ज्ञान उत्पन्न होकर उस से संपूर्ण लोक और अलोक का एक भी आकाश प्रदेश देख सका है वह अवधि ज्ञान अपडवाइ होता है अर्थात् पीछा नहीं जाता है अवधि ज्ञान के चार भद कहे हैं तद्यथा—१ द्रव्य से २ क्षेत्र से, ३ काल से, और ४ भाव स इस में द्रव्य से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य अंगुल के असख्यातवे भाग द्रव्य को जाने देखे, उत्कृष्ट सब रूपी द्रव्य को जाने देखे २ क्षेत्र स अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य अगुल क असख्यातवे भाग क्षेत्र जाने देखे, उत्कृष्ट अलोक में अलोक के लोक प्रमाने असख्यात खंड होवो जाने देखे, ३ काल से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य आवलिका के असख्यातवे भाग जितन काल की बात आगे पीछे देख, की जान देख, उत्कृष्ट

धणुवा, धणुपुहुत्तवा गाउयवा, गाउयपुहुत्तवा जोयणवा जोयण पुहुत्तवा, जोयणसयवा, जोयण सयपुहुत्तवा जोयण सहस्सवा जोयण सहस्स पुहुत्तवा जोयण लक्खवा, जोयण लक्ख पुहुत्तवा जोयण कोडिवा जोयणकोडिपुहुतवा, जोयण कोडाकोडिवा जोयणकोडा कोडि पुहुत्तवा, जोयण कोडाकोडी सखिज्जवा जोयण कोडाकोडी असखिज्जवा उक्कोसेण लोगवा पासित्ताण पडिवएज्जा से त पडिवाइ आहिनाण ॥१३॥ से किं त अपडिवाइ ओहि

प्रमाने देखे ९ यव प्रमाने देखे १० पृथक्त्व यव प्रमाने देखे, ११ अंगुल प्रमान देखे, १२ पृथक्त्व अंगुल प्रमान देखे १३ वेंत प्रमाने देखे, १४ पृथक्त्व वेंत प्रमान देखे १५ हाथ प्रमान देखे १६ पृथक्त्व हाथ प्रमाने देखे, १७ कुक्षि प्रमान देखे १८ पृथक्त्व कुक्षि प्रमाने देखे १९ धनुष्य प्रमाने देखे २ पृथक्त्व धनुष्य प्रमाने देखे २२ योजन प्रमाने देखे २३ पृथक्त्व योजन प्रमान देखे, २४ सो योजन देखे, सो योजन पृथक्त्व देखे २५ हजार योजन देखे, २६ पृथक्त्व हजार योजन प्रमाने देखे २७ लाख योजन देखे, २८ पृथक्त्व लाख योजन देखे २९ क्रोड योजन देखे ३ पृथक्त्व क्रोड योजन देखे ३१ क्रोडाक्रोड योजन देखे ३२ पृथक्त्व क्रोडाक्रोड योजन प्रमान देखे ३३ संख्यात क्रोडाक्रोड योजन प्रमान देखे, ३४ असंख्यात क्रोडाक्रोड योजन प्रमाने क्षेत्र देखे ३५ उत्कृष्ट सम्पूर्ण लोक प्रमाणे क्षेत्र देखे और क्षीण मात्र में तत्काल ज्यों वायु से दीपक बुझ जाता है त्यों वह ज्ञान नाश पा जावे, उसे पडवाइ अवधि ज्ञान कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! अपडवाइ अवधि ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! अपडवाइ

णाण ? अपडिवाइ जेण अलोगस्स एगमवि आगास पएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ आहिणाण, से त अपडिवाइ ओहिनाण ॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त तजहा—दव्वओ, खत्तओ, कालओ भावाओ ॥ तत्थ दव्वओ आहिनाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्याइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूवि दव्वाइ जाणइ पासइ, खेत्तओण ओहिनाणी जहण्णण अगुलस्स असखिज्जइ भाग जाणइ पासइ,उक्कोसेण असखिज्जाइ अलोगलोग पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ, कालओण ओहिनाणी जहण्णेण आवलिआए

अवधि ज्ञान उत्पन्न होकर उस से संपूर्ण लोक और अलोक का एक भी आकाश प्रदेश देख सका है, यह अवधि ज्ञान अपडवाइ होता है अर्थात् पीछा नहीं जाता है अवधि ज्ञान के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ द्रव्य से २ क्षेत्र से, ३ काल से, और ४ भाव से इस में द्रव्य से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग द्रव्य को जाने देखे, उत्कृष्ट सर्व रूपी द्रव्य को जाने देखे २ क्षेत्र से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग क्षेत्र जाने देखे, उत्कृष्ट अलोक में अलोक के लोक प्रमाने असंख्यात खंड होतो जाने देखे, ३काल से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान कर जघन्य आवलिका के असंख्यातवे भाग जितने काल की बात जान पीछे देखे, की जान देख, उत्कृष्ट

होइ कालो तओ सुहमयरय हवइ खित्तं॥ अंगुलसेढीमित्ते उसप्पिणिओ असंखिज्जा॥८॥
सेत्तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं ॥११॥ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं? हीयमाणं ओहिनाणं
अप्पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स संकिलिस्स

वृद्धि की भजना होती है अर्थात् वृद्धि होवे तथा नहीं भी होवे * ॥ ७ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की सूक्ष्म बादर की अल्पाबहुत्व—१ सब से बादर काल समय आवलिकादि जानना, २ उस से सूक्ष्म क्षेत्र, क्यों कि—एक अंगुल जितने क्षेत्र में जितने आकाश प्रदेश हैं उस में से समय २ एकक हरन करते असंख्याती सर्पनी उत्सर्पनी व्यतिक्रान्त हो जाय इतना क्षेत्र सूक्ष्म है ३ क्षेत्र से द्रव्य सूक्ष्म क्यों कि एकक प्रदेश पर अनंत प्रदेशी स्कन्ध अनंत हैं और ४ द्रव्य से पर्याय सूक्ष्म क्यों कि परमाणु आदिक में वर्णादि की पर्याय अनंत है यह वर्धमान अवधि ज्ञान का भेद कहा॥११॥अहो भगवन् ! हायमान अवधि ज्ञान किसे कहते हैं? अहो गौतम! हायमान अवधि ज्ञान वर्धमान अवधि ज्ञान से उलट जानना अर्थात् अप्रशस्त अध्यवसाय (खराब मन के परिणाम) कर जो अवधि ज्ञाना परिणाम के स्थानक वृद्धि पाते थे व ही न पावे चारित्र के परिणाम विशुद्ध होते थे मलीन होवे

* द्रव्य से परमाणु आदि ग्रहण करना और भाव से वर्णादि की पर्याय जानना एक आकाश प्रदेश पर अनंत प्रदेशिक स्कन्ध ठहर सकता है और एक परमाणु में अनंत गुन कृष्ण वर्ण कालो आदि पर्याय पाती है.

माण चरित्तस्स सव्वओसमता ओहीणाण परिहीयइ, से तं हायमाणय ओहिणाण॥ ११२॥ से किं तं पडिवाइ ओहिनाण? पडिवाइ ओहिणाण जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ भागवा संखिज्जय भागवा, वालग्गवा, वालग्ग पुहुत्तवा लिक्खवा, लिक्खपुहुत्तवा, जूयवा, जूयपुहुत्तवा, जववो, जवपुहुत्तवा अंगुलवा, अंगुलपुहुत्तवा पाउवा, पाउपुहुत्तवा विहत्थिवा, विहत्थिपुहुत्तवा, रयणिवा, रयणिपुहुत्तवा, कुत्थिवा, कुत्थिपुहुत्तवा,

तब फिर उन अध्यवसाय की हानी होवे २ और अप्रशस्त की वृद्धि होवे २ जो प्रथम निर्मल परिणाम कर निर्मल चारित्र के पर्याय कर अवधि ज्ञान प्राप्त किया था उस विस्तीर्ण दिशा विदिशा में बहुत योजन देखने जैसा अवधि ज्ञान उत्पन्न हुवा था वह हानि पाने लगा यों कमी २ होता जावे वह हायमान अवधि ज्ञान ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! पडवाइ अवधि ज्ञान किसे कहते हैं? अहो गौतम! पडवाइ अवधि ज्ञान उत्पन्न होवे जैसे दीपक का प्रकाश होवे द्रव्यादि देखाता है वैसे जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सम्पूर्ण लोक प्रमाणे क्षेत्र देखता है और जैसे वह दीपक हवा क झपाटेसे बुझ जावे तैसे १ जो अवधि ज्ञानी अवधी ज्ञान कर प्रथम अंगुल के असंख्यातवे भाग देखे, २ फिर अंगुल के संख्यातवे भाग देखे ३ फिर वालाग्र प्रमाने देखे ४ फिर पृथक्त्व वालाग्र प्रमाने देखे, यों यवता २, ५ लीख प्रमाने देखे, ६ पृथक्त्व लीख प्रमाने देखे, ७ जूंका प्रमाने देखे, ८ पृथक्त्व जूका

दिवसतो गाउयमि बोधव्वो, जोयण दिवसपुहत्त, पक्खतो पणवीसाओ ॥४॥ भरहमि अद्धमासो, जम्बूदीवमि साहिआ मासो ॥ वास च मणुयलोए, वास पुहत्त च रुयगमि ॥ ५ ॥ सांखिज्जामिट्ठकाल, दीव समुद्दावि हुति ॥

के एक जीव के शरीर के प्रदेश हैं उतने खण्डे लोक जितने बडे २ अलोक में होवे तो अवधिज्ञान कर उत्कृष्ट देख सकता है॥अब अवधिज्ञान से देखनेका कालका और क्षेत्र से विचार करते हैं-जो अवधिज्ञानी क्षेत्र से अंगुल के असंख्यात वे भाग क्षेत्र जाने देखे वह काल २ से आवलिकाके असंख्यातवे भाग की बात आगे की पीछे की जाने देखे २ जो क्षेत्रसे अंगुल के संख्यातवे भाग क्षेत्र जाने देखे वह काल से आवलिकाके संख्यातवे भाग जितने कालकी आगे पीछेकी बात जाने देखे, ३ जो क्षेत्र से एक अंगुल क्षेत्र जाने देखे वह काल से आवलिका में कुच्छ कमी काल की बात जाने देखे, ४ जो क्षेत्र से पृथक्त्व अंगुल क्षेत्र जान देखे वह काल से सम्पूर्ण आवलिका की बात जान देखे ५ जो क्षेत्र से एक हाथ क्षेत्र जाने देखे वह काल से मुहूर्त में कुछ कम कालकी बात जाने, ६ जो क्षेत्र से मनुष्य क्षेत्र देखे वह काल से सम्पूर्ण मुहूर्त की बात जाने, ७ जो क्षेत्र से एक गाउ क्षेत्र देखे वह काल से एक दिन की बात जाने, ८ जो क्षेत्र से एक योजन क्षेत्र देखे वह पृथक्त्व दिन की बात जाने, ९ जो क्षेत्र से पचीस योजन क्षेत्र देखे वह काल से पक्ष में कुछ कम की बात जाने, १० जो क्षेत्र से सम्पूर्ण भरत क्षेत्र जितना (५२६

सखिज्जा ॥ कालमि असखिज्जे दीव समुद्दाय भइयव्वा ॥ ६ ॥ काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइयव्वुखित वुड्ढीए ॥ वुड्ढीए दव्व पज्जवे, भइयव्वा खेत्तकालाओ ॥७॥ सुहुमा य

योजन) क्षेत्र देखे वह सपूर्ण पक्ष की बात जाने ११ जो क्षेत्र से जम्बूद्वीप जितना (१ लाख योजन) क्षेत्र देखे वह काल से एक महीने से कुछ अधिक काल की बात जाने, १२ जो क्षेत्र से अढाइ द्वीप जितना (४५ लाख योजन) क्षेत्र देखे वह काल से एक वर्ष की बात जाने, १३ जो क्षेत्र से पन्दरवा रुचकद्वीप पर्यंत जितना क्षेत्र देखे वह काल से पृथक्त्व वर्ष की बात जाने १४ जो क्षेत्र से सख्यात द्वीप समुद्र देखे वह काल से सख्यात काल की बात जाने १५ जो असख्यात द्वीप समुद्र देखे वह असंख्यात काल की बात जाने ॥ ६ ॥ जिस २ प्रकार अवधि ज्ञानी के देखने का काल अधिक होता जाता है तैसे ही द्रव्य क्षेत्र काल भाव इन चारों की वृद्धि होती है तथा कितनीक वक्त क्षेत्र की वृद्धि होती है तब काल की भजना होती है अर्थात् काल की वृद्धि होवे भी नहीं भी होवे परन्तु द्रव्य क्षेत्र पर्याय इन तीनों की तो निश्चय से वृद्धि होती है, जो द्रव्य की वृद्धि होते हुवे क्षेत्र की और काल की

ज्ञान से जाने अर दर्शन से देखे जहां अवधि ज्ञान होता है वहां अवधि दर्शन निश्चय से होता है २ मनुष्य में द्वीप समुद्र के स्थान संख्यात योजन जानना, और असख्यात द्वीप समुद्र के स्थान असख्यात योजन जानना १ अवधि ज्ञानी रूपी पदार्थ मात्र सबको देख सकता है परन्तु धर्मास्तिकायादि दश बोल ठाणांग में कहे तो केवल ज्ञानी ही जान सकते देख सकते हैं

रिघसतो गाउयमि बोधव्वो, जायण दिवसपुहत्त, पक्खतो पणवीसाओ ॥४॥ भरहमि अद्धमासो, जबूद्दीवमि साहिआ मासो ॥ वास च मणुयलोए, वास पुहत्त च रुयगमि ॥ ५ ॥ सखिज्जमिउकाल, दीव समुद्दावि हुति ॥

अर्थ

के एक जीव के शरीर के प्रदेश हैं उतने सरवे लोकजितने खंडे २ अलोक में हावे तो अवधिज्ञान कर उत्कृष्ट देख सकता है॥अब अवधिज्ञान से देखनेका कालम और क्षेत्र से विचार करते हैं—जो अवधिज्ञानी क्षेत्र से अंगुल के असंख्यात वे भाग क्षेत्र जान देखे वह काल २ से आवलिकाके असंख्यातवे भाग की बात आगे की पीछे की जाने देखे २ जो क्षेत्रसे अंगुल के संख्यातवे भाग क्षेत्र जान देखे वह काल से आवलिकाके संख्यातवे भाग जितने कालकी आगे पीछेकी बात जाने देखे, ३ जो क्षेत्र से एक अंगुल क्षेत्र जान देखे वह काल से आवलिका में कुच्छ कमी काल की बात जाने देखे, ४ जो क्षेत्र से पृथक्त्व अंगुल क्षेत्र जान देखे वह काल से सम्पूर्ण आवलिका की बात जान देखे ५ जो क्षेत्र से एक हाथ क्षेत्र जाने देखे वह काल से मुहूर्त में कुछ कम कालकी बात जाने, ६ जो क्षेत्र से मनुष्य क्षेत्र देखे वह काल से सम्पूर्ण मुहूर्त की बात जाने, ७ जो क्षेत्र से एक गाउ क्षेत्र देखे वह काल से एक दिन की बात जाने, ८ जो क्षेत्र से एक योजन क्षेत्र देखे वह पृथक्त्व दिन की बात जाने, ९ जो क्षेत्र से पचीस योजन क्षेत्र देखे वह काल से पक्ष में कुछ कम की बात जाने, १० जो क्षेत्र से सम्पूर्ण भरत क्षेत्र जितना (५२६

वस्स ओगाहणा जहणा, ओहीखित्त जहण्णतु ॥१॥सव्व बहु अगणिजीवा, निरवर जत्तिय भरिज्ज॥खित्त सव्वादिसाग, परमोही खेत्तणिद्दिट्ठो॥२॥अगुल मावलियाण, भागमसखिज्ज दोसु सखिज्जा ॥ अगुल मावलियतो, आवालिया अगुल पुहुत्त, ॥३॥ हत्थमि मुहुत्तंतो,

कि कोइ एक हजार योजन की अवगाहना वाला मच्छ चवकर फूलन में उत्पन्न होवे वह प्रथम समय आहार ग्रहण कर पूर्व शरीर में रहे जीव प्रदेश को संकोचता २ हुवा तीसरे समय मे अगुल के असख्यात वे भाग मात्र रहे इतना क्षेत्र अर्थात् जघन्य ज्ञानी जघन्य अगुल के असंख्यातवे भाग क्षेत्र को जाने देखे * और उत्कृष्ट—अग्निकाय के सूक्ष्म बादर सब जीवों + विशेष अग्निकाय उन के आत्म प्रदेश एकेक आकाश प्रदेश पर असख्यात २ व्यापक हैं वे इतने है कि—एक आकाश प्रदेश पर रहे अग्निकाय के प्रदेश में से एकेक समय में एकेक प्रदेश का हरन करते २ असंख्यात उत्सर्पिनी कालव्यतीत होजाता है इतने हैं तथा लोकके एकेक प्रदेशपर एकेक प्रदेश अग्नि के जीवो को स्थापन करते असंख्यात लोक भरा जावे इतने प्रदेश हैं अर्थात् जितने अग्निकाय

* अवधिज्ञान कर-नरक के जीव तिरछा क्षेत्र बहुत देखते हैं, भुवनपति वाणव्यन्तर ऊपर अधिक देखे ज्योतषी तिरछा बहुत देखें वैमानिक नीचा बहुत देखते हैं

+ विशेष अग्निकाय अजितनाथ भगवत के वारे म थी क्यों कि उस वक्त मनुष्य की उत्कृष्ट आवक थी

भिज्जाणिवा सचद्धाणिवा असमद्धाणिवा जोयणाइ जाणइ पासइ, अण्णत्थगए न जाणइ न पासइ, से तं अणाणुगामिय ओहिणाण॥ १०॥से किं त वड्डमाणय ओहिणाण ? वड्डमाणय ओहिणाण पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वड्डमाणचारित्तस्स विसुज्झमाणस्स, विसुज्झमण चरित्तस्स सव्वओ समता ओहि वड्डइ जाव इयाति सगया, आहारगस्स सुहुमस्स पणगजी

जान सकता देख सकता है परंतु उस अग्नि के स्थान से दूर गये बाद कुछ जान सकता देख सकता नहीं है इस प्रकार अनानुगामिक अवधि ज्ञानवाला जिस क्षेत्र [स्थान] में अवधि ज्ञान उत्पन्न हुआ है वहां रहा हुवा तो अवधि ज्ञान कर देख सकता है परंतु दूर गए बाद कुछ जान सकता देख सकता नहीं है उसे अनानुगामिक अवधि ज्ञान कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वर्द्धमान अवधि ज्ञान किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! वर्द्धमान अवधि ज्ञानी अत्यन्त विशुद्ध प्रशस्त निर्मल मन के अध्यवसाय-परिणाम प्रवर्तते हुवे, कलुषता रहित वृद्धि पाते हुवे चारित्र गुण की विशुद्धता निर्मलता करते हुवे जो अवधि ज्ञान की प्राप्ति होवे प्रथम थोडा द्रव्यादि को देखे फिर परिणाम की विशुद्धता में ज्यों ज्यों वृद्धि होती जावे त्यों त्यों अवधि ज्ञान में वृद्धि होती जावे, वे जीवों जघन्य तो तत्काल के उत्पन्न हुवे फूलन के जीव तीन समय में आहार लेकर जितनी शरीर की अवगाहना करे उतना सूक्ष्म क्षेत्र को व क्षेत्र में रहे पदार्थ को अवधि ज्ञान कर जाने देखे, यहां तीन समय कहन का यह प्रयोजन है,

घस्स ओगाहणा जहणा, ओहीखित्त जहण्णतु ॥ १ ॥ सव्व बहु अगणिजीवा निरतर खचिय
भरिज्ज ॥ सुखित्त सव्वदिसाग, परमोही खेत्तणिद्दिट्ठो ॥ २ ॥ अगुल मावलियाण, भागमसखिज्ज
दोसु सखिज्जा ॥ अगुल मावलियतो, आवलिया अगुल पुहुत्त, ॥ ३ ॥ हत्थमि मुहुत्ततो,

कि कोइ एक हजार योजन की अवगाहना वाला मच्छ चवकर फूलन में उत्पन्न होवे वह प्रथम समय आहार ग्रहण कर पूर्व शरीर में रहे जीव प्रदेश को संकोचता २ दूसरा तीसरे समय में अगुल के असंख्यात वे भाग मात्र रखे इतना क्षेत्र अर्थात् अवधि ज्ञानी जघन्य अगुल के असंख्यातवे भाग क्षेत्र को जाने देखे * और उत्कृष्ट—अग्निकाय के सूक्ष्म बादर सब जीवों + विशेष अग्निकाय उन के आत्म प्रदेश एकेक आकाश प्रदेश पर असख्यात २ व्यापक हैं वे इतने हैं कि—एक आकाश प्रदेश पर रहे अग्निकाय के प्रदेश में से एकेक समय में एकेक प्रदेश का हरन करते २ असंख्यात उत्सर्पिनी कालव्यतीत होजाता है इतने हैं तथा लोकके एकेक प्रदेशपर एकेक प्रदेश अग्नि के जीवो को स्थापन करते असख्यात लोक भरा जावे इतने प्रदेश हैं अर्थात् जितने अग्निकाय

---

* अवधिज्ञान कर-नरक के जीव तिरछा क्षेत्र बहुत देखते हैं भुवनपति वाणव्यन्तर ऊपर अधिक देखे ज्योतषी तिरछा बहुत देखे वैमानिक नीचा बहुत देखते हैं

+ विशेष अग्निकाय अजितनाथ भगवान के वारे में थी क्यों कि उस वक्त मनुष्य की संख्या अधिक थी

से जहा नामए केइ पुरिसे उक्कवा चुडूलियवा मणिंवा पइवा जोइवा मत्थए काउ समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा, से त मज्झगय॥अतगयस्स मज्झगयस्स का पइविसेसो? गोयमा! पुरओ अतगएण ओहिणाणण पुरओ चेव सखिज्जाणिवा असखिज्जाणिवा जोयणाइ पासए, पासओ अतगएण आहिनाणेण पासओ चेव सखिज्जाणिवा असखिज्जाणिवा जोयणाइ जाणइ पासइ, मग्गओ अतगएण ओहिणाणेण मग्गओ चेव

गौतम! पासाओ अन्तगत अवधि ज्ञान यथा दृष्टान्त—कोई पुरुष मशाल अलवा पूला पलीता मणि रत्न प्रज्वलित अग्नि का भाजन को दोनों हाथ में ग्रहण कर दोनों बाजू रख चले जिस कर वह दोनों दिशा के पदार्थ को देख सकता है इस ही प्रकार जो अवधि ज्ञान कर अपने दोनों तरफ के पदार्थको देखे उसे पासगत अवधि ज्ञान कहते हैं अहो भगवन्! मध्यगत अवधि ज्ञान किस को कहते हैं? अहो गौतम! मध्यगत अवधि ज्ञान यथा दृष्टान्त—कोइ पुरुष मशाल दीपक पलीता मणि रत्न अग्नि का भाजन मस्तक पर स्थापन कर चले वह चारों तरफ के पदार्थ को देखता है वैसे ही जो अवधि ज्ञान कर चारों दिशाओं में देखे उसे मध्यगत अवधि ज्ञान कहना, अहो भगवन्! अन्तगत और मध्यगत दोनों प्रकार के अवधिज्ञान में विशेषत्व क्या है? अहो गौतम! जिस को आगे का देखने का अवधि ज्ञान उत्पन्न हुवा है वह आगे को सख्यात योजन तथा असख्यात योजन पर्यंत देख सकता है परंतु

सन्निज्जाणिवा असन्निज्जाणिवा जोयणाइं जाणइ पासइ मज्झगएण ओहिणाणेण सव्वओ समता सन्निज्जाणिवा असन्निज्जाणिवा जोयणाइं जाणइ पासइ से त अणुगामिय ओहिनाण ॥ १ ॥ से किं त अणाणुगामियं ओहिनाण ? अणाणुगामिय ओहिनाण सेजहा नामए केइ पुरिसे एग मह त जोइट्ठाणकाठ तस्सत्र जोइठाणस्स परिपेरतेहिं २ परिघोलमाणे २ तमेव जोइठाण जाणइ पासइ अणत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अओ। अणाणुगामिय ओहिनाण जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव सन्निज्जाणिवा अस

पीछे को देख सकता नहीं है जिस को पीछे का देखने का अवधि ज्ञान हुआ है वह पीछे को सख्यात असख्यात योजन देख सकता है परन्तु दोनों तरफ व आगे देख सकता नहीं है जिस को दोनों बाजू या एक (डाबी दाबी) बाजू देखने का अवधि ज्ञान उत्पन्न हुआ है वह बाजू में सख्यात अस ख्यात योजन जान सकता देख सकता है और जिस को मध्यगत आत्मा के मध्य प्रदेशों से अवधि ज्ञान उत्पन्न हुआ है वह अवधि ज्ञान कर चारों दिशा के पदार्थ जान सकता देख सकता है यह अनुगा मिक अवधि ज्ञान का स्वरूप हुआ ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अनानुगामिक अवधि ज्ञान किस कहते हैं ? अहो गौतम ! अनानुगामिक अवधि ज्ञान यथा दृष्टान्त कोई पुरुष-अग्नि का स्थानक (स्नाव) मनुष्य के चारों तरफ फिरता रहे, वह उस अग्नि के स्थानक के पास रहे चारों तरफ के पदार्थों को

से जहा नामए केइ पुरिसे उक्कवा चुडूलियवा मणिवा पइवा जोइंवा मत्थए काउ समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा, से त मज्झगय॥अंतगयस्स मज्झगयस्स का पइविसेसो? गोयमा! पुरओ अंतगएण ओहिणाणेण पुरओ चेव संखिज्जाणिवा असंखिज्जाणिवा जोयणाइ पासए, पासओ अंतगएण ओहिनाणेण पासओ चेव संखिज्जाणिवा असंखिज्जाणिवा जोयणाइ जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगएण ओहिणाणेण मग्गओ चेव

गौतम! पासाओ अन्तगत अवधि ज्ञान यथा दृष्टान्त—कोई पुरुष मशाल उल्का पूला पलीता मणि रत्न प्रज्वलित अग्नि का भाजन को दोनों हाथ में ग्रहण कर दोनों बाजू रख चले जिस कर वह दोनों दिशा के पदार्थ को देख सकता है इस ही प्रकार जो अवधि ज्ञान कर अपने दोनों तरफ के पदार्थको देखे उसे पासगत अवधि ज्ञान कहते हैं अहो भगवन्! मध्यगत अवधि ज्ञान किस को कहते हैं? अहो गौतम! मध्यगत अवधि ज्ञान यथा दृष्टान्त—कोइ पुरुष मशाल दीपक पलीता मणि रत्न अग्नि का भाजन मस्तक पर स्थापन कर चले वह चारों तरफ के पदार्थ को देखता है वैसे ही जो अवधि ज्ञान कर चारों दिशाओं में देखे उसे मध्यगत अवधि ज्ञान कहना, अहो भगवन्! अन्तगत और मध्यगत दोनों प्रकार के अवधिज्ञान में विशेषत्व क्या है? अहो गौतम! जिस को आगे का देखने का अवधि ज्ञान उत्पन्न हुवा है वह आगे को संख्यात योजन तथा असंख्यात योजन पर्यंत देख सकता है परंतु

छेमाण २ गच्छिज्जा से त पुरओ अतगय ॥ से किं त मग्गओ अतगय ? मग्गओ अतगय से जहा नामए केइ पुरिसे उक्का चुडूलियवा आलायवा मणिवा पईव वा, जोइवा मग्गओकाउ अणुकड्ढ माणे २ गच्छिज्जा, से त मग्गओ अतगय ॥ स किं त पासओ अतगय ? पासओ अतगय से जहा नामए केइ पुरिस उक्का चुडूलिय वा आलायवा मणिवा पईववा जोइवा पासओ काउ परिकड्ढमाणे २ गच्छिज्ज, से त पासओ अतगय ॥ से किं त मज्झगय ? मज्झगय

मणि रत्न आदि मशाली हुई हाथ में ग्रहण कर अपने आगे रखकर उस आगे को देखता (सर काता) हुवा २ आगे पर उस प्रकाश द्वारा आगे की वस्तु को ही देख सके परंतु पीछे की तथा दोनों बाजु की वस्तु देख सके नहीं उस ही प्रकार जिस अवधि ज्ञान कर आगे को ही देख सके पीछे को तथा बाजू को देख सके नहीं उसे पूर्वगत अवधि ज्ञान कहना अहो भगवन् ! पश्चात अन्तगत अवधि ज्ञान किस को कहते हैं' अहो गौतम! पश्चात अन्तगत ज्ञान सो यथा दृष्टान्त कोई पुरुष मशाल मलता पूला पलीता, दीपक मणि रत्न, तथा अग्निशिव आदि अपन पृष्ट पीछे रखकर चलता २ दूसरा पास पर उस प्रकाश कर पीछे को वो देख सके परतु आगे को तथा दोनों बाजू को देख सके नहीं उसे पश्चात अन्तगत अवधि ज्ञान कहना अहो भगवन् ! पासओ अन्तगत अवधि ज्ञान किसे कहते हैं ! अहो

त समासओ छव्विह पण्णत्त तजहा—आणुगामिय, अणाणुगामिय, वड्ढमाणय, हायमाणयं, पडिवाईय, अपडिवाइयं ॥ ८ ॥ से किं त आणुगामिय ओहिनाण ? आणुगामिय ओहिनाण दुविह पण्णत्त तजहा—अतगयच, मज्झगयच ॥ से किं त अतगय?अतगय तिविहं पण्णत्त तजहा-पुरओ अतगय,मग्गओ अतगय, पासओ अतगय ॥ से किं त पुरओ अतगय ? पुरओ अतगय से जहा नामए केइ पुरिसे उक्क वा, चुडलिय वा, अलाय वा, मणिं वा, पईव वा, जोइवा, पुरओकाउण पणु

अवधि ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा अप्रमादि आदि गुन सम्पन्न जो साधु हैं उन को अवधि ज्ञान की प्राप्ति होती है इस अवधि ज्ञान के ७ भेद कहे हैं तद्यथा–१ अनुगामिक २ अनानुगामिक ३ वृद्धमान, ४ हायमान, ५ प्रतिपाती और ६ अप्रतिपाती ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! अनुगामिक अवधिज्ञान किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! अनुगामिक अवधिज्ञान के दो भेद कहे हैं तद्यथा–जीव के प्रदेश के अन्त से जाने और २ जीव के प्रदेश के मध्य से जाने ॥ अहो भगवन् ! अन्त गत अवधिज्ञान किसे कहते है ? अहो गौतम ! अंतगत अवधिज्ञान के तीन भेद कहे है तद्यथा—सन्मुख का अन्तगत पीछे का अन्तगत और दोनों पास का अन्तगत ॥ अहो भगवन् ! सन्मुख (आगे) का अन्तगत किसे कहते हैं? अहो गौतम ! आगे के अन्तगत ज्ञान सो यथा दृष्टान्त-कोई पुरुष मशाल अथवा पूला, अलाता पलीता, दीपक

हेमाण २ गच्छिज्जा से त पुरओ अतगय ॥ से किं त मग्गओ अतगय ? मग्गओ अतगय से जहा नामए केइ पुरिसे उक्का चुडूलियवा आलायवा मणिवा पइव वा, जोइवा मग्गओकाउ अणुकड्ढ माणे २ गच्छिज्जा, से त मग्गओ अतगय ॥ स किं त पासओ अतगयं ? पासओ अतगय से जहा नामए केइ पुरिस उक्का चुडूलिय वा आलायवा मणिवा पइववा जोइवा पासओ काउ परिकड्ढमाणे २ गच्छिज्ज, से तं पासओ अतगय ॥ से किं त मज्झगयं ? मज्झगय

मणि रत्न आदि जलती हुई हाथ में ग्रहण कर अपने आगे रखकर उस आगे को देखता (सर काता) हुवा २ जावे वह उस प्रकाश द्वारा आगे की वस्तु को ही देख सके परन्तु पीछे की तथा दोनों बाजु की वस्तु देख सके नहीं इस ही प्रकार जिस अवधि ज्ञान कर आगे को ही देख सके पीछे को तथा बाजू को देख सके नहीं उसे पूर्वगत अवधि ज्ञान कहना अहो भगवन् ! पश्चात अन्तगत अवधि ज्ञान किस को कहते हैं? अहो गौतम! पश्चात अन्तगत ज्ञान सो यथा दृष्टान्त कोई पुरुष मशाल जलता पूला पलीता, दीपक मणि रत्न, तथा प्रज्वलित आदि अपने पृष्ट पीछे रखकर चलता २ हुवा उस पर उस प्रकाश कर पीछे को तो देख सके परन्तु आगे को तथा दोनों बाजू को देख सके नहीं उसे पश्चात अन्तगत अवधि ज्ञान कहना अहो भगवन् ! पासओ अन्तगत अवधि ज्ञान किसे कहते हैं ! अहो

सोइंदिय पच्चक्ख, चक्खिदिय पच्चक्ख घाणिंदिय पच्चक्ख जिब्भिंदिय पच्चक्ख, फासिंदिय पच्चक्ख, से त इंदिय पच्चक्ख ॥ ४ ॥ से किं त नोइंदियपच्चक्ख ? नो इंदिय पच्चक्ख तिविह पण्णत्त तजहा—ओहिनाण पच्चक्ख मणपज्जवनाण पच्चक्ख, केवलनाण पच्चक्ख ॥ ५ ॥ से किं त आहिणाण पच्चक्ख ? ओहिनाण

के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ कान से सुनकर वस्तु का स्वरूप जाने वह श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष, २ आंखों से देख कर वस्तु का स्वरूप जाने वह चक्षु इन्द्रिय प्रत्यक्ष ३ नाक में वास आने से वस्तुका स्वरूप जाने वह घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष ४ स्वाद आने से वस्तु का स्वरूप जाने वह रसेन्द्रिय प्रत्यक्ष, और ५ शरीर को स्पर्शने से वा वस्तु का स्वरूप जाने वह स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष यह इन्द्रिय प्रत्यक्ष के भेद हुवे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष किस कहते हैं ? अहो गौतम ! नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—१ अवधि ज्ञान के उपयोग कर रूपी वस्तु को जाने वह अवधि ज्ञान प्रत्यक्ष, २ मन पर्यव ज्ञान के उपयोग कर मन के पर्याय को जाने वह मनःपर्याय ज्ञान प्रत्यक्ष, और ३ ज्ञान के सर्व आवरण (ढक्कन) दूर होने से सर्व द्रव्यादि को जाने वह केवलज्ञान प्रत्यक्ष, ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अवधि ज्ञान प्रत्यक्ष किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! अवधिज्ञान प्रत्यक्ष के दो भेद कहे हैं तद्यथा १ जन्म से ही अवधिज्ञान होवे वह भवप्रत्यय, और २ करणी कर अवधिज्ञानावर्णीय कर्म उदय

पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—भव पच्चइयं च, खओवसमियं च ॥ ६ ॥ से किं तं भव पच्चइयं ? भव पच्चइयं दुविहं तंजहा—देवाणय णेरइयाणय ॥ ७ ॥ से किं तं खओवसमियं? खओवसमियं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—मणुस्साणय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणय ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण च को हेऊ खओवसमियं ? खओव समियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं, अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ, अहवा गुणपडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जइ ॥

में आये उन का क्षय करे और सत्ता में रहे उन्हें उपशमाय यों कर्मों क्षयोपशम कर अवधिज्ञान होवे वह क्षयोपशम प्रत्यक्ष ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! भवप्रत्यक्ष किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! भवप्रत्यक्ष के दो भेद १ देवता के और २ नारकी के उत्पन्न होते ही अवधि ज्ञान होवे यह भव प्रत्यक्ष कहा ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्षयोपशम प्रत्यक्ष किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! क्षयोपशम प्रत्यक्ष के दो भेद—१ मनुष्य के और २ तिर्यंच पंचेन्द्रिय के करनी करने से ज्ञान होवे सो अहो भगवन् क्षयोपशम अवधि ज्ञान किस प्रकार से होता है ? अहो गौतम! क्षयोपशम अवधिज्ञान अवधिज्ञानावरणीय कर्म को उदय भाव को प्राप्त हुवे उन का क्षय करे और जो उदय में नहीं आये हुवे सत्ता में पड़े हैं उन का उपशमाय (दबे) कर

× मनुष्य गति में तीर्थंकर के तो अवधिज्ञान उत्पन्न होते ही होता है परंतु तीर्थंकर अल्प होने से यहां ग्रहण नहीं किया है

की मानकर परिषद उपदेश के योग्य होती है उसे समझाना बहुत सहज होता है २ दूसरी अनजान परिषद जिस प्रकार मृग के बच्चे सिंह के बच्चे मुर्गे के बच्चे, तोते के बच्चे, मैना के बच्चे, मयूर के बच्चे, इत्यादि बच्चे स्वभाव से भद्रिक होते हैं, उन को जिस प्रकार शिक्षण दो उस प्रकार ग्रहण कर वैसे ही स्वभाव वाले बन जाते हैं जिस प्रकार मट्टी में रहा हुवा रत्न मट्टी दूर होने से देदीप्यमान होता है वैसे ये भी ज्ञानादि गुनों के संस्कार से प्रदीप्त बन जाते हैं वैसे अजान परिषद समझाने में तो कठिन होती है परन्तु समझे बाद दृढधर्मी प्रिय धर्मी धर्म धुरधर बन जाती है इसलिये दूसरी अजान परिषद भी उपदेश के योग्य होती है उसे भी समझाना सहज होता है ३ तीसरी दुविदग्धा परिषद दग्ध बीज समान होती है जैसे अध पका बीज धान्य नतो खानेके कामका और न बोने के कामका होता है वैसे ही वह भी किसी काम का नहीं होता है वह न तो किसी को गुरु धारन करता है और न किसी को प्रश्नादि पूछ निर्णय करने की दरकार रखता है आप ही को सर्वज्ञ मान बैठता है सब्द २ कर पंडित बन कर मैं पंडित हूं ऐसा वह अज्ञानी मिथ्यात्वी अभिमान रखता है कदाग्रही होता है जिस प्रकार चमड़े की मशक में वायु भरने से वह फूल जाती है परंतु अन्दर पोली होती है वैसे ही वह दुविदग्ध शब्द पढ़ाकर बाहिर पंडित देखता है परंतु अन्दर निःसार होता है वह उपदेश के अयोग्य होता है इसे उपदेश की असर नहीं होती है ॥ १ ॥ यह परिषद कथन कहा अब प्रथम की दोनों परिषद को ज्ञान का स्वरूप कहना सो कहते हैं

+

स किं त णाणं? नाणं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा आभिणिबोहियनाणं, सुयणाणं, ओहिणाणं, मणपज्जवणाणं, केवलणाणं ॥१॥ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं तंजहा—पच्चक्खं च, परोक्खं च ॥ २ ॥ से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—इंदिय पच्चक्खं, णो इंदिय पच्चक्खं ॥ ३ ॥ इंदिय पच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा—

अब नन्दी सूत्र कहते हैं इस में प्रथम पांच ज्ञानका स्वरूप कहते हैं जिस से वस्तुका स्वरूप जानने में आवे वह ज्ञान पांच प्रकार का कहा है तद्यथा—१ आभिनिबोधिक ज्ञान सो जो अपनी स्वतः की बुद्धि कर जाने अर्थात् अपने ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशमसे विषय की मर्यादा सहित अर्थ के जानने को अभिमुख अविपरीतपने बोधित होवे, इस का दूसरा नाम मति ज्ञान भी कहा है २ श्रुत ज्ञान श्रुत, सुनने से जाने सो, ३ अवधि ज्ञान, रूपी पदार्थ परमाणु आदिक जाने ४ मनः पर्यव ज्ञान, गर्भेज के मन के भाव जाने, और ५ केवल ज्ञान घातिक कर्म का सर्वथा क्षय होने से उत्पन्न होवे जिस से सर्व द्रव्यादि को जाने केवल ज्ञानी को पूर्वोक्त चारों ज्ञान का उपयोग का कुछ प्रयोजन नहीं होने से अकेला ही है इस लिये केवल ज्ञान कहा है ॥ १ ॥ और भी ज्ञान के संक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ प्रत्यक्ष ज्ञान और २ परोक्ष ज्ञान ॥२॥ अहो भगवन्! प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं ! अहो गौतम ! प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद कहे हैं तद्यथा १ पांचों इन्द्रिय कर वस्तु का स्वरूप जाने वह इन्द्रिय प्रत्यक्ष और २ इन्द्रियों की सहायता विना वस्तु का स्वरूप जान वह नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय प्रत्यक्ष

की मानकर परिषद् उपदेश के योग्य होती है उसे समझाना बहुत सहज होता है २ दूसरी अनजान परिषद् जिस प्रकार मृग के बच्चे सिंह के बच्चे मुर्गे के बच्चे, तोते के बच्चे, मैना के बच्चे, मयूर के बच्चे, इत्यादि बच्चे स्वभाव से भद्रिक होते हैं, उन को जिस प्रकार शिक्षण दो उस प्रकार ग्रहण कर वैसे ही स्वभाव वाले बन जाते हैं जिस प्रकार मट्टी में रहा हुवा रत्न मट्टी दूर होने से देदीप्यमान होता है तैसे वे भी ज्ञानादि गुनों के संस्कार से प्रदीप्त बन जाते हैं तैसे अजान परिषद् समझाने में तो कठिन होती है परन्तु समझे बाद दृढधर्मी प्रिय धर्मी धर्म धूरंधर बन जाती है इसलिये दूसरी अजान परिषद् भी उपदेश के योग्य होती है उसे भी समझाना सहज होता है ३ तीसरी दुविदग्ध परिषद् दग्ध बीज समान होती है जैसे अध पका बीज धान्य न तो खानेके कामका और न बोने के कामका होता है तैसे ही वह भी किसी काम का नहीं होता है वह न तो किसी को गुरु धारन करता है और न किसी को प्रश्नादि पूछ निर्णय करने की दरकार रखता है आप ही को सर्वज्ञ मान बैठता है स्वल्प २ कर पंडित बन कर मैं पंडित हूं ऐसा वह अज्ञानी मिथ्यात्वी अभिमान रखता है कदाग्रही होता है जिस प्रकार चमडे की मशक में वायु भरने से वह फूल जाती है परंतु अन्दर पोली होती है तैसे ही वह दुविदग्ध थोडा पढ़कर बाहिर पंडित देखता है परंतु अन्दर निःसार होता है यह उपदेश के अयोग्य होता है इसे उपदेश की असर नहीं होती है ॥ १ ॥ यह परिषद् कथन कहा अब प्रथम की दोनों परिषद् को ज्ञान का स्वरूप कहना सो कहते हैं

\+

कृपाल भायों से छुड़ाकर उस अहीर की तरह दुःख पावेगा इस का मुलट—जैसे अहीर घृत के वरतन गाड़ में भर पाटन के चौहट में आय घड़ा उतारते नीचा पड़गया फूटगया तब तत्काल बिखरा हुवा घृत खराब न होने देते एकत्र कर लिया, उसे बेच कर इच्छित द्रव्य प्राप्त कर सुखी हुवे वैसे ही कोई शिष्य व्याख्यान देता सूत्रार्थ भूल गया आचार्यने जानी थी कि तत्काल गुरु का मिथ्या दुष्कृत्य दे आगे सुधार कर सम्यक प्रकार प्ररूपना करने लगा उस से कुछकी हानी होवे धर्म की महिमा बढ़े यह भी सर्व प्रकार का सत्य पाप इस दृष्टान्त गुरु और शिष्य दोनों को बाध ग्रहण करने का है यह १४ दृष्टान्त श्रोता के व शिष्य के लक्षण के बतलानेवाले कहे ॥ १ ॥ अब परिषदा का कहते हैं सामान्य प्रकार से परिषदा तीन प्रकार की कही है तद्यथा—वारम्वार सूत्रार्थ श्रावण मनन करने से अनेक शास्त्र के ज्ञाता हुए एस पुरुषों की परिषद वह जानकार परिषद, २ जिस व्याख्यानादि श्रवन करनेका प्रसंगे योग न बनने से जिन प्रणित मार्ग से वाकेफ नहीं परंतु मानिक पाप पक्ष न्यमाय का धारक वह अजानकार परिषद और ३ सूत्रार्थादि ज्ञान रहकर भी अज्ञान समान हो जान कि मेरा सो ही सच्चा और सब झूठा, ऐसा कदाग्रही हो वह दुर्विदग्ध परिषद इन तीनों परिषद में स प्रथम परिषद है वह जिस प्रकार हंस के सन्मुख दुग्ध पानी दोनों भेले करके रखने से ही हंस की जिव्हा में खटाई होने से वह दुग्ध तत्काल फटकर पानी से पृथक हो जाता है इस पानी को छोड़कर दुग्ध २ पी जाता है त्यों ही व श्रोताओं छद्मस्थ गुरु के वचन में जो दोष होते हैं उसे छोड़कर गुण ही गुण ग्रहण कर लेते हैं इसलिये प्रथम

उसे देखपार किया और तेले की तपश्चर्या कर देवता की आराधना कर वह भेरी को अच्छी कराई, फिर प्रमाणिक पुरुष को दी उसने बजाई जिससे द्वारिका नगरी में सुख शांति हुई यह उस भेरी का प्रभाव देख भोले लोगों उस का खण्ड फिर भी मांगने आये परंतु वह उसपाता नहीं उस पर वासुदेव संतुष्ट हो उसे सुखी किया उस की कीर्ति विस्तरी भावार्थ—भावक्षेम रूप द्वारका नगरी तीर्थंकर रूप कृष्ण वासुदेव, पूण्य रूप देवता, जिनवाणी रूप भेरी, बजानेवाले साधू अष्ट कर्म रूप रोग जो पांचों प्रमाद के वश हो मिथ्या प्ररूपना कर जिनवाणी का खण्डन करेगा वह प्रथम पुरुष समान अनन्त संसार में दुःखी होगा और जो सम्यक् प्रकार यत्ना से रखगा उपकार वृद्धि करेगा वह द्वितीय पुरुष के समान मोक्ष के सुख रूप अक्षय सम्पति प्राप्त करेगा ॥ ११ ॥ बारहवा अहीरनी का दृष्टान्त—कोई अहिर घृत के बरतनों गाडी में भर पाटन के चौहट में घृत बेचने गया छोड़ा अहीरनी घृत के बरतनों गाडे में से उतारते हाथ में से छूटकर नीचे पडकर फूट गया तब अहीर बोला तने पर पुरुषको देखा जिस से घडा फाड डाला यों दोनों का खूब झगडा मचा, इतने में घृत सब बह गया धूल में मिल गया फिर घृत समालने लगे तो ऊपर का मिलाहुवा हाथ लगा उसे ही बेचकर पीछे घर को आते चोरोंने लूट लिये बडे दुःखी हुवे इस ही प्रकार आचार्य का दिया हुआ सूत्रार्थ सभा में प्ररूपना हुआ शिष्य भूल गया विपरीत प्ररूपता उसे देख आचार्य रोकने से वह कहे कि जैसा तुमने मुझे पढाया वैसा ही मैं कहता हूं यों विवाद की वृद्धि कर झगडे कर धर्म की हीलना करे वह संयम रूप धन

विचार करते हुवे श्री नेमीनाथ आदि अठारा हजार साधु को यथा विधि वंदना नमस्कार करते पीछे की चार नरक के दुखियों को विसेर दिये कितनेक दिन बाद चोरी हुवे घोडे को लेकर भग गया पीछे बहुत ही सेनीको वगैरे गये परन्तु वह किसी के हाथ आया नहीं तब कृष्ण वासुदेव गये वह देवता बोला कि-मेरे साथ युद्धकर घोडा जीतको तब कृष्णजीने पूछा के दृष्टीयुद्ध मुष्टियुद्ध आदि युद्धों में से कैसा युद्ध करना देव बोला कि तुमारी पृष्ट से मेरी पृष्ट चलावू जो तुम जीत जाओ तो घोडा तुमारा, कृष्ण वासुदेव बोले कि-ऐसा निर्लज्ज युद्ध कर अश्व प्राप्त करना मुझ उचित नहीं है, यों सुन देवता हर्षित हो आकाश में दशोंदिशा में प्रकाश करता कुंडल मुकुटादिसे शोभिता अपना मस्तक कृष्णजी की तरफ झुकाकर कहने लगा जिस प्रकार शक्रेन्द्रने आप की प्रसंशा की वैस ही आप हो यों कह सर्व रोगों की निवारन करनेवाली एक चन्दन की भेरी (वाजिंत्र) कृष्ण वासुदेव को दे कहने लगा कि इस भेरी का-अवाज जितनी दूर जायगा वहां छ महीने तक महामारी आदि रोग नहीं होगा यों कह देवता गया वह भेरी एक कुटुम्बिक पुरुष के सुपरत की उस वक्त द्वारका में रोग चल रहा था सो उस भेरी के नाद से भग गया सुखशान्ति का वरताव हुवा लोगों आश्चर्यभूत हो कितने भोले यों कहने लगे कि इस भेरीको पानी में घिसकर पीने से भी शरीर का सब रोग जाता रहता है ऐसा जान कोई उस भेरी का एक टुकडा लेगये कितनेक दिनों बाद द्वार का में रोग चला तब उस भेरी को बजाने लगा परंतु अवाज निकला नहीं यह समाचार कृष्णवासुदेवने जाने उस पुरुष को मुस्कराइ मान

देवी, ७ ११६००० आत्म रक्षक देव, और भी बहुत से सौधर्म देवलोक निवासी देवता देवियों के परिवार से परिवरा हुवे शक्रसिंहासन पर शक्रेन्द्र बैठे हुवे सम्यक् दृष्टी कृष्ण वासुदेव के गुणानुवाद करते बोले कि—"कृष्ण वासुदेव सर्व गुण धारी हैं और नीचता दर्शक युद्ध से सदैव दूर रहते हैं" वहां एक देवता इस कथन की श्रद्धा नहीं करता हुवा कृष्ण वासुदेव की परीक्षा के लिये कृष्ण वर्ण सडे हुवे काढे कलमलेत हुवे शरीरवाला महा दुरभिगन्ध शरीरवाला कुत्ते का रूप बना कर द्वारका नगरी के बाहिर आकर पडा उस वक्त कृष्ण वासुदेव ४२०००००० हाथी, ४२०००००० घोडे, ४२०००० रथ ४८०००००००० पायदल, १६००० मुकुट बन्ध देशाधिपति राजा, १२००० अन्तेपुरी, ७२००० माताओं एवं दशारों, १२००००००० केशरीया कुंवर, १८००००००० अंगमर्दक, १८००००००० आभरण धारक, १५०००००० भोजन स्थान, २५०००० मशालची, ४२०००००० संग्रामी निशान ९००००००० सामान्य निशान, ५ क्रोडीध्वजा, १२ प्रकार का नाटक आदि सब परिवार से परिवर हुवे बावीसवे तीर्थंकर श्री नेमीनाथ भगवान के दर्शनार्थ जाते हुवे रास्ते में कुत्ते की दुर्गन्ध से सेना घबरा कर उन्मार्ग जाती देखी पूछा करने से मालुम होते श्री कृष्ण वासुदेव औदारिक शरीर के पुद्गलों की असारता जानते हुवे किंचित भी घृणा नहीं करते हुवे उस कुत्ते के नजीक रह कहने लगे कि-देखो! इस कुत्ते की दांतों की बत्तीसी कैसी अच्छी बराबर चमकती हुई शोभा दे रही है यह सुनते ही देवता आश्चर्य चकित हुवा और नमस्कार कर स्वस्थान गया कृष्ण वासुदेव शरीर की असारता का

छट्ठा मैंसेका दृष्टांत—जैसे भैंसा (पाडा) पानी पीने के लिये सरोवर में प्रवेश कर मस्तकादि सब शरीर को डोलाकर तथा पानी में मल मूत्र कर डोहला करदेता है, न तो स्वच्छ पानी आप पीसकता है और न अपने युथ (भैंसीयें) को पीने देता है वैसे ही कुश्रोता व्याख्यान में विघन रूप देवादि उत्पन्न कर डोहला दे, व्याख्यान का मतलब न तो आप समझे और न दूसरों को समझने दे ॥ ६ ॥ सातवा दृष्टांत—अजी-बकरीका—जिस प्रकार बकरी पानी पीने को जावे वहां दोनों घुटने टेक कर अधर २ निराधार पानी पीवे किंचित भी पानी को डोहला नहीं करे अपनेयुथ को भी स्वच्छ-निर्मल पानी पीने दे वैसे ही सुश्रोता व्याख्यान वचन को भी तहत विगेरा वचनों से बधाता हुआ आप श्रवन करे और दूसरों को भी शान्त चित से श्रवन करने दें ॥ ७ ॥ आठवा मच्छर (जग्मस) का दृष्टान्त—जिस प्रकार खटमल रक्त पीता है, और शरीर में सुसकी चलाता है परन्तु कुछभी गुन नहीं करता है वैसे ही कुश्रोता गुरु को सन्ताप कर ज्ञानादि तो ग्रहण करे परन्तु गुरु आदि की सेवा भक्ति करे नहीं ॥ ८ ॥ नवमा जलोक का दृष्टान्त—जैसे जलोक प्रथम चटकादि कर रक्तपीवे फिर खराब रक्त मये बाद वह आरोग्य होवे आराम पावे, वैसे ही कितने श्रोता प्रथम तो गुरु आदि को चकोपचक संताप कर ज्ञानादि गुन प्राप्त करे फिर गुरु आदि की सेवा भक्ति कर साता उपजावे ॥ ९ ॥ दशवा बिल्ली का दृष्टांत—जैसे बिल्ली छींके से दुग्धादि का बरतन नीचे डाल कर उसे फोड कर दुग्धादि ढोल कर फिर दुग्धादि को भक्षण करे वैसे ही कितनेक श्रोता

घुट्टति, इह गुरु गुण समिद्धा, दो सेयवि वज्जति त जाणसु आणिय परिस ॥ ३ ॥ अजाणिया जहा जाहोइ पगइ महुरा मियच्छावाय सीह कुक्कुडग सूयारंयणमिव असठविया, अजाणियासा भवे परिसा ॥ ४ ॥ दुव्विअड्ढा जहा नय करथइ निम्माओ नय पुच्छइ परिभवस्स दोसेण वात्थिव्व वायपुन्नो फुट्टेइगमिल्ल यवियड्ढो ॥५॥इति

दृष्टांत-जैसे तापस का भाजन (खप्पर) सब वस्तु को धारन करता है किंचित वस्तु भी नीचे नहीं पडने देता है वैसे ही सुश्रोता सुने हुवे सब ज्ञान को धारन करते हैं, तथा जैसे सूंप तूसादि असार को छोड कर धान्यादि सारको ग्रहण करता है वैसे ही सुश्रोता दुर्गुनोंका त्याग कर गुनही गुण ग्रहण करते हैं ॥ ३ ॥ चौथा सुग्रीव के माले का दृष्टांत सुग्रीव पक्षी के माला में घृतादि छानने से घृतादि अच्छे पदार्थ का वमन करता है कचरा कंकरादि धारन करता है वैसे ही कुश्रोता वक्ता के सद्गुन धारन करता है गुन २ त्याग देता है तथा कुशिष्य धर्माचार्य के ज्ञान दातादि गुन प्रतिलेखनादि क्रिया के गुनों को भूलकर हितशिक्षा रूप कठिन वचन के दुर्गुनों धारन करते हैं ॥ ४ ॥ पांचवा हंस का दृष्टांत जैसे दूध और पानी दोनों भेले करके हंस के सन्मुख रखने से उस की चंचू स्पर्श होते ही दूध और पानी अलग २ हो जाता है, दूध २ पी लेता है और पानी २ छोड देता है वैसे ही सुशिष्य गुरु के पास से ज्ञानादि गुण धारन करलेता है और छद्मस्तता से प्राप्त हुवे दोषों को त्याग देता है ॥ ५ ॥

छठा भैंसेका दृष्टांत—जैसे भैंसा (पाड़ा) पानी पीने के लिये सरोवर में प्रवेश कर मस्तकादि सब शरीर को होलाकर तथा पानी में मल मूत्र कर डोहला करदेता है, न तो स्वच्छ पानी आप पीसक्ता है और न अपने पुत्र (भैंसीयें) को पीने देता है वैसे ही कुश्रोता व्याख्यान में विघन क्लेश देषादि उत्पन्न कर डोहला दे, व्याख्यान का मतलब न तो आप समझे और न दूसरों को समझन दे ॥ ६ ॥ सातवा दृष्टांत—छगी-बकरीका—जिस प्रकार बकरी पानी पीने को जावे वहां दोनों घुटने टेक कर ऊपर २ निवराचारें पानी पीवे किंचित भी पानी को डोहला नहीं करे अपनेपुत्र को भी स्वच्छ-निर्मल पानी पीने दे वैसे ही सुश्रोता व्याख्यान वचन को भी शान्त बिगरा वचनों स बचाता हुआ आप श्रवन करे और दूसरों को भी शान्त चित्त से श्रवन करने दें ॥ ७ ॥ आठवा मच्छर [खटमल] का दृष्टान्त—जिस प्रकार खटमल रक्त पीता है, और शरीर में खुजली चलाता है परन्तु कुछभी गुन नहीं करता है वैसे ही कुश्रोता गुरु को सन्ताप कर ज्ञानादि तो ग्रहण करे परन्तु गुरु आदि की सेवा भक्ति करे नहीं ॥ ८ ॥ नवमा जलोक का दृष्टान्त—जैसे जलोक प्रथम चटकादे कर रक्तपीवे फिर खराब रक्त गये बाद वह आरोग्य होवे आराम पावे, वैसे ही कितने श्रोता प्रथम तो गुरु आदि को वक्रेपवक्र सन्ताप कर ज्ञानादि गुन प्राप्त करे फिर गुरु आदि की सेवा भक्ति कर साता उपजावे ॥ ९ ॥ दशवा बिल्ली का दृष्टांत—जैसे बिल्ली छींके से दुग्धादि का बरतन नीचे डाल कर उसे फोड कर दुग्धादि ढोल कर फिर दुग्धादि का भक्षण करे वैसे ही कितनेक श्रोता

घुट्टति, इह गुरु गुण समिद्धा, दो सेयवि वज्जति त जाणसु जाणिय परिस ॥ ३ ॥
अजाणिया जहा जाहोइ पगइ महुरा मियच्छावाय सीह कुक्कुडग भूयारयणमिव
असठविया, अजाणियासा भवे परिसा ॥ ४ ॥ दुव्विअड्ढा जहा नय कत्थइ
निम्माओ नय पुच्छइ परिभवस्स दोसेण वत्थिव्व वायपुन्नो फुट्टेइगमिल्ल वियड्ढो ॥५॥इति

दृष्टांत-जैसे तापस का भाजन (खप्पर) सब वस्तु को धारन करता है किंचित वस्तु भी नीचे नहीं पड़ने देता है वैसे ही सुश्रोता सुने हुवे सब ज्ञान को धारन करते हैं, तथा जैसे सूंप तुसादि असार को छोड़ कर धान्यादि सारको ग्रहण करता है वैसे ही सुश्रोता दुर्गुनोंका त्याग कर गुनही गुण ग्रहण करते हैं ॥ ३ ॥ चौथा सुग्रीव के माळे का दृष्टांत-सुग्रीव पक्षी के माळा में घृतादि छानने से घृतादि अच्छे पदार्थ का वमन करता है कचरा ककरादि धारन करता है वैसे ही कुश्रोता वक्ता के अवगुन धारन करता है गुन २ त्याग देता है तथा कुशिष्य धर्माचार्य के ज्ञान दातादि गुन मतिविवेकसमादि क्रिया के गुनों को भूलकर हितशिक्षा रूप कठिन वचन के दुर्गुनों धारन करते हैं ॥ ४ ॥ पांचवा हंस का दृष्टांत जैसे दूध और पानी दोनों भेळे करके हंस के सन्मुख रखने से उस की चंचू स्पर्श होते ही दूध और पानी अलग २ हो जाता है, दूध २ पी लेता है और पानी २ छोड़ देता है वैसे ही सुशिष्य गुरु के पास से ज्ञानादि गुण धारन करलेता है और छद्मस्थता से प्राप्त हुवे दोषों को त्याग देता है ॥ ५ ॥

छट्ठा भैंसेका दृष्टांत—जैसे भैंसा (पाडा) पानी पीने के लिये सरोवर में प्रवेश कर मस्तकादि सब शरीर को डोलाकर तथा पानी में मल मूत्र कर डोहला करदेता है, न तो स्वच्छ पानी आप पीसक्ता है और न अपने पुत्र (भैंसीयें) को पीने देता है वैसे ही कुश्रोता व्याख्यान में विघन कुतर्क वेवादि उत्पन्न कर डोहला दे, व्याख्यान का मतलब न तो आप समझे और न दूसरों को समझने दे ॥ ६ ॥ सातवा दृष्टांत—छाली-बकरीका—जिस प्रकार बकरी पानी पीने को जावे वहां दोनों घुटने टेक कर अधर २ निरातार पानी पीवे किंचित भी पानी को डोहला नहीं करे अपनेपुत्र को भी स्वच्छ-निर्मल पानी पीने दे, वैसे ही सुश्रोता व्याख्यान वचन को भी उलट बिगरा वचनों से बचाता हुआ आप श्रवन करे और दूसरों को भी शान्त चित्त से श्रवन करने दें ॥ ७ ॥ आठवा मच्छर (मटमल) का दृष्टान्त—जिस प्रकार खटमल रक्त पीता है, और शरीर में खुजली चलाता है परन्तु कुछभी गुन नहीं करता हैं वैसे ही कुश्रोता गुरु को सन्ताप कर ज्ञानादि तो ग्रहण करे परन्तु गुरु आदि की सेवा भक्ति करे नहीं ॥ ८ ॥ नवमा जलोक का दृष्टान्त—जैसे जलोक प्रथम चटकादि कर रक्तपीवे फिर खराब रक्त गये बाद वह आरोग्य होवे आराम पावे, वैसे ही कितने श्रोता प्रथम तो गुरु आदि को वक्रोपवक्र संताप कर ज्ञानादि गुन प्राप्त करे फिर गुरु आदि की सेवा भक्ति कर साता उपजावे ॥ ९ ॥ दशवा बिल्ली का दृष्टांत—जैसे बिल्ली छींके से दुग्धादि का बरतन नीचे डाल कर उसे फोड कर दुग्धादि ढोल कर फिर दुग्धादि का भक्षण करे वैसे ही कितनेक श्रोता

घुट्टति, इह गुरु गुण समिद्धा, क्षो सेयवि वज्जति त जाणसु जाणिय परिस ॥ २ ॥
अजाणिया जहा जाहोइ पगइ महुरा मियच्छावाय सीह कुक्कुडग भूपारयणमिव
असठविया, अजाणियासा भवे परिसा ॥ ४ ॥ दुव्विअड्डा जहा नय करयइ
निम्माओ नय पुच्छइ परिभवस्स दोसेण वत्थिव्व वायपुन्नो फुट्टइगमिल्ल वयियड्डो ॥५॥इति

दृष्टांत जैसे तापस का भाजन (खप्पर) सब वस्तु को धारन करता है किंचित वस्तु भी नीचे नहीं पडने देता है वैसे ही सुश्रोता सुने हुवे सब ज्ञान को धारन करते हैं, तथा जैसे सूप सूपादि असार को छोड कर धान्यादि सारको ग्रहण करता है वैस ही सुश्रोता दुर्गुनोंका त्याग कर गुनही गुण ग्रहण करते हैं ॥ ३ ॥ चौथा सुग्रीव के माले का दृष्टांत-सुग्रीव पक्षी के माला में घृतादि छानने से घृतादि अच्छे पदार्थ का वमन करता है कचरा ककरादि धारन करता है वैसे ही कुश्रोता वक्ता के अवगुन धारन करता है गुन २ त्याग देता है तथा कुशिष्य धर्माचार्य के ज्ञान दानादि गुन मतिकेसनादि क्रिया के गुनों को भूलकर हितशिक्षा रूप कठिन वचन के दुर्गुनों धारन करते हैं ॥ ४ ॥ पांचवा हंस का दृष्टांत जैसे दूध और पानी दोनों भेले करके हंस के सन्मुख रखने से उस की चंचू स्पर्श होते ही दूध और पानी अलग २ हो जाता है, दूध २ पी लेता है और पानी २ छोड देता है वैसे ही सुशिष्य गुरु के पास से ज्ञानादि गुण धारन करलेता है और छद्मस्थता से प्राप्त हुवे दोषों को त्याग देता है ॥ ५ ॥

छठा भैंसेका दृष्टांत–जैसे भैंसा (पाड़ा) पानी पीने के लिये सरोवर में प्रवेश कर मस्तकादि सब शरीर को डोलाकर तथा पानी में मल मूत्र कर डोहला करदेता है, न तो स्वच्छ पानी आप पीसकता है और न अपने युथ (भैंसीयें) को पीने देता है वैसे ही कुश्रोता व्याख्यान में विघन क्लेश सेवादि उत्पन्न कर डोहला दे, व्याख्यान का मतलब न तो आप समझे और न दूसरों को समझने दे ॥ ६ ॥ सातवा दृष्टांत–छगी-बकरीका—जिस प्रकार बकरी पानी पीने को आवे तब दोनों घुटन टेक कर अधर २ निठरातार पानी पीवे किंचित भी पानी को डोहला नहीं करे अपनेयुथ को भी स्वच्छ-निर्मल पानी पीने दे वैसे ही सुश्रोता व्याख्यान वचन को ही ग्रहन विनेरा वचनों से बचाता हुवा आप श्रवन करे और दूसरों को भी शान्त चित से श्रवन करने दे ॥ ७ ॥ आठवा मसक [खटमल] का दृष्टान्त—जिस प्रकार खटमल रक्त पीता है, और शरीर में सुमली चलाता है परन्तु कुछभी गुन नहीं करता है वैसे ही कुश्रोता गुरु को सन्ताप कर ज्ञानादि तो ग्रहण करे परन्तु गुरु आदि की सेवा भक्ति करे नहीं ॥ ८ ॥ नवमा जलोक का दृष्टान्त—जैसे जलोक प्रथम चटकादि कर रक्तपीवे फिर खराब रक्त गये बाद वह आरोग्य होवे आराम पावे, वैसे ही कितने श्रोता प्रथम तो गुरु आदि को वचनवक्र संताप कर ज्ञानादि गुन प्राप्त करे फिर गुरु आदि की सेवा भक्ति कर साता उपजावे ॥ ९ ॥ दशवा बिल्ली का दृष्टांत—जैसे बिल्ली छीके से दुग्धादि का बरतन नीचे डाल कर उसे फोड कर दुग्धादि ढोल कर फिर दुग्धादि का भक्षण करे वैसे ही कितनेक श्रोता

घुट्टति, इह गुरु गुण समिद्धा, दो सेयवि वज्जंति त जाणसु जाणिय परिस ॥ ३ ॥ अजाणिया जहा जाहोइ पगइ महुरा मियच्छावाय सीह कुक्कुडग भूयारंयणमिव असठविया, अजाणियासा भवे परिसा ॥ ४ ॥ दुव्विअड्ढा जहा नय कत्थइ निम्माओ नय पुच्छइ परिभवस्स दोसेण वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइगामिल्ल ववियड्ढो ॥५॥ इति

दृष्टांत जैसे तापस का भाजन (खप्पर) सब वस्तु को धारन करता है किंचित वस्तु भी नीचे नहीं पडने देता है वैसे ही सुश्रोता सुने हुवे सब ज्ञान को धारन करते हैं, तथा जैसे सूंप तूसादि असार को छोड कर धान्यादि सारको ग्रहण करता है वैसे ही सुश्रोता दुर्गुनोंका त्याग कर गुनही गुण ग्रहण करते हैं ॥ ३ ॥ चौथा सुग्रीव के माळे का दृष्टांत-सुग्रीव पक्षी के माळा में घृतादि छानने से घृतादि अच्छे पदार्थ का वमन करता है कचरा कंकरादि धारन करता है वैसे ही कुश्रोता वक्ता के अवगुन धारन करता है गुन २ त्याग देता है तथा कुशिष्य धर्माचार्य के ज्ञान दानादि गुन मतिछेदनादि क्रिया के गुनों को भूलकर शिक्षिसा रूप कठिन वचन के दुर्गुनों धारन करते हैं ॥ ४ ॥ पांचवा हंस का दृष्टांत जैसे दूध और पानी दोनों मेले करके हंस के सन्मुख रखने से उस की चंचू स्पर्श होते ही दूध और पानी अलग २ हो जाता है, दूध २ पी लेता है और पानी २ छोड देता है वैसे ही सुशिष्य गुरु के पास से ज्ञानादि गुण धारन करलेता है और छद्मस्थता से प्राप्त हुवे दोषों को त्याग देता है ॥ ५ ॥

छठा भैंसेका दृष्टांत—जैसे भैंसा (पाडा) पानी पीने के लिये सरोवर में प्रवेश कर मस्तकादि सब शरीर को डोलाकर तथा पानी में मल मूत्र कर डोहला करदेता है, न तो स्वच्छ पानी आप पीसका है और न अपने यूथ (भैंसीयें) को पीने देता है वैसे ही कुश्रोता व्याख्यान में विघन कर्ता वेदादि प्रश्न कर डोहला दे, व्याख्यान का मतलब न तो आप समझे और न दूसरों को समझने दे ॥ ६ ॥ सातवा दृष्टांत—छाली-बकरीका—जिस प्रकार बकरी पानी पीने को आवे तहां दोनों घुटने टेक कर अधर २ निरधातार पानी पीवे किंचित भी पानी को डोहला नहीं करे अपनेयूथ को भी स्वच्छ-निर्मल पानी पीने दे, वैसे ही सुश्रोता व्याख्यान वचन को भी तहत विगेरा वचनों स बधाता हुआ आप श्रवन करे और दूसरों को भी शान्त चित्त से श्रवन करने दें ॥ ७ ॥ आठवा मच्छर (मच्छर) का दृष्टान्त—जिस प्रकार खटमल रक्त पीता है, और शरीर में खुजली चलाता है परन्तु कुछभी गुन नहीं करता हैं वैसे ही कुश्रोता गुरु को सन्ताप कर ज्ञानादि तो ग्रहण करे परन्तु गुरु आदि की सेवा भक्ति करे नहीं ॥ ८ ॥ नवमा जलोक का दृष्टान्त—जैसे जलोक प्रथम चटकादि कर रक्तपीवे फिर खराब रक्त गये बाद वह आरोग्य होने आराम पावे, वैसे ही कितने श्रोता प्रथम तो गुरु आदि को वक्रोपवक्र संताप कर ज्ञानादि गुन प्राप्त करे फिर गुरु आदि की सेवा भक्ति कर साता उपजावे ॥ ९ ॥ दशवा बिल्ली का दृष्टांत—जैसे बिल्ली छींके से दुग्धादि का बरतन नीचे डाल कर उसे फोड कर दुग्धादि डोल कर फिर दुग्धादि को भक्षण करे वैसे ही कितनेक श्रोता

तो अविनीत का दृष्टान्त कहा, अब सुविनीत का कहते हैं-जिस काली मट्टीवाली जमीन पर वर्षा हुवा पानी जमीन के अन्दर भेदाता है और खेत उस पानी को धारण कर सकते हैं, जिस से उस में गोधूमादि अनेक पदार्थों की निष्पत्ति होती है वैसे ही सुशिष्य को दिया हुवा थोडा भी ज्ञान, आगे ज्ञानादि अनेक गुनोंका उत्पादक होता है ॥ १ ॥ अब दूसरा घडा का दृष्टान्त कहते हैं—घट दो प्रकार के हैं १ कच्चा घडा यह तो पानी भरने अयोग्य है क्यों कि दोनों का नाश होवे और २ पक्का घडा उस के दो भेद—१ नवा और २ पुराना इस में नवा तो अच्छा होता क्यों कि उसे इच्छित वस्तु प्रक्षेप योग्य बना सकते हैं और दूसरा जीर्ण घट उस के दो भेद—१ किसी द्रव्य कर वासित बना और २ किसी भी द्रव्य कर वासित नहीं बना जो किसी भी द्रव्य कर निर्वासित-निर्लेप है यह तो अच्छा है उसे किसी भी काम में ले सकते हैं और जो वासित है उस के दो भेद—१ अच्छा द्रव्य कर वासित और २ बुरे द्रव्य कर वासित इस में अच्छी वस्तु से वासित, डाली हुई वस्तु को सुधारता है और बुरी वस्तु से वासित में डाली वस्तु को बिगाडता है वासित के भी दो भेद १ एक वासित वस्तु को वमन किया और २ नहीं वमन किया यों यह ९ तरह के घडे हुवे उपनय—कच्चे घडे समान अज्ञानी पढाने वाद योग्य होवे और २ पक्के घडे के दो भेद—१ नवे घट समान छोटी उम्मर का नवी दीक्षित, उसे जिस प्रकार सिखावें वैसी ही ग्रहण कर सकता है और पुराने घट समान वृद्ध तथा दीर्घ काल का दीक्षित जिस के दो भेद—पूर्व ज्ञानादि के संस्कार कर संस्कारा गया और दूसरा संस्कारा नहीं गया जो संस्कारित नहीं

जाणिया, अजाणिया, दुविअड्ढा, ॥ २ ॥ अ जाणिया जहा खीरमिव, जहा हंसाजि

पना है वह नवीन संस्कार के योग्य हो सकता है वह भद्रिक कुच्छ ज्ञानादि गुन ग्रहन योग्य हो सकता है, और २ जो भव्य के संस्कार कर संस्कारा पाया उस के दो भेद—१ सम्यक् ज्ञान कर संस्कारा गया वो सदैव अच्छा, और २ मिथ्या ज्ञान कर संस्कारा गया उस के दो भेद—१ मिथ्या ज्ञान का वमन किया हुवा वह अच्छा बन सकता है और २ जो मिथ्या ज्ञान का वमन नहीं किया वह अयोग्य है और भी घडे चार प्रकार के हैं-१ नीचे (तले में काणा) फुट्या, २ मध्य में फुट्या, ३ कंठ स्थान फुट्या, और ४ संपूर्ण घडा, इस में जो तल में फुटा है जमीपर स्थापन किया रहे वहां तक ही भरा हुवा रहता है, उठाये से साफ खाली होजाता है ऐसे ही कितनेक श्रोता व्याख्यान सुनते वाद ध्यान में रखे, उठे बाद सब भूल जाय २ दूसरा बीच में फूटा वह आधा पानी धारण करे वैसे कई श्रोता कुछ ज्ञान याद रखे कुछ भूलजाय ३ तीसरा कंठ पर फुट्या वह बहुत पानी रखे थोडा गमावे वैसे कई श्रोता बहुत ज्ञान याद रखे, और ४ सपूर्ण सर्व पानी धारण करे वैसे कई श्रोता संपूर्ण ज्ञान के धारक होते हैं ॥ २ ॥ तीसरा चालनी का दृष्टान्त-जिस प्रकार चालनी में पानी डालते ही तत्काल निकल जावे वैसे ही कितनेक श्रोता सुनते २ ही बात को भुल जावे जिस प्रकार चालने में धान्यादि छानने से आप तुस कंकरादि को धारन कर रखती है और उत्तम धान्यादि का वमन है वैसे ही कु श्रोता वक्ता के अवगुन को धारन करता है और गुन २ का वमन करता है इस से उलट

तो अविनीत का दृष्टान्त कहा, अब सुविनीत का कहते हैं–जिस काळीमट्टीवाळी जमीन पर वर्षा हुवा पानी जमीन के अन्दर भेदाता है और खेत उस पानी को धारण कर सकते हैं, जिस से उस में गोधूमादि अनेक पदार्थों की निष्पत्ति होती है वैसे ही सुशिष्य को दिया हुवा थोडा भी ज्ञान, आगे ज्ञानादि अनेक गुनोंका उत्पादक होता है ॥ १ ॥ अब दूसरा घडा का दृष्टान्त कहते हैं—घट दो प्रकार के हैं १ कच्चा घडा यह तो पानी भरने अयोग्य है क्यों कि दोनों का नाश होवे और २ पक्का घडा उस के दो भेद–१ नया और २ पुराना इस में नया तो अच्छा होता क्यों कि उसे इच्छित वस्तु प्रक्षेप योग्य बना सकते हैं और दूसरा जीर्ण घट उस के दो भेद—१ किसी द्रव्य कर वासित बना और २ किसी भी द्रव्य कर वासित नहीं बना जो किसी भी द्रव्य कर निवासित-निर्लेप है वह तो अच्छा है उसे किसी भी काम में ले सकते हैं और जो वासित है उस के दो भेद—१ अच्छा द्रव्य कर वासित और २ बुरे द्रव्य कर वासित इस में अच्छी वस्तु से वासित, डाली हुई वस्तु को सुधारता है और बुरी वस्तु से वासित में डाली वस्तु को बिगाडता है. वासित के भी दो भेद १ एक वासित वस्तु को वमन किया और २ नहीं वमन किया यों यह ५ तरह के घडे हुवे वपनष–कच्चे घडे समान अज्ञानी पदार्थ पात्र योग्य होवे और २ पक्के घडे के दो भेद—१ नवे घट समान छोटी उम्मर का नवी दीक्षित, उसे जिस प्रकार सिखावें वैसी ही ग्रहण कर सकता है और पूराने घट समान वृद्ध तथा दीर्घ काल का दीक्षित जिस के दो भेद—पूर्व ज्ञानादि के संस्कार कर संस्कारा गया और दूसरा संस्कारा नहीं गया जो संस्कारित नहीं

पाषान के पास से जाते हुवे उसे देख बोले कि अरे मग सेलीये ! इतनी जबर पानी की वृष्टी हुई तो भी तू भेदाया [भीना] नहीं ? तब मगसेलीया बोला महाराज ! मुझे भेदने समर्थ जगत् में कोई भी नहीं हैं नारदने मेघ के पास जाकर मगसेलीया का कथन कहा तब मेघ बोला कि-मैं बडे २ पहाडों को भेद डालता हूं तो बिचारा मगसेलीया कौन गिनती में है ! नारद पीछा मगसेलीये से जाकर बोला कि रे मगसेलीये ! मेघ कहता है कि मैंने बडे २ पहाडों को भेद डाले तो मगसेलीये की क्या विसात ? यों सुन मगसेलीया बोला, कौन है रे बिचारा पुष्कलावर्त मेघ जो रंक मुझे भेद सके ! ! नारदने पीछा मेघ के पास जाकर कहा तब पुष्कलावर्त मेघ कोपित होकर भंकार करता हुवा घन घोर घटा से अभ्र अच्छादित कर बीजलीयों चमकाता हुवा मूसल धार ममाने सात रात्रिदिन वृष्टि की फिर नारद और मेघ दोनों मिलकर मगसेलीये के पास आए, मगसेलीये को प्रथम से ही अधिक चमकाट करता मेघ के सन्मुख मुस्कराता देख दोनों शरमिन्दे बने ! ! उपनय-ऐसे ही किसी कुशिष्य को आचार्य बहुत परिश्रम कर ही पढाते हितशिक्षा देने समर्थ नहीं हुवे यह दूसरे आचार्य जान कर ज्ञानाभिमान कर बोले कि मनुष्य पशुओं को भी कलाभ्यास करा सकता है तो यह तो मनुष्य है, इसे पढाना कौनसी बडी बात है मैं इसे पढाकर प्रवीण करूंगा यों अभिमान कर उसे हित समझाने महा प्रयत्न समाचरा, निरन्तर पढाया तो भी वह किंचित् मात्र पढ सका नहीं, सुधरा भी नहीं, वरन् अधिक अभिमानी अविनीत बना, वीतरा धारण कर गुरु की मस्करी करने लगा ! तब वे आचार्य शरमिन्दे बने पर

एउं पाणवइशह ॥ ४९ ॥ ज अत्थे भगवते, कालियसुय आणुओगिए धीरे ॥
तवदिऊण सिरसा, नाणस्स परूवण वोच्छ ॥५०॥ इति थेरावलिया सम्मत्ता ॥ ( ) ॥
सेल, घण, कुडग, चालणि, परिपुणग, हंस, महिस मेसंय,॥मसग, जलूग, बिराली,
जाहग, गो, भेरी, आहिरी, ॥ १ ॥ से समासओ तिविहा पण्णत्ता, तजहा—

साधुओं के वंदनीय, अन्य गच्छवाले भी बहुत सूत्रार्थ जिन के पास लेने आवे ऐसे ॥ ४९ ॥ और भी बहुत स्थविर भगवत आचारांगादि कालिक सूत्र के अर्थ के पाठी अच्छी बुद्धिवाले धैर्यवंत जिन को सविनय मस्तक कर वदना नमस्कार कर मैं शिष्यों की हित की वांच्छा कर पांच ज्ञान का विस्तार कहुंगा ॥ ५० ॥ इति नंदी सूत्र की स्थविरावली समाप्तम् ॥

स्थिरावली के अन्त में कहा कि सुशिष्य को ज्ञान देना इस से सिद्ध हुवा कि कुशिष्य को ज्ञान नहीं देना इन सुशिष्य और कुशिष्य का स्वरूप समझाने के लिये—१ सेलघन, सेल-पत्थर घन-मेघ अर्थात् मगसेलीया पाषाण और मेघ वर्षाद का, २ कुडग घडा का, ३ चालनी का, ४ परिपुन्नाम-सुग्रीव के माले का, ६ भैंसे का ७ पासे का, ८ जलोक का, ९ बिल्ली का, १० सहेला का, १२ गाय का, १३ भेरी का, और १४ वा आहिरी का, यह १४ दृष्टान्त हैं ॥ १ ॥ इस में पहिला मगसीलीया पाषान का और मेघ का दृष्टान्त कहते हैं—अन्यदा महा वृष्टि हुवे बाद कलहमिय नारद मगसेलीये पाषान [मुंग जितना]

॥ ४५ ॥ सुमुणिया णिघाणिचं सुमुणिय सुत्तत्थ धारयं निचं ॥ वंदेह लोहिच, सब्भाबुभावणाणिच ॥ ४६ ॥ अत्थ महत्थ खाणिमु, समण वक्खाण कहण णिव्वाण ॥ पयइए महुरवाणि, पयउपणमामिदूसगणि ॥ ४७॥ तव णियम सच्च सजम, विणयज्जव खंति मद्दव रयाणं ॥ सीलगुणगद्दियाण, अणुओगे जुगप्पहाणाण ॥ ४८ ॥ सुकुमाल कोमलतले, तेसिंपणमामि लक्खण पसत्थे ॥ पए१मायणीणं, पाडिच्छगस

सब भवाविरों के भय के निकन्दन करनेवाले नागार्जुन ऋषीश्वर को वंदन ॥४५॥ शाश्वत अशाश्वत पदार्थों का ज्ञान सम्यक् प्रकार हुवा है शुद्धाचारी, सूत्र अर्थ के धारक भावजीव पर्यंत असम्भाचार के पालक लिहोहिच नाम के आचार्य होते हुवे आप को सदैव अच्छी तरह दर्शानेवाले ॥ ४६ ॥ मोक्ष साधन का जिन के यथार्थ की व्याप्ति है तथा प्रथम सूत्र कहकर फिर उस का महा अर्थ करे ऐसे सूत्रार्थ ज्ञानी इस प्रकार उत्तम व्याख्यान के दाता, सदैव स्वभाव से समाधी प्रकृतिवाले, मिष्ट इष्ट वचनोच्चारक, आत्म सयम की पत्नावत, दूसाचार्य को नमस्कार ॥ ४७ ॥ तप, नियम, सत्य संयम, चारित्र, विनय, सरलता, क्षमा, निर्विकार इत्यादि गुणों में रक्त शीलादि गुणकर गहरे, द्वादशांगी के अर्थों में युग प्रधान ॥ ४८ ॥ अत्यन्त सुकुमाल कोमल मनहर हस्त पांव के तलेवाले उत्तम वर्णन करने योग्य लक्षण के धारक उत्तम कीर्ति योग्य प्रवचन सिद्धान्त के ज्ञान, स्वगच्छता कर के सेंकडों साधु के हृदय में रमन करने

तव संजमे अनिव्विण ॥ पंडिय जण सामण्णं ॥ वंदामि संजमं विहण्णु ॥ ४२ ॥
वर कणग तविय चंपग,विमलवर कमल गब्भसरिस वण्णे॥भविय जणहियअ दइए,
दयागुण विसारए धीरे ॥ ४३ ॥ अड्ढभरह प्पहाणे, बहुविह सज्झाय सुमुणिणिय-
पहाणे ॥ अणुउगिय वर वसभे, नाइयल कुल वसनंदिकरे ॥ ४४ ॥ भूयहिय
अप्पगब्भे, वंदेहं भूयदिन्न मायरिए ॥ भवभय वुच्छेय करे, सीसे नागज्जुण रिसीण

सदैव १२ प्रकार तप और १७ प्रकार संयम पालने हुवे थके नहीं पंडित लोक को चारित्री बनाकर साता उपजाने वाले, संयम की विधी के जानको वंदन ॥ ४२ ॥ अच्छा तपाया हुवा सुवर्ण समान, तथा चम्पा के फूल समान विकसित पद्म कमल के गर्भ समान शरीर का वर्ण धारक, भविक जीवों के हृदय को वल्लभकारी, दया के गुनकर प्रधान विचक्षण, ॥ ४३ ॥ धैर्यवंत, आधे भरतक्षेत्र में युग प्रधान, बहुत प्रकार स्वाध्यायादि कर युक्त, अच्छे ज्ञानकार, सुमुनीश्वर के पथ के साधक, सुविनीत, उत्तम अर्थ के रूपक, प्रधान वृषभ समान, श्री ज्ञानकुल महावीर के वंश में आनन्द के करता ॥ ४४ ॥ सब जीवों के हित करने में सक्षम ऐसे सातवीसवे पाट में जो भूत दीन नाम आचार्य हैं उन को वंदन करता हूं नरक तिर्यंचादि दुर्गति के भय के निवारक करने वाले

॥ ४५ ॥ सुमुणिया णिच्चाणिच्चं सुमुणिय सुत्तत्थ धारय निच्चं ॥ वंदेह लोहिच्चं, सब्भावुभावणाणिच्चं ॥ ४६ ॥ अत्थ महत्थ क्खाणिं, समण वक्खाण कहण णिव्वाणं ॥ पयइए महुरवाणि, पयउपणमामिदूसगणि ॥ ४७॥ तव णियम सच्च संजम, विणयज्जव खंति मद्दव रयाणं ॥ सीलगुणगहियाण, अणुओगे जुगप्पहाणाण ॥ ४८ ॥ सुकुमाल कोमलतले, तेसिंपणमामि लक्खण पसत्थे ॥ पएपवायणीण, पाडिच्छगस

सर्व भवांतरों के भय के निकन्दन करनेवाले नागार्जुन ऋषीश्वर को वदन ॥४५॥ शाश्वत अशाश्वत पदार्थों का ज्ञान सम्यक् प्रकार हुवा है सुत्रधारी, सूत्र अर्थ के धारक भावद्वीप पर्यंत अखण्डाचार के पालक लिहोहित नाम के आचार्य होवे हुवे भाव को सदैव अच्छी तरह दर्शानेवाले ॥ ४६ ॥ मोक्ष साधन का ही जिन के यथार्थ की व्याप्ति है तथा प्रथम सूत्र कहकर फिर उस का महा अर्थ करे ऐसे सूत्रार्थ ज्ञानी इस प्रकार उत्तम व्याख्यान के दाता, सदैव स्वभाव से सभावी प्रकृतिवाले, मिष्ट इष्ट वचनोच्चारक, आत्म सयम की यत्नावत, दूसाचार्य को नमस्कार ॥ ४७ ॥ तप, नियम, सत्य, संयम, चारित्र, विनय, सरलता, क्षमा, निर्विकार इत्यादि गुणों में रक्त शीलादि गुणकर गहरे, द्वादशांगी के अर्थ में युग प्रधान ॥ ४८ ॥ अत्यन्त सुकुमाल कोमल मनहर हस्त पांव के तलेवाले उत्तम वर्णन करने योग्य लक्षण के धारक उत्तम कीर्ति योग्य प्रवचन सिद्धान्त के ज्ञान, स्वगच्छवा पर के सैंकडों साधु के हृदय में रमन बहुत

सव्वसे ॥ रयण करडग भूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥ ३२ ॥ नाणमि
दसणंमिय, तव विणए निच्चकाल मुज्जत्त ॥ अज्जे नंदि लक्खण, सिरसावंदेपसन्नमण
॥ ३३ ॥ वड्ढओ वायगवंसो पसवसो अज्ज नाग हत्थीण ॥ वागरण करण
भंगिय, कम्मप्पयडी प्पहाणाण ॥ ३४ ॥ जच्च जणधाउ समप्पहाण, मुद्दिय
कुवलय निहाण ॥ वड्ढओ वायग वंसो रेवइ नक्खत्तनामाण ॥ ३५ ॥ अयलपुरा
निक्खंते कालियसुय अणुगिए धीरे ॥ बंभद्दीवग सीहे, वायग पयमुत्तम पत्ते ॥३६॥

उत्तर गुन में दोष रहित, रत्न करंड समान अर्थ ग्रहण करने की रीति के प्रवर्तक ॥३२॥ २० ज्ञान दर्शन चारित्र तप ज्ञान विनय में सदैव उद्यमवंत सदैव प्रसन्न चित्तवाले लक्षणवंत आर्य नंदिल नामक आचार्य ॥३३॥ २१ आर्य नागहस्ति आचार्य वंश और यश की वृद्धि के कर्ता, संस्कृत प्राकृत व्याकरण के ज्ञाता, अच्छेद्य प्रश्नोत्तर दाता, करण सित्तरी चरण सित्तरी, द्विभंगी, त्रिभंगी चतुर्भंगी प्रमुख की युक्ति के मेलक, कर्म प्रकृति की विधी बताने में प्रधान इन को वंदना ॥ ३४ ॥ २२ रेवती आचार्य जाति युक्त प्रधान अंजन तथा सुरमा जैसी शरीर की प्रभाकांति के धारक द्राक्षवर्णकमल समान, रत्न समान वर्ण के धारक वंश वृद्धि के कर्ता को वंदना ॥ ३५ ॥ २३ ब्रह्म दीपक सिंह आचार्य जो अचल पुर से संयम लेकर निकले कालिक सूत्र तथा चारों अनुयोग के धारक धैर्यवंत वाचकों में उत्तम पद के प्राप्त करने

जेसिं इमो अणुओगो,पयरइअज्जवि अड्ढमरहंमि ॥ बहु नयरनिग्गअसे,तं वंदे क्खदिला यरिए ॥३७॥कालिय सुय अणुओगस्स, धारए धारएय पुव्वाण॥ हिमवत खमासमणे, वंदेनागज्जुणायरिए ॥३८॥ तत्तो हिमवतमहृत,विक्कमे धिइ परक्कम मणते॥ सज्झाय मणतधूरे, हिमवते वंदिमो सिरसा ॥३९॥मिउ मद्दव सपन्ने, अणुपुर्व्वि वायगत्तण पत्ते ॥ उहसुय समायारे, नागज्जुण वायगे वंदे ॥४०॥गोविंदाणपि नमो,अणुओगो विउल धारणिंदाण ॥ णिच्च खंति दयाण, परूवणे दुल्लभिंदाण॥४१॥ तत्तोय भूयदिन्न, णिच्च

वाले ॥ ३६ ॥ २८ स्कंदिलाचार्य आज तक जो भर्तादि की मवर्ती हो रही और दक्षिण भरत के नगरों में जिन का यश विस्तार पाया है ॥ ३७ ॥ २५ नागार्जुनाचार्य कालिक सूत्र और चार अनुयोग के धारक तथा अर्थ सहित सूत्र के धारक,पुनः हिमवत पर्वत के समान क्षमा श्रमण॥३८॥वाचकाचार्य महाहिमवंतपर्वत समान महापराक्रम पराक्रम धैर्यवंत अनंत बहुतसी स्वाध्याय के करने वाले को वंदन ॥ ३९ ॥ २६ नागार्जुनाचार्य अत्यन्त मृदु कोमल स्वभाव के धारक अहंकार रहित सरल स्वभावी अनुक्रम से वाचक पद की प्राप्ति के कर्ता को नमस्कार होवे ॥ ४० ॥ २७ गोविन्दाचार्य-बहुत विस्तार सहित सूत्रार्थ के धारक और उदार सदैव क्षमावंत दयावंत सर्व पुरुषों में शुद्ध श्रावक की करणी के प्ररूपक ऐसे पुरुष की प्राप्ति हो इस लोक में बड़ी दुर्लभ है जिन को वंदन ॥ ४१ ॥ अब फिर भूतदिन्न साधुजी

मेअज्जेयपभासे, गणहरा हुंति वीरस्स ॥ २३ ॥ निव्वुइपहसासणय, जयइ सया सव्व भाव देसणय ॥ कुसमयमय नासणय, जिणदवर वीरसासणय ॥ २४ ॥ सुहम्म अग्गिवेसाण, जबूनाम च कासव ॥ पभव कच्चायण वदे, वच्छसिज्जभव तहा ॥ २५ ॥ जस भद्दतुगीय वदे, समुय चेव माढर ॥ भद्दबाहु च पाइन्न, थुलभद्द च गोयमा ॥ २६ ॥ एलावच्चसगोत, वदामि महागिरि सुहत्थि च, ततोकोसिय गोत्त,

इन इग्यारेही गणधरों में पहिले और पांचवे तो महावीर स्वामी मोक्षगये बाद और नवगणधर महावीर स्वामी के सन्मुख राजगृही नगरी में एक मही ने की सलेखनाकर मोक्ष पधारे हैं पूर्वोक्त इग्यारे ही गणधर सदैव मोक्ष पथ के साधक तथा सिसक जो सर्वदा सर्व भाव के दर्शक उपदेशक कुशास्त्र की दुर्मति का नाशक, कुत्सित शास्त्र के मद के गालनेवाले, जिनेश्वर के सघ में प्रधान सूत्री ८ जिन शासन के नायक सदैव जयवंत होवो ॥ २४ ॥ अथ अनुक्रम शुद्धाचार के पालक जिन शासन के प्रवर्तक सत्तावीस पाटों के नाम गोत्रादि कहते हैं—१ श्री सुधर्मा स्वामी अग्निवेसायन गोत्री, २ जम्बू स्वामी काश्यप गोत्री, ३ प्रभवा स्वामी कात्यायन गोत्री, ४ सिजभव स्वामी वच्छ गोत्री ॥ २५ ॥ ५ यशोभद्र स्वामी तुंगीय गोत्री, ६ सभूति स्वामी माढर गोत्री, ७ भद्रबाहु स्वामी प्राचीन गोत्री, ८ स्थुलभद्र स्वामी गौतम गोत्री ॥ २६ ॥ ९ महागीर स्वामी सुहस्ति स्वामी यह दोनों वच्छगोत्री,

बहुलस्स सरिसवई वंदे ॥ २७ ॥ हारियगोत्तसायच, वंदे मोहारियच सामज्जं ॥ वंदामि कोसियगोत्त, संडिल्लं अज्जजीय धरं ॥ २८ ॥ तिसमुद्दक्खाय किर्त्ति, दीव समुद्दे सुगहियपेयाल ॥ वंदे अज्ज समुद्द, अक्खोभिय समुद्द गंभीर ॥ २९ ॥ भणग करग चरग, पभावग णाण दंसण गुणाण ॥ वंदामि अज्ज मंगु सुयसागर पारगमीर ॥ ३० ॥ वंदामि अज्जधम्म, वंदे तत्तोय भद्दगुत्त च तत्तोय अज्जवइर, तव नियम गुणेहिं वइरसम ॥ ३१ ॥ वंदामि अज्जरक्खिय, समणे रक्खिय चरित्त

१० बहुल स्वामी कोसिय गोत्री, ॥ २७ ॥ ११ साइम स्वामी हारिय गोत्री, १२ स्यामाचार्य कोशारी गोत्री, १३ संडिलाचार्य कोसिक गोत्री शुद्धाचारी ॥ २८ ॥ १४ जिन की तीनों दिशा में समुद्र पर्यंत उत्तर में वैताढ्य पर्वत पर्यंत कीर्ति का विस्तार पाया था, द्वीप समुद्र जैसे ऐसे आर्य-समुद्र स्वामी ॥२९॥ १५ उपसर्गादि उत्पन्न होने से भी कदापि क्षोभित नहीं होने, समुद्र की तरह गंभीर बुद्धिवंत शास्त्र के ज्ञाता, क्रिया कल्प के करनेवाले, चारित्रवंत, धीर्यवंत जिन शासन के दीपक, ध्यानी ज्ञान दर्शन चारित्र के गुन के धारक, सूत्र समुद्र के पारगामी, ऐसे आर्यमंगू आचार्य को वंदना ॥ २९ ३० ॥ १६ आर्य-धर्माचार्य, १७ भद्रगुप्त स्वामी, १८ वइर स्वामी, यह तीनों आचार्य द्वादश तप नियमादि गुणगण करके वज्रहीर समान ॥ ३१ ॥ १९ आर्य रक्षित स्वामी क्षमा करने में महा समर्थ मूल गुन

धम्म, संति कुंथु अरच मल्लिं च ॥ मुणिसुव्वय नमिरिट्ठनेमि, पास तहा वद्धमाणच ॥ २१ ॥ पढमित्थ इंदभूई, बीओ पुणहोइ अग्गिभूईत्ति ॥ तइओय वाउभूई

२२ अरिष्ट रत्न की नेमी (गाडी का चक्र की) स्वप्न में देख रिष्ट नेमी नाम दिया, २३ अन्धकार में सर्प को पासे के पास से जाता देख पार्श्वनाथ नाम दिया और २४ राज्य में धन धान्यादि की वृद्धि हुई देख वर्धमान नाम दिया यह २४ तीर्थंकरों के गुण निष्पन्न नाम की स्थापना की सो कहा ॥२० २१॥ अब अन्तिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के इग्यारे गणधर हुवे उन के नाम + १ इन्द्रभूति २ अग्नि

---

१ जिन को श्री तीर्थंकर भगवंत १ उप्पनेवा जो उत्पन्न होवे, २ धूवेवा-जो पदार्थ ध्रुव-निश्चल है और ३ विगमेवा-जिस का विनाश हो, इस तीनों पद का उच्चारन करते १ उत्पन्न होनेवाले, २] ध्रुव रहनेवाले ३ नाश पानेवाले ४ हेयवाद-छोडने योग्य, ५ ज्ञेयवाद-जानने योग्य, ६ उपादेयवाद आदरने योग्य, ७ निश्चयवाद-केवलीगम्य, ८ विवहार वाद-लोक प्रसिद्ध, ९ विधीवाद-वीतराग की आज्ञा का मान, १ चरितानुवाद उन्होंने ऐसा किया ११ यथास्थितवाद जग में पदार्थ जैसे हैं वैसे कहना, १२ धर्मपक्ष, १३ अधर्मपक्ष १४ मिश्रपक्ष १५ द्रव्यपक्ष, १६ क्षेत्रपक्ष, १७ काल-पक्ष, १८ भावपक्ष, १९ उत्सर्गमार्ग-मोक्षमार्ग, २ अपवादमार्ग-कारणिक पथ, २१ उत्सर्ग अपवाद जिस का निषेध उस की ही स्थापना भी करे, २२ अपवाद उत्सर्ग स्थाप कर निषेधे इस २२ बोल का ज्ञान जिन को होजावे, और १ विधासूत्र-दशवैकालिकादि, २ उद्यम सूत्र-दुमपत्त पडुरयादि, ३ भयसूत्र-पन्नवनादि, ४ उपसगसूत्र-नीशी थादि ५ अपवाद सूत्र-व्यवहारादि, ६ तदुभयसूत्र-नीशीथादि, और ७ वर्णक सूत्र उववाई आदि, यों उचित सूत्र समाप्त और जो द्वादशांग चौदह पूर्व के रचयिता होवे वे गणधर कहे जाते हैं

तओसियचे सुहम्मेप ॥ २२ ॥ मण्डिय मोरिय पुत्ते अकपिए चेव अयलमाया य ॥
मुति, ३ वायुभूति ४ विगतभूति ५ सोधर्मा स्वामी ६ मंडित पुत्र, ७ मोर्यपुत्र, ८ अकम्पित ९ अच
लभ्रात, १० मेतारज और ११ प्रभास इन का विशेष स्वरूप यंत्र में देखो—

संख्या	गणधर नाम	गाम	माता नाम	पितानाम	गोत्र	गृहवास	छद्मस्त	केवल पर्या	सर्वायु	परिवार	नक्षत्र
१	इन्द्र भूति	गुब्बर	पृथ्वी	वसुभूती	गोतम	५	३०	१२	९२	५००	स्वातकी
२	अग्नि भूति	गुब्बर	,,	,,	,,	४६	१२	१६	७४	५ ०	कृर्ति ?
३	वायु भूति	गुब्बर	,		,,	४२	१०	१८	७०	५००	स्वाति की
४	विगत भूति	कोल्लागसंनिवेस	वारुणी	धनमित्र	भद्राइन	५०	१२	१८	८०	५००	मूलकी
५	सोधम स्वामी	कोल्लागसंनिवेस	भदिला	धम्पिल्ल	अग्निवश	५०	४२	८	१००	३५	उत्तरफल्गुनीकी
६	मंडित पुत्र	मोरियसंनिवेस	विजया	धनदेव	वासिष्ट	५३	१४	१६	९३	३५०	मघ की
७	मोर्य पुत्र	मोरियसंनिवेस	जयति	मोर्य	कासव	६५	२	१६	९३	३ ०	देवताकी
८	अकम्पित	कोल्लागसंनिवेस	नंदी	देवर	गौतम	४८	९	२१	७८	३००	निर्पाकी
९	अचलभ्रात	तुंगिया	वारुणी	वसु	हारीत	४६	१२	१४	७२	३००	पुष्यकी
१०	मेतार्य	वच्छभूमी	देवी	दत्त	कोडिन्न	३६	१०	१६	६	३००	परमाककी
११	प्रभास	रायगृही	अतीभद्रा	बल	,	१६	८	१६	४	३००	निपापाकी

चुल्लरस ॥ नदामि विणय पणउ, सघ महा मदरगिरिस्स ॥ १७ ॥ गुणरयणुज्जल कडय, सीलसुगधि तव माडि उद्देस सुय ॥ वारसग सिहर, सघमहामदर वदे ॥ १८ ॥ नगर रह चक्क पउमे, चदे सूरे समुद मेरुमि ॥ जो उवमिज्जइ सयय, त सघगुणायर वदे ॥ १९ ॥ वदे उसभ अजिय समव मभिणदण सुमइ,

रत्न कर दीपता है मेरु पर्वत पर वैडूर्य रत्न की पत्री का दीपती है वैसे केवल ज्ञान रूपी चूल का दीपती है जैसे मेरुपर्वत पर कूट है वैसे सघरूप मेरु के नव कोटि प्रत्याख्यान रूप नव कूट है ज्ञानादि मीरत्न रूप त्रिकोट है सील रूप सुगन्ध है प्रतिलेखनादि क्रिया करने रूप गुन कर मंडित है, द्वादशांग तथा अंगोपांग रूपे शिखर है, ऐसा महा महिमा का धारक श्री सघ रूप महा मेरु को सविनय वंदना नमस्कार करता हूं ॥ १८ ॥ यह—१ नगर की, २ रथ की, ३ चक्र की, ४ पद्म कमल की ५ चन्द्रमा की ६ सूर्य की, ७ समुद्र की और ८ मेरु की इन आठों ओपमा युक्त श्री सघ अनेक गुणों का भंडार है उसे वंदना होवो ! ॥ १९ ॥ अब चौबीस तीर्थंकरों के गुणानुवाद करते हैं, १ चौदह स्वप्न में से प्रथम वृषभ स्वप्न देखा इस लिये तथा वृषभ का लछन देख कर ऋषभदेवजी नाम दिया २ चोपट पासे के खेल में गर्भ के प्रभाव कर हरवक्त राजा से रानी की जीत होती देख अजितनाथ नाम दिया, ३ देश में धान्य का बहुत समूह उत्पन्न हुवा देख कर संभवनाथ नाम दिया, ४ इन्द्रोंने आकर मात पिता का वारम्वार अभिस्तवन,

सुप्पभ सुपास ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्ज च ॥ २० ॥ विमल मणंतय

किया जिस से अभीनन्दन नाम दिया, ५ माता की सुमति हुइ इस सुमतिनाथ नाम दिया, ६ पद्म कमल की शय्या पर शयन करने के दोहद से तथा पद्म कमल समान शरीर की प्रभा देख कर पद्म प्रभु नाम दिया, ७ माता के कर के स्पर्श से राजा की पांसलियों सीधी होगइ इस लिए सुपार्श्वनाथ नाम दिया ८ चन्द्रमा पीने के दोहद से तथा चन्द्र समान शरीर की प्रभा देख चन्द्रप्रभु नाम दिया ९ माता की सुबुद्धि होने से सुविधीनाथ और पुष्प समान दांत देख पुष्पदंत नाम दिया (नवमे तीर्थंकरके दो नाम है) १० माता के हाथ के स्पर्श से राजा का दाह ज्वर का रोग जाने से शीतलनाथ नाम दिया, ११ बहुत लोगों का श्रेय करने से तथा देवाधिष्ठित शय्या पर शयन करने स श्रेयांसनाथ नाम दिया, १२ वासु इन्द्रने धन-द्रव्य की वृष्टी की जिस से वासुपूज्य नाम दिया १३ गर्भ में आने से माता का शरीर निर्मल रोग रहित होने से विमलनाथ नाम दिया १४ अनन्त-माला का स्वप्न देखने से अनन्तनाथ नाम दिया, १५ माता पिता की धर्म पर दृढ प्रीति हुई इस धर्मनाथ नाम दिया, १६ देश में मारी का रोग का उपद्रव्य दूर करने से शांतिनाथ नाम दिया, १७ वैरीयों को कुंथुवे के समान सूक्ष्म हुवे जान कुंथुनाथ नाम दिया, १८ माताने स्वप्न में रत्नमय आरा देखा जिस से अरनाथ नाम दिया १९ षट्ऋतु के पुष्पों की माला का स्वप्न देखा जिस स मल्लिनाथ नाम दिया, २० बहुत बोली माताने मौन और यथाचरण किये जान मुनिसुव्रतनाथ दिया, २१ सर्व वैरीयों को नमे जान नमीनाथ नाम दिया,

चूलस्स ॥ वदामि विणय पणउ, सघ महा मदरगिरिस्स ॥ १७ ॥ गुणरयणुज्जल कडय, सीलसुगधि तव माडि उद्देस सुय ॥ वारसग सिहर, सघमहामदर वदे ॥ १८ ॥ नगर रह चक्क पउमे चदे सूरे समुद मेरुमि ॥ जो उवमिज्जइ सयय, त सघगुणायर वदे ॥ १९ ॥ वदे उसभ अजिय सभव मभिणदण सुमइ

रत्न कर दीपता है मेरु पर्वत पर वेडूर्य रत्न की चूली का दीपती है वैसे केवल ज्ञान रूपी चूल का दीपती है वैसे मेरुपर्वत पर कूट है वैसे सघरूप मेरु के नव कोटि प्रत्याख्यान रूप नव कूट हैं ज्ञानादि तीरत्न रूप मिकोट हैं सील रूप सगन्ध है प्रतिलेखनादि क्रिया करने रूप गुन का पादेउ है, द्वादशांग तथा अंगोपांग रूप शिखर है, ऐसा महा महिमा का धारक श्री सघ रूप महा मेरु को सविनय वंदना नमस्कार करता हूं ॥ १८ ॥ यह—१ नगर की, २ रथ की, ३ चक्र की, ४ पद्म कमल की ५ चन्द्रमा की ६ सूर्य की, ७ समुद्र की और ८ मेरु की इन आठों ओपमा युक्त श्री सघ अनेक गुणों का भंडार है उसे वंदना होवो ! ॥ १९ ॥ अब चौबीस तीर्थंकरों के गुणानुवाद करते हैं, १ चौदह स्वप्न में से प्रथम वृषभ स्वप्न देखा इस लिये तथा वृषभ का लछन देख कर ऋषभदेवजी नाम दिया २ चोपट पासे के खेल में गर्भ के प्रभाव कर हरवक्त राजा से रानी की जीत होती देख अजितनाथ नाम दिया, ३ देश में धान्य का बहुत समृद्ध उत्पन्न हुवा देख कर संभवनाथ नाम दिया, ४ इन्द्रोंने आकर मात पिता का बारम्बार अभिस्तवन

उच्छार पथिराय माणहारस्स ॥ सावग जण पउररवंत मोरनच्चत कुहरस्स ॥ १५ ॥
विणय नय पवर मुणिवर, फुरंत विज्जुज्जलंत सिहरस्स ॥ विविहगुण कप्परुक्खग
फलभर कुसुमाउलवणस्स ॥ १६ ॥ नाणवररयण दिप्पंत, कंतवेरुलिय विमल

नय विभाग सैकडो रूप कर पानी के निरझरने झरते हैं सात नय के ज्ञान रूप सात झर हैं जिस प्रकार मेरु पर्वत अनेक प्रकार के रत्नों का प्रकाशक है वैसे संघ रूप मेरु ज्ञान दर्शन रूप रत्नोंकर प्रकाशित है जैसे मेरु के गुफावेगरह स्थानों में अनेक प्रकार की औषधीयों हैं वैसे आमोसही आदि अनक लब्धियों रूप औषधी है संवर रूप निरझरने के पानी स संघ रूप मेरु कर्म रूप मल को पखाल रहा है जैसे मेरु पर्वत पर अनेक प्रकार क देवताओं देवांगनाओं अपर अनेक प्रकार की क्रिया करते हैं वैसे संघ रूप मेरु प श्रावक श्राविका रूप देवता देवांगना आकर धर्म क्रिया करते हैं जिस प्रकार मेरु पर्वत पर घनगर्जारव श्रवणकर मयुर नाचते हैं वसे सिद्धान्त की उद्घोषणा रूपी वानी को श्रवनकर श्रावकजनें रूप मयुरों दया दान रूपी केकारव करते हुवे साढे तीन क्रोड रोमावली को हुलसित कर धर्म नृत्य करते हैं प्रधान मुनीश्वरों तपस्वीयों आत्म साधन करते हैं जैसे मेरु पर्वत की चूलिका विद्युत की तरह प्रकाश करती है वैसे ही संघ रूप मेरु साधुओंक दुर्धर तप रूप विद्युत जैसा महा प्रकाश कर चमकता है जैसे मेरु पर्वत कल्प वृक्ष युक्त है वैसे संघ रूप मेरु उज्जीवत साधुओं रूप कल्प वृक्ष युक्त है जैसे मेरु पर्वत पर चार वन हैं वैसे संघ रूप मेरु पे चार तीर्थ रूप चार वन हैं॥१६॥ जैसे मेरु पर्वत रत्नों कर दीपता है वैसे संघरूपी मेरु ज्ञानरूप

गाढावगाढ पेढस्स ॥ धम्मवर रयण मडिय, चामीयरा मेहलागस्स ॥ १२ ॥
नियमूसिय कणयसिलाय, उज्जलु जलत चित्त कूडस्स ॥ नदण वण, मणहर सुरभि
सीलगधधमायस्स ॥ १३ ॥ जीवदया सुदर कन्दरुद्दरिय, मुणिवर मइदाइरसस ॥
हेउसय धातु पगलत रयणदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥ सवरवरजल पगलिय,

संकीण हो रहा है सम्यक् दृष्टि रूप प्रधान हीरे हैं, परिणामों की स्थिरता कर पानी होसता नहीं है शुद्ध श्रद्धा रूप दृढ लम्बा बहुत मजबूत कोट है, सम्यक्त्व में तीव्र परिणाम की धारा जीवादि स्वरूप का जानपना रूप पीठका है, शुभ धर्म रूप प्रधान रत्नों कर मंडित है अतिचार रहित सुवर्ण कर अत्यन्त शोभायमान है ऐसा अक्षोभित श्री संघ रूप समुद्र का कल्याण होवो ! ॥ ११ १२ ॥ अब संघ को मेरु पर्वत की ओपमा देते हैं—जिस प्रकार मेरु पर्वत पर सुवर्णमय चार अभिषेक सिलाओं हैं तैसे श्री संघ रूप मेरु का मस्यास्थान रूपनी सिलाओं हैं चित्त की निमलता रूप अति उज्वल चकचकाट करते हुवे कूट हैं जिस प्रकार मेरु पर्वत के नंदन वन में भरसिवत देवता भी रती को प्राप्त होते हैं तैसे सील रूप नंदन वनमें भव्यजीवों रूप देवताओं जिनवानी श्रवन कर आनंद प्राप्त करते हैं ब्रह्मचर्य रूप गोशीर्ष सुगधी चन्दन है, जीवदया रूप मनोहर गुफाओ है जिनवाणी रूप केसरी-सिंह है, साधु रूप वर प्रधान अनेक उपशम २ गुनकर भरे हुवे मकरन्द वृक्ष है, हेतु कारण

अकिरिय राहु मुहदुद्धरिसस्स निच ॥ जयसघ चदनिम्मल सम्मत्त विसुद्ध
जोण्हागा ॥ ९ ॥ परतिरिथय गह पहनासगस्स, तवतेय दित्त लेसस्स॥नाणुजोयस्स
जग, भद्द दमि सघसूररस ॥१०॥ भद्दधिइ वेलापरिगयस्स, सज्झाय जोगमगरस्स॥
अक्खोहस्स भगवओ सघसमुद्दस्स रुद्दरस ॥ ११ ॥ सम दसण वर वइर, दढरूढ

अब पांचवी चन्द्रमा की उपमा देते हैं श्रीसघरूप चन्द्रमा अक्रिया आश्रव रूपी राहु का दूर करके तप रूपी महा प्रकाश को फैलाता संयम रूपी उत्तम मृग के लछन युक्त शोभिता सम्यक्त्व रूप गृहों के साथ लाग जो इसा मिथ्यात्व-अन्धकार को भगाता सर्व पर समभाव धारण करता प्रकाशित हो रहा है ऐसे श्रमण सघ रूप निर्मल चन्द्रमा सदैव जयवन्त प्रवर्तो ॥ ९ ॥ अब छट्ठी चन्द्रमा की ओपमा कहते हैं—श्रीसघ रूपी सूर्यने परतीर्थिक ३६३ पाखंडगण रूप ग्रहों के प्रभा क्रांति को नष्ट की है द्वादश प्रकार की तपरूप लेश्या कर प्रदीप्त हो रहा है निर्मल ज्ञान रूप प्रकाश कर मिथ्यात्व अप्रत प्रमाद कषाय रूप ताराओं के तेज को दबाता है ऐसा श्रीसघ रूप सूर्य का भद्र कल्याण होवो ॥ १० ॥ अब सातवी ओपमा समुद्र की देते हैं—श्री सघ रूप समुद्र में धैर्यता-सतोष रूप जल चढती है परिषह रूप वायु कर कदापि क्षोभित नहीं होता है वाचनादि पांचों प्रकार की स्वाध्याय रूप ग्राह मगर मच्छों कर शोभित है शुभयोग रूप द्वीपों हैं और तप सयम ज्ञान दर्शन चारित्रादि गुन रूप रत्नों कर

तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ सघ रहस्स भगवओ, सज्झायसु नदि घोसस्स ॥ ६ ॥
कम्म रय जलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीह नालस्स ॥ पंच महव्वय थिरकण्णियस्स,
गुण केसरालस्स ॥ ७ ॥ सावग जण महुयर परिवुडस्स, जिण सुर तेय बुद्धस्स॥
सघ पउमस्स भद्द, समणगण सहस्स पत्तस्स ॥ ८ ॥ तव सयम मिय लछण,

रही है तप और नियम रूप दोनों अश्व (घोडे) उस रथ को सम्यक् प्रकार से जोते हैं वे उस रथ को चलारहे हैं पांच प्रकार की स्वाध्याय रूप घुघरमाल का आनन्दका उत्पादक उसका घोष मय नाद है, ऐसा संघ रूपी रथ ज्ञानवंत भगवंतने कहा है ॥ ६ ॥ तीसरी पद्मकमल की ओपमा कर्मरूप कर्दम और उपम रूपी पानी कर जिस की उत्पत्ति हुई है, वह संघरूप कमल संसार भ्रमण के भय से नीकल कर ऊपर आया है आचारांगादि सूत्रों के ज्ञान रूप रत्नमय उस कमल की दीघनाल है पंचमहाव्रत रूप स्थिर कर्णिका है उत्तर गुणादि विचित्र प्रकार के गुन रूप कमल के अन्दर की केसरा है साधुओं के समूह रूप हजारों पत्र है इस प्रकार का भी संघरूप कमल शोभता है ॥ ७ ॥ उसपर श्रावकों के समूह रूप भ्रमर गण आकर ज्ञान रूपी रस ग्रहण करके वैराग्य मद में मस्त बनते हैं जिनभगवंत रूप सूर्योदय होने से वे कमल प्रफुल्लित होते हैं अर्थात् जिनराज का उपदेश श्रवणकर सम्यक्त्व देशव्रतादि सदाचरण करते हैं ऐसा श्रीसंघ रूपी सहस्र पत्र कमल का भद्र कल्याण होवो ॥ ८ ॥

गुण भवण गहण सुयरयण, भरिय दसण विसुद्ध रत्थागो ॥ सघ नगर भद्दते, अखड चरित्त पागारा ॥ ४ ॥ सजम तव तुबयस्स, नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिचक्कस्स जओ होइ, सया सघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद्द सील पडागुसियस्स,

इस प्रकार तीर्थ के कर्ता तीर्थंकर के गुणानुवाद कर अब तीर्थ अर्थात् साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध भोपमा का कथन करते हैं प्रथम नगर की भोपमा—श्री संघरूपी नगर द्रव्य व्रत व सब व्रतरूपी प्रकोट कर चारों तरफ से घेरा हुवा है, जिस का आश्रव रूप शत्रुओं से पराभव नहीं होसकता है, श्री संघ रूप नगर मूल गुण उत्तरगुण विविध प्रकार के भवनों का भरित है, वे घरों द्वादशांगी रूप अमूल्य रत्नों कर भति पूर्ण भरें हुवे हैं, उस नगर का मिथ्यात्व अव्रत रूपी कचरा झाडकर दूर फेंक दिया है और सम्यक्त्व के गुण रूप विविध वस्तुओं कर भरित है इस प्रकार का संघरूप नगर भद्र कल्यान का करता होवे ॥ ४ ॥ दूसरी चक्र की भोपमा विषय कषाय रूपी शत्रु का पराभव करने वाला तपरूप चक्र का तुम्बक अर्थात् मध्य में अगुलीदाह फिराने का स्थान है और चारों ओर फिरती तीक्ष्ण सम्यक्त्व रूपी धारा है, ऐसा संघ रूपी चक्र अप्रतिहत है अर्थात् ३६३ पाखंडी आदि किसी से भी पराभव नहीं पाता है सब स्थान जय ही प्राप्त करता है ऐसे संघ रूप चक्र को नमस्कार होवो ॥ ५ ॥ अब तीसरी रथ की भोपमा संघ को देते हैं अठारह हजार शीलांग रथ ऊपर शीलरूपी ध्वजा फरक

जयइ ॥ जयइ गुरु लोयाण, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्दं सव्व जगुज्जो
यगस्स, भद्द जिणस्स वीरस्स ॥ भद्द सुरासुर नमसियस्स, भद्द धूय कम्मरयस्स॥३॥

प्राणियों के रक्षक होने से त्रिजगत के नाथ थे, सब जीवों की रक्षारूप दया धर्म के प्रकाशक होने से त्रिजगत के बन्धव थे, सर्व जीवों से अधिक १००८ उत्तम लक्षण के धारक होने से त्रिजगद्उत्तम थे जगत जन्तूओं को आत्म सम्पदा के दाता होने से त्रिजगत के पिता थे इहलोकादि सातों महा भय के जीतनेवाले थे, द्रव्य अशुची को लेप नहीं लगने से और भाव से विषय कषायादि मैल रहित होने से पवित्र थे, ज्ञान गुनकर महा प्रमाविक थे सर्व शास्त्रों की महा उत्पत्ति के स्थानक, धर्म के चारों तीर्थ के स्थापन करनेवाले, अन्तिम चौवीसवे तीर्थंकर, सर्व लोगों से गुणाधिक होने से या चारों तीर्थ को धर्म मार्ग में प्रवर्तक होने से जगद् गुरु थे, कर्म रूप महा शत्रु के विदारक महावीर, महात्मा घोर परीषहाप सर्ग के जीतनेवाले इसलिये सब वडे से सूरवीर सदाचारी महाकल्याण के कर्ता, सर्व लोकालोक के स्वरूप के सूर्य की समान प्रकाशक घातिक अघातिक आठों कर्म के जीतनेवाले, शुद्ध संयम तप सील आचार के आराधक, इत्यादि गुनों कर भुवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक इन चारों जाति के देवता तथा इन के चौंसठ इन्द्रों कि जिनों कर पूज्यनीय थे सर्व भक्ति भाव पूर्वक वंदना नमस्कार करते थे जिनोंने अनादि काल से लगे हुवे धूत कर्मों को झटक कर दूर किये और अपनी आत्मा रूप वस्त्र को पवित्र किया, ऐसे श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी का जय होवो !! कल्याण होवो !!! ॥ १३ ॥

गुण भवण गहण सुयरयण, भरिय दसण विसुद्ध रत्थागो ॥ सघ नगर भद्दते,
अखण्ड चरित्त पागारा ॥ ४ ॥ सजम तव तुबयस्स, नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥
अप्पाडिचक्कस्स जओ होइ, सया सघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद्द सील पडागुसियस्स,

इस प्रकार तीर्थ के कर्ता तीर्थंकर के गुणानुवाद कर अब तीर्थ अर्थात् साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध ओपमा का कथन करते हैं प्रथम नगर की ओपमा-श्री संघरूपी नगर देश व्रत व सर्व व्रतरूपी प्राकार कर चारों तरफ से घेरा हुवा है, जिस का आश्रव रूप शत्रुओं से पराभव नहीं होसकता है, श्री संघ रूप नगर मूल गुण उत्तरगुण विविध प्रकार के भवनों कर भरित है, वे घरों द्वादशांगी रूप अमूल्य रत्नों कर अति पूर्ण भरे हुवे हैं, इस नगर का मिथ्यात्व अव्रत रूपी कचरा झाडकर दूर फेंक दिया है और सम्यक्त्व के गुण रूप विविध वस्तुओं कर भरित है इस प्रकार का संघरूप नगर भद्र कल्याण का करता होवे ॥ ४ ॥ दूसरी चक्र की ओपमा-विषय कषाय रूपी शत्रु का पराभव करने वाला तपरूप चक्र का तुम्बक अर्थात् मध्य में अंगुलीडाल फिराने का स्थान है और चारों ओर फिरती तीक्ष्ण सम्यक्त्व रूपी धारा है, ऐसा संघ रूपी चक्र अप्रतिहत है अर्थात् ३६३ पाखंडी आदि किसी से भी पराभव नहीं पाता है सब स्थान जय ही प्राप्त करता है ऐसे संघ रूप चक्र को नमस्कार होवो ॥ ५ ॥ अब तीसरी रथ की ओपमा संघ को देते हैं अठारा हजार शीलांग रथ ऊपर शीलरूपी ध्वजा फरक

॥ त्रिशात्तमनन्दी सूत्र-तृतीय मूल. ॥

जयइ जगजीवज्जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणदो ॥ जगनाहो जगबंधू अयइ जगपिया महा भयव ॥ १ ॥ जयइ सुयाण पमवो, तिरययराण अपच्छिमो

मथम मंगलाचरण रूप स्थविरावलि कहते हैं जय हो भगवत महात्मा श्री महावीर स्वामी को ! व भगवंत महात्मा महावीर स्वामी अष्ट कर्म रूप शत्रु का तथा विषय कषाय रूप शत्रु का जय करके केवल ज्ञान केवल दर्शन को माप्त हुवे, जिस से धर्मास्तिकायादि षट् द्रव्य रूप जगत् जिस के सब भाव भेद को जानते देखते थे जीवों के सुख दुःख की उत्पत्ती व भोगवने की विधी के जान थे, सब प्रकार की चौरासी लक्ष जीवायोनि में रहे जीवों की चराचर रचना के जान थे, सब प्रकार की क्रिया के विरूपे कुशलता के जान थे जगत् सत्त्वों का दुःख विमोचन करने शुभ धर्म चारित्र धर्म के प्ररूपक थ, तीनों लोक के जीवों को उन के वचन प्राप्य होने से तीनों लोक के गुरु थ उन का धर्मोपदेश श्रवण कर भिनगत के जीवों को आनन्दोत्पत्ति होने से जिनमत में आनन्द कर्ता थे, सब जगत के त्रस स्थावर